Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्याग का मूल्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्याग का मूल्य

रवीन्द्रनाथ टैगोर

सन्मार्ग प्रकाशन - दिल्ली

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संस्करण : सितम्बर १९६१
प्रकाशक : सन्मार्ग प्रकाशन
१६ यू० बी० बैंगलो रोड, दिल्ली

मूल्य : चार रुपये
आवरण शिल्पी : पाल बन्धु
मुद्रक : शुक्ला प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा
हरिहर प्रेस, दिल्ली।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक

आज अविनाशघोष बतीस वर्ष के हो गए हैं। आज उनका जन्म दिवस मनाया जा रहा है। चारों ओर से अभिनन्दन-पत्र आ रहे हैं।

यहीं से कहानी शुरू होती है। किन्तु इस के पूर्व की भी एक कहानी है। संध्या समय दीपक जलाने के पूर्व ही तेल-बत्ती ठीक करके रख दी जाती है।

इसकी प्राचीनता का पता लगाने पर पता चलता है कि घोषाल लोग किसी समय सुन्दर वन में रहते थे, उसके बाद हुगली जिले के नूरनगर में रहने लगे। वे पुर्तगीजों के बाहरी आक्रमण के कारण अथवा समाज के संघर्ष के कारण चले आये थे इसका ठीक पता नहीं चलता। जो लोग अपना सब कुछ गँवाकर अपना पुराना घर छोड़ सकते हैं उनमें अपने नवीन घर के निर्माण की भी शक्ति होती है। इसीलिए घोषालों के ऐतिहासिक युग के प्रारम्भ से ही यह देखा जाता है कि उनकी जमीन-जायदाद, गाय-बछड़े, नौकर-चाकर, पर्व-त्यौहार एवं व्याह-सम्बन्ध बहुत अधिक थे। आज भी उनके शयाकुलि नामक प्राचीन गाँव से कम-से-कम दस बीघे फैला हुआ काई और पत्तों से आच्छादित घोषाल नामक तालाब अतीत के गौरव की साक्षी दे रहा है। आज उस ताल का नाम ही केवल उनका है, उसका जल चटर्जी-परिवार के जमींदारों के काम में आता है। एक दिन किस प्रकार उसका अधिकार छोड़ना पड़ा था इसे जान लेना आवश्यक है। ज्ञात होता है कि चटर्जी परिवार के जमींदारों से इनका झगड़ा हुआ था। यह झगड़ा सम्पत्ति को लेकर नहीं, वरन् देवता की पूजा को लेकर हुआ था। घोषाल लोगों ने चटर्जी परिवार से ईर्षा करके उनसे दो हाथ ऊँची प्रतिमा बनवाई थी। उत्तर में चटर्जी परिवार ने उसका रातो-रात विसर्जन के रास्ते में उस नाम के तोरण बनवा दिए जिनमें घोषाल परिवार की प्रतिमा का सिर अटक जाय। ऊँची प्रतिमा वालों का दल तोरण तोड़ता-फिरता था और नीची प्रतिमावालों का दल उनका सिर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तोड़ने के लिए घूमता रहता था, परिणामस्वरूप देवी ने इस बार गत वर्षों की अपेक्षा बहुत अधिक रक्त वसूल किया। बहुत रक्तपात हुआ, और यह मामला घोषाल लोगों का सर्वनाश करके ही शान्त हुआ।

आग बुझ गई, लकड़ी भी नहीं बची, सब राख हो गया। चटर्जी परिवार की गौरव-लक्ष्मी का मुख फीका पड़ गया। विवशता में संधि हो सकती है किन्तु इससे स्थायी शांति नहीं हो सकती। जो व्यक्ति विजयोन्माद में खड़ा है और जो पराजित हो चुका है इन दोनों के ही भीतर क्रोध की ज्वाला धधकती रहती है। चटर्जी परिवार वालों ने घोषाल परिवार पर अंतिम क्रोध प्रगट किया सामाजिक आघात के रूप में। उन लोगों ने समाज में उड़ा दिया कि घोषाल परिवार वाले किसी समय में नीच ब्राह्मण थे, यहाँ आने पर वह बात छिपा दी गई है। जिन लोगों ने यह बात उड़ाई थी उनके प्रचार में रुपए का बल था। इसीलिए ब्राह्मणों के मुहल्लों में भी इस अपकीर्ति का प्रचार बड़ी तेजी से होने लगा। इस कलंक को मिटाने के लिए उचित प्रमाण या रुपए व्यय करने की शक्ति घोषालों में उस समय नहीं थी, अतएव उन लोगों ने परेशान होकर दूसरी बार गाँव छोड़ दिया, और रजबपुर में अत्यंत साधारण ढंग से रहने लगे।

अत्याचारी भूल जाते हैं, परन्तु अत्याचार सहने वाले सरलता से नहीं भूलते। यद्यपि लाठी उनके हाथ से गिर जाती है फिर भी उनके मन में द्वेषाग्नि धधकती रहती है। बीच-बीच में चटर्जी परिवार वालों को किस तरह उन लोगों ने तंग किया इसकी अनेक कहानियाँ और झूठ मिलाकर उनके घरों में कही जाती हैं। उन्हें आषाढ़ मास में संध्या समय उनके लड़के फूस के झोंपड़े में हुँकारी भरते हुए सुनते हैं। चटर्जी परिवार के दासू सरदार को रात्रि में सोते समय किस प्रकार बीस-पचीस लठैत पकड़कर घोषालों की कहचरी में ले आए और उसे लापता कर दिया उसकी कहानी सौ वर्षों से घोषालों के यहाँ चली आती है। जब पुलिस तलाशी लेने आई तो भुवन विश्वास ने कहा कि वह अपने किसी काम से कचहरी में आया था। हमारे यहाँ आने से उसका कुछ अपमान हुआ, सुना है कि उसी अपमान को सहन न कर सका और कहीं भाग गया। पुलिस का संदेह दूर नहीं हुआ तब भुवन ने कहा कि यदि सरकार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसी वर्ष के भीतर मैंने खोज न निकाला तो मेरा नाम भुवनविश्वास नहीं। न जाने भुवन विश्वास ने दासू के कद का एक आदमी [illegible] के अभियोग ढाका जेल भेजकर सरकार को सूचना दी कि दासू जेल में है। दासू जेल में जरूर था वह जेल से निकलकर कहीं चला गया। इसके बाद वह कहाँ गया कोई पता नहीं।

गौरव के दिन बीत चुके हैं इसीलिए प्राचीन गौरव का नगाड़ा एकदम खोखला होने के कारण अधिक आवाज देता है।

कुछ भी हो, जिस प्रकार तेल समाप्त होने पर दीपक बुझ जाता है, उसी प्रकार किसी समय रात बीत जाती है। घोषाल-परिवार में अविनाश के पिता मधुसूदन के सौभाग्य से सूर्योदय दिखाई दिया।

दो

मधुसूदन का पिता आनन्दघोष रजबपुर के एक आढ़तिये के पास नौकर था। मोटा खाना, मोटा पहनना, इसी प्रकार जीवन बीतता था। घर की स्त्रियों के हाथ में मामूलो जेवर और पुरुषों के गले में पीतल के यन्त्र तथा मोटे-मोटे जनेऊ थे। ब्राह्मण जाति की मान-मर्यादा कम हो जाने पर भी केवल जनेऊ ही एक प्रमाण रह गया था।

गाँव की पाठशाला में मधुसूदन ने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। नदी के किनारे वह आढ़तियों के सामने वाले चौक में सन की गांठों पर बैठकर गाँव के किसानों, व्यापारियों, ग्राहकों तथा गाड़ी वालों की भीड़ में छुट्टी मनाता था। बाजार में जहाँ टीन के छप्परों में चिपकी हुई गुड़ की गागरें, तम्बाकू की गाँठ, मिट्टी के तेल के कनस्तर, सरसों के ढेर, चने और मटर की बोरियाँ, बड़े-बड़े तोलने वाले काँटे और वजन करने वाले बाट रखे रहते हैं, उसी बगीचे में टहलने से उसे प्रसन्नता होती है।

पिता ने सोचा कि लड़का बड़ा होकर कुछ बनेगा जरूर। दो-चार साल परीक्षा में बैठ जाने से स्कूल की मास्टरी से लेकर मुहर्रिरी या वकालत तक जो अच्छे लोगों के लिए सम्मानित पेशे हैं उनमें से किसी में मधुसूदन लग जायगा। बाकी तीन लड़कों का भाग्य नौकरी ही के साथ अटककर रह गया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

घ॰ ता रहता था

था। उनमें से एक वसूल आढ़तियों की गद्दी पर जा डटा और दूसरा ताल्लुकेदार के दफ्तर में कानों पर कलम रखकर उम्मेदवार के रूप में खड़ा हो गया, किन्तु आलक्ष्मीष की गरीबी के बावजूद मधुसूदन ने एक कमरा कलकत्ते की एक गली में रहने के लिए किराये पर ले लिया।

मास्टरों का विचार था कि परीक्षा में पास होकर यह लड़का कॉलेज का रुख करेगा, किन्तु इसी बीच मधुसूदन के पिता का स्वर्गवास हो गया। पढ़ने की सभी पुस्तकें बेचकर मधुसूधन ने निश्चय कर लिया कि अब वह व्यापार करेगा और उसने व्यापार शुरू भी किया। यह हालत देखकर माँ रोती थी। उसे पूर्ण आशा थी कि परीक्षा में पास होकर लड़का किसी उच्च पद पर पहुँच जायेगा और फिर घोष-वंश की विजय-पताका लहरायेगी।

बचपन से ही मधुसूदन जिस प्रकार प्रत्येक वस्तु को पहचानने में चतुर था, उसी प्रकार अपने मित्र बनाने में भी उसने धोखा नहीं खाया, उसका सबसे बड़ा मित्र था कन्हैयालाल गुप्त। उसके पूर्वज बड़े-बड़े व्यापारियों के यहाँ नौकरी करते आये थे और पिता प्रसिद्ध क्रोसिन कम्पनी के दफ्तर में उच्च पद पर कार्य करते थे।

सौभाग्य से उनकी पुत्री का विवाह हुआ। मधुसूदन कमर कसकर काम में जुट गया। छप्पर तैयार करना, फूल-पत्तियों से मण्डप को सुसज्जित करना, प्रेस में खड़े होकर सुनहरे अक्षरों में निमन्त्रण-पत्र छपवाना, गाने-बजाने वालों का प्रबन्ध करना, दरवाजे पर रहकर अतिथिसत्कार करना, सारांश यह कि कोई काम भी बाकी न छोड़ा। इस अवसर पर उसने ऐसी कार्य-कुशलता का परिचय दिया कि रजनी बाबू बहुत प्रसन्न हुए। वे काम करने वाले आदमी को पहचानते थे। समझ गये कि यह लड़का होनहार है। इसीलिए अपनी जेब से रुपया जमा करके मधुसूदन को मिट्टी के तेल की एजेंसी दिलवा दी।

किस्मत की दौड़ शुरू हुई। इसमें कम्पनी को काफी लाभ हुआ। इस दौड़ में बेचारे क्रोसिन का डिपो पता नहीं कहाँ छूट गया। व्यापार दनादन जमा के खाते की मोटी-मोटी रकम पर पैर फेंकता हुआ आगे बढ़ा—गलियों से लेकर सड़क पर, खुदरा से लेकर थोक में, दुकान से लेकर ऑफिस में, सभी ने कहा—'इसी का नाम किस्मत है।' अर्थात् पूर्वजन्म की स्टीम से ही इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जन्म की गाड़ी चल रही है। उसे ठगने में भाग्य ने कुछ कसर न रखी थी, यह मधुसूदन स्वयं समझता था। वह केवल हिसाब ही में न भूला, इसी कारण जीवन की परीक्षा में उसके परीक्षक का 'क्रॉसमार्क' नहीं पड़ा।

मधुसूदन को गर्व है, अपनी अवस्था के विषय में वह किसी से बातचीत करना व्यर्थ समझता है। पर ऐसा लगता है, कि सूखी नदी में पानी आ गया है। बंगाल में ऐसी दशा में लोग जल्दी ही विवाह की चिन्ता करते हैं। इस जीवन की सम्पत्ति को खर्च करने और भविष्य में अपने वंश को बढ़ाने की इच्छा उसके हृदय में शीघ्र ही उत्पन्न होती है। कन्या-पक्ष वाले मधुसूदन को उत्साहित करने में कोई कसर नहीं उठा रखते थे किन्तु मधुसूदन कहता— 'पहले एक पेट तो भर जाने दो फिर दूसरे के पेट की आग बुझाने का भार सिर पर उठाया जा सकता है।' इससे पता चलता है कि मधुसूदन का हृदय चाहे जैसा हो, किन्तु उसमें आत्मसयम का अभाव नहीं था।

मधुसूदन की कार्य-कुशलता से उसी समय रजबपुर में सन के व्यापार ने ख्याति प्राप्त कर ली। एकाएक मधुसूदन ने नदी-किनारे काफी जमीन खरीद ली। उस समय जमीन सस्ती थी। बीसियों ईंटों के भट्ठे लगवाये गये। नैपाल से काफी लकड़ी मँगवाई गई, सिलहट से चूना आया और कलकत्ते से टीन की चद्दरें। बाजार वाले दंग रह गये। कहने लगे—'देखो तो सही, अब तो इस जगह हर चीज की बहुतायत हो गई। यह खपेगी कहाँ, अब कारोबार का अन्त समझो।'

मधुसूदन के हिसाब में इस बार भी भूल न हुई। देखते-देखते रजबपुर व्यापार का केन्द्र बन गया। दलाल रुपये के चक्कर में आ गये और मारवाड़ियों का झुण्ड भी आ पहुँचा। मजदूर और कुली बराबर आ रहे थे। मिल बन गई और मिल की चिमनी से निकलते हुए वृत्ताकार धुएँ ने नीलकाश पर कालिमा बिखेर दी। मधुसूदन की ख्याति दूर-दूर फैल गई। वह अकेला सारे गञ्ज का मालिक था। चहारदीवारी के अन्दर दो मञ्जिली इमारत है। गेट पर पत्थर लगा हुआ है जिसमें लिखा है—'मधुचक्र!' यह नाम उसके कॉलेज के भूतपूर्व संस्कृत-अध्यापक का रखा हुआ है। मधुसूदन से अब वे पहले से भी अधिक प्रेम करने लगे थे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक दिन विधवा माँ ने आकर डरते-डरते कहा—'बेटा ! भगवान न जाने कब उठा लें। बहू का मुँह देख लेती तो मन को शान्ति मिलती।

मधुसूदन ने गम्भीर मुद्रा बनाकर संक्षेप में उत्तर दिया—'विवाह करने में भी समय नष्ट होता है और विवाह के बाद भी। मुझे इतना अवकाश नहीं कि विवाह कर सकूँ।

माँ को अधिक आग्रह करने का साहस न हुआ। सब जानते हैं कि मधुसूदन जो कुछ कह देता है, उसी पर अटल रहता है।

कुछ समय और बीता, उन्नति की बाढ़ में कारोबार का दफ्तर बहकर गाँव से कलकत्ते चला गया। बहू के आगमन से हृदय को शान्त करने की आशाओं को छोड़कर माँ इस संसार से विदा हो गई। घोष कम्पनी का नाम आज केवल देश में ही नहीं, बल्कि विदेश में भी प्रसिद्ध है। उसका व्यापार अब विलायती कम्पनी के बराबर चलता है। प्रत्येक विभाग के अंगरेज मैनेजर हैं। मधुसूदन ने इस बार स्वयं कहा—'अब विवाह की फुर्सत मिली।' लड़कियों के बाजार में उसका स्थान सबसे ऊँचा है। बड़े-बड़े अभिमानी परिवारों का घमण्ड तोड़ने की शक्ति उसमें आ चुकी थी। चारों ओर से अनेकों कुलीन, सुन्दर, शिक्षित तथा धनी घरानों की लड़कियों की खबरें आने लगीं। मधुसूदन ने आंखें खोलकर कहा—'उसे चटर्जी वंश की लड़की चाहिए।'

चोट खाया हुआ घराना भी चोट खाये हुए सिंह की भाँति भयंकर होता है।

तीन

नूरनगर के चटर्जी-परिवार की स्थिति इस समय अच्छी नहीं है। ऐश्वर्य का पतन हो चला है। छः आने के हिस्से वाले भी जायदाद का बँटवारा कराके अलग हो गये हैं। इसके अतिरिक्त राधाकान्त जी की सेवा के अधिकारों को लेकर दस और छः आने वालों में इतनी मुकदमेबाजी हुई कि दोनों ओर के वकीलों ने खूब धन कमाया। नूरनगर की वह शान न रही, आमदनी कम हो गई किन्तु खर्च बढ़ता ही गया। नौ रुपये सैकड़े के सूद की नौ टाँगों वाली मकड़ी ने जमींदारी के चारों ओर जाल बिछा दिया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चटर्जी-परिवार में दो भाई और पाँच बहिनें हैं, लड़कियों की अधिकता के अपराध का जुर्माना अभी तक पट नहीं सका है। चार बहिनों की तो शादी पिता के सामने ही कुलीन घरों में हो गई थी। इनके धन की सूरत तो इस जमाने की है किन्तु ख्याति प्राचीनकाल-सी है। दामादों को दहेज देना पड़ा वह भी कुलीनता की मोटी रकमों से। इसी कारण नौ प्रतिशत के डोरे में गुथे हुए ऋण के फन्दे में बारह प्रतिशत की गाँठ पड़ गई। भाई कमर कसकर बोल उठा 'विलायत जाकर बैरिस्टर हो जाऊं, रोजगार किये बिना काम नहीं चलेगा। इस प्रकार वह विलायत गया और गृहस्थी का भार बड़े भाई विप्रदास पर आ पड़ा। इसी बीच घोष और चटर्जी के भाग्यरूपी पतंग में परस्पर खींचा-तानी से पेंच पड़ गया जिसका इतिहास निम्न प्रकार है—

बड़े बाजार के तनसुखदास हलवाई का इन पर अत्यधिक ऋण था, जिनका वे बराबर व्याज दे रहे थे, जिसकी कोई बात ही नहीं। इन्हीं दिनों पूजा की छुट्टी में विप्रदास का सहपाठी अमूल्यधन मित्रता-प्रदर्शन के लिए आया। वह बड़े अटर्नी आफिस का आर्टिकेल्ड प्रधान क्लर्क था। इस चश्मेबाज युवक ने नूरनगर की अवस्था भली-भाँति देखी। वह कलकत्ते लौटा तो तनसुखदास रुपया वापस माँगने लगा, उसने कहा, चीनी का नया व्यापार खोला है, इसलिए रुपए की सख्त जरूरत है।

विप्रदास माथा ठोंककर बैठ गया।

उसी संकटावस्था में चटर्जी और घोषाल इन दोनों नामों में पुनः द्वन्द्व समाप्त हो गया। इसके पूर्व ही मधुसूदन को सरकार बहादुर से राजा की पदवी मिली थी। पूर्वोक्त छात्रबन्धु अमूल्यधन ने आकर कहा कि नए राजा इस समय प्रसन्नचित्त हैं; इस समय उनसे सुविधानुसार ऋण प्राप्त हो सकता है। रुपए मिल गए, चटर्जी लोगों का सारा देन एकत्र करके सात प्रतिशत पर ग्यारह लाख रुपए मिले। विप्रदास की जान-में-जान आई।

कुमुदिनी उनकी अन्तिम और अवशिष्ट बहन है, उसका संबंध भी अंतिम और अवशिष्ट है। रुपया जुटाने, एवं पात्र जुटाने की कल्पना करते ही आतंक हो जाता था। वह देखने में सुन्दरी है, लम्बा छरहरा शरीर है, मानो रजनीगंधा का पुष्पदंड हो, नेत्र बड़े-बड़े न होते हुए भी अत्यन्त आकर्षक हैं, और

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाक ऐसी प्रतीत होती है मानो पंखड़ियों से निर्मित है। दोनों हाथ सुन्दर हैं, उन हाथों की सेवा प्राप्त करना लक्ष्मी का वरदान है, कृतज्ञता-पूर्वक ग्रहण करना चाहिए। मुख पर वेदनामय करुणायुक्त धैर्य का भाव झलकता है।

कुमुदिनी स्वयं अपने लिए संकुचित है। उसका विश्वास है कि वह भाग्य-हीना है। वह समझती है कि पुरुष लोग अपनी शक्ति से गृहस्थी चलाते हैं, और स्त्रियाँ अपने भाग्यबल से घर में लक्ष्मी को लाती हैं। उसके द्वारा यह नहीं हुआ। जब से उसकी अवस्था समझने योग्य हुई है तभी से उसने अपने चारों ओर दुर्भाग्य की पापदृष्टि देखी है, और गृहस्थी के ऊपर अपने क्वाँरेपन का भार डाले हुए हैं, उसे जितना बड़ा कष्ट है उतना ही बड़ा उसका अपमान भी है। विधाता ने उपाय करने की युक्ति स्त्रियों को नहीं दी है; उन्हें केवल दुःख-सहन की ही शक्ति दी है। क्या कोई असम्भव घटना घटित नहीं होती। किसी पक्ष का धन, किसी पूर्व जन्म के पुण्य फल की प्राप्ति काम में नहीं आती। कुमुदिनी किसी-किसी दिन रात्रि में बिछौने पर से उठकर बाग में वृक्षों की चोटियों की ओर देखती है और मन-ही-मन कहती है—कहाँ हो मेरे राजपुत्र, कहाँ है तुम्हारा सात राजाओं का धन, बचाओ मेरे भाइयों को, मैं चिरकाल तक तुम्हारी दासी बनकर रहूँगी।

कुमुदिनी अपने परिवार की दुर्गति के लिए अपने को जितना दोषी ठहराती उसका हृदय उतना ही अपने हृदय के सुधापात्र को खोलकर भाइयों को अपना प्रेम प्रदान करता—उसका प्रेम कठिन दुःख को कम करता। कुमुदिनी के भाई भी उसके प्रति अपना कर्त्तव्य पूर्ण न कर पाने के कारण अत्यन्त कष्ट में होते हुए भी उसके प्रति प्रेम रखने में किसी प्रकार की कमी न करते थे। इस मातृपितृविहीना को ईश्वर ने जिस स्नेह से वंचित कर रखा है उसकी पूर्ति के लिए उसके भाई सर्वदा उत्सुक रहते थे। वे कहते तू चाँद का एक अंश है जिसमें दीनतारूपी अंधकार में प्रकाश छिपा है। जब वह बीच-बीच में अपने को दुर्भाग्य का वाहन कहकर धिक्कारती तब भैय्या विप्रदास हँसकर कहते—कुमुदिनी तू तो स्वयं ही हम लोगों का सौभाग्य है—यदि तू न होती तो हमारे घर में लक्ष्मी कहाँ रहती ?

कुमुदिनी ने घर में ही शिक्षा पाई थी। यह कहा जा सकता है कि उसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाहर का परिचय नहीं है। प्राचीन और नवीन सभ्यता के बीच उसका पालन हुआ है। उसका संसार अस्पष्ट है, वहाँ पर साम्राज्य है चलते-पुरजों का। वहाँ पर किसी विशेष दिन को चाँद देखना मना है, शंख बजाकर ग्रहण की कुदृष्टि को भगाना पड़ता है। यह प्रत्यक्ष दिखाई पड़ता है कि शुभ लग्न की शाखा में शुभ फल नहीं फलते, तो भी वास्तविक शक्ति न होते हुए प्रमाणों के द्वारा कहीं स्वप्न का मोह नष्ट हो सकता है। स्वप्न-जगत में विचार की बात नहीं चलती, वहाँ पर केवल मनस्तुष्टि चलती है। इस संसार में भाग्य के क्षेत्र में युक्ति की सुसंगति, बुद्धि की करामात और भले-बुरे की नित्यता को लेकर ही कुमुदिनी के मुख पर उदासीनता छाई हुई है। वह समझती है कि मैं बिना अपराध के ही बदनाम हूँ। आठ वर्ष हुए उसन इस बदनामी को अपनी समझ लिया था—वह थी उसके पिता की मृत्यु की दुर्घटना।

चार

पुराने अमीरों के घरों में पुराने दिन जिस गढ़ में वास करते हैं, उसकी चिनाई पक्की होती है, बहुत-सी ड्योढ़ियाँ पार करने के बाद कहीं नवीन दिन वहाँ पहुँच पाते है। इन गढ़ों के निवासी नवीन युग तक पहुँचने में बहुत देर लगा देते हैं। विप्रदास के पिता मुकुन्दलाल भी यद्यपि सरपट दौड़े किन्तु फिर भी नवीन युग न पकड़ सके।

उनका लम्बा गोरा शरीर, घूँघरवाले बाल, बड़ी-बड़ी सिकुड़ी हुई आँखों में प्राचीन गौरव की झलक है। जब वे अपने भारी स्वर में किसी को पुकारते हैं तो नौकर-चाकर काँप उठते हैं। यद्यपि वे अपने यहाँ पहलवान रखकर नियमपूर्वक कुश्ती का अभ्यास करते हैं और उनके शरीर में शक्ति भी कम नहीं, किन्तु फिर भी उनके कोमल शरीर में परिश्रम का चिह्न तक नहीं, उनकी पोशाक में बारीक जाली का कुर्ता, ढाके की धोती, जिसकी लाँघ जो बड़ी कोशिश से चुनी हुई है, धरती पर बिखर रही। इस्तम्बोली इत्र की सुगन्ध दूर ही से उनके आने की सूचना देती है। सोने का पनबट्टा हाथ में लिए खानसामा पीछे-पीछे चल रहा है। दरवाजे पर हर समय तमगा और चपरास लगाए अर-दली तथा दरबान मौजूद रहते हैं। ड्योढ़ी पर बूढ़ा जमादार चन्द्रभान सुर्ती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनाने और भग छानने की छुट्टी में बेंच पर बैठा अपनी लम्बी दाढ़ी को दो भागों में बाँट कर उस पर बराबर हाथ फेर कर कानों से बाँधता रहता है। छोटे दरबान हाथ में तलवारें लिए चौकीदारी करते है। ड्योढ़ी की दीवार पर कई प्रकार की ढालें, सुन्दर तलवारें, प्राचीनकाल की बन्दूकें, बल्लम तथा बर्छे लटक रहे हैं। बैठक में.मुकुन्दलाल गद्दी पर बैठे हैं। पीठ पर मसनद लगी है, मुसाहब लोग सामने दाँयें-बाँयें नीचे बैठे हैं। हुक्का पिलाने वाला यह सब बातें जानता है कि उनके सम्मान की दृष्टि से किसको कैसा हुक्का पिलाना चाहिए। मुकुन्दलाल के लिए खास लम्बी नालीदार गुलाबजल से महकती हुई फर्शी है। मकान के दूसरे भाग में विलायती बैठक है। यहाँ अठारहवीं शताब्दी के विदेशी सामान हैं। सामने ही एक बड़ा भारी आईना है जिसमें काले-काले दाग पड़ गए हैं। फ्रेम के दोनों ओर दो परों वाली परियों की मूर्तियाँ हैं जिनके हाथों में शमादान लगे हुए हैं। उसके नीचे सुनहरे पानी से चित्रित काले पत्थर की घड़ी और काफी संख्या में शीशे के खिलौने रक्खे हैं। खड़ी पीठवाली चौकी, सोफे, छत की कड़ियों में लटकते हुए झाड़-फानूस सब 'हॉलैंड क्लाथ' से ढके हैं। दीवारों पर पूर्वजों के तैलचित्र टँगे हैं और उनके साथ वंश के दो एक मित्र राजाओं के फोटो, घर भर में विदेशी कालीन बिछा हुआ है, उस पर चमकते हुए गहरे रंग के फूल बने हैं। विशेष अवसरों पर जैसे जिले और प्रांत के हाकिमों की दावतों के अवसर पर इस घर का नकाब उलटा जाता है। मकान भर में यही एक नवीन ढंग का कमरा है, किन्तु मालूम होता है कि यह सबसे पुराना भूतों वाला कमरा है। इस्तेमाल में न आने के कारण दम घोट देने वाला और जीवन यात्रा से वंचित।

मुकुन्दलाल का शौक उस जमाने के अदब-कायदे का आवश्यक अंग है। उसी के कारण संसार उनका सम्मान करता है। उनके भोग-विलास के दरबार में धन पाँव की धूल बनाकर मसला जाता है। उनके दरबार में दान-दक्षिणा और रंगरेलियाँ सब एक-सा स्थान रखती हैं। पड़ोस के साहूकार ने किसी बड़े अपराध में बगीचे के माली का कान ऐंठ डाला। उसको दण्ड दिलाने में जितना रुपया खर्च हुआ, उतना खर्च आजकल के जमाने में लड़कों को कॉलेज के पार उतारने में भी नहीं होता। माली के लड़के के साथ भी लापरवाही

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं की थी। उसे मार-मार कर खाट पर डाल दिया। गुस्से की धुन में चाबुक अधिक लगने पर लड़के पर विशेष दया आ गई, मालिक के व्यय से ही पढ़-लिखकर अब वह मुख्तारी करता है।

प्राचीन धनी लोगों के अनुसार मुकुन्दलाल का जीवन दो भागों में विभक्त था। एक भाग में गृहस्थी और दूसरे में आमोद-प्रमोद। घर में इष्टदेव और गृहणी है। वहाँ पर पूजा-पाठ, अतिथि सेवा, व्रत-उपवास, सदाव्रत, ब्राह्मण-भोजन और गुरु-पुरोहित हैं। आमोद-प्रमोद घर के बाहर होता है, वहाँ पर नवाबों जैसा वातावरण है, समारोहों की आधिक्य है। वहाँ पर वारांगनाओं का आवागमन सीखने का विशेष उपाय समझते थे। इन दोनों विरोधी वातावरणों के कारण गृहणियों को व्यवस्था करने में बहुत दुःख सहना पड़ता था।

मुकुन्दलाल की स्त्री नन्दरानी अभिमानिनी है, उनमें सहनशीलता नहीं है। उसका कारण था। वह निश्चित रूप से जानती थीं कि बाहर उनके स्वामी की चाहे जितना प्रभाव हो, भीतर उन्हीं का साम्राज्य है। इसीलिए जब स्वामी प्रेम के विपरीत अन्याय करते हैं, वह उसे सह नहीं सकती। इस बार भी वैसा ही हुआ वह सहन न कर सकी।

पाँच

रासलीला के दिनों में खूब धूमधाम मची। बहुत-सा सामान कलकत्ते और ढाका से आया; आँगन में कभी कृष्णलीला होती, कभी कीर्तन होता, पड़ोसी स्त्री पुरुषों की भीड़ होती। बहुधा विशेष आयोजन बैठक में होते। घर की स्त्रियों को यह देख दुःख होता, रात भर नींद न आती बेचैन रहतीं द्वार के छेदों से कुछ-कुछ झलक दिखाई पड़ती। इस बार विचार हुआ कि नर्तकी-नृत्य की व्यवस्था नदी में बजड़े पर होगी।

क्या हो रहा है यह देखने की सामर्थ्य न होने के कारण नन्दरानी का मन दुःख से भर आया। घर का काम-काज, लोगों को खिलाना-पिलाना, देखना-भालना सभी प्रसन्नतापूर्वक करने पड़ते। उठते-बैठते छाती में काँटा चुभता रहता, किन्तु रहस्य कोई जान न पाता। उधर रह-रहकर तृप्त-कंठ से ध्वनि उठती जय हो माँ रानी की। अन्त में उत्सव समाप्त हुआ; घर खाली हो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया। केवल केले के पत्तों, कसोरों और पुरवों के ढेर पर कुत्तों और कौओं की भों-भों और कांए-कांए सुनाई पड़ रही है। नौकरों ने सीढ़ी लगाकर लालटेनें खोल लीं, चंदोवा उतार दिया, झाड़ की बची मोमबत्तियाँ और फूलों की माला लेने के लिए मुहल्ले के लड़कों में छीना-झपटी हो रही है। उसी भीड़ में बीच-बीच में मारपीट और रोने-चिल्लाने की आवाज से आतशबाजी की तरह आकाश फटा जा रहा है।

अंतःपुर के आँगन में जूठे भात-तरकारी की गन्ध उड़ रही है, यह अव्यवस्था असह्य हो उठी जब मुकुन्दलाल आज भी नहीं आये। नन्दरानी ने दीवानजी को बुलाकर कहा—मालिक से कह दीजिएगा मुझे वृन्दावन में माँ के पास इसी समय जाना है। उनका शरीर ठीक नहीं है।

दीवानजी ने सँभलते हुए मृदु स्वर में कहा—मालकिन ! मालिक से कह कर जाती तो अच्छा होता। मुझे खबर मिली है कि आज या कल घर पर आने वाले हैं। नन्दरानी ने कहा—नहीं, अब मैं बिलंब न कर सकूँगी।

आजकल में ही लौटने वाले है। नन्दरानी को इसीलिए जाने के लिए इतनी शीघ्रता है। वे निश्चित रूप से यह जानती हैं कि कुछ रोने-धोने एवं मनाने से सारा बदला मिल जायगा। हर बार ही ऐसा हुआ है। उपयुक्त दण्ड नहीं मिल पाता। इस बार तो किसी प्रकार न चलेगा, इसीलिए दण्ड की व्यवस्था करके ही नन्दरानी को भागना पड़ रहा है। विदा होने के ठीक पहले उसके पैर उठना नहीं चाहते थे—खाट पर औंधी पड़कर सिसक-सिसक कर रोती रही।

कार्तिक का महीना है, दिन के दो बजे का समय है, वायु का तप्त झोंका चल रहा है। सड़क के दाहिने बायें शीशम के वृक्षों की सरसराट के साथ कभी-कभी मन्द आवाज में कोयल की कुहू-कुहू सुनाई पड़ जाती है। जिस सड़क से होकर पालकी जा रही थी वहीं कच्चे धान के खेतों के उस पार एक नदी दिखाई देती थी। नन्दरानी से न रहा गया, वे पालकी के दरवाजे को खिसकाकर इधर-उधर देखने लगीं और उसकी दृष्टि उस पार के बँधे हुए बजरे पर पड़ी और मस्तूल की पताका फहरा रही थी। बजरे की छत पर चिरपरिचित गोपी हरकारा जिसकी पगड़ी का तगमा सूर्य-रश्मि से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चमचमा रहा है, बैठा है। दूर ही से यह सब देखकर उसके कलेजे पर पत्थर-सा बैठ गया और उसने जोर से पालकी का दरवाजा बन्द कर लिया।

छः

मुकुन्दलाल तूफान में भी स्थिर रहने वाली चट्टान के समान थे। संकुचित से होते हुए अपने मकान पर आकर रुके। कलेजा अव्यवहार के बोझ से भारी हो गया है। पूर्ण भोजन हो चुकने के बाद जिस प्रकार जूठन अनिच्छा होती है उसी प्रकार आमोद-प्रमोद की स्मृति ने उनके मन को अरुचिकर बना दिया है। उनके इस आमोद के जो उत्साहदाता और उद्योग-कर्त्ता थे, यदि वे इस समय होते तो मारे चाबुकों के उनका होश ठिकाने लग जाता। मन-ही-मन उन्होंने प्रतिज्ञा की, ऐसा अब कभी भी न होने देंगे। उनके अस्त-व्यस्त बाल, रक्तवर्ण नेत्र और मुँह के अत्यन्त शुष्क भाग को देख कर किसी में इतना साहस न था जो उन्हें मालकिन के चले जाने की सूचना देता मुकुन्दलाल डरते-डरते भीतर पहुँचे। बड़ी बहू माफ करो, अब कभी ऐसा न होगा, गल्ती हो गयी।' मन-ही-मन इस बात को कहते हुए वे शयनागार के द्वार पर जाकर रुक गये और धीरे-धीरे अन्दर गये। उनके मन में यही निश्चय हुआ कि अभिमानिनी विस्तर पर पड़ी होगी, पैरों के सन्निकट जा बैठेंगे। यह सब सोचते हुए कमरे में घुसे; देखा—कमरा सूना है, हृदय धधक उठा! यदि शयनकक्ष में बिछौने पर नन्दरानी को देखते तो समझ लेते कि मानिनी कुसूर माफ करने के लिए आधा रास्ता आगे बढ़ आई है किन्तु बड़ी बहू को सोने के कमरे में न देख कर मुकुन्दलाल समझ गये, आज का प्रयाश्चित लम्बा और कठिन होगा। या तो सम्पूर्ण रात्रि बाट जोहनी होगी या और अधिक देर लगेगी किन्तु इतना धैर्य रखना भी उनके लिए असम्भव नहीं। उन्होंने निश्चय किया कि पूरा दण्ड अभी सिर माथे चढ़ाये या बिना क्षमा पाये, मैं अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा। अत्याधिक देर हो गई है, अभी तक स्नान-भोजन भी सहीं हुआ है, ऐसी दशा में सती साध्वी से कैसे रहा जायगा? कमरे से बाहर निकलकर देखा—प्यारी महरी बरामदे के एक कोने में घूंघट खींचे खड़ी है। पूछा—"तेरी बड़ी बहूजी कहाँ हैं?"

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने कहा—"वे परसों ही अपनी माँ को देखने वृन्दावन गई हैं।"

मानो पूर्णरूप से समझ न सके, उनका गला रुँध-सा आया, फिर पूछा—"कहाँ गई हैं ?"

'वृन्दावन ! माँ जी बीमार है।"

पहले तो बरामदे की रेलिंग थामकर मुकुन्दलाल खड़े हो गये किन्तु उनके मुँह से एक भी शब्द न निकला और उनके पास किसी को जाने का साहस भी न हुआ। दीवानजी ने आकर डरते-डरते कहा—"तो माँजी को बुलाने के लिए आदमी भेज दूं ?"

उन्होंने कोई उत्तर न दिया, केवस अँगुली के इशारे से मना कर दिया। दीवानजी के चले जाने पर राधा रसोइए को बुलाकर कहा—"ब्राण्डी ले आ।"

सब दंग रह गये। भूचाल जब धरती की संसीन सतह से सिर मिलाकर तहलका मचा देता है तो उस पर अधिकार पाने के सारे प्रयत्न विफल हुआ करते हैं। यह भी उसी प्रकार का भूचाल था। निर्जल ब्राण्डी उड़ने लगी। खाना-पीना करीब-करीब बन्द हो गया। एक तो पहले से ही तबीयत खराब रहती थी फिर चला यह उल्टा दाँव, पूरे वेग से शराब ने खूनी कै तक की नौबत पहुँचा दी।

कलकत्ते से डॉक्टर आया। रात-दिन सिर पर बर्फ रखी जाने लगी। किसी को देखते ही मुकुन्दलाल पर सनक सवार हो जाती। उनके मन में सन्देह उत्पन्न हो गया कि सारा कुटुम्ब कोई षड्यन्त्र रच रहा है। भीतर-ही-भीतर यह प्रश्न उठ रहा था, इन लोगों ने आखिर जाने क्यों दिया उसे ?

यदि उस समय कोई उनके पास जा सकता था तो वह एक कुमुदिनी ही थी। वह निकट जाकर बैठती। मुकुन्दलाल उसकी ओर शान्त-भाव से आकृष्ट रहते, मानो उसकी आँखों से उनकी माँ की शक्ति मिलती-जुलती दिखाई पड़ती है। कभी-कभी उसके माथे को छाती से लगाकर आँखें बन्द किये चुप-चाप पड़े रहते हैं। आँखों से पानी बहने लगता, किन्तु भूलकर भी कभी उससे माँ की बात नहीं पूछते। इधर वृन्दावन को तार गया। माँ कल ही आ जातीं किन्तु सुना है कि मार्ग में कहीं रेल पटरी से उतर गई है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सात

उस दिन सन्ध्या समय जोर का तूफान आया। बगीचे के वृक्षों की डालियाँ तड़तड़ाकर गिरने लगीं। वायु पूरे वेग से चल रही थी। उत्सव के लिए जो स्थान तैयार किया गया था उसके रस्से टूट गये और टीन उड़कर दूर जा पड़ी।

अचानक वहाँ एक तेज झोंके से खिड़कियाँ और दरवाजे खड़खड़ाकर काँप उठे। कुमुदिनी का हाथ मसलकर मुकुन्दलाल ने कहा—'बेटी, तू क्यों डरती है, तूने कोई अपराध नहीं किया। वह दाँत पीस रहे हैं, वे मुझे मारने आ रहे हैं। पिता के माथे पर बर्फ की थैली फेरते हुए कुमुदिनी कहती—'मारेंगे क्यों बाबूजी, आँधी चल रही है, अभी थम जायगी।'

'वृन्दावन ! वृन्दावन—चन्द्र—चक्रवर्ती ! पिता जी के समय का पुरोहित वह तो मर गया, भूत होकर आ गया है वृन्दावन ! किसने कहा वह आयेगा ?'

'बातें न करो बाबू जी ! थोड़ा सो जाओ।'

'वृन्दा दूती ! वह मधु की उत्तराधिकारी—राजा ब्राण्डी ले आ।'

कुमुदिनी पिता के मुंह की ओर झुककर बोली, 'बाबूजी, क्या कह रहे हो ?'

मुकुन्दलाल ने आँखें खोलकर देखा और देखते ही दाँतों से जीभ दबाकर रह गये। अपने आपे में न रहते हुए भी वे यह बात न भूले कि कुमुदिनी के सामने शराब का दौर नहीं चल सकता।

कुछ ठहरकर उन्होंने गाना शुरू किया। बिखरे हुए गीतों को सुनकर कुमुदिनी की छाती फट गई। हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो गये। उसे माँ पर क्रोध आता, पिता के पाँव पर सिर रखकर माँ की ओर से क्षमा-याचना करने लगी।

मुकुन्दलाल अचानक बोल उठे—'दीवानजी !'

दीवानजी के आने पर उससे बोले—'वह देखो, टिक-टिक सुनाई दे रही है।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीवानजी ने कहा—'हवा से दरवाजे हिल रहे हैं।'

'बूढ़ा आया है। वही वृन्दावन—चन्द्र—गञ्जा, हाथ में लकड़ी लिये, रेशमी चादर गले में डाले। देख तो आओ तब से बराबर खटखटा रहा है, लाठी या खड़ाऊँ से ?'

खून की कै कुछ देर से रुक गई थी। रात के तीन बजे फिर शुरू हो गई। मुकुन्दलाल बिछौने पर चारों ओर हाथ फेर कर ऐंठी हुई जबान से बोले—'बड़ी बहू, घर में बड़ा अन्धेरा है, अब भी चिराग नहीं जलाओगी ?'

उत्सव से वापस आने के बाद मुकुन्दलाल ने स्त्री के लिए यही पहली और आखिरी बात कही।

× × ×

वृन्दावन से लौटने पर नन्दरानी घर के दरवाजे के पास आते ही मूर्छित होकर गिर पड़ी। उसे उठाकर बिस्तर पर लिटाया गया। घर-गृहस्थ में उसे कोई चीज अच्छी न लगी। आँखों के आँसू बिलकुल सूख गये। लड़के-लड़कियों से शान्ति न मिली। गुरुजी ने आकर शास्त्र की बातें सुनाईं तो मुँह फेर लिया, बोली—'मेरा हाथ देखकर कहा था कि तेरा सोहाग कभी न मिटेगा, क्या झूठ हो सकता है ?'

क्षेमा दूर के नाते से ननद लगती थी, आँचल से आँसू पोंछते हुए बोली—'जो होना था हो चुका। अब घर की ओर देखो। वह तो जाते समय कह गये हैं कि बड़ी बहू क्या घर में दिया न जलाओगी ?'

नन्दरानी बिस्तर से उठकर बैठ गईं। दूर तक निगाह दौड़ाकर बोली—'जाऊँगी दिया जलाने, जाऊँगी। अब की बार देर न होगी।' यह कहते-कहते उसका पीला रंग चमक उठा। मालूम होता था हाथों में चिराग लिये जा रही है।

सूर्य पश्चिम की ओर झुक गया था। नन्दरानी ने माथे पर मोटा-मोटा सेंदुर लगाया। लाल बनारसी साड़ी पहनी और घर की ओर बिना देखे मुसकराते चली गईं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आठ

पिता की मृत्यु के बाद विप्रदास ने देखा कि जिस वृक्ष पर उनका नीड़ है, उसकी जड़ों को कीड़े खा गये हैं। धन-दौलत और जमीन जायदाद सब कर्जे की दलदल में खड़े धीरे-धीरे नीचे की ओर धँस रहे हैं। रहन-सहन और अन्य खर्चों के कम किये बिना काम नहीं चल सकता। कुमुदिनी के विवाह के बारे में भी हर घड़ी सवाल उठा करते, जिसका उत्तर देते हुए चुप ही रह जाना पड़ता है। अन्त में नुरनगर से घर-बार उठाना पड़ा। और कलकत्ते में आकर बाग बाजार में एक मकान में रहने लगे। पुराने घर में कुमुदिनी का एक सजीव वायुमण्डल था। चारों ओर फ़ूल-फ़ुलवारी, अनाज के केत, गाय का थान, घर के आदमी, नौकर-चाकर सभी कुछ अपने थे। उपवन में वह फ़ूल चुनती, डालियाँ भरती, नमक मिर्च धनिया पुदीने के साथ कच्चे बेर मिलाकर चटनी बनाती। वैसाख-जेठ की आँधी में आमों के वगीचे में आम बिनती, सारांश यह कि वह पूर्ण स्वतन्त्र थी। स्वछन्द थी।

वहाँ तिल के लड्डू कूटकर तैयार करते समय स्त्रियों का जो शोरगुल होता था, उसमें उसका भी हिस्सा था। काई की हरी चहारदीवारी से घिरा हुआ, घनी छाया से शीतल तालाब उसके पास वह प्रतिदिन कोयल, पपीहा और बुलबुल के राग सुना करती थी। नित्य तालाब में तैरती। लाल फूल चुनती, घाट पर बैठकर सुन्दर सुखद कल्पनाओं के महल तैयार करती और अकेले बैठकर ऊनी गुलुबन्द बुनती। हर वर्ष और ऋतु में प्राकृतिक परिवर्तनों के साथ-साथ मानव स्वभाव भी बदलता रहता है। तीज से लेकर होली और बसन्त तक न जाने कितने उत्सव आते हैं। मनुष्य और प्रकृति दोनों ने मिल कर पूरे वर्ष को मानो भाँति-भाँति के चित्रों से सजा दिया है यह बात नहीं कि सभी सुन्दर अथवा सुखकर है। घर-गृहस्थी में मालकिन की तरफदारी, लड़कों की तकरार, अपने बच्चों का पक्षपात आदि बातों पर भीतर-ही-भीतर ईर्ष्या या शोरगुल के साथ अभियोग और कानाफूसी में पर निन्दा या मुक्त-कण्ठ से अपवाद घोषणा इन सबकी काफी बहुतायत थी और सब से अधिक नित्य के काम-काज के सिलसिले में पीठ पीछे एक घृणा मिश्रित उद्वेग छिा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। घर वाले न जाने क्या कर चले, उनके आराम में कौन-सी भयंकर दुर्घटना विघ्न उपस्थित करे। यदि झगड़ा शुरू हो गया तो फिर शान्ति न न मिलेगी। माँ रोती है, लड़कों के मुँह सूख जाते हैं। सारांश यह कि दुख-सुख में गृहस्थी की लम्बी यात्रा सदैव टकराती रहती है।

इन परिस्थितियों से निकलकर कुमुदिनी कलकत्ते इस प्रकार गई जैसे एक हिलोरे मारता हुआ समुद्र। किन्तु सागर में प्यास बुझाने के लिए एक बूंद पानी कहाँ? स्वदेश और वहाँ के वायु-मंडल से वह परिचित था। गाँव के निकट कहीं घना जंगल था, कहीं रेतीला मैदान, कहीं नदी के पानी का बहाव, मन्दिर की चोटियाँ और विस्तृत सूना मैदान। झाऊ के झाड़ियों के झुण्ड, नदी के किनारे की पगडण्डी—इन सबमें विभिन्न रंगीनियों और मनोरंजनों ने घेरा डालकर आकाश को एक विशेष सौंदर्य प्रदान किया था। यह था कुमुदिनी का अपना संसार। सूर्य का प्रकाश उसी एक विशेष ढंग से आलोकित था। तालाबों में, खेतों में, बाँस की नर्म और कोमल पत्तियों में, हरियाली में और रेत पर; सबके साथ उस प्रकाश ने पूर्व परिचय प्राप्त कर लिया था। कलकत्ते के समस्त अनदेखे मकानों की रोशनी अब उसे किसी अपरिचित व्यक्ति की भाँति कनखियों से देखती है।

विप्रदास कुमुदिनी को आराम कुर्सी के पास बुलाकर कहते—'क्यों कुमुद! जी नहीं लगता?'

कुमुदिनी हँसकर कहती—'भैया, जी तो लगता है।'

'चलोगी बहिन चिड़ियाघर देखने?'

'हाँ, चलूंगी।'

'यह बात उसने असाधारण उत्साह से कही कि विप्रदास यदि पुरुष न होता तो समझ लेते कि उसकी यह बात स्वाभाविक नहीं। चिड़ियाघर न जाना पड़े तो उसकी जान-में-जान आ जाय। भीड़ में निकलने की आदत न होने के कारण उसे इससे बड़ी घृणा थी। हाथ-पाँव फूल जाते। आँख उठाकर अच्छी तरह देख भी न सकती थी।

विप्रदास ने उसे शतरंज खेलना सिखाया। वह स्वयं अनुभवी खिलाड़ी थे। कुमुद के खेल से उन्हें बड़ा आनन्द आता। अन्त में बराबर खेलते रहने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से कुमुद इतना अच्छा खेलने लगी कि विप्रदास को अब उसके साथ होशियारी से खेलना पड़ता। कलकत्ते में कुमुद के बराबर की कोई सहेली न होने के कारण दोनों बहन-भाई जैसे भाई-भाई की भाँति हो गये हैं। संस्कृत-साहित्य से विप्रदास को अत्यधिक प्रेम है। कुमुद ने मन लगाकर उनसे संस्कृत पढ़ी। जब से भाई 'उसने कुमार-सम्भव' पढ़ा वह पूजा में शिवजी को देखने लगी। उसी महा-तपस्वी को जो तपस्विनी पार्वती की तपस्या का देवता था, कुमुदिनी के ध्यान में उसके भावी पति पवित्रता की दिव्यज्योति के रूप में आलोकित होकर दिखाई पड़ने लगे।

विप्रदास को फोटोग्राफी का बड़ा शौक था, कुमुद ने यह भी सीख लिया। उनमें से यदि एक फोटो उतारता तो दूसरा तैयार करता। बन्दूक चलाने में विप्रदास पूर्ण दक्ष थे। किसी उत्सव में जब अपने घर जाते तो पिछवाड़े के तालाब में नारियल तथा अखरोट आदि बहाकर उस पर निशाना लगाते। वे कुमुद से कहते—'आओ न कुमुद! देख तो सही, जरा कोशिश करके···।'

जिस बात में भी उसके भाई की दिलचस्पी होती उसमें कुमुद बड़े शौक से हिस्सा लेती। भाई से सीखकर वह शतरंज का खेल इतना अच्छा खेलने लगी कि अन्त में विप्रदास को कहना ही पड़ा कि मैं तुमसे जीत नहीं सकता।

इस प्रकार बचपन से ही जिस भाई से वह असाधारण प्रेम करती आई थी, कलकत्ते में आकर उसे ही अधिक निकट पाया। कलकत्ते आना लाभदायक रहा, कुमुदिनी स्वभावतः एकान्त को पसन्द करती थी। पार्वती की भाँति वह किसी मानसरोवर के किनारे काल्पनिक तपोवन में रहती। उसके लिए आवश्यकता है शान्ति की, एकान्त की और इसी के साथ ही एक ऐसी आत्मा की, जिसके साथ वह प्रेम कर सके, पास-पड़ोस के घराने से दूर रहने के कारण पड़ोस की स्त्रियाँ कुमुदिनी को बिलकुल पसन्द न करतीं। वे या तो उसे अभिमानिनी समझतीं या विरक्त। इसी कारण एक जगह रहने से भी सहेलियों के साथ कुमुदिनी की अधिक घनिष्ठता न हो सकी।

पिता के रहते हुए ही विप्रदास का विवाह प्रायः ठीक हो चुका था, शरीर में हल्दी लगने के दो दिन पूर्व ही वधू ज्वर से मर गई। उस समय ज्योतिषी लोगों ने विप्रदास की कुण्डली के ग्रहों को देखकर बतलाया था कि विप्रदास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का विवाह देर से होगा तो अच्छा ही होगा। विवाह की बात दब गई। इसी बीच पिता की मृत्यु हो गई। तत्पश्चात् विप्रदास के विवाह की बात छिड़ने का योग्य अवसर घर में उपस्थित नहीं हुआ। विवाह करने वालों ने बहुत बड़ी रकम दिलाने की आशा दिलाई। उसका फल विपरीत हुआ और कन्या पक्षवालों को काँपते हुए हाथों से हुक्के को दीवार के सहारे खड़ा करके चुपके से वहाँ से खिसक जाना पड़ा।

नौ

नियमित रूप से सुबोध का पत्र विलायत से आ रहा था। अब पत्र देर से आने लगा। कुमुदिनी डाक के लिए व्यग्र होकर प्रतीक्षा करती रहती। डाकिये ने इस बार पत्र उसी के हाथ में दिया। विप्रदास आइने के सामने खड़े होकर दाढ़ी बना रहे थे, कुमुदिनी दौड़ती हुई जाकर बोली—बड़े भैया, छोटे भैया का पत्र आया है।

दाढ़ी बनाना बन्द करके कुर्सी पर बैठकर विप्रदास मानो कुछ डरते हुए पत्र खोलने लगे। पढ़ना समाप्त हो जाने पर पत्र को इस प्रकार हाथ से मोड़ा मानो बड़ा कष्ट हो रहा हो।

कुमुदिनी ने डरकर पूछा—छोटे भैया बीमार तो नहीं हैं ?

'नहीं, वे अच्छी तरह से हैं।'

'भैया कहिए न, पत्र में क्या लिखा है ?'

'वही पढ़ने-लिखने की बात।'

विप्रदास कुछ दिनों से कुमुदिनी को सुबोध का पत्र पढ़ने के लिए नहीं दे रहे थे। थोड़ा-सा पढ़कर सुना देते थे। इस बार वह भी नहीं किया। पत्र को देख लेने का साहस कुमुदिनी को नहीं हुआ, उसका हृदय तड़पने लगा।

सुबोध प्रारम्भ में कायदे से खर्च करता था। घर की करुण कथा उस समय भी वैसी ही थी। किन्तु समय के साथ उसकी स्मृति जितनी ही धुंधली होती जा रही है, खर्च उतना ही बढ़ता जा रहा है। कहता है, उच्च चाल-ढाल न रह सकने पर यहाँ उच्च श्रेणी के समाज के वातावरण में नही पहुँचा जा सकता, और ऐसा न होने पर विलायत आना ही व्यर्थ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्रदास को विवश होकर दो-एक बार आवश्यकता से अधिक रुपए भेजने पड़े। इस बार माँग आई हजार पौंड की, आवश्यक काम है।

विप्रदास ने माथे पर हाथ रखकर कहा—मिलेगा कहाँ ? शरीर का खून पसीना बनाकर कुमुदिनी के विवाह के लिए रुपए जमा कर रहा हूँ। अंत में क्या उसी रुपए को खर्च करना पड़ेगा ? सुबोध के बैरिस्टर होने से क्या होगा; यदि कुमुदिनी का भविष्य नष्ट कर उसका मूल्य चुकाना पड़े।

रात को विप्रदास बरामदे में टहल रहे थे। उन्हें पता न था कि कुमुदिनी की आँखों में भी निद्रा नहीं है। जब कुमुदिनी सहन न कर सकी तो उसने आकर विप्रदास का हाथ पकड़ लिया और बोली—भैया, सच-सच बतलाइए, छोटे भैया को क्या हुआ है ? पैर पड़ती हूँ, मुझसे कुछ न छिपाइए।

विप्रदास ने सोचा—छिपाने से कुमुदिनी की चिंता और भी बढ़ जायगी। कुछ देर चुप रहकर बोले—सुबोध ने इतना अधिक रुपया माँगा है कि उतना रुपया देने की शक्ति मुझमें नहीं है।

कुमुदिनी ने विप्रदास का हाथ पकड़कर कहा—भैया एक बात कहूँ, बिगड़िएगा तो नहीं।

बुरा न मानने की बात होगी तो बुरा क्यों मानूँगा ?

नहीं भैया, मजाक नहीं है, सुनिये मेरी बात—माँ का गहना जो मेरे लिए रखा है उसे लेकर...।

चुप रह, चुप रह, तेरे गहने में क्या हम हाथ लगा सकते हैं।

'मैं तो लगा सकती हूँ।'

'नहीं तू भी नहीं लगा सकती। यह सब रहने दे, इस समय जाकर सो जा।'

प्रातःकाल कौओं की काएँ-काएँ और गाड़ियों की खड़खड़ाहट के साथ रात्रि समाप्त हुई। कभी जहाजों और कभी तेल मिलों की सीटी दूर से सुनाई पड़ती थी। घर के सामने रास्ते पर एक मनुष्य कन्धे पर सीढ़ी रखे हुए ज्वरारि वटी का पोस्टर चिपका रहा है, खाली गाड़ी के दो बैल गाड़ीवान के बहुत चाबुक मारने पर उत्तेजित होकर बेतहासा भागे जा रहे हैं, जल भरने की प्रतियोगिता में कल से ही एक हिंदुस्तानी स्त्री और उड़िया ब्राह्मण में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धक्कमधुक्का और बकझक हो रही है। विप्रदास बरामदे में बैठे हैं गुड़गड़ी की नली हाथ में लिए हुए हैं, फर्श पर बिना पढ़ा हुआ समाचार-पत्र पड़ा हुआ है।

कुमुदिनी ने आकर कहा—भैया, नहीं, न कहिए।

मेरी विचार-स्वतन्त्रता में तू दखल देगी ? तेरे शासन से मुझे रात को दिन, नहीं को हाँ कहना होगा ?

नहीं, सुनिए कहती हूँ, मेरा गहना लेकर अपनी चिंता दूर कीजिए।

इसीलिए मैंने तेरा नाम रखा है लक्ष्मी। तेरा गहना लेकर मेरा चिंता दूर होगी ऐसी बात तूने किस बुद्धि से समझी।

मैं यह नहीं जानती. किंतु आपकी यह चिंता मुझसे देखी नहीं जाती।

'चिंता से ही चिंता को दूर करना पड़ता है रे, उसे धोखे से दूर करने का प्रयत्न करने से उलटा फल होता है। कुछ धैर्य रखो, मैं व्यवस्था कर देता हूँ।

विप्रदास ने उसी डाक से पत्र भेजा कि रुपए भेजने के लिए कुमुदिनी के गहनों को बेचना पड़ेगा। यह असंभव है। यथासमय उत्तर आया। सुबोध ने लिखा कि मैं कुमुद के गहनों को बेचकर रुपए नहीं चाहता। सम्पत्ति का मेरा आधा हिस्सा बेच कर रुपए भेज दीजिए। साथ-ही-साथ उसने संपत्ति बेचने का अधिकार-पत्र भी भेज दिया था। यह पत्र विप्रदास के हृदय में बाण-सा लगा। इतनी कठोर बात सुबोध ने लिखी कैसे ? विप्रदास ने उसी समय बुड्ढे दीवान को बुला भेजा। उससे पूछा—भूषणराय करीमपुर तालुकेदारी को पट्टे पर लेना चाहता था न, कितना रुपया देगा ?

दीवान ने कहा—बीस हजार तक मिल सकता है।

भूषणराय को बुलवा लो। बातचीत करना चाहता हूँ।

विप्रदास अपने घराने का बड़ा लड़का है। उसके जन्म समय में ही उसके दादा ने यह तालुकेदारी स्वतन्त्र रूप से उसी को दे दी थी। भूषणराय बहुत बड़ा धनिक है, बीस-पचीस लाख का व्यापारी है। उसकी जन्मभूमि करीमपुर है। इसीलिए बहुत दिनों से इस गाँव को पट्टे पर लेना चाहता है। अर्थसंकट में विप्रदास कभी-कभी सहमत हो जाता, किंतु प्रजा रो पड़ी थी। कहती, हम लोग उसे किसी प्रकार जमींदार न मान सकेंगे। इसीलिए विचार बारम्बार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थगित हो जाता था। इस बार विप्रदास ने अपना हृदय कठोर बना लिया। वे निश्चित् रूप से यह जानते थे कि सुबोध के रुपए की माँग केवल इतने से ही पूरी न होगी। उसने मन-ही-मन सोचा, मेरे तालुके की सलामी का रुपया सुबोध के लिए ही रहेगा, उसके बाद देखा जायेगा।

दीवान विप्रदास के मुँह पर उत्तर देने का साहस न कर सका। उसने कुमुदिनी से गुप्त रूप से जाकर कहा—बहिन, भैया तुम्हारी बात सुनते हैं। उन्हें मनाकर दो, यह अन्याय हो रहा है।

विप्रदास को घर के सभी लोग चाहते हैं। किसी के लिए भी बड़े बाबू अपना हक नष्ट करें, यह कोई बरदास्त नहीं कर सकता था।

विप्रदास उक्त तालुके का कागज-पत्र उलट-पलट रहे हैं। अभी तक स्नान भोजन नहीं हुआ है। कुमुदिनी बार-बार उन्हें बुलवा रही है। आखिर वे सूखा-सा चेहरा लेकर भीतर पहुँचे। स्नान-भोजन हो जाने के बाद जब विप्रदास गुड़गड़ी की नली हाथ में लेकर खाट पर तकिए की टेक लगाकर लेट गए तब कुमुदिनी उनके सिरहाने बैठकर धीरे-धीरे उनका सिर दबाती हुई बोली, भैया आप अपना तालुका पट्टे पर न दे सकेंगे।

'क्या तेरे सिर पर नवाब सिराजुद्दौला का भूत आ गया है, तू प्रत्येक बात में ज्यादती कर रही है ?'

'नहीं भैया, बात दबाइये नहीं।'

उस समय विप्रदास अधिक न रुक सके, उठकर सीधे बैठ गए और कुमुदिनी को सिरहाने से हटाकर सामने बैठाया। रुंधे स्वर को साफ करने के लिए जरा खाँसकर बोले—सुबोध ने क्या लिखा है जानती हो ? यह देखो यह कहकर कुर्ते की जेब से सुबोध का पत्र निकालकर कुमुदिनी के हाथ में दे दिया। कुमुदिनी ने सब पढ़कर दोनों हाथों से मुख ढककर कहा—बाप रे छोटे भैया ऐसा पत्र भी लिख सकते हैं ?

विप्रदास ने कहा—अपनी निजि सम्पत्ति में और मेरी सम्पत्ति उसने जब आज भेद देख पाया है तो क्या मैं अपना तालुका अलग रख सकता हूँ ? आज उसके पिता नहीं है, विपत्ति के समय उसे मैं न दूँगा तो दूसरा कौन देगा।

इसके बाद कुमुदिनी कुछ भी न बोल सकी, उसकी आँखों से पानी गिरने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगा विप्रदास पुनः तकिये के सहारे आँख बन्द कर लेट गए।

बहुत देर तक भाई के पैरों को दबाने के बाद कुमुदिनी ने कहा—भैया, माँ का धन तो अभी तक उन्ही का है, उनके वे गहने रहते हुए आप क्यों—।

विप्रदास पुनः चौंककर उठ बैठे, बोले—कुमुदिनी, तू इसे किसी प्रकार नहीं समझ रही है, गहनों से यदि सुबोध आज विलायत में थिएटर सिनेमा देखे तो क्या मैं उसे इसके लिए क्षमा कर सकता हूँ—नहीं, वह कभी मुख दिखाने योग्य न रहेगा। तू उसे इतना दंड क्यों दे रही हो ?

कुमुदनी चुप हो रही, वह कोई उपाय न खोज सकी, तब वह पुनः उसी प्रकार सोचने लगी जैसा उसने पहले अनेक बार सोचा था—क्या कोई असंभव घटना हुई है ? आकाश का कोई ग्रह, कोई नक्षत्र क्षणभर में सारा कष्ट नहीं हटा सकते। किन्तु यह शुभ लक्षण दिखाई पड़ा है कि कुछ दिनों से मेरी बाईं आँख बारंबार फड़क रही है। इसके पहले और भी अनेक बार मेरी बाईं आँख फड़की है, किन्तु उस समय कुछ भी सोचने की आवश्यकता नहीं पड़ी इस बार शुभ लक्षण मन में स्थान जमा रहा है। मानो उसकी स्मृति उसे रखनी होगी—जिसमें शुभ लक्षण की सचाई नष्ट न हो।

दस

विप्रदास का शरीर अस्वस्थ है। वे चादर ओढ़कर अर्द्धसुप्तावस्था में सचाचार-पत्र पढ़ रहे हैं। कुमुदनी की प्रिय विल्ली चादर के फालतू हिस्से को दबाकर गोलाकार होकर सो रही है। विप्रदास का कुत्ता विवस होकर उसकी स्पर्द्धा सहकर मालिक के पैरों के पास सोया हुआ स्वप्न में कभी-कभी गुर्रा उठता है।

ऐसे समय में एक घटक आ पहुँचा।

'नमस्कार।'

'तुम कौन हो ?'

'जी बड़े स्वामी मुझे अच्छी तरह पहचानते थे (झूठी बात), आप लोग उस समय बालक थे, मेरा नाम नीलमणि घटक है; मैं स्वर्गीय गंगामणि घटक का पुत्र हूँ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'क्या काम है ?'

'अच्छा वर मिला है। आप ही लोगों के घर के उपयुक्त है।'

विप्रदास जरा उठकर बैठ गए। घटक ने राजाबहादुर मधुसूदन घोषाल का नाम लिया।

विप्रदास ने आश्चर्यचकित होकर पूछा—लड़का है क्या ?

घटक ने जीभ काटकर कहा—नहीं, उन्होंने विवाह नहीं किया है। बहुत अधिक सम्पत्ति है। स्वय काम-काज देखना छोड़ दिया है। अब गृहस्थी की ओर ध्यान दिया है।

विप्रदास कुछ देर बैठकर हुक्का पीते रहे। तत्पश्चात् एकाएक मानो जोर लगाकर बोल पड़े उसकी आयु का मेल खाने वाली लड़की तो हमारे घर में कोई नहीं है।

घटक इतनी आसानी से छोड़ने वाले नहीं होते, घर की धन-सम्पति कितनी है, और गवर्नर के दरबार में उनके आवागमन का मार्ग कितना खुला है, घुमा-फिराकर वह इन्हीं का वर्णन करने लगा। विप्रदास स्तंभित होकर बैठे रहे। वे पुनः अनावश्यक वेग के साथ बोल उठे—आयु का मेल नहीं हो सकेगा।

घटक ने कहा—सोचकर देखिएगा, दो-चार दिन बाद मैं पुनः एक बार आऊँगा।

विप्रदास के लिए गर्म चाय लेकर कुमुदिनी घर में आ रही थी। दरवाजे के बाहर एक गमछा, भींगा हुआ पुराना छाता और मटमैला जूता देखकर वह रुक गई। उनकी बहुत-सी बातें उसने सुनीं। घटक उस समय कह रहा था—राजाबहादुर इस बार वर्ष बीतते-बीतते महाराजा हो जायेंगे, यह लाट साहब ने स्वयं उनसे कहा है। इसीलिए इतने दिन बाद उनका विचार हुआ है कि अब महारानी का पद रिक्त रखने से काम न चलेगा। आप लोगों के ज्योतिषी किनु भट्टाचार्य दूर के नाते में हमारे समधी हैं, उनके यहाँ कन्या की कुण्डली देखी गई है, लक्षण ठीक मिलते हैं। इस काम के लिए मैंने शहर भर की लड़कियों की कुण्डलियाँ देख डाली हैं, ऐसी कोई भी कुण्डली देखने में नहीं आई। यह देख लीजिएगा, मैं आपसे कहे जाता हूँ, यह सम्बन्ध निश्चय ही होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ठीक इसी समय कुमुदिनी की बाईं ग्राँख पुनः फड़की। शुभ लक्षणों का कैसा ग्रपूर्व रहस्य है। किन्तु ग्राचार्य ने उसका हाथ देखकर कई बार कहा है कि वह राजरानी होगी। हस्तरेखाग्रों का वह प्रत्यक्ष फल ग्राज स्वयं ग्राकर उसके सम्मुख उपस्थित हो गया। उसके ज्योतिषी वार्षिक दक्षिणा पाने के लिए कलकत्ते ग्राए थे, वे कह गए थे। इस ग्राषाढ़ मास से वृषराशि का राजसम्मान है, स्त्री-जनित ग्रर्थ-प्राप्ति, एवं शत्रुनाश होगा, हानि में पत्नी-पीड़ा है यहाँ तक कि पत्नी-वियोग भी हो सकता है। विप्रदास की वृषराशि है। बीच-बीच में शारीरिक पीड़ा का लक्षण है। उसका प्रमाण भी सामने ही है, कल रात से ही सर्दी का लक्षण स्पष्ट है। ग्राषाढ़ मास भी ग्रा गया—पत्नी का कष्ट ग्रौर मृत्यु की बात सोचने की भी ग्रावश्यकता नहीं है, ग्रतएव ग्रब समय ग्रच्छा है।

कुमुदिनी ने भाई के पास बैठकर कहा—भैया क्या सिर में पीड़ा हो रही है।

भैया ने कहा—नहीं।

'चाय ठंडी तो नहीं हो गई? ग्रापके कमरे में ग्रादमी को देखकर मैं न ग्रा सकी।'

विप्रदास ने कुमुदिनी के मुख की ग्रोर देखकर लम्बी साँस ली। भाग्य की कठोरता सबसे ग्रधिक ग्रसह्य है, भाई के मुख पर दुविधा की भावना देखकर कुमुदिनी दुखित हो गई। भाग्य की देन पर भाई क्यों इस प्रकार संदेह कर रहे हैं। विवाह-कार्य में ग्रपनी पसन्द भी एक बाधा है यह चिंता कुमुदिनी के मस्तिष्क में कभी नहीं ग्राई थी। बचपन से ही उसने एक-एक कर ग्रपनी चार बहिनों का विवाह देखा है। कुलीन के घर में विवाह हुग्रा, वंश के ग्रतिरिक्त ग्रौर कुछ भी पसन्द करने की बात न थी। बाल-बच्चों को लेकर वे ग्रपनी गृहस्थी चलाती हैं, इसी तरह दिन कट जाते हैं। दुःख पाने पर भी वे विद्रोह नहीं करतीं, उनके मन में यह विचार भी न ग्राता था कि इसके ग्रतिरिक्त ग्रौर कुछ हो सकता है। कुपुत्र भी होते ग्रौर सुपुत्र भी। स्वामी की भी यही दशा है।

इतने दिनों पश्चात् कुमुदिनी का दुर्भाग्य लम्बे-चौड़े मैदान को पारकर राजपुत्र के रूप में छद्मवेश से ग्राया। रथ के पहियों का शब्द कुमुद ग्रपने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हृदय-स्पन्दन सुन रही है। बाहरी छद्मवेश को वह परीक्षा करके देखना न चाहती थी।

शीघ्रतापूर्वक उसने घर में जाकर पत्र खोलकर देखा आज मनोरथ-पूर्ति की द्वितीय तिथि है। घर के नौकरों में जो कई एक ब्राह्मण हैं उन्हें सन्ध्या समय फलाहार कराकर यथाशक्ति दक्षिणा दी। सभी ने आशीर्वाद दिया—तुम राजरानी बनो, धन-पुत्र से फूलो-फलो।

विप्रदास के पास घटक दूसरी बार आया। वृद्ध ने चुटकी बजाते हुए शिव-शिव कहकर जम्हाई ली। इस बार असम्मति प्रकट करके बात को समाप्त करने का साहस विप्रदास को नहीं हुआ। इतनी बड़ी जिम्मेदारी कैसे ली जाय? यह निश्चय कैसे हो कि कुमुदिनी के लिये यह सम्बन्ध सबसे अच्छा है या नहीं? परसों अन्तिम निर्णय बताऊँगा कहकर उन्होंने घटक को विदा किया।

ग्यारह

बादलों की वृष्टि की छाया से संध्या का अन्धकार घना हो गया। कुमुदिनी के निकट अधिक सामान नहीं है। बगल में छोटी-सी खटिया है, अरगनी पर दो-एक साड़ियाँ और चम्पई रंग का गमछा है। कोने में कटहर की लकड़ी का सन्दूक है, उसमें उसके पहनते के कपड़े हैं। खाट के नीचे हरे रंग के टीन की सन्दूक में पान लगाने का सामान है और एक बक्स में चोटी बाँधने की सामग्री है। दीवाल की आलमारी में कुछ पुस्तकें दावात-कलम और पत्र लिखने का कागज है, माँ के हाथ की ऊन से बुनी हुई पिता के पहनने की चट्टी है, सोने की खाट के सिरहाने राधाकृष्ण का चित्र है। दीवाल के कोने में एक इसराज रखा है।

कुमुदिनी ने घर में दीपक नहीं जलाया। लकड़ी के सन्दूक पर बैठी हुई वह खिड़की के बाहर देख रही है। सामने ईंटों से निर्मित कलकत्ता है जो प्राचीन काल के कवच को पहने हुए भीषणकाय जन्तु-सा जान पड़ता है, जलधारा के बीच धुंधलापन दिखाई दे रहा है। बीच-बीच में उसके शरीर पर प्रकाश-शिखा की बूंदें हैं। वहाँ घर-द्वार मनुष्य सभी उसके अपने आदर्श से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गठित है। उन्हीं के बीच में उसकी सती लक्ष्मी के रूप में प्रतिष्ठा है जिनकी कितनी भक्ति, पूजा और सेवा हो रही है। उसकी माँ के पुण्यचरित्र में एक स्थान पर गम्भीर त्रुटि रह गई है, उन्होंने स्वामी के अपराध पर कुछ समय के लिए धैर्य छोड़ दिया था, कुमुदिनी ऐसी भूल कभी न करेगी।

विप्रदास की पग-ध्वनि सुनकर कुमुदिनी चौंक उठी। भैया को देखकर बोली—क्या दीपक जला दूँ।

'नहीं कुमुदिनी, जरूरत नहीं है।' कहकर विप्रदास सन्दूक पर उसी के निकट बैठ गए। शीघ्रतापूर्वक नीचे उतरकर फर्श पर बैठकर उनका पैर दबाने लगी। विप्रदास ने मधुर स्वर में कहा—बैठक में आदमी आया था इसीलिए तुझे नहीं बुलाया। तू इतनी देर तक अकेली बैठी थी। कुमुदिनी ने लज्जित होकर कहा—नहीं क्षेमा बुआ बहुत देर तक यहीं थीं। बात बदलने के लिए उसने कहा—भैया, बैठक में कौन आया था ?

यही बताने के लिए आया था। इस वर्ष जेठ मास में तू अठ्ठारहवाँ वर्ष पार कर उन्नीसवें में होगी न ?

'हाँ भैया, इसमें हानि क्या है ?

'हानि की बात नहीं है। आज नीलमणि घटक आया था। बहिन लज्जित न होना। जब पिताजी थे तो तू दस वर्ष की थी, तेरा विवाह ठीक हो गया था। यदि उस समय हो जाता तो तेरी राय लेने की कोई आवश्यकता न समझता। किन्तु आज मैं वैसा नहीं कर सकता। तूने राजा मधुसूदन घोषाल का नाम अवश्य सुना होगा। वे वंशमर्यादा में कम नहीं हैं। किन्तु आयु में तुमसे बहुत बड़े हैं। मैं तो राजी न हो सका। इस समय तेरे मुख से कुछ सुनकर मैं कुछ कहूँगा। कुमुद लज्जा न करो।'

'नहीं लज्जा न करूँगी।' कहकर वह कुछ देर चुप रही। पुनः बोली—जिसकी बात आप कहते हैं उसके साथ मेरा सम्बन्ध निश्चय ही ठीक हो गया है। यह प्रतिध्वनि उस घटक की बातों से निकलती है—न जाने कब यह बात मेरे चित्त में जमकर बैठ गई है। विप्रदास ने आश्चर्यित होकर कहा—कैसे ठीक हुआ ?

कुमुदिनी चुप रही।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्रदास ने कुमुदिनी के माथे पर हाथ फेरते हुए कहा—'लड़कपन मत कर कुमुद !'

कुमुदिनी ने कहा—'तुम्हें ज्ञात नहीं है भैया ! मैं जरा-सा भी लड़कपन नहीं कर रही हूँ ।'

भैया पर उसका असीम प्रेम है, किन्तु भैया तो भाग्य को नहीं मानते । कुमुदिनी यह भली प्रकार जानती है कि यहीं पर भैया की दृष्टि कमजोर है ।

विप्रदास ने कहा—'उन्हें तो मैंने देखा भी नहीं ?'

'न सही, मैं तो ठीक जानती ही हूँ ।'

इस स्थान पर भाई-बहन में परस्पर मतभेद है, इसे विप्रदास अच्छी तरह जानते हैं । कुमुदिनी के इस अन्धकारमय हृदय-महल में भाई का कुछ भी अधिकार नहीं । फिर भी विप्रदास ने कह ही डाला—'देख कुमुद ! जीवन भर की बात को शीघ्रतापूर्वक किसी काल्पनिक प्रतिज्ञा रूप में न कह देना ।'

कुमुदिनी ने विह्वल होते हुए उत्तर दिया—वह कल्पना नहीं हो सकती है भैया ! मैं तुम्हारे पाँव छूकर कहती हूँ, मैं और किसी अन्य से विवाह नहीं करूँगी ।'

विप्रदास चौंक उठे । जहाँ कार्य के उचित और अनुचित होने का विचार नहीं, वहाँ तर्क कैसे चल सकता है ! विप्रदास ने समझ लिया कि किसी आन्तरिक प्रेरणा ने कुमुद के हृदय पर अधिकार जमा लिया है । बात सच भी है । आज प्रातःकाल देवता के नाम पर कुमुदिनी ने मन में कहा था—इनसे गिनती के दो-दो फूल अलग रखने के बाद जो फूल बच रहेगा, उसका रंग यदि देवता की भाँति नीला हुआ तो मैं समझ लूँगी कि मेरी पसन्द ही भगवान की इच्छा है और सबके अन्त में जो फूल बचा वह था नीला अपराजित—कोयल ।

पास ही मुहल्ले के मकान में सन्ध्या की आरती का घण्टा बज उठा । कुमुदिनी ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया । विप्रदास काफी देर तक बैठे रहे । बिजली चमक रही थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारह

अनेक बार विप्रदास ने समझाने का प्रयत्न किया। वह कुछ जवाब न देकर सिर झुकाये चुप बैठी रहती। विवाह पक्का हो गया केवल एक मामले में दोनों ओर से बातचीत चल रही है कि विवाह कहाँ पर हो ? विप्रदास की इच्छा थी कि कलकत्ते में हो पर मधुसूदन का हठ है कि नूरनगर में हो। अन्त में नूरनगर में विवाह ही निश्चित हुआ।

विवाह की तैयारियों के लिए कुछ दिन पहले ही नूरनगर आना पड़ा। जेठ-बैसाख की कड़ी धूप के बाद अषाढ़ की वर्षा होने पर जिस तरह देखते ही देखते जमीन हरी हो जाती है, उसी प्रकार कुमुदिनी के आन्तरिक और बाह्य जीवन पर तुरन्त एक नया रंग चढ़ गया। पति के साथ मिलने की इच्छा ने उसे रात-दिन पुलकित कर रखा है। जाड़े की सुहावनी रोशनी उसकी आँखों में चमकने लगी जो अपनी मूक भाषा में उससे अनन्त-काल की बात कहतीं। शयनागार के सामने वाले बरामदे में कुमुदिनी चबेना बिखेर देती है जिसे चिड़िया आकर चुगती हैं ; रोटी का टुकड़ा रखती हैं जिसे गिलहरी चञ्चल दृष्टि से देख अति शीघ्र दौड़ आती और पूंछ के बल खड़ी हो जाती हैं, सामने के दोनों पैरों से रोटी उठा कुतुर-कुतुर कर खाती है। कुमुदिनी ओट में बैठे बड़े आनन्द-पूर्वक उसे देखा करती है। संसार के लिए उसका हृदय आज दक्षिणा से भरा पड़ा है। सयंकाल स्नान करते वक्त वह पीछे के तालाब में गले तक डूबकर चुपचाप बैठी रहती है। तालाब का पानी मानो उसके समस्त अंगों से बातें करता है। पीछे के नींबू के पेड़ की डालियों पर आकर सायंकाल के सूरज की तिरछी रोशनी, घने काले रंग के जल पर, कसौटी पर—स्वर्णिम रेखाओं के समान झिलमिलाती रहती है। कुमुद उन्हें ध्यानपूर्वक देखती रहती। उस प्रकार और छाया में उसके सारे शरीर पर से एक आनन्दोल्लासित कँपकँपी आ जाती है। दोपहर को छत के ऊपर की छोटी-सी कोठरी में जाकर बैठती है। उसकी जवानी के मन्दिर में आज जिस देवता का वरण हो रहा है उसके भावमय रस और रूप में राधा-कृष्ण के युगल रूप का माधुर्य मिल रहा हैं। हाथ में 'इसराज' लिए छत पर बैठी वह मन्द-स्वर में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने भैया के बताये हुए भूपाली गाने का स्वर गुनगुनाती रहती है—

आज मोर घरवा आइल पियरवा रोम-रोम हर खिला।

रात को बिस्तर पर बैठी कुमुदिनी नमस्कार करती है। प्रातःकाल उठने के साथ ही फिर प्रणाम करती है। वह प्रणाम किसे करती है, कहा नहीं जा सकता किन्तु काल्पनिक प्रतिमा के मन्दिर का द्वार सदैव बन्द भी तो नहीं रहता। कानाफूसी की गर्म साँस और तेजी ने जब उस मूर्ति की मनोहर सुन्दरता पर धक्का पहुँचाया तो भला देवता का रूप कैसे टिक सकता था? यह भक्त के लिए बड़े दुःख का समय था।

एक दिन कुमुदिनी के सामने ही तिनकौड़िन नामक बुढ़िया कह बैठी—'मेरी कुमुदिनी का क्या ही अच्छा भाग्य है, कैसा राजा मिल गया है! अरे! क्या मुझे रजबपुर के आनन्दी गुमाश्ते का पता नहीं, उसी का तो यह लड़का है मधुआ। जिस समय देश में अकाल पड़ा था इसने कहीं से चावल मँगाकर बेचे थे जिसकी कमाई अभी तक चलती आ रही है। उसकी माँ को तो हाथ में पकाकर अन्तिम समय तक रोटी खानी पड़ी।'

'उसकी माँ हमारे मुहल्ले की लड़की थी। चक्रवर्ती पुरोहितों में उसका मायका था। सब कहने में क्या बुराई है। अच्छे ब्राह्मणों के घर में तो उसका सम्बन्ध हो ही नहीं सकता था। पर लक्ष्मी जाति-कुल थोड़े ही देखती हैं।'

कुमुदिनी का हृदय इस नये युग की रंगीनियों से कोरा था। जाति कुल की पवित्रता उसकी दृष्टि में बड़ा महत्त्व रखती थी। अपनी दृष्टि पर उसे सदैव क्रोध आता। घर से अचानक रोते हुए बाहर चली जाती। सब सहेलियां व्यंग्य करतीं—'ओफओह!' अभी से इतना दर्द है! यह तो पार्वती को भी मात कर देगी!'

विप्रदास के हृदय पर नये युग का प्रभुत्व है, तथापि जाति-हीनता के विचार ने उनके मन पर अधिकार कर लिया है। इसी कारण अफवाहों को दबाने की बहुत चेष्टा की गई किन्तु जिस प्रकार फटे तकिए को दबाने से उसकी रुई और भी अधिक बाहर निकलती है, यही दशा उनकी भी हुई।

पुराने किसानों में बूढ़ा दामोदर विश्वासी भी था, उससे मालूम हुआ कि काफी समय पहले नूरनगर के पास सियाकुली ग्राम में घोष लोगों की जमींदारी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थी, अब वह चटर्जी वंश के लोगों के कब्जे में है। मूर्तियों के तोड़ने वाले मामलों में किस प्रकार घोष-परिवार का विनाश हुआ, किस प्रकार प्रयत्न करके बड़े चटर्जी ने उन्हें देश और समाज से बाहर निकाल दिया, उसकी कथा सुनाते हुए दामोदर का चेहरा श्रद्धा से चमक उठता था। घोष-परिवार किसी समय धन, कुल तथा प्रतिष्ठा चटर्जी वंश के बराबर था, किन्तु विप्रदास के हृदय में यह भय समाया रहा कि यह विवाह भी किसी पुराने खाते का कोई बकाया कर्जा न हो।

तेरह

अगहन के महीने में विवाह है। लक्ष्मी-पूजा हो चुकी है। उसके दो दिन बाद अचानक कनातें और तम्बू आदि लेकर घोष कम्पनी के इञ्जिनियरिंग विभाग के ओवरसियर आ धमके। साथ में मज़दूरों का एक झुण्ड था। आखिर माजरा क्या है ? मालूम हुआ कि सियाकुली में घोष तालाब के किनारे तम्बू डालकर वह और बराती कुछ दिन पहले ही आकर ठहरेंगे।

विप्रदास ने कहा—'यह कैसी विचित्र बात है ! वे जितनी संख्या में आना चाहें आयें। जितने दिन रहना चाहें रहें। हम सब प्रबन्ध कर देंगे। तम्बू डेरे की क्या आवश्यकता है ? हमारा दूसरा मकान है, उसी को खाली कराये देते हैं।

ओवरसियर ने कहा—'राजा बहादुर की आज्ञा है—तालाब के चारों ओर का सारा जंगल साफ करने को कहा है। आप जमींदार हैं, आपकी अनुमति चाहिये।'

विप्रदास के चेहरे पर लालिमा दौड़ गई, बोले—'यह काम क्या ठीक है ! जंगल तो हम ही साफ करा सकते थे।'

ओवरसियर ने नम्र भाव से कहा—'राजा बहादुर के पूर्वज यहाँ रहते थे इसलिए मन में आया कि स्वयं ही उसे साफ करा लें।'

बात कोई असंगत नहीं थी, किन्तु मन में भ्रम पैदा हो गया। प्रजा कहने लगी कि यह हमारे मालिक पर धाक जमाने का प्रयत्न है। एकाएक लक्ष्मी आ गई है। दबाये नही दबती। उसे राग-रंग और धूम-धाम मचाकर दिखाने के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए यह लीला रची जा रही है। वह समय होता तो दुल्हा-दुलहिन को पालकी सहित बैतरनी पार करने में देर न लगती। छोटे मालिक होते तो सहन न करते। देख लिया जाता कि बाबू और तम्बू कहाँ-से-कहाँ चले जा रहे हैं।

प्रजा ने आकर विप्रदास से कहा—'उनके मुकाबले में हम पीछे नहीं रह सकते। जो खर्च होगा हम लोग मिलकर करें।'

छः आने वाले हिस्से के मालिक गोपाल ने आकर कहा—'कुल का अपमान नहीं सहा जा सकता। एक वह समय था जब हमारे पूर्वजों ने घोषों की अक्ल ठिकाने लगा दी थी। आज वे हमारे इलाके में चढ़ाई करके, रुपये की शान दिखाने आये हैं। अरे, इसमें डरने की क्या बात है भाई साहब ! जो कुछ भी खर्च लगे हम तो हैं ही। जायदाद का बटवारा हो चुका है, किन्तु वंश की मर्यादा का बटवारा तो नहीं हुआ।'

इतना कहकर गोपाल स्वयं कार्यकर्त्ता बन बैठे।

विप्रदास कई दिन से कुमुदिनी के पास नहीं गये थे। उसे किस मुँह से देखेंगे ! वर पक्ष की स्पर्धा की बात कुमुदिनी के सामने कोई नम्रता से कहे इतनी दया या भद्रता तो समाज में है ही नहीं। उसके सामने तो और भी नमक-मिर्च लगाकर कहते। लड़कियों का भी उसी पर क्रोध था कि कुमुदिनी के कारण पुरुषों की बात नीची हो रही है। राजरानी बनने चली हैं। बस देख लो रानी की हुलिया।

जाति-कुल की बात को कुमुदिनी ने अपनी शक्ति से ढक दिया था, किन्तु धन की बढ़ाई करके श्वसुर कुल की तौहीनी करने की नीचता देखकर उसका हृदय ग्लानि से भर गया। अब वह लोगों की दृष्टि से बचती फिरती है, घोष-वंश की लज्जा तो आज उसी की लज्जा है। उसका दिल भैया के मुँह से कुछ सुनने को तड़प रहा है, किन्तु भैया मिलते ही नहीं, भोजन करने के लिए भी वे नहीं आते।

एक दिन विप्रदास अन्तःपुर के बगीचे में भट्ठी का स्थान निश्चित करने गये। देखा तो पीछे के ताल के घाट पर कुमुदिनी नीचे की सीढ़ियों पर बैठी सिर झुकाये पानी की ओर देख रही है। भैया को देखकर वह चट से उठ गई। आने के साथ ही रुँधे कण्ठ से बोली—'भैया, कुछ समझ में नहीं आता।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह कहकर आँचल से मुँह ढककर रोने लगी।

पीठ पर हाथ फेरते हुए विप्रदास ने कहा—'लोगों की बात पर ध्यान मत दो बहन!

'भैया वे लोग यह सब क्या कर रहे हैं? भला यह तो बतलाइए इससे आपकी इज्जत रह सकती है?'

'कुमुद! तू उनकी ओर जरा विचार करके तो देख। पुरखों की जन्म-भूमि में आ रहे है, तनिक भी धूम-घाम नहीं मचायेंगे? इस बात को ब्याह से अलग कर दे, फिर विचार करके देख।'

कुमुदिनी चुप रही। अब विप्रदास से रहा न गया। वे जान पर खेलकर बोले—'यदि तेरे मन में कुछ सन्देह हो तो जल्दी बोल, ब्याह अब भी रुक सकता है।'

तेजी से सिर हिलाते हुए कुमुदिनी ने कहा—'छि:! छि:! ऐसा भी कहीं होता है?' अन्तर्यामी के सामने तो सत्य-ग्रन्थि लग चुकी है। अब जो बाकी है वह तो केवल बाहर की बात है।

विप्रदास का नये युग का मन निष्ठा से अधीर हो उठता है, उन्होंने कहा—'पक्षी-विपक्षी की भलमनसाहत पर ही विवाह बन्धन सत्य हो सकता है। अच्छा-से-अच्छा बहुमूल्य इसराज भी कोई कीमत नहीं रखता यदि बजाने वाले के हाथ ही न हों।'

पुराणों में आया है कि जैसी सीता थी वैसे ही राम थे, जैसी पार्वती थी वैसे ही महादेव थे। आज के समय में बाबू लोगों में तो सज्जनता और सभ्यता रही ही नहीं। इसीलिए तो एक तरफा बड़ाई का शोर मचाते हैं। तेल तो मिलता नहीं किन्तु बत्ती जलाने की चेष्टा में लगे रहते हैं।

कुमुदिनी से कहना व्यर्थ है। वह मन-ही-मन यह निश्चय कर बैठी है कि वे अच्छे हों या बुरे, मेरे जीवन-आधार हैं। न केवल अविवाहित-जीवन बल्कि सतीधर्म का यही लक्ष्य है वह धर्म सुख-दुःख से परे है। मधुसूदन नाम के व्यक्ति में दोष हो सकते हैं, किन्तु पतिदेव नाम में नहीं। अपने पतिदेव के व्यक्तित्व के उच्च भाव के सामने कुमुदिनी ने एकाग्रचित्त से अपने आपको अर्पण कर दिया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौदह

घोष-तालाब के किनारे का जंगल इतना साफ हो गया कि अब उसका पहचानना भी कठिन है। भूमि बिलकुल साफ हो गई। बीच-बीच में कहीं-कहीं सुर्खी की रंगीन सड़क है जिसके दोनों किनारों पर बत्तियों के खम्भे लगे हैं। तालाब का कीचड़ निकाल दिया गया है। घाट के पास दो छोटी-छोटी नौकाएँ बँधी हैं। एक पर लिखा है। 'मधुमती' और दूसरी पर 'मधुकरी।' जिस तम्बू में राजा बहादुर स्वयं ठहरेंगे उसके सामने एक फ्रेम में पीले कपड़े पर लिखा है 'मधुचक्र' एक तम्बू अन्तःपुर का है जो तालाब के पानी तक चटाइयों से घिरा हुआ है। घाट पर नीम का पुराना वृक्ष है। उस पर एक तख्त लगा हुआ है जिस पर लिखा है 'मधुसागर' कुछ थोड़ी-सी जमीन पर भाँति-भाँति के फूलों के गमले रक्खे हैं। गेंदा, बेला, मौलसरी, सूरजमुखी, गुलाब, चमेली इत्यादि। लकड़ी के सन्दूकों में कई प्रकार के विलायती फूल उस स्थान की शोभा बढ़ा रहे हैं। बीच में एक छोटा-सा पक्का तालाब है उसके पिछली ओर बीचोबीच एक लोहे की नग्न स्त्री की मूर्ति है, उसमें से एक उस जगह का नाम रक्खा गया है, 'मधुकुञ्ज।' प्रवेश-द्वार लोहे का बना है, जिस पर नक्काशी का काम है। उस पर एक झण्डा लहरा रहा है। झण्डे पर लिखा है—मधुपुरी।' चारों ओर 'मधु' नाम की छाप है। भाँति-भाँति के रंगीन कपड़ों और कनातों, झण्डियों, रंगीन फूलों और चीनी के लैम्पों से सहसा तैयार हो जाने वाली इस मायापुरी को देखने के लिए लोग दूर-दूर से आने लगे। मधुपुरी के ठाट निराले है। चमकती हुई चपरास डाले, लाल फीतेदार पीली पगड़ी पहने, असली जरीदार वर्दी पहने, और पेरों में विलायती जूते डाटे हुए चपरासियों का गिरोह इधर-उधर फिर रहा है। संध्या समय खाली बन्दूक दागी जाती है। दिन रात घन्टे-घन्टे पर घन्टा बजता है कई लोग चमड़े के कमरबन्द से लटकती हुई विलायती तलवार से जमींदार की जमीन ही खोद डालते हैं। यह रंग-ढंग देखकर चटर्जी परिवार के लोगों के शरीर में आग लग गई है। नूरनगर के कलेजे पर नोकदार झण्डा गाड़ कर उस पर आज घोष परिवार की विजयपताका फहरा रही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पन्द्रह

विप्रदास ने गोपाल को बुलाकर कहा—'आडम्बर की होड़ाहोड़ी करना तो ओछे आदमियों का काम है।'

गोपाल ने कहा—'भगवान् ने न जाने कौन-सा थैला झाड़ कर इतने आदमी बना डाले हैं। बड़ी-बड़ी बातें बनाने वाले लोगों के लिए चार मुँह चाहिए। रुपये में साढ़े पन्द्रह आने आदमी ओछे हैं। उसने अपने सम्मान की रक्षा करनी है तो ओछे ही का रास्ता ग्रहण करना पड़ेगा।'

विप्रदास ने कहा—'तुम इस तरह जीत न सकोगे। अच्छा यही है सीधे-सादे ढंग से कार्य किया जाय। योग्य ब्राह्मण को बुलाकर सामवेद के अनुसार शुद्ध अनुष्ठान कराया जाय। वे राजा हो गये हैं। उन्हें अपने आडम्बर का प्रदर्शन करने दो। हम ब्राह्मण हैं; हमारा काम यह नहीं।'

गोपाल ने कहा—'भाई साहब भूलते हैं। यह सतयुग नहीं। आप कीचड़ पर नाव चलाना चाहते हैं! आपकी इतनी प्रजा है, तनू सरकार हैं, आपके ताल्लुकेदार मादू प्रमाणिक, करमदीन विश्वास, पान्चू मण्डल ये लोग क्या आपकी इस स्वाहा की पण्डिताई को समझ सकेंगे? ये क्या याज्ञवल्क्य की सन्तान हैं? इनकी तो छाती फट जायगी। आप चुपचाप रहिए। आपको कुछ भी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं।'

गोपाल प्रजा से मिलकर कमर बाँधकर जुट पड़ा, सबने छाती तानकर कहा—'रुपये की क्या चिन्ता है?' नौकर-चाकर, प्यादे-बरकन्दाज इत्यादि सभी छोटे बड़े नौकरों ने नई लाल बनात की पोशाक पहिनी, रंगीन धोतियाँ पहन लीं, लाल कपड़े से मढ़ा हुआ झालर और झण्डियोंदार नौबतखाना खड़ा किया, सात कोस की दूरी से उसकी चोटी दिखाई पड़ती। दोनों साझीदारों ने मिल कर अपने चार-चार हाथी निकाले, उन पर हौदा साज चढ़ाया। बिना प्रयोजन ही घोष तालाब के सामने सड़क पर वे सूंड हिला-हिला कर टहला करते। गले में टन-टन घण्टा बजता।

'और चाहे जो हो, सन के बोरों में से हाथी नहीं निकलते।' यह कहकर हर एक आदमी खिलखिला कर हंस पड़ता और पेट भर कर हंसता।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अगहन सुदी दशमी को विवाह है। केवल दस दिन शेष रह गये। इतने में लोगों से पता मिला कि राजाबहादुर आ रहे है अपने दल बल सहित। अब चिन्ता हुई कि क्या करना चाहिए। मधुसूदन ने उन्हें कोई समाचर नहीं दिया है। शायद सोचा हो कि सभ्यता साधारण लोगों के लिए आवश्यक है। राजाओं के लिए असभ्यता ही उचित है। ऐसी दशा में स्वयं स्टेशन पर जाकर उनका स्वागत करना क्या उचित होगा? खबर न देने का उचित जवाब तो खबर न लेना ही है।

यह सब सच है, किंतु तर्क के द्वारा दुनिया में दुःखों से मुक्ति नहीं मिलती, कुमुदिनी से विप्रदास को गहरा प्रेम है, कहीं उसके दिल को चोट न लग जाय यही चिन्ता उनके सब विचारों को पीछे छोड़ जाती है। स्त्रियों को कष्ट पहुँचाना बहुत सहज है क्योंकि उनका मर्मस्थान चारों ओर से खुला हुआ है। जबर्दस्तों के हाथ में ही समाज ने लाठी दी है। कमजोरों का सहायक और मित्र कौन है? ऐसी दशा में स्नेह के स्थान को क्रोध, द्वेष तथा ईर्षा के तूफान में बहाकर अपने अभिमान की रक्षा करना कायरता है—यह थे विप्रदास के मन के भाव और दृढ़ विचार।

विप्रदास किसी से सलाह लिए बिना ही घोड़े पर सवार होकर स्टेशन चल दिये। करीब पाँच बजे गाड़ी आ पहुँची। राजा साहब अपने दल-बल सहित गाड़ी से उतरे। विप्रदास से मिलकर रूखे-भाव से नमस्कार करके बोले—'ओफओह! आपने क्यों कष्ट किया?'

विप्रदास ने कहा—'आप भी खूब हैं! पहले पहल हमारे देश में आये हैं। मैं स्वागतार्थ भी न आता?'

'आप भूलते हैं। मैं अभी आपके देश में नहीं आया। वह आना होगा विवाह के दिन!' विप्रदास इसका मतलब नहीं समझ सके। स्टेशन की भीड़-भाड़ में वाद-विवाद उचित नहीं। इसलिए केवल इतना ही कहा—घाट पर बजरा तैयार है। राजा साहब ने कहा—'इसकी जरूरत न होगी। हमारा स्टीम-लंच आ गया है।'

विप्रदास ने समझ लिया कि विशेष कुछ कहने का मौका नहीं, किन्तु फिर भी उन्होंने कहा—'खाने-पीने की चीजें, रसोई की नाव, सब कुछ तैयार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है । क्यों आपने व्यर्थ कष्ट उठाया । हमें किसी वस्तु की आवश्यकता न होगी । देखिए, एक बात याद रखिये—मैं आया हूँ अपने पूर्वजों की जन्मभूमि में, आपके देश में नहीं । आपके यहाँ विवाह के दिन जाने की बात है ।'

विप्रदास ने समझ लिया कि नरम होने की कोई आशा नहीं । कलेजे के भीतर धड़ाका-सा बैठ गया । स्टेशन के वेटिंग रूम में जाकर आरामकुर्सी पर लेट गये । जाड़े की संध्या थी, अंधेरा छा रहा था । पश्चिम से गाड़ी आने की घण्टी बजी । स्टेशन की बत्तियाँ जल गईं । लगाम ढीली करके घोड़े को अपनी स्वेच्छानुसार चलने की स्वतन्त्रता देकर विप्रदास जब घर पहुँचे तो काफी रात हो चुकी थी । कहाँ गये थे, क्या बात थी, यह किसी से नहीं बताया ।

उसी रात विप्रदास को ठण्ड लग कर खाँसी शुरू हो गई और धीरे-धीरे बढ़ने लगी । उन्होंने कोई परवाह नहीं की । जिसका परिणाम यह हुआ कि बीमारी और भी बढ़ गई । अन्त में बहुत कह सुनकर कुमुदिनी ने उन्हें बिस्तर पर लिटाया और विवाह के सारे काम-काज का भार गोपाल ने सम्भाला ।

सोलह

एक-दो दिन बाद गोपाल ने आकर विप्रदास से कहा—'क्या करूँ, कोई उपाय बताइए ।

विप्रदास ने उत्सुकता से पूछा—क्यों, क्या हुआ ?'

'साथ में कुछ अंग्रेज आये हैं । शायद दलाल होंगे या विलायती शराब की दूकान के कलवार । कल पीरपुर के तालाब से कम-से-कम दो सौ बगुले मार लाये हैं । आज गये हैं चन्दनपुर की झील पर । ऐसे जाड़े के दिनों में वहाँ सुहावना मौसम है । वहाँ वे उनकी हत्या करेंगे ।'

विप्रदास चकित हुए, किन्तु कुछ बोले नहीं ।

गोपाल ने कहा—'तुम्हारी ही आज्ञा है कि उस झील पर कोई शिकार न खेले । उस बार जिले के मजिस्ट्रेट तक को रोक दिया गया था । हम तो डर गये थे कि कहीं तुम्हें भी बत्तख समझ कर गोली न मार दे । वह भला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आदमी था किन्तु यह तो किसी की भी मानने वाले नहीं। फिर भी यदि कहो तो एक बार कह...।'

विप्रदास जल्दी से बोले—'नहीं-नहीं, कुछ मत कहो।'

चीते के शिकार में जिले भर में विप्रदास का कोई सानी नहीं। एक बार चिड़िया मारने पर उनके मन में इतनी ग्लानि हुई कि उस दिन से उन्होंने अपने इलाके में चिड़िया का शिकार ही बिलकुल बन्द कर दिया।

कुमुदिनी बैठी विप्रदास के माथे पर हाथ फेर रही थी। गोपाल के चले जाने पर उसने गम्भीर स्वर में कहा—'भैया, मना करवा दो।'

'क्या मना करवा दूं?'

'पक्षियों का शिकार!'

'वह उलटा समझेंगे कुमुद और शायद सहन भी न कर सकेंगे।'

'रहने भी दो, मान-अपमान केवल उन्हीं का नहीं, दूसरों का भी है।'

विप्रदास कुमुदिनी की ओर देखकर मन में मुस्कराये। वे जानते थे कि कुमुदिनी मन-ही-मन सती-धर्म का पालन कर रही है। साधारण पक्षी के लिए कहीं और ही कुछ न हो जाय।

विप्रदास ने स्नेह-पूर्ण स्वर में कहा—'क्रोध मत कर कुमुद! मैंने भी तो किसी दिन चिड़िया मारी थी। उस समय मैं भी उसे अन्याय नहीं समझता था; आज उनकी भी यही दशा है।'

फिर क्या था; पूर्ण उत्साह के साथ शिकार चलने लगा, पिकनिक और शाम को बैण्ड बाजे के साथ ही अंग्रेज अतिथियों का नाच। तीसरे पहर टेनिस तथा इसके अतिरिक्त नावों पर तीन-तीन, चार-चार पर्दे चढ़ाकर ताल में शर्त लगाकर पाल का खेल—उसी को देखने के विचार से गाँव के बहुत से लोग ताल के किनारे एकत्र हो जाते, रात को निमन्त्रण में भोजन के बाद आवाजें उठतीं तथा इन सब विलासों के नायक और नायिकायें साहब तथा मेमें होतीं। इसी कारण गाँव के लोग चौंक पड़ते हैं, सोने के टोप पहने जब यह लोग हाथ में फँसाने की छड़ी लिये मछली का शिकार करते हैं तो वह दृश्य दर्शनीय होता है। इसके अतिरिक्त दूसरी तरफ लाठी का खेल, कुश्ती, नाव चलाने की होड़, रहस्य, शौकी थियेटर और चार-चार हाथियों का घूमना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इसके सामने था ही क्या ?'

विवाह के दो दिन पूर्व ही तेल ताई है, सौगात की चीजों में मूल्यवान जेवरों से लेकर खेलने की गुड़िया तक जितनी भी वरपक्ष की ओर से आई उनकी छटा देखकर सब लोग हैरान रह गये, उसके लाने वाले मजदूरों की संख्या भी काफी थी। चटर्जी परिवार ने बहुत शान के साथ उन्हें विदा किया।

आखिर सर्वसाधारण को खिलाने-पिलाने के बारे में विवाह के कुरुक्षेत्र का द्रोणपर्व आरम्भ हुआ।

उस दिन डुग्गी पिटवाकर सर्वसाधारण को निमन्त्रण दिया गया मधुसागर के किनारे मधुपुरी में आने के लिए, बुलाये बिन बुलाये सब आ सकते हैं, किसी के लिए रोक-टोक नहीं, गोपाल गुस्से से आगबबूला हो गया। बोला—'जरा हौसला तो देखो, हम लोग जमींदार हैं, उन लोगों को क्या अधिकार है कि वे अपनी मधुपुरी खड़ी कर दें।'

इधर भोज की तैयारी खूब धूमधाम से हो रही थी, सबको मालूम हो गया कि साधारण फलाहार नहीं। वहीं खीर, दही, मछली, खोवा, बर्फी, मैदा, बेसन, आटा, घी इत्यादि धूमधाम के साथ आने लगे। पेड़ों के नीचे बड़ी-बड़ी भट्टियाँ तैयार की गईं। भाँति-भाँति की कड़ाहियाँ, हाड़ियाँ, परातें, कलसे, गंगाजल, मटके इत्यादि मँगाये गये, बैलगाड़ियों पर लादकर आलू, बैंगन, केले, कद्दू इत्यादि भाँति-भाँति की तरकारियाँ आने लगीं, भोज शाम को होने वाला था।

चटर्जी परिवार में दोपहर के बाद भोजन है। किसानों के गिरोह-के-गिरोह मिलकर अपने आप ही तैयारियाँ कर रहे हैं। हिन्दुओं के लिए अलग जगह है और मुसलमानों के लिए अलग। प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व ही भट्ठियाँ जला दी गई हैं। सामान चाहे इतना न हो किन्तु चटर्जी परिवार की जय बोली जा रही है। गोपाल ने स्वयं शाम को पाँच बजे तक भूखे रहकर अपने सामने सबको खिलाया, इसके बाद भिखारियों को बाँटा गया, स्वामिभक्त प्रजा ने अपने आप ही दान-वितरण की व्यवस्था की प्रसन्नता और आनन्द के शोर ने एक विचित्र समय पैदा कर दिया था।

मधुपुरी में दिन भर भट्ठियाँ गर्म रहीं, नाना प्रकार के खाने तैयार हुए,

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूर-दूर तक उनकी सुगन्ध जाती थी, कसोरे के ढेर लग गए, सब्जी और मछली के छिलकों वाले ढेर पर दुनिया भर के कौवे और 'कुत्ते जमा हो गये, आपस में खूब झपटा-झपटी हो रही है। रात हो गई, रोशनी जगमगा उठी, मटिया बुर्ज वाली रोशनी चौकी ने एक-एक करके सारी गत बजा डाली। राजा बहादुर के पास उनके नौकर-चाकर जा-जाकर कह रहे हैं कि अभी तक लोग काफी नहीं आये, आज पेंठ का दिन है, दूसरे इलाके से जो पेंठ करने आये थे, उन्हीं में से कोई-कोई पत्तल बिछी देख कर बैठ गये हैं। कंगले-भिखारी भी बहुत थोड़े आये हैं।

मधुसूदन ने तम्बू के भीतर जाकर एक गहरी साँस ली—'हूँ।'

छोटे भाई राधू ने आकर कहा—'भैया, अब हो चुका, चलिए कलकत्ते वापस लौट चलें।

'क्यों ?'

यह सब लोग बदमाशी कर रहे हैं, उनसे बड़े घरानों की लड़कियाँ तुम्हारी उँगली का इशारा पाते ही आ जायँगी, केवल एक बार 'तू' करने की आवश्यकता है।

मधुसूदन गरजकर बोला—'जा, चला जा यहाँ से।'

सौ वर्ष पूर्व जो कुछ हुआ था आज भी वही सब हुआ, इस बार भी एक पक्ष के आडम्बर की चोटी बहुत ऊँची बनाई गई थी, दूसरे पक्ष ने उसे रास्ते से निकलने न दिया किन्तु हार-जीत बाहर से देखने में नहीं आती।

चटर्जी की प्रजा खूब हँस ली। विप्रदास रोग-शय्या पर पड़े थे, उनके कानों तक कोई खबर पहुँच ही न सकी।

सत्रह

विवाह के दिन राजा ने आज्ञा दी, बधु के घर जाने के मार्ग में धूमधाम एक दम बन्द कर दो। रोशनी नहीं जलाई गई, बाजे नहीं बजे, साथ में केवल अपने पुरोहित और दो भाट थे। पालकी में बैठ कर वर धीरे से विवाह-मंडप में आया, लोगों को पता तक न चला। उधर मधुपुरी के तम्बू में प्रकाश जला कर और बैंड बजा कर आनन्द मनाते हुए वर-पक्ष वाले भोजन करने में लगे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थे। गोपाल ने समझा यह उल्टा उत्तर है। ऐसी परिस्थिति में कन्या पक्ष वाले हाथ-पैर जोड़कर मनाने का प्रयत्न करते हैं किंतु गोपाल ने कुछ भी नहीं किया। उसने एक बार पूछा तक नहीं कि बराती कहाँ रह गये क्यों नहीं आए।

कुमुदिनी सज-धज कर विवाह-मंडप में जाने के पूर्व भैया को प्रणाम करने के लिए आई, उसकी सारी देह काँप रही थी। उस समय विप्रदास को बड़े जोर का बुखार था, छाती और पीठ पर राई-सरसों का लेप किया गया था, कुमुदिनी उनके पैरों पर सिर रखकर अपने को रोक न सकी, वह सिसकती हुई रो पड़ी। क्षेमा बुआ ने उसके मुख पर हाथ रखकर कहा—छिः छिः इस प्रकार रोना नहीं चाहिये।

विप्रदास जरा उठकर उसका हाथ पकड़कर उसे पास बैठाकर उसके मुख की ओर देखकर कुछ देर तक चुप रहे—उनकी दोनों आँखों से आँसू गिरने लगे। क्षेमा बुआ ने कहा—समय तो हो गया है।

विप्रदास ने कुमुदिनी के सिर पर हाथ रखकर रुंधे हुए कंठ से कहा—ईश्वर कल्याण करें। यह कहकर बिस्तर पर लुढ़क गये।

विवाह के समय कुमुदिनी की दोनों आँखों से निरंतर आँसू गिरते रहे। जब उसने वर के हाथ में अपना हाथ दिया तो वह एकदम ठंडा बर्फ-सा था, और थर-थर काँप रहा था। क्या उसने शुभ अवसर में भी स्वामी का मुख देखा ? संभवतः नहीं देखा। इन लोगों के व्यवहार से उसका हृदय पति से भयभीत हो रहा था। मानो पक्षी को ऐसा प्रतीत हो रहा था कि यह उसका घोंसला नहीं, वरन् जाल है।

मधुसूदन देखने में कुरूप नहीं है किंतु बड़ा कठोर हृदय है। काले मुख पर जहाँ सबसे पहले दृष्टि पड़ती है वह है पक्षी के चोंच की-सी बड़ी टेढ़ी नाक, जो ओंठ के सम्मुख तक झुकी हुई मानो पहरा दे रही है। घनी भौंहों के ऊपर चौड़ा मस्तक रुके हुए स्रोत के समान हैं। उन्हीं भौहों की छाया के नीचे छोटी तिरछी आँखें हैं। मूँछ-दाड़ी सफाचट है। ओठ पतले और ठुड्डी बड़ी है। बाल मोटे और सिर तक बारीक कटे हुए हैं। शरीर खूब गठा हुआ है, जितनी उम्र है उससे कम ही मालूम पड़ती है, किंतु कान के दोनों ओर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ बाल सफेद हो गए हैं। कद लम्बा नहीं है, कुमुदिनी के बराबर कद का ही है। दोनों हाथों में रोएँ हैं किन्तु शरीर के अन्य भागों से छोटे हैं। सब दखने से ऐसा जान पड़ता है कि यह व्यक्ति एक दम दृढ़ है।

विवाह इस ढंग से हुआ कि किसी को भी अच्छा न लगा। वर और कन्या पक्ष के प्रथम मिलन में ही ऐसी बेसुरी झनझनाहट उठी कि उसके बीच उत्सव का समय न जाने कहाँ गायब हो गया। कुमुदिनी के मन में एक प्रश्न रह-रहकर उसके हृदय को जबरदस्ती ठेल उठता था कि क्या ईश्वर उसे एकदम भूल गए? वह अपने सन्देह को प्राणपण से दबाती, घर में अकेली बैठी हुई बार-बार जमीन में माथा टेककर प्रणाम करती, कहती --मन निर्बल मत बनो। उसके लिए सबसे अधिक कठिन हो रहा था अपने भाई से संशय को छिपाना।

माता की मृत्यु के बाद विप्रदास कुमुदिनी की सेवा पर ही निर्भर थे। कपड़ा-लत्ता, दैनिक व्यय के रुपये-पैसे, पुस्तक की आलमारी, घोड़े का दाना, बन्दूक की सफाई, कुत्ते की सेवा, कमरे की सफाई, संगीत पत्रों का निरीक्षण शयनगृह और बैठकखाने की सफाई—सब कुछ कुमुदिनी के ही हाथ में थे। दैनिक कार्यों में जब तक कुमुदिनी का हाथ न लगता तब तक उन्हें सन्तोष ही न होता था। उसी रोग-शय्या पर पड़ने के पूर्व उसे जितने दिनों तक उनकी सेवा करनी पड़ी उस बीच इस बात की अत्यन्त चेष्टा की कि कहीं उसकी चिन्ता की भावनाओं को उसके भाई भाँप न लें। कुमुद के इसराज बजाने की प्रवीणता पर विप्रदास को बहुत गर्व था। संकोचवश कुमुदिनी पहले तो सरलता से बजाना ही न चाहती, किन्तु इधर दो दिनों से वह स्वयं भैया को कनाडा और मालकोस राग सुना रही है। उस आलाप में उसके देवता की स्तुति, उसकी आशंका और आत्म-निवेदन था। विप्रदास आँख बन्द कर चुप-चाप सुनते थे। सिंधु-विहाग और भैरवी बजाने के जिन स्वरों में विरह-वेदना का क्रन्दन ध्वनित होता है, उन्हीं स्वरों में भाई और बहिन दोनों की व्यथा एक में मिल जाती थी। दोनों न मुख से कुछ बोलते, न परस्पर सांत्वना देते, न दुःख ही प्रगट करते चुपचाप रहते।

विप्रादास का बुखार, खांसी और छाती का दर्द दूर नहीं हुआ—अपितु बढ़ता ही गया। डाक्टर ने कहा—इन्फ्लुएंजा है, हो सकता है निमोनिया में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परिणत हो जाय, खूब सावधान रहना चाहिए। कुमुदिनी की व्याकुलता की सीमा नहीं है। यह निश्चित हुआ था कि विवाह के तीसरे दिन कलकत्ते लौट आवेंगे। किन्तु सुना गया कि मधुसूदन ने एकाएक प्रतिज्ञा की कि विवाह के दूसरे ही दिन कुमुदिनी को लेकर चले जायेंगे। कुमुदिनी समझ गई कि यह नश्चय आवश्यकता और प्रेम के निमित्त नहीं, शासन के लिए हो रहा है। ऐसी अवस्था में कृपा-भिक्षा माँगने में अभिमागिनी के सिर पर वज्राघात होता। तो भी कुमुदिनी ने मस्तक नीचा करके लज्जा छोड़कर काँपते हुए स्वर से विवाह की रात में ही अपने स्वामी से केवल यह प्रार्थना की कि उसे दो दिन और बिता के घर पर रहने दिया जाय जिससे कि वह अपने भाई को कुछ स्वस्थ रूप में देखकर जा सके। प्रत्युत्तर में मधुसूदन ने संक्षेप में कहा—सब तैयारी हो चुकी है एक-पक्षीय व्यवस्था वज्ररेखा-सी ऐसी दृढ़ थी कि उसमें कुमुदिनी की मर्मान्तक वेदना के प्रति भी सहानुभूति न थी। इसके बाद मधुसूदन ने कुमुदिनी से बातें करने की बहुत चेष्टा की किन्तु उसने किसी बात का उत्तर नहीं दिया—विस्तर के किनारे मुख फेरकर चुपचाप सो रही।

अभी अन्धेरा है, पक्षियों का कलरव सुनते ही वह बिस्तरे से उठकर चली गई।

विप्रदास रात भर छटपटाते रहे। सन्ध्या के समय शरीर में ज्वर होते हुए भी वे विवाह-मण्डप में जाने के लिए तैयार हो गए। डाक्टर ने बहुत प्रयत्न करके उनको रोका। बहुत से व्यक्तियों को भेजकर उन्होंने खबरें मँगवाई। युद्ध के समाचारों की भाँति अधिकाँश खबरें बनावटी थीं। विप्रदास ने पूछा—बरात कब आई? बाजों की आवाज सुनाई नहीं पड़ी।

संवादाता शिवू ने कहा—हमारे दामाद बड़े बुद्धिमान हैं, घर में बीमारी सुनकर उन्होंने सब बन्द करवा दिया है; ऐसी व्यवस्था हुई है कि बरातियों की पग-ध्वनि भी न सुनाई पड़े।

अरे शिवू खाने-पीने की चीजें तो कम नहीं पड़ीं न? मुझे इसकी चिन्ता बहुत थी कि कलकत्ते-सी व्यवस्था यहाँ न हो सकेगी।

वाह हुजूर, कैसी बात कहते हैं; होगी क्यों? कितनी तो फेंक देना पड़ी। उतने ही व्यक्तियों का भोजन अभी बचा हुआ है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वे लोग प्रसन्न तो हुए हैं न ?

किसी के मुख से कोई शिकायत नहीं सुनी गई। हमने और भी बहुत से विवाह देखे हैं जिनमें बरातियों की ज्यादती से कन्या पक्ष वालों की नाक में दम हो जाता है। ये लोग तो ऐसे शान्त हैं कि यह पता नहीं चलता कि वे आए हैं या नहीं।

विप्रदास ने कहा—वे कलकत्ते के निवासी हैं, इसीलिए सज्जनोचित व्यवहार को जानते हैं। समझते हैं कि जिस घर से लड़की ले जाना है उनका अपमान अपना ही अपमान है।

वाह हुजूर, आपने जो सुन्दर बात कही है उसे मैं उन लोगों को भी सुना दूंगा, सुनकर प्रसन्न हो जायेंगे।

कुमुदिनी कल संध्या समय ही समझ गई थी कि बीमारी अधिक है। इसलिए यह सोचकर उसकी छाती जाल में फंसे हुए पक्षी की भाँति छटपटाने लगी कि वह अब अपने भाई की सेवा न कर सकेगी। वह सेवा जो उसके भाई के लिए दवा से भी बढ़कर है।

स्नान करके देवता को फूल चढ़ाकर जब कुमुदिनी भैया के कमरे में आई उस समय सूर्य नहीं निकला था। कठिन रोग के साथ बहुत देर तक लड़कर क्षण भर विश्राम पाने के लिए जो अवसाद का वैराग्य आता है उसी वैराग्य से विप्रदास का मन उस समय शिथिल था। जीवन में आसक्ति, गृहस्थी की चिन्ता, सब कुछ उन्हें अनाज कटे हुए खेत की भाँति धूमिल दिखाई दे रहा था। रात भर दरवाजा बन्द था, डाक्टर ने प्रातःकाल पूर्व की खिड़की खोल दी है। पीपल की ओर से भींगे पत्तों की आड़ से लाल-लाल आकाश की आभा धीरे-धीरे शुभ्र हो रही है; निकट ही नदी में पाल लगी हुई महाजनों की बड़ी-बड़ी नावें उस लाल आकाश की गोद में चमचमा उठीं, नौबतखाने में करुण स्वर में रामकली बजने लगी।

बगल में बैठी हुई कुमुदिनी ने अपने दोनों ठंडे हाथों में भाई के दोनों गर्म हाथों को ले लिया। विप्रदास का टैरियर नामक कुत्ता खाट के नीचे मन उदास किए चुपचाप लेटा हुआ था। कुमुदिनी जब आकर खाट पर बैठी तो तुरन्त उठकर दोनों पैर उसकी गोद में रखकर पूंछ हिलाते हुए करुण नेत्रों से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षीण आर्त स्वर में उसने न जाने क्या पूछा। विप्रदास के मन के भीतर कोई चिन्ता-धारा उठ रही थी, इसीलिए वे एकाएक बिना किसी प्रसंग के बोल उठे—बहिन, वास्तव में कुछ नहीं, कौन बड़ा है कौन छोटा, कौन उच्च है कौन नीच, यह सब बनावटी बातें हैं। फेन के बीच बुलबुलों में किसका स्थान कहाँ है, इसका विचार व्यर्थ है। अपने आप स्वयं सरल बने रहने पर, तुम्हारा कोई कुछ न कर सकेगा।

मुझे आशीर्वाद दीजिए भैया, आशीर्वाद दीजिए, कहकर कुमुदिनी दोनों हाथों से अपना मुख ढककर रोने लगी।

विप्रदास ने तकिए पर ठेस देकर कुमुदिनी का मुख अपनी ओर खींचकर उसका मस्तक चूम लिया।

डाक्टर ने कमरे में प्रवेश करके कहा—कुमुदिनी बहिन, बस रहने दो, इस समय उन्हें जरा शांत रहने की आवश्यकता है।

कुमुदिनी ने रोगी की तकिया ठीक करके शरीर पर गर्म कपड़ा ओढ़ा दिया, साथ की मेज पर सब चीजें सँभालकर रख दीं और भैया के कान में धीरे से कहा—अच्छे होते ही कलकत्ते चले आइएगा भैया, वहाँ आपसे भेंट होगी।

प्रेमपूर्ण दोनों आँखें कुमुदिनी के मुख की ओर करके विप्रदास ने कहा—कुमुदिनी, पश्चिम का बादल पूर्व में जाता है, पूर्व का बादल पश्चिम में जाता है, यह सब होनहार होती ही है। संसार में वही हवा बह रही है। बादल के समान अपने को भी समझना बहिन। आज से हम लोगों की अधिक चिंता न करना। तू जहाँ पर जा रही है वहाँ पर लक्ष्मी का स्थान प्राप्त करो। यही मेरा हार्दिक आशीर्वाद है। हम लोग तुझसे और कुछ भी नहीं चाहते।

कुमुदिनी भैया के पैरों के पास सिर रखकर पड़ी रही। अब मुझे कुछ भी नहीं चाहिए। अब यहाँ की दैनिक जीवन-यात्रा में मेरा कोई हाथ न रहेगा क्षण भर में ही इतने बड़े विच्छेद की बात मन में स्थान नहीं पा रही है। आँधी जब नौका को किनारे से खींच ले जाती है तब जिस प्रकार लंगर मिट्टी को जकड़कर पकड़ रखना चाहता है उसी प्रकार भैया के चरणों के निकट कुमुदिनी की व्यग्रता का यह अंतिम बन्धन है। डाक्टर ने पुनः आकर कहा—रहने दो बहिन। कहकर उसने अपनी सजल आँखें पोंछ डालीं। कमरे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के बाहर जाकर दरवाजे के बाहर जो चौकी थी उस पर बैठकर मुख को आँचल से ढँककर कुमुदिनी रोने लगी। अचानक उसे याद आया भैया के 'वेसी' नामक घोड़े का, उसे अपने हाथ से खिलाकर जाने के लिए उसने कहा, कल रात में गुड़ मिले हुए आटे की रोटी बनाकर रखी हैं। सईस आज उसे पीछे वाले बाग में छोड़ गया है। कुमुदिनी ने वहाँ जाकर देखा कि घोड़ा वृक्ष के नीचे घूमता हुआ घास खा रहा है। कुमुदिनी के पैरों की आहट दूर से ही पाकर वह कान खड़े करके हिनहिनाकर पुकार उठा। कुमुदिनी अपना बाँया हाथ उसकी पीठ पर रखकर दाहिने हाथ से रोटी उसके मुख के पास रखकर खिलाने लगी। खाते-खाते बड़ी-बड़ी काली आँखों से वह कुमुदिनी के मुख की ओर कटाक्ष करने लगा। खिला चुकने के पश्चात् वेसी के दोनों नेत्रों के बीच के चौड़े मस्तक को चूमकर कुमुदिनी दौड़कर चली गई।

अठारह

विप्रदास ने सोचा था कि मधुसूदन इन दिनों एक बार उसे देखने के लिए आवेगा। जब वह नहीं आया तो विप्रदास को यह समझना शेष न रहा कि दो परिवारों का यह विवाह-संबंध ही परस्पर के विच्छेद में खंगरूप होकर आया है। उसने डाक्टर को बुलाकर पूछा—क्या मैं जरा इसराज बजा सकता हूँ ?

डाक्टर ने कहा—'नहीं, आज नहीं।'

तब जरा कुमुदिनी को बुला दीजिए, वह बजावे। डाक्टर, अब न जाने कब उसका बजाना सुनने को मिलेगा।

डाक्टर ने कहा—आज सवेरे नौ बजे की गाड़ी से ही वह बिदा होगी, नहीं तो सूर्यास्त के पूर्व वह कलकत्ते न पहुँच सकेगी। कुमुद को तो अब समय नहीं है।

विप्रदास ने गहरी साँस लेकर कहा—हाँ, अब समय हो चुका है। उसके उन्नीस वर्ष यहाँ कट गए, अब वह यहाँ एक घंटा भी नहीं रुक सकती।

बिदाई के समय पति-पत्नी एक साथ प्रणाम करने के लिए आए। मधुसूदन ने सज्जनता प्रदर्शित करके कहा—आपका स्वास्थ्य तो अभी अच्छा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं जान पड़ता।

विप्रदास ने इसका कुछ भी प्रत्युत्तर न देकर कहा—भगवान तुम लोगों का कल्याण करें।

'भैया अपने शरीर पर ध्यान दीजिये, कहकर कुमुदिनी पुनः विप्रदास के पैरों पर गिरकर रोने लगी।

इसके बाद बरात धूमधाम करके बिदा हो गई।

जब वर-वधु बिदा हुए तो वह दृश्य आज न जाने क्यों विप्रदास को भयानक-सा प्रतीत हुआ। प्राचीन इतिहास में तैमूरलंग ने असंख्य मनुष्यों के कंकाल का स्तम्भ बनाया था। किन्तु इस चादर और आँचल की ग्रंथि से निर्मित जीवन-मृत्यु के विजय-तोरण को यदि नापा जाय तो उसकी चोटी न जाने किस नर्क को जाकर स्पर्श करेगी, परंतु आज यह न जाने कैसी भावना उनके मन में बार-बार आ रही थी।

पूजा-पाठ में विप्रदास की आस्था कभी न थी। तो भी आज हाथ जोड़कर वे मन-ही-मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगे।

विप्रदास एकाएक चौंककर बोल उठा—डाक्टर, बुलाना तो दीवानजी को।

विप्रदास को अकस्मात् स्मरण आया कि विवाह होने के कुछ दिन पूर्व जब सुबोध को रुपए भेजने के लिये उनका मन अत्यन्त उद्विग्न था, तब बही-खाता देखने में वे व्यस्त थे—ग्यारह बजने का समय था—ऐसे समय में एक अत्यंत कंगाल व्यक्ति आकर उपस्थिति हुआ जिसकी दाढ़ी बहुत दिनों से नहीं बनी थी, हाथ की हड्डियाँ और नसें दिखाई दे रही थीं, चादर मैली थी, धोती फटी-पुरानी थी और पैरों मे फटा-पुराना चप्पल था। उसने नमस्कार करके कहा—बड़े बाबू, क्या आप मुझे पहिचान रहे हैं ?

विप्रदास ने जरा ध्यान देकर कहा—अरे, तुम बैकुंठ हो न ?

विप्रदास बचपन में जिस स्कूल में पढ़ते थे, उसी स्कूल से सटी हुई एक दुकान में बैकुंठ स्कूली पुस्तकें, कापियाँ, कलम, बैट-बल्ला, लट्टू और उसके साथ ही पुड़िया में बंधी हुई मूंगफली बेचता था। उसकी दुकान बड़े लड़कों का अड्डा था, अनेक प्रकार की विचित्र असंभव कहानियाँ कहने में उसकी जोड़ का कोई भी न था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्रदास ने पूछा—तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हुई ।

'कई वर्ष हुए हमने एक संपन्न परिवार में अपनी लड़की का विवाह किया है । उनके दहेज की कुछ विशेष माँग न थी इसीलिए वर की माँग अधिक थी । बारह सौ रुपए पर तय हुआ, इसके अतिरिक्त अस्सी तोले सोने का गहना देने के लिए बाध्य होना पड़ा । एक साथ सब रुपया न जुटा सका, इसीलिए लड़की को सताकर वे पिता का खून चूस रहे हैं । मेरी सारी पूँजी समाप्त हो गई, तो भी अभी ढाई सौ रुपया देना रह गया है । अब लड़की के अपमान की सीमा नहीं रह गई है । अत्यन्त असह्य होने का कारण वह भागकर पिता के घर चली आई थी । मानो जेल के बन्दी ने जेल के ही नियम को तोड़ दिया. इस कारण उसका अपराध और भी अधिक हो गया । अब यदि मैं वह ढाई सौ रुपए शीघ्र चुकाकर पुत्री की रक्षा कर सका तो शान्तिपूर्वक मरने की बात सोच सकता हूँ अन्यथा……।

विप्रदास खेदपूर्वक मुसकराये । इस समय पूर्णरूप से सहायता करने की बात सोचने की हिम्मत भी उनमें न थी । क्षणभर इधर-उधर करने के बाद उठकर सन्दूक से डेढ़ सौ रुपए के नोट लाकर उसके हाथ में दिया और कहा—और भी दो चार स्थान पर प्रयत्न करके देखो, मेरी शक्ति इससे अधिक नहीं है ।

बैकुंठ ने उनकी बात पर विश्वास नहीं किया । तुरन्त चप्पल पैर में घसीटता हुआ चला गया । उस दिन की बात विप्रदास को भूल गई थी, आज अकस्मात् उन्हें याद आ गई । दीवान को बुलाकर आज्ञा दी—बैकुंठ को आज ही ढाई सौ रुपए भेजना चाहिए । दीवानजी चुपचाप खड़े सिर खुजला रहे थे । होड़ में विवाह में काम तो बहुत हो गया अब उसका हिसाब बहुत दिनों में चुकाना पड़ेगा । ऐसे समय में ढाई सौ रुपया बहुत बड़ी रकम है ।

दीवानजी के मुख का भाव देखकर विप्रदास ने उँगली से हीरे की अँगूठी निकालकर कहा—छोटे बाबू के नाम से जो रुपए बैंक में जमा हैं, उसमें से ढाई सौ रुपए निकाल लो, उसके बदले में मेरी अंगूठी गिरवी रख दो । बैकुंठ के पास रुपए कुमुदिनी के नाम से भेज देना ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उन्नीस

वैवाहिक लंकाकांड का अंतिम अध्याय अभी शेष है। प्रातःकाल कुशकंडिका (एक अनुष्ठान जिसमें वर-कन्या प्रतिज्ञा-सूत्र में बँधते हैं) समाप्त करके वर-कन्या की बिदाई की बात थी। गोपाल ने उसी का सारा प्रबंध किया था। ऐसे ही समय में विप्रदास के घर से बिदा होकर राजाबहादुर ने आकर कहा, कुशकंडिका वर के स्थान मधुपुरी में होगी।

गोपाल को प्रस्ताव की उद्दंडता असह्य मालूम हुई। यदि अन्य कोई होता आज झगड़ा हो जाता। तो भी उत्तर-प्रत्युत्तर की प्रबलता में गोपाल की आपत्ति लाठी-लठौअल के निकट पहुँचकर ही रुक सकी।

अन्तःपुर में अपमान का प्रभाव बहुत अधिक हुआ। बहुत दूर-दूर से सगे संबन्धी आए थे, उनमें गृह-शत्रुओं का अभाव नहीं था। सबके सम्मुख यह अत्याचार। क्षेमा बुआ मुँह फुलाकर बैठ रहीं। वर-कन्या जब विदाई लेने के लिए आए तो मानो उनके मुख से आशीर्वाद निकलना ही नहीं चाहता था। सभी ने कहा—यह रस्म कलकत्ते में ही कर लेते तो किसी को कुछ कहने की आवश्यकता न रहती। पितृ-गृह के अपमान से कुमुदिनी अत्यधिक लज्जित हो गई। वह मन-ही-मन सोचने लगी कि वही अपने समस्त पूर्वजों की दृष्टि में अपराधिनी है। वह मन-ही-मन अपने देवता से रुष्ट होकर बारंबार पूछने लगी—मैंने आपका कौन-सा अपराध किया है जिसके लिए मुझे इतना दंड दिया गया है। मैंने तो आपके ऊपर ही विश्वास करके इसे स्वीकार किया था।

वर-कन्या गाड़ी में बैठे। मधुसूदन कलकत्ते से जो बैंड लाया था वह ऊँचे स्वर में नृत्य का स्वर बजाने लगा। एक बड़े शामियाने के बीच होम का आयोजन था। अंग्रेज स्त्री-पुरुष अतिथियों में कोई गद्दीदार कुर्सी पर बैठ गया, कोई निकट आकर झाँककर देखने लगा। इसी बीच उन लोगों के लिए चाय-बिस्कुट आया एक तिपाई के ऊपर एक बहुत बड़ा वेडिंग केक रखा हुआ है। अनुष्ठान समाप्त हो जाने पर ये आ-आकर जब बधाई देने लगे, तब कुमुदिनी लज्जा से सिर झुकाए हुए खड़ी रही। एक स्थूलकाय प्रौढ़ा अंग्रेज स्त्री ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसकी बनारसी साड़ी का आँचल खिसकाकर निरीक्षण किया, उसके हाथ के सोने के बाजूबंद को घुमा फिराकर देखने में उसे विशेष कौतूहल हुआ। उसने अंग्रेजी भाषा में प्रशंसा भी की। अनुष्ठान के सम्बन्ध में मधुसूदन से एक दल ने कहा—कैसा मनोरंजक है, और दूसरे दल ने कहा—क्या यह नहीं है ?

इसी मधुसूदन को कुमुदिनी ने अपने भाई और अन्य सगे-संबन्धियों के साथ व्यवहार करते हुए देखा है, आज इसी को देख रही है अपने अंग्रेज मित्रों के समूह में। सज्जनता और विनम्रता बहुत अधिक है। मुख हँसी से प्रफुल्लित है। जिस प्रकार चन्द्रमा के एक ओर प्रकाश और दूसरा ओर घना अंधकार होता है उसी प्रकार मधुसूदन का चरित्र भी है; अंग्रेजों के प्रति उनका माधुर्य पूर्ण चन्द्र के प्रकाश-सा जैसा उज्जवल है वैसा ही स्निग्ध भी है। दूसरी ओर वह दुर्गम कुदृश्य तथा जमे हुए वर्फ की अचलता के सामन दुर्भेद्य है।

गाड़ी के एक डिब्बे में मित्रों के बीच में मधुसूदन और दूसरे रिजर्व किए हुए डिब्बे में स्त्रियों के साथ कुमुदिनी बैठी है। उनमें से कोई उसका हाथ दबा कर देखती, कोई मुँह उठाकर मुख की शोभा निहारती, कोई कहती लंबी है, कोई कहती बीमार है, कोई अत्यन्त सज्जनतापूर्वक पूछती—क्यों बहिन, शरीर में कौन-सा रंग लगा रखा है ? जान पड़ता है विलायत से तुम्हारे भाई ने कुछ भेजा है। सभी ने एकमत होकर कहा—आँखें बड़ी नहीं है पैर स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बड़े हैं। उन्होंने शरीर के प्रत्येक भूषण को भली-भाँति देख कर कहा—सभी आभूषण वजनी हैं, सोना असली है, किन्तु बलिहारी है फैशन की।

उनके डिब्बे की स्टेशन के पलेटफार्म की विपरीत दिशावाली खिड़की खुली हुई थी, कुमुदिनी उसी ओर निहार रही थी और यह चेष्टा कर रही थी कि इनकी बातें वह सुन न सके। उसने देखा कि एक पैर कटा हुआ एक कुत्ता तीन पैरों से लँगडाकर मिट्टी सूंघता हुआ घूम रहा है। ओह, यदि खाने की कोई चीज हाथ में होती। कुछ था नहीं। कुमुदिनी मन-ही-मन सोचने लगी—एक पैर के अभाव से इसके लिए जो कार्य सरल था वह अत्यंत कठिन हो गया है, इसी समय कुमुदिनी के कानों में एक सज्जन की बातें पड़ी जो उसी डिब्बे के सामने खड़े होकर कह रहे थे—देखिए इस किसान कन्या को आरकटी लोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आसाम के चाय-बगीचे से बहकाकर लिए जा रहे थे, यह उनसे पिंड छुड़ाकर भाग आई है, इसके पास ग्वालंदों तक के टिकट का रुपया है, इसका घर डुमराँव में है, यदि आप लोग सहायता करें तो इस औरत की रक्षा हो सकती है। कुमुदिनी ने सेलूनगाड़ी से एक कठोर घुड़की की आवाज सुनी। वह अधिक न ठहर सकी, तुरंत दाहिने ओर की खिड़की खोलकर मोतियों से बने बटुए में से दस रुपये का नोट निकालकर औरत के हाथ में देकर खिड़की बंदकर दी। यह देखकर एक औरत बोल उठी—मैं देखती हूँ कि हमारी बहू का हाथ दराज है। दूसरी ने कहा—दराज नहीं तो दरवाजा तो है लक्ष्मी के जाने का। एक अन्य ने कहा—रुपए उड़ाना खूब सीखा है, रखना सीखा होता तो काम में आता। उन लोगों ने इसको शेखी समझा, क्यों कि बाबुओं ने जिसे एक पैसा भी नहीं दिया, उसके लिए इन्हों ने झट से रुपए फेंक दिए, इतना अभिमान क्यों? इन लोगों ने अपने मन में सोचा, जान पड़ता है यह भी चटर्जी एवं घोषाल परिवार के पुराने संघर्ष का ही परिणाम है।

इसी बीच उन लोगों में से एक मोटी-ताजी काली समवयस्यका औरत जिसकी आँखें बड़ी-बड़ी थीं। और मुख का भाव प्रेम रस से पूर्ण था उसके निकट आकर बैठ गई। उसने धीरे-धीरे कहा—बहिन, मन में बुरा मत मानना इनकी बातों पर ध्यान न देना, दो-चार दिनों तक इसी तरह व्यंग चलेगा उसके बाद भीतर का विष बाहर निकल जाने पर सब बन्द हो जायगा। यह युवती कुमुदिनी की मँझली देवरानी है, नवीन की स्त्री है। इसका नाम निस्तारिणी है, इसे सब लोग मोती की माँ कहकर पुकारते हैं।

मोती की माँ ने बात उठाई—जिस दिन मैं दरबार में आई, स्टेशन पर तुम्हारे भाई को देखा था।

कुमुद चौंक पड़ी। उसके भाई स्टेशन पर आगवानी करने गए थे, यह खबर उसने प्रथम बार सुनी।

वाह, कैसे, सुन्दर पुरुष हैं! ऐसा सुन्दर पुरुष मैंने कभी नहीं देखा। मुझे उन्हीं का स्मरण आ गया।

कुमुदिनी का हृदय क्षणभर में द्रवित हो गया। मुख आड़ में करके वह खिड़की की ओट से देखने लगी—बाहर का मैदान, वन एवं आसमान उसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आँसुओं की भाप के कारण धुँधला दिखाई पड़ने लगा।

मोती की माँ को यह समझना शेष नहीं रहा कि कुमुदिनी के किस स्थान पर पीड़ा है। इसीलिए उसने अनेक प्रकार से घूमा-फिराकर उसके भाई की ही बातें पूछीं। उसने पूछा—विवाह हुआ है या नहीं ?

कुमुद ने कहा—नहीं !

मोती की माँ बोल उठी—ओह, देवता का-सा ऐसा सुन्दर रूप है। तो भी अभी तक घर खाली ही है। किस सौभाग्यशालिनी के भाग्य में यह वर है ?

कुमुद सोच रही थी—भैया गए थे सारे अभिमान को तिलांजलि देकर केवल मेरे ही लिए। तत्पश्चात् ये लोग एक बार भी उन्हें देखने आए ? केवल रुपए के घमंड में ऐसे व्यक्ति का भी अनादर करने का साहस किया। जान पड़ता है इसी कारण उनका शरीर रुग्ण हो गया है।

व्यर्थ आक्षेप के साथ ही वह बारम्बार मन-ही-मन कहने लगी—भैया स्टेशन क्यों गए। क्यों अपने को छोटा बनाया। केवल मेरे लिए ही न ? मेरी मौत क्यों नहीं हो गई ?

जो कार्य हो चुका वह अब बदल नहीं सकता, उसका मन उसी पर सिर धुनने लगा। उसे स्मरण आने लगा केवल उनका वह रोग से क्लांत मुख, आशीर्वाद से परिपूर्ण स्निग्ध गंभीर उनकी वे आँखें।

बीस

रेलगाड़ी जब हवड़ा स्टेशन पर पहुँची उस समय चार का समय होगा। चादर और दुपट्टे में गठबन्धन करके वर-वधु गाड़ी में जा बैठे। दिन के प्रकाश में अगणित आँखें उन्हें देखने लगीं, उनके सामने कुमुद का शरीर और मन संकुचित हो गया। इस उन्नीस वर्षों के कुमारी जीवन में उसके प्रत्येक अंग में जो अत्यन्त गंभीर पवित्रता व्याप्त थी, वह कर्ण के स्वाभाविक कवच-सी दृढ़ थी, उसे वह एकाएक किस प्रकार छिन्न-भिन्न करे। एसे मंत्र हैं जिनके द्वारा यह कवच क्षण-भर में स्वयं खिसक सकता था। किन्तु वह मंत्र अभी तक हृदय में ध्वनित नहीं हुआ है। बगल में जो व्यक्ति बैठा है मन के भीतर तो वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज भी बाहरी व्यक्ति ही है। अपना बनाने में उसकी ओर से केवल बाधाएँ ही उपस्थित हुई हैं। उसके भावों और व्यवहारों की रुखाई ने कुमुदिनी को आज तक केवल ठेस देकर दूर ही रखा है।

इधर मधुसूदन के लिऐ कुमुदिनी एक नवीन आविष्कार है। स्त्री जाति का परिचय प्राप्त करने योग्य अवकाश इस कामकाजी मनुष्य को अभी तक नहीं मिला था। उसके व्यापारिक जगत की भीड़ में उसे नारी की छाया ने भी स्पर्श नहीं किया। किसी स्त्री ने उसके मन को कभी विचलित नहीं किया, यह बात सच्ची नहीं है, किन्तु केवल भूकम्प ही हुआ है, इमारत को हानि नहीं पहुँची। मधुसूदन ने स्त्रियों को अत्यंत संक्षेप में अर्थात् घर की बहू-बेटियों के ही रूप में देखा है जो गृहस्थ के कार्य करतीं, काना-फूसी करतीं और छोटे-छोटे कारणों से रोना-धोना प्रारम्भ कर देती हैं। मधुसूदन के जीवन में इनका प्रवेश अत्यन्त अल्प है, मेरी स्त्री भी संसार के उसी क्षुद्र विभाग में स्थान प्राप्त करेगी और गृहस्थी की दैनिक तुच्छता में फँसकर वह उसके संकेतों पर जीवन यात्रा व्यतीत करेगी इससे अधिक वह कुछ भी सोच न सका। स्त्री के साथ व्यवहार करने की भी एक कला है, उसमें भी पाने या खोने की कोई कठिन समस्या हो सकती है यह बात उसके गणित-निपुण मस्तिष्क के एक कोने में भी स्थान न पा सकी। जिस प्रकार वनस्पतियों के लिए तितलियों की अधिकता होती है, और तितलियों का संसर्ग वनस्पतियों को मान लेना पड़ता है उसी प्रकार मधुसूदन ने अपनी भावी पत्नी के सम्बन्ध में भी सोचा रखा है।

क्या कहकर बातें प्रारम्भ करनी चाहिएँ यह सोचते-सोचते मधुसूदन ने एकाएक एक बार कुमुद से पूछा—इस ओर से धूप आ रही है, क्या ?

कुमुदिनी ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। मधुसूदन ने दाहिनी ओर का पर्दा खींच दिया।

मधुसूदन पुनः एकाएक बोल उठा—ठंढक तो नहीं लग रही है ? कहकर उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना सामने की कुर्सी से विलायती कम्बल खींच कर कुमुद और अपने को ढँककर उसके साथ आवरण की सहयोगिता स्थापित की। शरीर और मन गद्गद् हो उठे। कुमुदिनी चौंककर कम्बल हटाने जा रही थी, अन्त में अपने को रोककर पलंग के किनारे जाकर बैठ गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ समय इस प्रकार व्यतीत होने के पश्चात् एकाएक कुमुद के हाथ पर मधुसूदन की आंखें पड़ी।

'देखूँ, देखूं, कहकर एकाएक अपना बाँया हाथ आँख के निकट खींचकर पूछा—'तुम्हारे हाथ में यह किसकी अंगूठी है। यह तो नीलम की अँगूठी है।"

कुमुदिनी चुप रह गई।

'देखो, नीलम मुझे सहता नहीं, उसे तुम्हें छोड़ना पड़ेगा ?

किसी समय मधुसूदन ने नीलम खरीदा था, उसी वर्ष उसकी पाट से लदी हुई नाव हवड़ा पुल से टकराकर डूब गई थी। तभी से नीलम को नहीं पहनता।

कुमुदिनी ने धीरे-धीरे अपने हाथ को मुक्त करने की चेष्टा की। मधु-सूदन ने छोड़ा नहीं। कहा—इसे मैं उतार लेता हूँ।

कुमुदिनी चौंक पड़ी, बोली—नहीं, रहने दीजिए। एक बार शतरंज के खेल में वह जीत गई थी, उस समय उसके भाई ने अपने हाथ की अंगूठी उसे दे दी थी।

मधुसूदन मन-ही-मन हँसा। अंगूठी पर विलक्षण मोह देख रहा हूँ। इस स्थान पर अपने साथ कुमुदिनी के साम्य का परिचय पाकर मानो उसे कुछ आराम मिला। उसने समझ लिया; समय-असमय सिकड़ी कण्ठहार, कड़ा और बाजूबन्द के सम्बन्ध से अभिमानिनी के साथ बातें करने का अवसर प्राप्त होगा—इस सम्बन्ध में मधुसूदन का प्रभाव न मानने का कोई उपाय नहीं है, उनकी आयु चाहे कुछ अधिक ही क्यों न हो।

अपने हाथ से बड़े हीरे की एक अंगूठी उतारकर मधुसूदन ने हँसकर कहा—डर की बात नहीं है, इसके बदले में तुम्हें दूसरी अँगूठी पहिनाए देता हूँ।

कुमुदिनी अब अधिक न ठहर सकी, जरा प्रयत्न करके उसने अपना हाथ छुड़ा लिया। इस बार मधुसूदन का मन झुँझला उठा। स्वामित्व की हीनता उससे सही न गई, उसने सूखे गले से जोर से कहा—देखो यह अँगूठी तुम्हें उतारनी ही पड़ेगी।

कुमुदिनी ने सिर झुकाकर चुप्पी साध ली, उसका मुख लाल हो गया।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुसूदन ने पुनः कहा—सुन रही हो ? मैं कह रहा हूँ उसे उतार देना अच्छा है। दो मुझे कहकर उसने हाथ खींचना चाहा।

कुमुदिनी ने हाथ बढ़ाकर कहा—मैं उतारे देती हूँ। उसने उतार दिया।

'दो, उसे मुझे दे दो !'

कुमुदिनी ने कहा—उसे मैं ही रख दूंगी।

मधुसूदन विरक्त होकर चिल्ला उठा—रखने से क्या लाभ है ? तुम सोचती हो वह बहुमूल्य अंगूठी है। उसे तुम्हें किसी भी प्रकार पहनना न होगा, यह मैं तुमसे कहे देता हूँ।

कुमुदिनी ने कहा—मैं इसे न पहिनूंगी। कहकर मोती से गूँथी हुई पोटली में अँगूठी रख दी।

क्यों ? इस साधारण-सी वस्तु के लिए इतना प्रेम क्यों है ? तुम तो साधारण स्त्री नहीं हो। मधुसूदन की आवाज कड़ी है। वह कानों को खटकने वाली है। कुमुदिनी का शरीर झनझना गया।

मधुसूदन ने पूछा—तुम्हें यह अँगूठी किसने दी है ? कुमुदिनी चुप रही। मधुसूदन ने पुनः पूछा—तुम्हारी माँ ने दी है क्या ?

उत्तर अवश्य देना ही पड़ेगा जानकर उसने धीरे से कहा—भैया ने।

भैया ने ! ऐसा ही तो जान पड़ता है। भैया की दशा कैसी है, इसे मधुसूदन भली-भाँति जानता है, यह दादा की अँगूठी शनि-ग्रह के सेंध मारने का औजार है—घर में उसका प्रवेश ठीक नहीं ! किन्तु इससे भी अधिक उसे यह बात खटक रही है कि अब भी कुमुदिनी के लिए उसके भैया ही सबसे श्रेष्ठ हैं। यह स्वाभाविक होने के कारण ही सह्य है, ऐसी बात नहीं है। यदि नया धनी महाजन पुराने जमींदार की जमींदारी नीलाम में खरीद लेता है तो उस समय जब भक्त प्रजा पुरानी बातों को स्मरण करके गहरी साँस लेती है तब वर्तमान अधिकारियों के शरीर में आग लग जाती है, यही दशा मधुसूदन की भी है। अब से मैं ही उसका सर्वस्व हूँ, यह बात जितनी जल्दी हो सके उसे बता देनी चाहिए। इसके अतिरिक्त हल्दी लगने के दिन भोजन के सम्बन्ध में वर का जो अपमान हुआ है, उसमें विप्रदास का हाथ न था इस बात पर मधुसूदन को विश्वास नहीं हो रहा था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंगूठी की बात अन्त में स्थगित रही, किन्तु वह उसे भूल न सकी। इधर सौन्दर्य के अतिरिक्त एक अन्य कारण से अकस्मात् कुमुदिनी का सम्मान बढ़ गया है। नूरनगर में रहते हुए ही बिवाह के दिन मधुसूदन को तार मिला कि इस बार तीसी के व्यापार में लगभग बीस लाख का लाभ हुआ है। अब इस बात में सन्देह नहीं रहा कि यह नई बहू के कारण हुआ है। स्त्री के भाग्य से धन होता है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण मिल गया। इसलिए कुमुदिनी को गाड़ी पर बगल में बैठाकर उसे मन-ही-मन इस बात पर अत्यधिक सन्तोष था कि भावी लाभ का एक जीवित प्रमाण लेकर वह घर पर जा रहा है। यदि ऐसा न होता तो आज इस गाड़ी की सुखद यात्रा के बदले भयानक हानि होती।

इक्कीस

कलकत्ते के घोष भवन के द्वार पर नया नाम 'मधुसूदन' खुद गया है। इसी प्रासाद के लोहे के फाटक के एक ओर आज नौबत बैठाई गई है और बगीचे के भीतर कनातों में बैण्ड बज रहा है। अर्द्धचन्द्राकार फाटक में गैस के पाइपों में 'प्रजापतयेनम:' लिखा है। सायंकाल यह लेख रोशनी की तेजी से प्रकाशमय हो जायेगा। ड्योढ़ी से मकान तक जो कंकरीली लाल सड़क गई है, उसके दोनों किनारे देवदारू की पत्तियों और गेंदे की मालाओं से खूब सजाये गए हैं। मकान की पहली मंजिल की ऊँची जमीन पर चढ़ने की सीढ़ियों पर लाल रंग का कपड़ा बिछा हुआ है। वर-वधू की बग्घी मकान के सामने वाले बरामदे में मेहमानों के बीच से होती हुई आकर ठहर गई। शंख, उलु-ध्वनि (मंगल-ध्वनि), ढोल, ताशा, घण्टा, नौबत घड़ियाल और बैण्ड सब एक साथ ही बज उठे। एक वृद्धा जो रिश्ते में मधुसूदन की नानी लगती है, चौड़ी लाल पाड़ की साड़ी, सोने के मोटे-मोटे कड़े और शंख की चूड़ियाँ पहने माँग में खूब मोटा सिन्दूर भरकर तथा हाथ में चाँदी का लोटा पानी से भरा हुआ लेकर बग्घी के सामने आ खड़ी हुई। लोटे से बहू के पैरों पर पानी छिड़क उन्हें आँचल से पोंछा। हाथ में 'नोआ' (सुहाग सूचक लोहे की पतली चूड़ी) पहनाया। तदुपरान्त बहू के मुंह में थोड़ा-सा मधु देकर बोली—'अहा ! हमारे नील गगन में इतने दिनों बाद पूनों का चाँद निकला और साथ ही अब नील

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सरोवर में सोने का कमल खिल उठा।' इसके पश्चात् दुल्हा-दुल्हन गाड़ी से उतरे। आगन्तुक युवकों की दृष्टि ईर्ष्यान्वित हो गई। एक ने कहा—'अरे! दैत्य स्वर्ग लूट लाया है, स्वर्ग की अप्सरा सोने की जञ्जीर से बँधी है।' दूसरे ने कहा—'प्राचीन-काल में ऐसी लड़कियों के लिए राजाओं में घोर युद्ध हुआ करता था। अब तो तीसी के मुनाफे से ही कार्य सफल हो जाता है। कलियुग में देवता लोग भी अरसिक होते हैं।'

शाम होते-होते वरण, स्त्री-आचार आदि वैवाहिक प्रथायें समाप्त होने को आई और बड़ी मुश्किल से अर्धरात्रि के समय तक सब आचार-व्यवहार समाप्त हुए।

कुमुदिनी को केवल एक बड़ी बहन के ब्याह की बात साफ-साफ याद है। पर उसने किसी नई बहू को आते नहीं देखा। यौवनारम्भ के पूर्व ही से वह कलकत्ते में भैया के निर्मल स्नेह की छत्रछाया में रह रही है। बालिका का मानसिक कल्पना-जगत संसार के मोटे ढाँचे में नहीं ढल पाया है। बाल्यकाल में पति की आकांक्षा से जब वह शिवजी की पूजा करती थी, तब उसने पति के ध्यान में उसी रजतगिरिनिभ महा तपस्वी शिवजी को ही देखा है। सती-साध्वी नारी के आदर्श रूप में वह अपनी माँ को जानती थी। कैसी शान्ति, स्निग्ध कमनीयता थी, कितना धैर्य दुःख और कैसी देवपूजा, मंगलाचरण और अथक सेवा थी। दूसरी ओर उनके (माता के) पति की ओर व्यवहार में त्रुटि थी, चरित्र में स्खलन। इतना सब होते हुए भी चरित्र-उदारता में बड़ा और पौरुष में मजबूत था। उसमें हीनता, कपटता का लेश मात्र भी नहीं था। उसमें जो एक मान-मर्यादा थी, वह मानो सुदूर-काल के पौराणिक आदर्श का था। प्राणों से मान और धन से ऐश्वर्य बड़ा है, यही प्रतिदिन उनके जीवन के अन्दर प्रमाणित होता था। उनकी बराबरी के सभी लोग तथा वे स्वयं भी बड़े पैमाने के आदमी थे। अक्षत संचय के अहंकार का प्रचार करना उनके बस की बात न थी किन्तु अपनी हानि करके भी अक्षत-सम्मान के गौरव की रक्षा वे पूर्णरूप से करते थे।

जिस दिन कुमुद की बाईं आँख फड़क उठी, उसी दिन वह अपनी सम्पूर्ण भक्ति को लेकर अपनी उन्नति का पूर्ण संकल्प लिये तैयार खडी थी। स्वप्न

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में भी वह यह न सोची थी कि कहीं भी कुछ बाधा या ओछापन हो सकता है ! दमयन्ती ने यह कैसे जान लिया था कि विदर्भ-नरेश नल को मैं वरण करूँगी । ऐसी निश्चय बात उसके मन में पहुँच चुकी थी । क्या कुमुद को ऐसी वार्ता न मिल सकी थी ? वरण का सब सामान ठीक है—राजा भी आये, किन्तु मन में जिसे स्पष्ट रूप से देखा है वह बाहर कहाँ दिखाई पड़ा ? रूप से भी कुछ बनता बिगड़ता न था, उम्र से भी कुछ हानि न थी । किन्तु वह सच्चा राजा कहाँ है ।

तत्पश्चात् जिस अनुष्ठान के द्वार से कुमुद ने आज इस नवीन संसार में प्रवेश किया उसमें उच्च-स्वर से मंगल-ध्वनि क्यों न हुई, जिससे नववधू गगन के सप्तर्षियों का आशीर्वाद-मन्त्र सुन पाती । समस्त अनुष्ठान को पूर्ण करके वन्दन-गान उच्च-स्वर से क्यों न सुन पड़ा ।

बाईस

मधुसूदन जब कलकत्ता में रहने के विचार से आये, तब सबसे पहले उन्होंने एक पुराना मकान खरीद लिया था । चौक से सटा हुआ वही मकान आज उनका अन्तःपुर या महल है । उसके बाद उसके समकक्ष कलकत्तिया फैशन का एक विशाल भवन इसके सामने जोड़ दिया गया है जो बैठक-खाना बन गया । यद्यपि यह दोनों भवन मिले हुए हैं फिर भी दो प्रकार के और बिलकुल अलग से हैं । बाहरी महल में सब जगह संगमरमर बिछा है । उस पर विलायती कालीन हैं, दीवारों पर रंगीन चित्र टँगे हुए हैं, जिनमें कुछ तसवीरें खुदी हुई हैं । कुछ तैल-चित्र और कुछ फोटो इन्लार्ज हैं । जिनके विषय हैं—हिरणों का पीछा करते शिकारी कुत्ते, डर्बी की घुड़दौड़ में जीते हुए घोड़े, विदेशी नग्न नहाती हुई औरतें इत्यादि । इसके अतिरिक्त दीवालों पर कहीं मुरादाबादी पीतल की थालें तथा चीनी के बरतन, जापानी पंखे और तिब्बती चँवर इत्यादि अनेकों प्रकार की बेसिलसिले की सामग्रियों का अव्यवस्थित समावेश है । मधुसूदन के अंग्रेजी असिस्टेण्ट महोदय ही इन सब चीजों को पसन्द करते, खरीदते और सजाया करते हैं । इसके अतिरिक्त सोफे और मलमल तथा रेशम से मढ़ी हुई कुर्सियों की अधिकता है । काँच की आलमा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रियों में चमकदार जिल्द बँधी अंग्रेजी किताबें हैं, झाड़ने-पोंछने वाले नौकर के अतिरिक्त उन्हें कोई भी हाथ नहीं लगाता। एक तिपाई के ऊपर अलबम रक्खी हुई हैं, किसी में घर वालों की तस्वीरें हैं, किसी में विदेशी अभिनेत्रियों की तस्वीरें।

अन्तःपुर की पहली मञ्जिल के कमरों में अँधेरा रहता है। ठण्डक भी अधिक रहती है सारे कमरे धुएं से काले पड़ गये हैं। आँगन में बहुत सा कूड़ा करकट पड़ा हुआ है। पास ही नल है जहाँ बरतन और कपड़े धोये जाते हैं। अक्सर काम होने पर भी नल खुला ही पड़ा रहता है। ऊपरी बरामदे से साड़ियाँ नीचे तक लटकती रहती हैं और आँगन में पहाड़ी तोतों की जूठन, गिर कर इधर उधर बिखर रही हैं। बरामदे की दीवार पर कहीं-कहीं पान की पीक के दाग तथा अनेकों प्रकार की मलिनता के दाग स्मृति चिह्न लगा रहे हैं। आँगन के पीछे जो चबूतरा है, उसके पीछे रसोईघर है जहाँ से रसोई की गन्ध और कोयले का धुँआ कमरे में जा कर सर्वत्र फैल जाता है। रसोईघर से बाहर चाहरदीवारी से घिरी हुई थोड़ी-सी ज़मीन है उसके एक कोने में जले कोयले, चूल्हे की राख, फूटे हुए गमले, बेत की टूटी पुरानी टोकरियों का ढेर लगा है दूसरे कोने में दो तीन गौएँ अपने बछड़ों सहित बँधी हुई हैं। उसके आस-पास पुआल और गोबर पड़ा है और संम्पूर्ण दीवाल कण्डों से छा गई है। एक किनारे पर नीम का पेड़ है जिसमें गायों को बाँध-बाँधकर उसकी छाल को उड़ा दिया है। अन्तःपुर में बस केवल इतनी थोड़ी-सी खाली जमीन है। शेष सब जमीन बाहर की ओर है, और लता मण्डप से विचित्र फूलों की क्यारियों से घास के छटे हुए हरे मैदान से लाल लक्कड़ और सुर्खी के बने हुए मार्ग से लोहे की बेञ्चों और प्रस्तर-मूर्तियों से सुशोभित है।

तीसरी मञ्जिल पर कुमुदिनी के सोने का कमरा है जिसमें महाजनी काठ की एक पंलग बिछी है। उसकी फ्रेम पर जालीदार मसहरी लगी है। जिसमें रेशम की झालर लगी। बिछावन के पायताने की ओर एक पूरे नाप की नग्न स्त्री का चित्र टंगा है। सिरहाने की ओर मधुसूदन का अपना तैल-चित्र है, उसमें उनके काश्मीरी दुशाले की चित्रकारी अथवा दस्तकारी ही अत्यधिक प्रकाशमान है। दीवाल से लगी हुई एक ओर कपड़ा रखने की दराजदार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आलमारी हैं जिसमें शीशा लगा हुआ है। शीशे के दोनों ओर शमादान हैं, जो चीनी-मिट्टी के बने हैं। सामने चीनी-मिट्टी की रकावी पर पाउडर का डिब्बा चाँदी की कंघी, तीन चार तरह के ऐसेन्स और उन्हें छिड़कने की पिचकारी तथा अनेकों प्रकार की और भी सामग्रियाँ रखी हैं जोकि सभी विलायती असिस्टेण्ट की खरीदी हुई हैं। गुलाबी काँच के फूलदान में अनेक शाखायुक्त फूलों का गुच्छा रक्खा है। दूसरी ओर लिखने की टेबिल है, उस पर कीमती पत्थर का कलमदान और कटे हुए कागज रखे हुए हैं। इधर-उधर मोटे गद्दों वाले सोफे और आराम कुर्सियाँ पड़ी हुई हैं जिनके बीच-बीच में तिपाइयाँ भी हैं और उन पर चाय पी जाती है यदि चाहें तो ताश भी खेल सकते हैं। नई महारानी के लिए नया शयनकक्ष कैसा होना चाहिए इसे मधुसूदन ने ध्यान-पूर्वक सोचा था। अन्तःपुर की ऊपरी मजिल का यह घर उसी प्रकार दीख पड़ता था मानो किसी कथरी ओढ़े भिखारी के सिर पर रत्न-जड़ित जरीदार पगड़ी रख दी गई हो।

दिन में धूमधाम की बाढ़ के अन्त होने तथा शोर गुल के समाप्त होने पर रात को कुमुद उस कमरे में पहुँची। मोती की माँ उसे ले आई थी, वह उसके साथ आज रात में सोयेगी, यह पहले ही तय हो चुका है। लड़कियों का एक और भी झुण्ड आ रहा था। उनके कौतूहल और मनोरंजन का नशा छूटना ही नहीं चाहता था—मोती की माँ ने उन्हें बिदा कर दिया है। कमरे में आकर कुमुद के गले में बाहें डालकर उसने कहा—'मैं थोड़ी देर के लिए बगल के कमरे में जाती हूँ—आँखों के आँसू तुम्हारे हृदय में जमे जा रहे हैं बहन, तुम थोड़ा रो लो। कहते हुए वह चली गई।

कुमुद चौकी पर सोचने लगी—मैं रोऊँगी बाद में, किन्तु अभी तो मुझे अपने को ठीक करने की सख्त जरूरत है। अपने अपमान को समझ उसका हृदय वेदना से द्रवित हो उठा—अपने विद्रोही मन पर वह तनिक भी शासन नहीं करने पा रही है। इतने दिनों का संकल्प उसके उल्टी ओर जा रहा है। वह कहती है—भगवान् मुझे बल दो, बल! मेरे जीवन को काला न कर देना। मैं आपकी दासी हूँ, मुझे बिजयी बनाओ, क्योंकि वह विजय तुम्हारा ही है।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एकाएक श्यामवर्ण सुन्दरी विधवा जो सुडौल और पक्की उम्र की है, उसने घर में प्रवेश करते हुए कहा—मोती की माँ के छुट्टी दे देने पर मैं तुम्हारे पास चली आई हूँ। वह किसी को पास भी तो नहीं आने देती, वह तुम्हें सदैव घेरे ही रहती है। मैं तुम्हारी जिठानी श्यामसुन्दरी हूँ, तुम्हारे दुल्हा मेरे देवर लगते हैं। मैंने तो सोचा था कि अन्त तक आय-व्यय की बही ही उनकी बहू होंगी किन्तु उस बही में कुछ जादू है बहन ! इतनी आयु में इतनी सुन्दर बहू उसी बही ही की ताकत से तो मिली है, यदि हजम हो जाय तो ठीक है। वहाँ तो बही का मन्तर नहीं चलेगा। सच बताना बहन, 'क्या हमारे बूढ़े देवर तुम्हें पसन्द हैं ?'

आश्चर्य में डूबी कुमुद क्या जवाब दे, उसे कुछ समझ न पढ़ा। श्यामा कहने लगी—'समझ गई, पर अब होता ही क्या है। पसन्द हों चाहे नहीं, जब सात फेरे लगा चुके तो उल्टे इक्कीस फेरे लगाने से भी गांठ नहीं खुल सकती।'

कुमुद ने कहा—'क्या कहती हो, जीजी !'

श्यामा ने कहा—'क्यों, साफ-साफ कहने में कौन-सी बुराई हो जाती है बहन ! क्या चेहरा देखने से मालूम नहीं होता ? किन्तु तुम्हें दोष न दूंगी। हमारे घर के हैं. इससे क्या आँखें थोड़े ही फूट गई हैं ? बड़े कठोर व्यक्ति से पाला पड़ा है, बहू समझ-बूझकर चलना।'

इतने में मोती की माँ को अन्दर आते हुए देखकर बोली—'फजूल डरो मत, मैं जाती हूँ। सोचा कि तुम नहीं हो, इस वक्त जरा अपनी नई बहू को देख आऊँ। बात तो ठीक ही है, कन्जूस का धन है, होशियारी से रखना होगा। सखी से मैं कह रही थी कि हमारे देवर को अधकपाली दर्द समझो, बहू को उनके बाएँ ओर के पाने के कपाल ने लिया है यदि दाहिनी ओर के रखने का कपाल भी रख सके तब कहीं पूर पड़ेगी।' यह कहते हुए तेजी से वह घर से निकल गई और तुरन्त ही वापस आकर कुमुद के आगे पान की डिबिया खोलकर बोली—'लो खाओ, तम्बाकू खाने की आदत है ?'

कुमुद ने उत्तर दिया—'नहीं।'

श्यामसुन्दरी ने डिबिया में से एक चुटकी तम्बाकू निकालकर मुँह में डाल ली और धीमी चाल से बाहर चली गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'मैं अभी आई, थोड़ा बड़ी मौसी को खिलाकर बिदाकर आऊँ। देर न करूँगी।' कहकर मोती की माँ चली गई।

श्यामसुन्दरी ने कुमुद की हृत्तन्त्री में एक बड़ी भारी स्वादहीन बात जगा दी। आज सबसे अधिक जरूरत थी कुमुद को माया के आवरण की और उसी को अपने मन में वह गढ़ने बैठी थी। साथ ही लोक-लोकान्तर में जो सृष्टिकर्त्ता अनेकों रंग लिए रूप की लीला करते हैं उन्हें भी सहायक बनाने की कोशिश कर रही थी। इतने ही में श्यामा ने आकर उसके स्वप्निल बुने जाल पर आघात किया। जोर से आँखें बन्दकर कुमुद अपने को कहने लगी—'पति की आयु अधिक है, इस कारण उन्हें प्रेम नहीं करती, यह बात कभी सच नहीं हो सकती शर्म आती है। यह तो तुच्छ स्त्रियों का काम है।' क्या शिवजी के साथ सती के सम्बन्ध की बात उसे याद नहीं? शिवजी के निन्दकों ने उसकी आयु के बारे में ताना मारा था, किन्तु उसे सती ने सुना-अनसुना कर दिया था।

कुमुद ने पति की आयु रूप के बारे में अब तक कोई भी चिन्ता न की थी। जिस प्रेम को लेकर पुरुष स्त्री का विवाह सत्य होता है यह बात कुमुद ने कभी भी न सोची थी। जिसमें रूप, गुण, देह, मन सभी मिला हुआ है, उसकी क्या आवश्यकता है। पसन्द करके वर लेने की बात को ही वह रंग पोतकर दबा देना चाहती है।

एक छः सात वर्ष की आयु का बालक फूलदार कोट और जरी पाड़ की धोती पहने उसी समय आकर कुमुद की देह से सट कर खड़ा हो गया। बड़ी-बड़ी मुग्धकारी आँखों से कुमुद के मुँह की ओर देखकर डरते-डरते मीठे स्वर में कहा—'ताई जी!' कुमुद ने उसे गोद में खींचकर कहा—'क्यों बेटा! तुम्हारा क्या नाम है?'

बालक ने कहा—'श्री मोतीलाल घोष।'

सभी उसे 'हाबलू' कहकर पुकारते हैं तिन्तु अब उसने इस नाम को अनुपयुक्त और अपमानजनक समझ अपने सम्मान की रक्षा के लिए अपने पिता का रक्खा हुआ नाम बताया। उस समय कुमुद के दिल में पके फोड़े की तरह टीस उत्पन्न हो रही थी। इस लड़के को छाती से लगाकर जैसे वह जी गई!

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसे ऐसा जान पड़ने लगा मानो वे ही गोपाल उसका गोदी में आ बैठे हैं जिन्हें वह इतने दिनों मन्दिर में फूल चढ़ाती आई है। जिस समय वह उन्हें बुला रही थी ठीक उसी समय आकर उन्होंने कहा—'यह देख मैं ही तो हूँ। तेरी सान्त्वना।' कुमुद ने मोती से प्यार से कहा—'गोपाल लाल लोगे ?

कुमुद के मुँह से गोपाल के अतिरिक्त कोई अन्य नाम न निकला। सहसा अपने नाम में कुछ अन्तर जान उसे आश्चर्य हुआ किन्तु ऐसे आकर्षक शब्द के कारण उसे कोई आपत्ति नहीं हुई।

कुछ ही देर बाद लड़के की बोली सुनकर मोती की माँ दौड़ी हुई आई और बोली—'क्यों रे लंगूर, तू यहाँ भी पहुँच गया !' दाहिने हाथ से ताई के आँचल को दबाकर चुपचाप माँ की ओर देखने लगा। हाबलू को अपने बाएँ हाथ से रोककर कुमुद ने कहा—'नहीं, नहीं, रहने दो।'

'नहीं बहन, रात अधिक जा चुकी है। इसे अब जाकर सोने दो। इस घर में इसके समान कोई भी लड़का तुम्हें सस्ता न दिखाई पड़ेगा। इसे इस घर में तुम बड़ी सरलता से पा जाया करोगी।' इतना कहते हुए लड़के की इच्छा न होने पर भी उसे सुलाने ले गई। केवल इतने ही से कुमुद के मन का भार हल्का हो गया। उसे मालूम हुआ, मानो प्रार्थना का उसे जवाब मिल गया।

तेईस

रात काफी बीत चुकी थी, अचानक मोती की माँ की नींद खुल गई थी। देखा तो कुमुद उठकर अपने बिस्तर पर बैठ गई। दोनों हाथ जोड़कर गोद में रख लिये हैं। उसके ध्यानमग्न नेत्र जैसे किसी को सामने खड़े देख रहे हैं। मधुसूदन को अपने हृदय में विराजमान करने में ज्यों-ज्यों बाधा आती जाती है, त्यों-त्यों वह अपने को वेदना द्वारा पति को घेरे रहना चाहती है। स्वामी को उपलक्ष्य करके वह अपने को देवता का दान करना चाहती है। यह प्रतिमा स्वच्छ नहीं है, देवता ने उसकी पूजा बड़ी कठोर कर दी है, किन्तु यही तो भक्ति की परीक्षा है। शालिग्राम की मूर्ति में कुछ दिखाता नहीं किन्तु भक्ति के कारण उसके भीतर जो बैकुण्ठनाथ का रूप प्रकट होता है, वह केवल भक्ति का फल है। मेरी यही तो साधना है कि जहाँ वह दिखाई नही पड़ते, वहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखूँगी। ईश्वर मुझे धोखा नहीं दे सकते, वे जहाँ छुपे रहेंगे, वहीं जाकर मैं उनके चरणों पर अपने को प्रदान करूँगी।

भैया से सीखे हुए मीराबाई के 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई।' गीत को वह बार-बार मन में गाने लगी।

मधुसूदन का अति कठोर परिचय जो उसे प्राप्त हुआ, उसे वह कुछ नहीं कहकर पानी के बुलबुल से समान उड़ा देना चाहती है। प्राचीन के जो सत्य हैं वे ही तो सब कुछ आवृत्त किए हुए हैं। 'दूसरा कोई नहीं !' इसके अतिरिक्त और एक जो दूसरी व्यथा है उसे भी यह माया ही समझती है, जो कि उसके जीवन की शून्यता है। जिसके कारण यह सभी बना है तथा जिसे छोड़ देने पर उसके जीवन का कोई उद्देश्य नहीं रह जाता।

माँ-बाप ने यद्यपि मुझे छोड़ दिया है किन्तु उनके भीतर जो चिरकाल के भाव हैं, उन्होंने तो छोड़ा नहीं। प्रभु ! जो कुछ छुड़वाना चाहो छुड़वा लो। तुमने शून्यता को भरने के लिए ही वह कृत्य किया है। अब चाहे जो कुछ भी हो किन्तु मेरी लगन तो तुम्हीं में है। मन का गान उसके कण्ठ में खिल उठा—उसे इसका पता भी नहीं। साथ ही उसकी आँखों से आँसू टपकने लगे।

शान्त भाव से मोती की माँ चुपचाप यह सब देखती रही। बहुत देर तक नमस्कार करके गहरी साँस लेकर जब कुमुद सो गई तब मोती की माँ के मन में एक चिन्ता-सी दिखाई देने लगी जिसे उसने पहले कभी नहीं सोचा था।

वह सोचने लगी—जब मेरी शादी हुई, उस समय तो मैं छोटी-सी बच्ची थी। 'मन' बहलाने वाली कोई चीज थी ही नहीं। पति-गृहस्थी ने मुझे उस प्रकार अपने मुंह में रख लिया जैसे छोटा बच्चा किसी फल को बिना विचारे अपने मुँह में ठूंस लेता है। मुझे तनिक भी खटका न हुआ। मैं साधना करके तो ली न गई थी, हाँ, मुहूर्त शोधन भले ही आवश्यक था। 'आज सुहागरात है' यह जिस दिन कहा गया उसी दिन सुहागरात हुई। कल ही सुहागरात है किन्तु इस लड़की के लिए यह बड़ी विडम्बना है, कारण जेठजी अभी पराये हैं, इस तक कैसे पहुँचेंगे, अपने होने में कुछ समय लगता है। यह लड़की उस अपमान को कैसे सह सकेगी। जेठजी को धन पाने में कितना समय लग गया किन्तु मन पाने में उन्हें दो दिन का सब्र न होगा। उस लक्ष्मी के द्वार पर तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दौड़ते-दौड़ते जान की बाजी लगा चुके हैं, किन्तु इस लक्ष्मी के द्वार पर तो एक बार हाथ भी न फैलाएँगे।

कुमुद को मोती की माँ हृदय से चाहती है। चाहे यह सब बातें मोती की माँ के मन में न आतीं किन्तु उसका यही कारण है कि कुमुदिनी को देखते ही उसने उसे अन्तःकरण से अपना लिया हैं स्टेशन के ऊपर ही जब उसने विप्रदास को देखा था तभी से प्रेम की पूर्व भूमिका हो गई थी। मानो महाभारत से भीष्म उतर आये हैं, तपस्वी के सदृश्य शान्त मुखश्री थी और साथ-ही-साथ एक विषाद भरी नम्रता भी उनमें मौजूद थी। मोती की माँ के मन में एक बार आया कि यदि कोई कुछ कहे न, तो वह जाकर एक बार उनके पैरों को छू आवे। वह उस रूप को आज तक नहीं भूल सकी। इसके पश्चात् जब उसने कुमुद को देखा तो मन-ही-मन बोल उठी—'है तो अपने भाई की ही बहिन!'

जाति-भेद यदि किसी प्रकार का है तो, खून का है, वह भी समाज का नहीं, वह जाति किसी प्रकार तोड़ी नहीं जा सकती। यह जो रक्तगत जाति का असमञ्जस्य है यह स्त्री को जिस प्रकार चुभो-चुभोकर मारता है, उस प्रकार पुरुष को नहीं। अल्प-आयु में मोती की माँ की शादी हुई थी इस कारण वह अपने में इस रहस्य को न समझ सकी थी। किन्तु उसने कुमुद के भीतर जाकर इस बात का निश्चय रूप में अनुभव किया। उसके शरीर में मानो कंपकंपी सी उठने लगी, मानो उसने एक विभीषिका का चित्र देखा हो जहाँ एक अपरिचित जीव अपनी लालायित जीभ लटकाये शान्त भाव से सिकुड़ा बैठा है, कुमुदिनी उसी अन्धेरी गुफा के सामने खड़ी हो देवता को पुकार रही है। मोती की माँ क्रोध में आकर मन ही मन बोल उठी—'देवता के मुँह पर खाक! जिस देवता ने उसे आफत से घेर लिया, वही उसका उद्धार करेगा!'

चौबीस

दूसरे दिन सवेरे ही कुमुद को भैया का तार मिला—'भगवान् तुझे आशीर्वाद दें।' तार के कागज को उसने अपनी कुर्ती में छाती के पास रख लिया। इस तार में जैसा भैया के दाहिने हाथ का स्पर्श था, किन्तु भैया ने अपना कुछ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भी हाल क्यों नहीं लिखा, क्या बीमारी बढ़ गई ? भैया का सब हाल हर समय जो प्रत्यक्ष देखा करती थी आज उसे ही वह बिलकुल नहीं जान सकती।

घर में आदमियों की भीड़ से मेला-सा लगा है, क्योंकि आज सुहागरात है। घर की सभी स्त्रियाँ दिन भर कुमुद को हिलाती-डुलाती रहीं। किसी भी तरह उसे थोड़ा-सा भी अकेले न रहने दिया यद्यपि आज अकेले रहने की बड़ी आवश्यकता थी।

सोने के कमरे के समीप ही स्नान-गृह है, जहाँ नहाने का नल है और स्नान के लिए उसमें झझरी लगी हुई है। जरा-सा मौका मिलते ही कुमुद बक्स से भगवान् की युगल जोड़ी का चित्रपट निकालकर स्नान-गृह में घुस गई और भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। पत्थर की सफेद जल-चौकी पर चित्र रखकर और उसके सामने जमीन पर बैठकर अपने मन में बार-बार कहने लगी—'मैं तुम्हारी ही हूँ, आज तुम्हीं हो, तुम्हीं तो हो। मेरे जीवन में तुम्हारा युगलरूप प्रत्यक्ष हो।'

डॉक्टरों ने कहा कि विप्रदास का इनफ्लुएन्जा निमोनिया में बदल गया है। गोपाल सोहागरात की सौगात भेजने का इन्तजाम करने अकेले ही कलकत्ता आये। खूब धूमधाम के साथ सौगात भेजी गई। विप्रदास यदि स्वयं होते तो इतना आडम्बर न करते।

कुमुद के ब्याह में उसकी चारों बड़ी बहनों को बुलाया गया था किन्तु बदनामी-सी फैल गई थी कि घोष खानदान वाले अच्छे ब्राह्मण नहीं है। इस-लिए उनके घर वाले उन्हें उस ब्याह में भेजने के लिए किसी भी तरह राजी न हुए। कुमुद की तीसरी बहन पति से लड़-झगड़कर यदि किसी प्रकार विवाह के दूसरे दिन कलकत्ते आई भी तो गोपाल ने उससे कह दिया—'उनके यहाँ यदि तुम जाओगी तो हमारी इज्जत में बट्टा लगेगा।' ब्याह में रात वाली बात को वे अभी भी नहीं भूल सके हैं। इसी कारण निमन्त्रण की रक्षा के लिए एक बुढ़िया के साथ कुछ इधर-उधर की छोटी लड़कियों को भेज दिया। कुमुद ने समझा कि अभी तक समझौता नहीं हुआ और शायद कभी होगा भी नहीं।

कुमुदिनी नये-नये वस्त्रों और गहनों से लाद दी गई। जिनके साथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हँसी-दिल्लगी का रिश्ता था; उनकी हँसी-दिल्लगी भी समाप्त हो गई। अब मेहमानों को खिलाने-पिलाने की बारी है। मधुसूदन ने पहले ही कहला रखा था कि कल हमें बहुत काम करना है; इस कारण अधिक रात न होने पावे। नौ बजते ही आज्ञानुसार नीचे के आँगन में जोर का घण्टा बज उठा। बस अब एक मिनट भी नहीं। समय को इधर-उधर करने का किसी में सामर्थ्य न थी। सभा भंग हो गई, आकाश से बाज की छाया देखकर जो दशा कबूतर की होती है; उसी भाँति कुमुद का हृदय काँपने लगा। उसका ठण्डा हाथ पानी से तर हो गया है, मुँह फीका पड़ गया है। वह कमरे से बाहर निकलते ही मोती की माँ का हाथ थामकर बोली—'मुझे थोड़ी देर के लिए जरा कहीं ओट में ले चलो और दस मिनट मुझे वहाँ अकेली रहने दो।' मोती की माँ झटपट उसे अपने सोने के कमरे में ले गई। बाहर से दरवाजा बन्द कर वह बाहर ही खड़े खड़े आँचल से अपनी आँखें पोंछती हुई बोली—'तेरा ऐसा भाग्य!'

दस-पन्द्रह मिनट बीत गए। आदमी आया और बोला—'दूल्हा सोने के कमरे में पहुँच गया, दुलहिन कहाँ है?' मोती की माँ बोल उठी—'इतनी जल्दी क्या है, बहू कपड़े-गहने न उतारे!' मोती की माँ यथाशक्ति उसे समय देना चाहती है। अन्त में जब वह समझ गई कि अब ठीक नहीं है तो उसने दरवाजा खोल दिया, और देखा तो बहू जमीन पर बेहोश पड़ी है। शोर-गुल मच गया, सहारे से उठाकर बिस्तर पर लिटाई गई। उसके ऊपर कोई पंखा करने लगी, तो कोई उसके ऊपर पानी के छींटे मारने लगी। कुछ देर पश्चात् जब कुमुद को होश आया तो वह यह न समझ सकी कि मैं कहाँ पर हूँ। पुकार उठी—'भैया!' शीघ्रतापूर्वक उसके मुख के पास मोती की माँ ने मुँह ले जाकर कहा—'डरो नहीं जीजी, मैं तो यहाँ मौजूद हूँ।' यह कहकर उसका मुँह अपनी ओर खींच उसे छाती से चिपका लिया और सबसे कहा—'तुम लोग भीड़ न लगाओ, मैं इन्हें लेकर अभी आती हूँ!' फिर कुमुद के कान में कहने लगी—'डरो मत बहन, डरो मत!' तत्पश्चात् कुमुद धीरे से उठी और मन-ही-मन ईश्वर को नमस्कार किया।' पास ही दूसरे बिछौने पर मोती घोर निद्रा में पड़ा सो रहा था। उसके पास आकर कुमुद ने उसका माथा चूमा। कुमुद को मधुसूदन के कमरे तक पहुँचा मोती की माँ ने पूछा—'अब भी डर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लगता है जीजी ?'

हाथ की मुट्ठियों को जरा कड़ी करके कुमुद ने हँसते हुए कहा—'नहीं तो, मुझे डर नहीं लगता।' और मन-ही-मन बोली—'मेरा यही अभिसार है, बाहर अन्धकार है और भीतर प्रकाश।'

पच्चीस

इतने ही में श्यामसुन्दरी हाँफती हुई मधुसूदन के पास आई और कहने लगी—'बहू को मूर्छा आ गई है।' मधुसूदन का मन जल उठा, उसने कहा—'उसे क्या हो गया है ?'

'मैं यह नहीं कह सकती, भैया, भैया करके बावली हो रही है। हाँ, तुम उसे जरा देखने चलोगे ?'

'क्या होगा ! मैं उसका भैया तो हूँ नहीं।'

'देवर जी, बेमतलब का गुस्सा क्यों करते हो, ये सब बड़े घर की लड़कियाँ हैं। जरा देर से वश में आयेंगी।'

'रोज-रोज वे मूर्छित हुआ करें और मैं उनके सिर पर हकीमी तेल की मालिश किया करूँ—क्यों, इसीलिए तो मैं उन्हें ब्याह के लाया हूँ न ?'

'देवर जी, तुम्हारी बात से मुझे हँसी आती है। हाँ, तो इसमें बुराई क्या है, हमारे समय में तो बात-बात में माननियों को मनाना पड़ता था। अब तो केवल मूर्छा ही छुड़ाना पड़ेगा।'

मधुसूदन शान्त भाव से चुप बठा रहा। करुणा से विगलित हो पास में आकर श्यामासुन्दरी ने हाथ थामकर कहा—'देवर जी, इतना अप्रसन्न मत होओ, वह मुझसे सहा नहीं जाता।'

पहले श्यामसुन्दरी में इतना साहस न था कि वह मधु के पास जाकर उसे धैर्य बँधाती। वह मधुसूदन के सामने बिलकुल ही चुप रहती, वह यह भली प्रकार जानती थी कि उन्हें अधिक बातें सह्य नहीं हैं। स्त्री-सुलभ सरस बुद्धि से उसे यह समझने में तनिक भी देर न लगी कि मधुसूदन आज वह मधुसूदन नहीं है। आज उसमें दुर्बलता है, अपने सम्मान के बारे में आज उतनी साव-धानी उसमें नहीं है। देवर के हाथ-में-हाथ मिलाने से उसे साफ-साफ मालूम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो गया कि वह उनको बुरा नहीं लगा, उनके अभिमान पर नव-वधू ने जो एकाएक ऐसी चोट पहुँचाई है, भीतर-ही-भीतर मानो चिकित्सा द्वारा उन्हें आराम-सा पहुँच रहा है। श्यामासुन्दरी उनका अनादर नहीं करती है, यह तो बिलकुल उनको प्रत्यक्ष ही है। श्यामा क्या कुमुद से कम सुन्दर है ? यद्यपि रंग उसका साँवला है किन्तु फिर भी उसकी भोली आँखें, उसके बाल और उसके रसीले ओठ !

श्यामा बोली—'वह देखो, बहू आ रही है। अब मैं जा रही हूँ, किन्तु देखना, उससे गुस्सा न करना। देखो, अभी बेचारी लड़की ही तो है।'

जैसे ही कुमुद घर में घुसी मधुसूदन से रहा न गया, वे बोल उठे—'क्यों, मायके से मूर्छा का अभ्यास कर आई हो किन्तु हमारे यहाँ इसका चलन नहीं, तुम्हें यह नूरनगरी चाल छोड़नी पड़ेगी।'

एक बात भी न कह कुमुदिनी शान्त-भाव से पति के मुँह को देखती हुई खड़ी रही।

उसकी मौनता से मधुसूदन और भी क्रोधित हो उठा। उसके मन के अन्तःस्थल में इस बालिका का मन पाने के लिए एक प्रबल इच्छा-सी उत्पन्न हुई है—इसी कारण उसका तीव्र निष्फल क्रोध इतना भड़क उठा है। वह बोला—'मैं काम-काज वाला आदमी हूँ, मेरे पास समय बहुत कम है। हिस्टीरिया वाली स्त्री के लिए खिदमतगारी करने का वक्त भी मेरे पास नहीं है, मैं यह साफ-साफ बताये दे रहा हूँ।'

कुमुद धीरे से बोली—'तुम मुझे अपमानित करना चाहते हो ? मुझे हार माननी पड़ेगी। तुम्हारे अपमान को मैं हृदय में न लाऊँगी।'

यह सब बातें कुमुद किससे कह रही है, उसके विस्फारित नेत्रों के सामने कौन खड़ा है ? मधुसूदन दंग रह गया और सोचने लगा—यह स्त्री लड़ती क्यों नहीं, इसका क्या इरादा है ?'

मधुसूदन फिर बोल उठा—'तुम अपने भाई की चेली हो किन्तु भली भाँति याद रखना मैं तुम्हारे भैया का महाजन हूँ, उसे एक बाजार से खरीद कर दूसरे में बेच सकता हूँ।'

उस मूढ़ को और कोई दूसरे शब्द न मिले जिससे वह प्रत्यक्ष प्रकट कर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देता तथा कुमुद के मन में यह बात अंकित कर देता कि वह उसके भैया से श्रेष्ठ है ।

कुमुद ने कहा—'देखो, यदि निष्ठुर बनते हो तो भले ही बनो, किन्तु छोटे मत बनो ।' यह कहकर वह सोफे पर बैठ गई ।

कर्कश स्वर में मधुसूदन तड़प उठा—'क्या कहा, मैं छोटा हूँ और तुम्हारा भैया मुझसे बड़ा है ?'

कुमुद ने कहा—'तुम्हें बड़ा जानकर ही तो तुम्हारे घर आई हूँ ।'

मधुसूदन ने फिर व्यंग्य-स्वर में कहा—'बड़ा जान अथवा रुपये के लोभ से ?'

इसके बाद कुमुदिनी सोफे पर से उठ बाहर निकल गई और खुली हुई छत पर जाकर जमीन पर बैठ गई ।

कलकत्ते में जाड़ों की कन्जूस रात होती है । वह धुएँ और कुहरे से धुँधली पड़ गई है । अप्रच्छन्न आकाश तथा तारों का प्रकाश ऐसा प्रतीत होता है मानो बैठे हुए गले का स्वर हो । कुमुद का मन अनुभूति-शून्य हो रहा था, उसे कोई चिन्ता नहीं, किसी प्रकार की वेदना नहीं, मानो वह एक घने कुहरे में विलीन-सी हो गई है ।

मधुसूदन को स्वप्न में भी यह विचार न आ सका था कि कुमुदिनी इस प्रकार चुपचाप कमरे से बाहर निकल कर चली जायेगी । अपनी इस हार पर उसे सबसे अधिक क्रोध कुमुद के भैया पर आया । चौकी पर बैठे हुए उसने शून्य आकाश की ओर दाहिने हाथ का घूंसा तानकर उठाया और कुछ देर बैठा रहा, किन्तु बाद में धैर्य न रख सका, भड़भड़ा कर उठ बैठा और उठकर छत पर जा कुमुदिनी के पीछे खड़े होकर कहा—'बड़ी बहू !'

कुमुद चौंक पड़ी और घूमकर खड़ी हो गई ।

'बाहर जाड़े और ओस में यहाँ खड़ी-खड़ी क्या कर रही हो ? चलो भीतर ।'

कुमुदिनी बिना किसी संकोच के मधुसूदन के चेहरे की ओर देखती रही । मधुसूदन में जो कुछ भी प्रभुत्व का जोर था समाप्त हो चुका था । कुमुद के बाएं हाथ को धीरे से थामकर बोला—'आओ, भीतर चलो ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद के दाहिने हाथ में भैया वाला आशीर्वाद का टेलीग्राम था, उसको उसने छाती से लगा लिया। उसने पति के हाथ में से अपने हाथ को खींचा नहीं बल्कि चुपचाप धीरे-धीरे सोने के कमरे में चली गई।

छब्बीस

प्रातःकाल ही जब कुमुद बिछौने पर उठ बैठी, उस समय उसके पति सो रहे थे। कदाचित् मन न बिगड़ जाय; उसने उनके मुँह की ओर न देखा। बड़ी ही सावधानी से उठी। उठकर पैरों के पास प्रणाम किया और फिर स्नानगृह में चली गई। नहीं धो चुकने पर पिछवाड़े का दरवाजा खोल छत पर जाकर बैठ गई। उस समय पूर्व की ओर कुहरे को चीरकर आकाश पर एक सुनहरी रेखा चमक रही थी।

दिन चढ़ा और धूप निकल आई, कुमुद ने धीरे-धीरे चलकर सोने के कमरे में प्रवेश किया। देखा—उसके स्वामी उठकर चले गये हैं। आइने के दराज पर उसका मोती का बना हुआ बटुआ रखा था। उसने देखा कि इसमें नीलम की अंगूठी नहीं है।

प्रातःकाल मानस-पूजा के बाद उसके मुख पर जो शान्ति का भाव आया था, क्षण-मात्र में वह विलीन हो गया। आँखों में आग जल उठी। मोती की माँ कुछ मिठाई और दूध कलेवा कराने के लिए जब उसे बुलाने आईं तो कुमुद के मुँह से एक भी शब्द न निकला। वह जैसे कठिन पत्थर की मूर्ति-सी बन गई। डरते हुए मोती की माँ समीप आकर बैठ गई और पूछने लगी—'क्या हुआ बहन? कुमुद के मुह से एक भी बात न निकली, उसके ओठ काँपने लगे।

'जीजी! मुझे बताओ तो सही, तुम्हारे कहाँ पर पीड़ा पहुँची है?"

रुँधे हुए कण्ठ से कुमुद बोली—'ले गये हैं चुराकर।'

'क्या ले गये जीजी?'

'मेरी अँगूठी, मेरे भैया की आशीर्वाद की दी हुई अँगूठी।'

'कौन ले गया?'

खड़ी होकर बिना किसी का नाम बताये ही कुमुद ने बाहर की ओर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इशारा किया।

'बहन शान्त हो। तुम्हारे साथ हँसी की होगी, फिर लौटा देंगे।'

'मैं अब न लूँगी, देखूँ वे मेरे साथ कितना अत्याचार कर सकते हैं!'

'अच्छा, यह सब पीछे होगा। चलो, अभी जरा मुँह में तो कुछ डाल लो।'

'नहीं, यह मुझसे न हो सकेगा। मेरे गले में यहाँ का खाना उतरेगा ही नहीं।'

'लक्ष्मी बहन! ऐसा न कहो, मेरी खातिर से तो तुम्हें खाना होगा।'

'मैं एक बात पूछती हूँ, आज से मेरी अपनी कहने को तो कोई चीज अब रह ही नहीं गई?'

'नहीं, नहीं रह गई। जो कुछ भी है, सभी स्वामी की इच्छा पर। क्या तुम्हें यह विदित नहीं, पत्र के अन्त में 'दासी' लिखकर हस्ताक्षर करने पड़ेंगे?'

'सत्यवान की सावित्री क्या दासी थी? या उत्तर रामचरित की सीता?'

कुमुद ने कहा—'स्त्रियाँ जिनकी दासी हैं वे किस भाँति के मनुष्य हैं?

तुम उन्हें अभी अच्छी तरह पहचान नहीं पाई हो, वे दूसरे से ही गुलामी करवाते हैं, सो भी नहीं—ये अपनी गुलामी स्वयं करते हैं। वे जिस दिन आफिस नहीं जा सकते, उस दिन उनके अपने निजी जेब खर्च के रुपये कट जाते हैं। एक दिन बीमारी में महीनों हाथ-खर्च बन्द रहा। उसके दो-तीन महीने तक खाने-पीने का खर्च घटाकर नुकसान बराबर कर लिया। मैं इतने दिनों से घर-गृहस्थी का काम चला रही हूँ इसी कारण मेरा भी माहवारी बंधा है। किसी को वे आत्मीय स्वजन नहीं मानते। इस घर में नौकर-नौकरानी तो गुलाम हैं ही, स्वयं मालिक भी गुलामी से नहीं छूट सके हैं।'

कुमुद कुछ देर चुप रहकर बोली—'मैं वही गुलामी करूँगी। मैं अपने खाने-पहनने के खर्च के अनुसार नित्यप्रति अपना फर्ज अदा करती रहूँगी। मैं इस घर में बिना वेतन की स्त्री बाँदी बनकर रहूँ, यह मुझसे होना असम्भव है। चलो, मुझे काम पर भरती कर लो। घर-गृहस्थी का भार तो तुम्हारे ही ऊपर है—तुम अपनी अधीनता में मुझसे काम करा लिया करो। केवल इतना ही खयाल रखना कि कोई हमें 'रानी कहकर मेरी हँसी न उड़ाने पावे।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद की ठोढ़ी पकड़कर मोती की माँ ने हँसते हुए कहा—'तो फिर तुम्हें मेरी बात माननी पड़ेगी। मैं अब कहती हूँ, चलो अब खाने चलो।'

घर से निकलते हुए कुमुद ने कहा—'देखो बहन! मैं अपने को देने के लिए ही तैयार होकर आई थी किन्तु उन्होंने किसी भाँति देने ही नहीं दिया। मुझे पाना अब दूर है। वे दासी को लेकर रहें।'

मोती की माँ ने फिर कहा—'लकड़हारा पेड़ ही को काटना जानता है और उसे लकड़ी ही मिलती है, वह पेड़ नहीं पा सकता। माली पेड़ की रक्षा करना जानता है और उसे फल और फूल ही मिलते हैं। तुम लकड़हारे के पाले पड़ी हो। उनके मन में कहीं भी दर्द नहीं है, वे तो रोजगारी व्यक्ति हैं।'

कुमुद ने सोने के कमरे में लौटकर देखा कि उसकी तिपाई पर 'लौजेञ्जस' की एक शीशी रखी है। यह सब हाबलू ही की करतूत थी, वही उसे यहाँ रख कहीं चुपके से दुबक गया है। यहाँ पत्थर के संग में भी फूल खिलते हैं। बालक की इस 'लौजेञ्जस' की भाषा में उसे हँसी और रुलाई दोनों आ गई। वह बच्चे को ढूंढने के लिए बाहर निकली। उसने देखा बच्चा दरवाजे की आड़ में चुपचाप खड़ा है। माँ ने उसे,उस कमरे में जाने से रोक रखा था। उसे यह डर था कि किसी कारण मालिक नाराज न हो जाएं। अपने निजी किसी खास काम से यदि किसी को उनके पास जाना पड़ता था तो भले ही वह उनके कमरे में जाता, नहीं तो घर के किसी भी प्राणी की हिम्मत निप्रयोजन जाने की न पड़ती थी।

कुमुद हाबलू को पकड़कर कमरे में ले गई और उसे गोद में बैठा लिया फिर कमरे के भीतर सजावट की चीजों में जो खिलौने के सामान थे, उसे दोनों हिलाने-डुलाने लगे। कुमुद समझ गई कि यह (पेपर वेट) कागज दबाने की कांच हाबलू को पसन्द है। हाबलू के मन में यह बात नहीं आ रही है कि कांच के भीतर रंगीन फूल किस प्रकार दिखाई पड़ रहा है—इसी से वह हैरान है।

कुमुद ने कहा—'इसे लोगे गोपाल?'

उसने अपनी आयु में कभी भी ऐसी अचिन्तनीय बात नहीं सुनी। वह ऐसी चीज की भी क्या कभी आशा कर सकता है? संकोच तथा आश्चर्य से वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद के मुंह की ओर देखता रहा ।

कुमुद ने कहा—'इसको तुम ले जाना, भला !'

मारे खुशी के हाबलू फूला न समाया—उसे उलटता हुआ हाथ में लेकर चट से भाग गया ।

शाम के समय हाबलू की माँ ने आकर कहा—'तुमने यह क्या किया बहन; हाबलू के हाथ में जेठ जी ने पेपरवेट देखकर तो गजब कर दिया। उन्होंने उससे वह छीन तो लिया ही, बेचारे को चोर कहकर पीट डाला । लड़का भी ऐसा है, तुम्हारा नाम तक न लिया। तुम कभी यह भी सुनोगी कि हाबलू को चोरी करना तुम्हीं सिखाती हो !'

कुमुद काठ की मूर्ति के समान कठोर बनी रही ।

इतने में बाहर पदचाप सुनाई पड़ी । मधुसूदन आ रहा है । मोती की माँ झटपट वहाँ से भाग गई । काँच पेपरवेट को हाथ में लिये हुए मधुसूदन कमरे में आया और जहाँ का तहाँ सजाकर रखते हुए शान्त गम्भीर-स्वर में बोला—'हाबलू तुम्हारे घर से यह चुराकर ले गया था, चीजों को जरा सावधानी से रखना सीखो ।'

तीखे स्वर में कुमुद बोली—'उसने चुराया नहीं है ।'

'अच्छा न सही, किन्तु उठा ले गया था ।'

'नहीं, मैंने ही उसे दिया है ।'

'क्यों, इसी तरह तुम उसे बरबाद कराने बैठी हो ? एक बात याद रखना बिना मेरे हुक्म के किसी को कोई चीज न देने पाओगी ।

खड़ी होकर कुमुद ने कहा—'मेरी नीलम की अँगूठी तुमने नहीं ली ?

मधुसूदन ने कहा—'हाँ, ली है ।'

'तुम्हारे उस काँच के ढेले का दाम क्या उससे भी नहीं चुका ?'

'मैंने तो कह दिया था, उसे तुम नहीं रख सकती ।'

'तुम्हारी चीज तुम रख सकोगे और हमारी पर मेरा अधिकार नहीं कि मैं उसे रख सकूं ?'

'इस घर के भीतर तुम्हारी अलग समझी जाने वाली कोई भी चीज नहीं ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'यदि कोई चीज नहीं तो यह आपका घर, इसे सँभालिए।'

जैसे ही कुमुद कमरे से बाहर निकली, श्यामा ने कमरे में आकर पूछा—'बहू कहाँ गई ?'

'क्यों ?'

सवेरे ही से उसका कलेवा लिए बैठी हूँ, क्या इस घर में वह आकर खाना भी वन्द कर देगी ?'

'सो हुआ क्या ? नूरनगर की राज कन्या ने न खाया तो न सही, क्या तुम लोग उसकी बाँदी हो ?'

'अरे हटो, रहने भी दो, कहीं जरा-सी लड़की पर इस प्रकार गुस्सा भी किया जाता है ? बिना खाये-पीये वह इस भाँति दिन बितावेगी, यह तो हम लोगों से नहीं देखा जा सकता। उस दिन गश क्या यों ही आ गया था ?'

क्रोध में गरजकर मधुसूदन बोला—'कुछ नहीं करना होगा, जाओ यहाँ से चली जाओ ! भूख लगने पर आप ही खा जायगी।'

श्यामा मानो बहुत उदास तथा खिन्न होकर चली गई।

मधुसूदन के माथे में खून चढ़ने लगा। स्नान-गृह में जाकर उसने पानी की झंझरी खोली और उसके नीचे अपना सिर लगा दिया।

सत्ताईस

शाम होने को आई, किन्तु कुमुद ढूंढने पर भी न मिली। भण्डार घर के पास कोने में एक छोटी-सी कोठरी है, जहाँ चिराग दीवट, तेल के लैम्प वगैरह रखे जाते हैं, अन्त में पता लगा कि कुमुद वहीं जमीन पर बैठी हुई है।

कुमुद ने कहा—'मेरा यहीं पर स्थान है, मैं यहीं बत्ती साफ किया करूँगी।'

मोती की माँ ने कहा—'काम तो तुमने अच्छा ही लिया है बहन ! इस घर में उजाला करने को तो आई ही हो, किन्तु इसके लिए तुम्हें बत्तियों के निरीक्षण की क्या आवश्यकता है। चलो, अब उठो।'

कुमुद किसी भी तरह वहाँ से टस से मस न हुई।

मोती की माँ ने कहा—'तो मैं भी तुम्हारे पास सोती हूँ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दृढ़ता के स्वर में कुमुद ने कहा—'नहीं।'

मोती की माँ ने देखा कि इस भलीमानस लड़की में हुक्म चलाने की ताकत है, अतएव उसे वहाँ से चला जाना पड़ा।

रात में सोते समय मधुसूदन ने आकर कुमुद की सुध ली। उसने जब यह सुना कि वह बत्तीघर में है तो पहले उसने सोचा—'अच्छी बात है, रहने दो, उसी घर में देखें तो कितने दिन रहती है; मनाने से जिद्द बढ़ जायगी।'

यह सोचकर बत्ती बुझा दी और सोने चला गया। किन्तु किसी प्रकार नींद नहीं आई! उसे प्रत्येक शब्द से यही प्रतीत होता कि शायद आ रही है। एक बार ज्ञात हुआ मानो दरवाजे के बाहर खड़ी है। बिछौने से उठकर बाहर निकला, देखा तो कहीं कोई नहीं। ज्यों-ज्यों रात बीतने लगी, मन-ही-मन छटपटाने लगा। वह कुमुद की अवज्ञा करना चाहता है किन्तु इसकी शक्ति उसमें नहीं। फिर भी खुद आगे बढ़ उसके सामने हार मानना उसकी नीति के विरुद्ध था। ठण्डे पानी से मुँह धोकर फिर सो रहा किन्तु नींद नहीं आई। इधर-उधर करवट बदलते-बदलते आखिर उठ बैठा। कौतूहल को किसी भाँति सँभाल न सका। हाथ में एक लालटेन लेकर सोते हुए कमरों को पार करता हुआ अन्तःपुर में उसी बत्तीघर के सामने पहुँचा। दरवाजे के पास कान लगा कर खड़ा हो गया किन्तु बिल्कुल सन्नाटा था, भीतर से कोई भी आवाज सुनाई न पड़ी। धीरे से दरवाजा खोलकर देखा तो कुमुद जमीन पर एक चटाई बिछाए पड़ी सो रही थी। उसी चटाई के एक पल्ले को जरा लपेटकर उसने तकिया बना लिया है। मधुसूदन की आँखों में जैसे नींद नहीं, उसी भाँति कुमुद की आँखों में नींद न होनी चाहिए थी; किन्तु उसने देखा—वह पड़ी आराम से सो रही है यहाँ तक कि लालटेन के सीधे प्रकाश पड़ने पर भी उसकी निद्रा भंग न हो सकी। इतने में जरा कुमुद ने करवट बदली। जिस भाँति चोर गृहस्थ के जागने का लक्षण देखकर भागता है ठीक वही दशा उस समय मधुसूदन की भी हुई। जल्दी से वह वहाँ से भागा और साथ ही डर भी गया कि कहीं कुमुद उसकी इस पराजय को देखकर हँस न पड़े।

बत्तीघर से निकलकर मधुसूदन बरामदे से होता जा रहा था कि श्यामा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिल गई। उसके हाथ में चिराग था।

'अरे! यहाँ पर तुम कहाँ से आये देवर जी?'

इसका कुछ जवाब न देकर मधुसूदन ने कहा—'तुम कहाँ जा रही हो, भाभी?'

'कल मेरा व्रत है, ब्राह्मणों को भोजन कराना है, उसी के लिए जा रही हूँ—भैया, तुम्हारा भी निमन्त्रण है, किन्तु तुम्हें दक्षिणा देने योग्य मुझमें शक्ति नहीं है।'

मधुसूदन को इसका जवाब ठीक समझ में आ गया था, किन्तु उसने जबान रोक ली।

रात्रि के दूसरे पहर में चिराग की रोशनी में श्यामा बड़ी सुन्दर दीख रही थी। श्यामासुन्दरी ने धीरे से हँसते हुए कहा—'मेरा आज का यह दिन बड़ी अच्छी तरह बीतेगा तथा व्रत भी सफल होगा क्योंकि आज बिछौने से उठते ही मैंने तुम जैसे सौभाग्यशाली का मुंह देखा है।'

मधुसूदन को भाग्यवान शब्द बिडम्बना के समान जान पड़ा, कारण कि शब्द पर जोर दिया गया था। श्यामा की हिम्मत न पड़ी कि वह कुमुद के बारे में स्पष्ट रूप से कुछ पूछती। वह केवल इतना कहकर चली गई—'अच्छा तो कल हमारे यहाँ जीमने आना, तुम्हें सौगन्ध है।'

मधुसूदन अपने कमरे में पहुँच बिस्तर पर लेट गया। बाहर इस खयाल से लालटेन रख दी कि शायद कुमुद आवेगी। कुमुदिनी के सोते हुए मुख को वह किसी भी भांति भुला न सका और बार-बार उसे उसके उस अतुलनीय हाथ की याद आने लगी जो दुशाले से बाहर निकला हुआ था। विवाह के समय जब उस हाथ को अपने हाथ में लिया था तब वह उसे अच्छी तरह न देख सका था किन्तु उसे देखते-देखते आज उसकी आशा ही नहीं मिटती। सोचने लगा इन हाथों पर उसे अधिकार कब मिलेगा? उसे चैन न पड़ी, उठ पड़ा और बत्ती जलाकर उसने कुमुद के डेक्स का दराज खोला। उसने भीतर से कुमुद का मोतियो से बुना बटुआ निकालकर देखा उसमें विप्रदास का टेलिग्राम मिला—'ईश्वर तुझे आशीर्वाद दें!' उसके बाद निकला एक फोटोग्राफ, कुमुदिनी के दोनों भाइयों की फोटो, तथा एक कागज का टुकड़ा जिसमें कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्रदास का लिखा एक श्लोक था। ईर्ष्या से मधुसूदन का दिल घायल होने लगा। विप्रदास के अस्तित्व को उसने दाँत पीसकर ही मिटा दिया तथा उसे पूर्ण भरोसा है कि मिटने का वह दिन कभी-न-कभी आवेगा जरूर। धीरे-धीरे नट कसना होगा किन्तु विप्रदास के सम्पर्क का उन्नीस वर्ष जितने दिन कुमुदिनी उनके यहाँ रह चुकी है वह अधिकार यदि एक ही क्षण में छीन ले तभी उसके मन को शान्ति मिल सकती है और सिवा जबर्दस्ती के उसे कोई दूसरा रास्ता भी नहीं मालूम। हिम्मत करते हुए भी वह आज मोतियों के बटुए को फेंक न सका, अँगूठी चुराने वाले दिन उसका साहस और ही था। मधुसूदन को यह पहले विश्वास था कि अन्य स्त्रियों की भाँति यह भी शासन के आधीन रहेगी, यहाँ तक कि स्त्रियों के स्वभावानुसार उसे शासन ही पसन्द आयेगा, किन्तु उसे आज यह मालूम हो गया कि कुमुदिनी क्या कर सकती है और क्या उससे नहीं हो सकता। कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

यदि कुमुदिनी को कठिन बन्धन में लपेटने का कोई उपाय है तो वह केवल यही कि उसे एक बच्चे की माँ बना दिया जाय। बस उसकी सान्त्वना इसी कल्पना में ही है।

घड़ी ने टनाटन करके पाँच बजाये, किन्तु जाड़े की रात, अभी अन्धकार दूर न हुआ था। आज की रात व्यर्थ हो जायगी और अभी उजाला भी हो मधुसूदन घर से झटपट निकलकर पैरों से जरा कुछ आवाज-सा करता हुआ बत्तीघर के सामने पहुँचा। दरवाजे को भी धक्का देकर आवाज के साथ खोला। किन्तु देखा तो वहाँ कुमुद थी ही नहीं, वह कहाँ है ?

आँगन में नल से पानी गिर रहा था जिससे साफ आवाज आ रही थी। बरामदे में खड़े होकर देखा, तमाम पुरानी जंग से सनी और बेकार दीवटें निकालकर उन्हें इमली की खटाई से माँज रही है। जान-बूझकर यह केवल काम को बढ़ाने की कोशिश जाड़े की रात्रि में निद्राहीन प्रातःकाल दुःख को बढ़ाना मात्र है।

मधुसूदन आश्चर्य में पढ़कर ऊपरी बरामदे में से खड़े-खड़े देखता रहा। अबला के बल को परास्त करने के सोच में वह पड़ गया। घर के सभी लोग सवेरे उठकर जब उसे दीवटें माँजते पायेंगे तो क्या कहेंगे और माँजने धोने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वाले नौकर अपने मन में क्या सोचेंगे ? उसे समस्त घर वालों के सामने हास्यास्पद बनना पड़ेगा और क्या होगा।

मधुसूदन के मन में पहले तो आया कि अभी ही समझा लें किन्तु फिर सोचा कि नहीं, यह ठीक नहीं, प्रातःकाल ही बीच आँगन में दोनों में कहा-सुनी होगी तो सभी लोग बिस्तर छोड़ तमाशा देखने आवेंगे इसी प्रहसन की कल्पना कर वह पीछे हट गया। मझले भाई नवीन को बुलाया और कहा—'घर में चाहे जो भी वारदात हो जाय किन्तु तुम किसी की बात की खबर नहीं रखते।'

नवीन घर का मैनेजर जो था। बेचारे ने डरते हुए कहा—'क्यों, क्या हुआ भैया ?'

नवीन को यह भली-भांति मालूम है कि भैया जब क्रोधित होते हैं, तो अपने गुस्से को वे किसी-न-किसी पर अवश्य ही उतारा करते हैं। अतएव यदि दोषी उनके हाथ से बचकर निकल भी जाय तो निर्दोष होने से भी काम चल जाता है। यदि ऐसा न हो तो नियन्त्रण खतम हो जाय अथवा गृहस्थी पर राजतन्त्र का गौरव ही समाप्त हो जाय।

मधुसूदन ने कहा—'बड़ी बहू जो पागलों की तरह ऊटपटाँग काम कर रही है, क्या तुम जानते हो इसका कारण मुझे मालूम ही नहीं ?'

नवीन में इतना साहस न था कि पूछता कि बड़ी बहू क्या पागलपन कर रही हैं ? तथा उसने इससे भी न पूछा कि न जानना ही कहीं उसके लिए अपराध न समझा जाय।

मधुसूदन ने कहा—'इसमें शक नहीं कि मँझली बहू ही उसके दिमाग को खराब कर रही है।'

नवीन ने बड़े संकोच के साथ कहा—'नहीं तो···मँझली बहू तो···।'

मधुसूदन गरज उठा—'मैंने अपनी आँखों से देखा है।'

इसके ऊपर कोई बात चल ही नहीं सकती। 'अपनी आँखों से देखने' के भीतर उस कांच के पेपरवेट का इतिहास मौजूद था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अट्ठाईस

मोती की माँ जब कुमुदिनी का अकृत्रिम प्रेम से आदर-सम्मान करने लगीं तभी नवीन यह समझ गया था कि यह निभ न सकेगा। घर की स्त्रियाँ इस सम्बन्ध में होड़ाहोड़ी करेंगी। नवीन ने सोचा इस सम्बन्ध में अवश्य कोई ऐसी ही बात हुई है। किन्तु मधुसूदन के कल्पित अभियोग के सम्बन्ध में प्रतिवाद करने से कोई लाभ नहीं है, इससे हठ और बढ़ जायेगा।

क्या बात हुई इसे मधुसूदन ने स्पष्ट रूप से नहीं कहा। जान पड़ता है उसे कहने में लज्जा लग रही थी, क्या करना होगा यह भी अस्पष्ट ही रह गया, उसमें जो अत्यन्त स्पष्ट है वह यही है कि उसकी सारी जिम्मेदारी छोटा बहू की है, इसलिए दाम्पत्य की मर्यादा के अनुसार उत्तरदायित्व का हिस्सा नवीन के ही भाग्य में है।

नवीन ने मोती की माँ के पास जाकर कहा—एक फसाद उठ खड़ा हुआ है।

क्यों, क्या हुआ है ?

यह तो अन्तर्यामी जानते हैं या भाई साहब, और सम्भवतः तुम भी जानती हो, किन्तु डाँट-फटकार मुझे ही मिली।

क्यों कहो सुनूं तो ?

नवीन ने नम्र स्वर में कहा—भैया के उड़िया नौकर से उनका एक कीमती डिनर सेट टूट गया था, उसके जुर्माने का अधिकांश मुझे ही देना पड़ा था, यह तो तुम जानती ही हो, क्योंकि चीजों की जिम्मेदारी मेरे ही ऊपर है। किन्तु इस बार जो वस्तु घर में बाहर से आई है, उस पर भी क्या मेरा ही उत्तरदायित्व है ? जो भी हो, जुर्माना तुम्हें और हमें ही मिलकर चुकाना पड़ेगा। अतएव जो करना हो करो, मुझे अधिक कष्ट न देना छोटी बहू।

जुर्माना से क्या अभिप्राय है, जरा कहो तो ?

रजबपुर भेज देंगे। बीच-बीच में इसका ही डर दिखाते हैं।

डरते हो, इसीलिए डरवाते हैं। एक बार भेजा तो था, क्या फिर रेलभाड़ा भेजकर वापस नहीं बुला लिया था ? तुम्हारे भैया क्रुद्ध होने पर भी हिसाब में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गलती नहीं करते। वे जानते हैं कि मुझे गृहस्थी से बरखास्त करने पर किसी प्रकार की किफायत न होगी, और यदि कहीं एक पैसे की हानि हुई तो वह उन्हें सहन न होगी।

समझ गया इस समय क्या करना चाहिए, कहो न।

अपने भैया से कहना, वे कितने ही बड़े राजा क्यों न हों, तनख्वाहदार दासी रखकर वे रानी का मान भंग नहीं कर सकते—मान का भार उन्हें स्वयं अपने ही सिर रखकर उतारना पड़ेगा। सुहाग-गृह के लिए किराए की दासियाँ न बुलाने देना।

छोटी बहू, मुझे उनको शिक्षा देने की आवश्यकता न पड़ेगी, दो दिन बाद स्वयं उन्हें होश होगा। इस बीच तुम्हीं दूती का काम करदो, कोई फल हो या न हो। इससे यह तो दिखा देंगे कि हम नमक खाकर उसे धीरे से हजम नहीं कर जाते।

मोती की माँ कुमुद को ढूंढ़ने गई। वह जानती थी कि वह सवेरे छत के ऊपर मिलेगी। छत के चारों ओर ऊँची चहारदीवारी है जिसमें गोल-गोल झरोखे हैं। बिना पौधे के कुछ टब भी पड़े हैं, एक कोने में लोहे की जाली का एक बड़ा चौकोर पिंजड़ा है, उसका लकड़ी का पेंदा एकदम सड़ा-सा है। किसी समय इसमें खरगोश या कबूतर रखे जाते थे। परन्तु आजकल अचार, अमावट इत्यादि को कौओं से बचाने के लिए इसे धूप में उनके ऊपर रख दिया जाता है। इस छत पर से आकाश तो दिखाई पड़ता है परन्तु क्षितिज नहीं दिखाई पड़ता। पश्चिमी आकाश में लोहे के कारखाने की चिमनी है। दो दिनों से कुमुदिनी इस छत पर बैठ रही है, इस चिमनी से निकला हुआ धुएँ का बादल ही केवल उसके देखने की एकमात्र वस्तु है—मानो सारे आकाश में केवल यही एक सजीव वस्तु है, जो किसी आवेग से फूल-फूलकर चक्कर लगा रही है।

दीवटों इत्यादि का माँजना समाप्त करके अंधेरा रहते हुए ही स्नान करके कुमुदिनी पूर्व की ओर मुंह किए हुए छत पर बैठी हुई है। उसके भींगे-बाल पीठ पर बिखरे हैं, उन्हें सँवारने की तनिक भी चिन्ता नहीं है। वह पतले काले किनारे की एक मोटे कपड़े की साड़ी पहने और शीत से बचने के लिए एक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोटी अण्डी का चादर ओढ़े हुए है।

यह युवती कुछ दिनों से प्रत्याशित प्रियतम के काल्पनिक आदर्श को अपने हृदय में रखकर उसकी क्षुधा मिटाती आ रही है। उसकी पूजा, व्रत और पौराणिक कथाओं सभी ने इस काल्पनिक मूर्ति को सजीव बना रखा था। वह अपने मन रूपी वृन्दावन में अभिसारिणी हो रही थी—वह प्रातः-काल उठकर ही रामकली राग में यह गाना गा चुकी है—

हममें तुममें प्रीति लगी है सुन मनमोहन प्यारे।

जिस अनागत व्यक्ति के लिए उसके आत्मनिवेदन का अर्घ्य उठता था उसके सामने उपस्थित होने से पहले ही मानो उसके पास उसने अपना प्रतिदिन का अर्घ्य भेज दिया था। वर्षा ऋतु की रात्रि में पीछे के बाग के वृक्षों ने मानो एक राग-सा छेड़ दिया है। उसका उदास मन प्रत्येक कदम पर झन-झन करता नूपुर-सा बजाता है। वह उद्देश्य-विहीन पथ पर चल पड़ा है, यदि कभी घर पर वापस आवेगा तो किस प्रकार ? वह किसको प्रत्यक्ष देखना चाहती है उसे इस प्रकार न जाने कितने दिनों से स्वर में देख रही थी। निगूढ़ आनन्द-वेदना की परिपूर्णता के दिन यदि वह अपने मन के अनुसार किसी को अकस्मात् अपने निकट पा जाती तो उसके हृदय में उठने वाले सभी गान उसी समय अपने रूप में सजीव हो उठते। कोई भी राही उसके द्वार पर आकर खड़ा नहीं हुआ। कल्पना के निकुञ्ज गृह में वह अकेली ही थी। यहाँ तक कि उसकी समवयस्का सखी भी कोई नहीं थी। इसीलिए इतने दिनों तक श्याम-सुन्दर के चरणों के निकट अपने रुके हुए प्रेम की पूजा के फूल के रूप में वह अपने लापता प्रेमी को ढूंढ रही थी। इसके लिए जब घटक विवाह का प्रस्ताव लेकर आया तब कुमुदिनी ने अपने देवता की आज्ञा माँगी—पूछा—इस बार तो तुम मिलोगे न ? अपराजिता के फूल ने कहा—यह मिला तो है।

हृदय के इतने दिनों का इतना आयोजन व्यर्थ हो गया। एकाएक पत्थर ठन-ठन बोल उठा, क्षण भर में भारी नाव डूब गई। व्यथित यौवन आज पुनः ढूंढ़ने के लिए निकलता है, वह अपना पुष्प किस पर चढ़ावे। थाली में जो अर्घ्य उसने रखा था वह आज भारी बोझ हो उठा। इसीलिए आज वह इस प्रकार तल्लीन होकर गा रही है—मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरा न कोई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु आज यह गान शून्य में गूंज रहा है, कहीं पर पहुँचा नहीं। इस शून्यता में कुमुद का मन भय से भर उठा। आज से जीवन के उस अन्तिम दिन तक मन की गम्भीर इच्छा क्या उसी धूम्र-मण्डली के सदृश केवल अकेली रह कर ही व्यतीत करनी पड़ेगी।

मोती की माँ पीछे दूर पर बैठी रही। प्रातःकाल के निर्मल प्रकाश में निर्जन छत पर इस सुन्दरी की शोभा ने उसे विस्मित कर दिया। उसने सोचा, इसे किस प्रकार मनाना चाहिए। यहाँ जो स्त्रियाँ हैं इसकी तुलना में वे किस श्रेणी की हैं ? वे स्वयं ही इससे पृथक हो गई हैं, वे इससे ईर्ष्या तो अवश्य करती हैं किन्तु इससे होड़ करने का साहस उनमें नहीं है।

बैठकर देखती हुई मोती की माँ ने अकस्मात् देखा कि कुमुद अपने दोनों हाथों से अपने ओढ़ने के आँचल में मुख छिपाकर रो रही है। वह अब अधिक न रुक सकी; निकट आकर उसके गले में बाँह लगाकर बोल उठी—मेरी बहिन, मेरी लक्ष्मी मुझे बताओ, तुम्हें क्या दुःख है ?

कुमुद देर तक कुछ भी बोल न सकी। कुछ सँभलकर वह बोली—भैया का पत्र आज भी नहीं मिला, यह समझ में नहीं आता कि उन्हें क्या हुआ।

बहिन, क्या चिट्ठी पहुँचने का समय हो गया ?

अवश्य हो गया। मैं उन्हें अस्वस्थ देखकर आई हूँ। वे जानते हैं कि खबर पाने के लिए मेरा चित्त कैसा व्याकुल होगा।

मोती की माँ ने कहा—'तुम चिन्ता न करो, खबर पाने में लिए मैं कुछ उपाय अवश्य करूँगी।

कुमुद ने तार भेजने की बात बहुत बार सोची है, किन्तु किसके द्वारा भेजे। जिस दिन मधुसूदन ने अपने को उसके भाई का महाजन कह कर डींग हाँका था उसी दिन से मधुसूदन के सामने अपने भाई की चर्चा चलाने में भी उसकी जबान रुक जाती है। उसने आज मोती की माँ से कहा—'यदि तुम भैया के पास मेरे नाम से तार भेज सको तो मेरी जान में जान आ जाय।

मोती की माँ ने कहा—इसमें डर की कौन-सी बात है, मैं तार भेज दूंगी।

कुमुद ने कहा—'तुम जानो, मेरे पास एक भी रुपया नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या कह रही हो बहिन, यह ठीक नहीं है। गृहस्थी के खर्च के लिए जो रुपये मेरे पास रहते हैं वे सब तो तुम्हारे ही रुपये हैं। आज तक तो मैं तुम्हारा ही नमक खाती आ रही हूँ।

कुमुद जोर से बोल उठी—इस घर में मेरा कुछ भी नहीं है।

अच्छा बहिन, तुम्हारे लिये मैं अपने रुपयों में से ही खर्च कर दूंगी। चुप क्यों हो ? इसमें दोष ही क्या है ? यदि मैं रुपए घमंड के साथ देती तो उसे तुम्हें न लेना चाहिए था। यदि मैं प्रेमपूर्वक दे रही हूँ तो तुम प्रेमपूर्वक क्यों न लोगी ?

कुमुद ने कहा—लूंगी।

मोती की माँ ने पूछा—बहिन, क्या तुम्हारे सोने का कमरा आज भी सूना ही रहेगा।

कुमुद ने कहा—वहाँ पर मेंरे लिए स्थान नहीं है।

मोती की माँ ने अधिक जोर देना ठीक नहीं समझा। उसने सोचा मनाने का काम मेरा नहीं है, जिसका काम है वह करेगा। उसने केवल धीरे से कहा—क्या तुम्हारे लिए थोड़ा-सा दूध ले आऊँ ?

कुमुद ने कहा—कुछ देर बाद। अपने देवता के साथ उसे उसका निपटारा करना अभी बाकी है। अभी तक वह अपने मन में कोई उत्तर नहीं पा सकी है।

मोती की माँ अपने घर में जाकर नवीन को बुलाकर बोली—एक बात सुनो। जेठजी के बाहर वाले कमरे में उनके डैस्क को देख आओ, बहिन की कोई चिट्ठी आई है या नहीं—दराज खोलकर भी देख लेना।

नवीन ने कहा—यह तो अत्यन्त कठिन है।

यदि तुम न जा सको तो मैं जाऊँ।

यह तो झाड़ी के भीतर से भालू के बच्चे को पकड़ लाना है ?

मालिक दफ्तर गए हैं, काम समाप्त करके आने में उन्हें एक बज जायगा इसी बीच—

देखो छोटी बहू दिन के समय यह कार्य मुझसे किसी भी तरह न हो सकेगा, इस समय चारों ओर मनुष्य हैं। आज रात में तुम्हें खबर दे सकूंगा।

मोती की माँ ने कहा—अच्छा यही सही। किन्तु नूरनगर में तार भेजकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अभी ही पता लगाना होगा कि विप्रदास बाबू की तबियत कैसी है ?

अच्छी बात है, इसे भैया को बताकर ही करना होगा न ?

नहीं ।

छोटी बहू, मैं देखता हूँ कि तुम मरने पर तुली हो । इस घर में मालिक की आज्ञा मिले बिना छिपकली भी मक्खी नहीं मार सकती, और मैं ।

बहिन के नाम से तार जायगा इसमें तुम्हारा क्या ?

मेरे ही द्वारा जायगा न ?

जेठजी के आफिस से तो बहुत से तार दरबान के द्वारा भेजे जाते हैं, उनके साथ इसे भी भेज देना । यह रुपए लो, बहिन ने दिये हैं ।

यदि कुमुद के सम्बन्ध में नवीन का हृदय भी करुणा से व्यथित न हो उठा होता तो वह इतने बड़े दुस्साहस का कार्य करने की हिम्मत न करता ।

उन्तीस

मधुसूदन नियमानुसार एक बजे खाने के लिए घर पर आया । घर की स्त्रियाँ उसे घेरकर बैठ गईं, कोई पंखा झलने लगी, कोई भोजन परोसने लगी । पहले कहा जा चुका है कि मधुसूदन के अन्त:पुर की व्यवस्था में ऐश्वर्य का आडम्बर नहीं है । उसके भोजन की व्यवस्था पुरानी प्रथा के अनुसार ही है । मोटे चावल का भात न होने से न तो उसे अच्छा ही लगता, न उसका पेट ही भरता । किन्तु बर्तन कीमती हैं । थाली, कटोरी और गिलास चाँदी के हैं । साधारणतया चने की दाल, मछली का झोल, इमली की चटनी, भुजिया खाद्य सामग्री है । तत्पश्चात् सबके अन्त में वह एक बड़े कटोरे में चीनी मिश्रित दूध पीकर एक बीड़ा पान खाता और दो बीड़ा डिब्बे में रखकर बिछोने पर लेटकर पन्द्रह मिनट तक तम्बाकू पीता है । उसके बाद ही तुरन्त आफिस चला जाता है । अत्यन्त दैन्यावस्था से लेकर आज तक इतने दिनों से इसी क्रम में चल रहा है । मधुसूदन को भूख के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, जिह्वा के लिए नहीं ।

श्यामासुन्दरी दूध के कटोरे में चीनी मिला रही थी । उसका शरीर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

साँवला और हृष्ट-पुष्ट है। उसके शरीर पर एक श्वेत साड़ी के अतिरिक्त और कोई भी कपड़ा नहीं है। किन्तु उसे देखने से जान पड़ता है कि वह सर्वदा स्वच्छता से रहती है। उसकी आयु यौवन के अन्त तक पहुँच चुकी है किन्तु मानो जेठ के चौथे पहर की भाँति दिन ढल जाने पर भी अभी गोधूलि की छाया नहीं पड़ी है। घनी भौहों के नीचे चमकीले काले नेत्र हैं, मानो वे सामने से किसी को नहीं देखते, कुछ थोड़ा-सा देखकर सब कुछ देख लेते हैं। उसके रसपूर्ण ओठों में बड़ा सुन्दर भाव है, मानो उसमें बहुत-सी बातें छिपी हुई हैं। गृहस्थी के कारण उसे विशेष सुख नहीं मिलता तो भी वह सन्तुष्ट है। वह अपने को अमूल्य ही समझती है, वह कृपण भी नहीं है। उसकी अमूल्यता-व्यवहार में नहीं आ सकी, इसीलिए अपने निकटवर्तियों में उसे एक प्रकार की अश्रद्धा-सी है। मधुसूदन के ऐश्वर्य की वृद्धि के समय ही श्यामसुन्दरी ने इस गृहस्थी में प्रवेश किया था। उसने यह संकल्प किया था कि मैं अपने यौवन के जादू-मंत्र से इस गृहस्थी में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करूँगी। यह कहना भी कठिन है कि मधुसूदन का मन कभी डिगा नहीं। किन्तु मधुसूदन ने किसी भी तरह हार नहीं मानी। इसका कारण यह है कि मधुसूदन की साँसारिक बुद्धि केवल साधारण बुद्धि नहीं है. वह प्रतिभा सम्पन्न है। इस प्रतिभा के बल पर उसने सम्पत्ति प्राप्त की है और इसकी प्राप्ति के गम्भीर परमानन्द में वह मग्न है। इस प्रतिभा के बल पर वह निश्चित रूप से यह जानता था कि धन-प्राप्ति की जिस तपस्या में वह लगा है, उसे भंग करने के लिए इंद्रदेव ने अनेक विघ्न भेजे हैं—उसके तपोभंग के लिए अनेक धक्के लगे हैं, किन्तु वह सदा सँभल गया है। सुविधा इतनी ही थी कि यह उसके व्यवसाय का मध्याह्न काल था, ऐसे कठिन परिश्रम के समय नेत्रों से देखने एवं कानों से सुनने में श्यामा का जो कुछ साथ एकान्त में प्राप्त हो जाता वह मानो मधुसूदन की थकावट दूर कर देता था। श्राद्ध आदि धार्मिक कर्मों में श्यामासुन्दरी की ओर उसके पक्षपात का झुकाव अधिक हो जाता था, किन्तु उन्होंने श्यामा को किसी भी दिन इतना प्रश्रय नहीं दिया जिसके कारण अन्तःपुर में उसके प्रति स्पर्द्धा बढ़ सकती। श्यामासुन्दरी मधुसूदन के मन के झुकाव को भली-भाँति पहिचानती है, तो भी उनकी ओर से उसका भय दूर नहीं हो पाया था।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुसूदन के भोजन के समय श्यामासुन्दरी नित्य ही उपस्थित रहती है, आज भी वह उपस्थित थी। वह तुरंत स्नान करके आई है—उसके असाधारण काले घने लंबे बाल पीठ पर लहरा रहे हैं—उसके ऊपर स्वच्छ, सफेद साड़ी सिर के ऊपर तक खिची है, भीगे हुए बालों से सिर में लगी सुगन्धि की महक आ रही है।

श्यामासुन्दरी ने धीरे से कहा—देवर जी, बहू को बुला दूँ

मधुसूदन ने कोई बात न कह कर अपनी भावज की ओर गंभीर दृष्टि से देखा। उसकी भावज श्यामासुन्दरी भयभीत-सी होकर प्रश्न की व्याख्या करती हुई बोली—खाने के समय तुम्हारे निकट बैठती तो अच्छा होता, जरा तुम्हारी सेवा करती।

मधुसूदन की मुखाकृति का कोई भाव समझ में न आने के कारण श्यामसुन्दरी वाक्य पूरा किये बिना ही चुप हो गई। मधुसूदन पुनः सिर नीचा करके खाने में लग गया।

कुछ देर बाद थाली की ओर से मुख उठाए बिना ही उसने पूछा—बड़ी, बहू इस समय कहाँ है ?

श्यामासुन्दरी हड़बड़ाकर बोल उठी—मैं देखकर आती हूँ।

मधुसूदन ने भौंहें सिकोड़कर अँगुली हिलाकर मना किया। उसका मन प्रश्न का उत्तर सुनने को उत्सुक है किन्तु वह उसके मुख से सुनना नहीं चाहता—साथ ही उसके मन में कौतूहल भी अधिक है। भोजन समाप्त होने पर जब वह अपने तिमंजिले शयनागार में गया तो उसके चित्त में आशा की एक क्षीण रेखा थी। वह एक बार छत पर घूम आया, बगल के स्नानगृह में घुस कर क्षण भर स्तब्ध होकर खड़ा रहा। तत्पश्चात् बिछौने पर लेट कर गड़गड़ा पीने लगा। निर्दिष्ट १५ मिनट बीते, बीस मिनट समाप्त होकर जब आधा घण्टा पूरा होने को आया तब उसने छाती की जेब में से घड़ी निकालकर समय देखा। अनेक वर्ष बीत गए परन्तु आफिस जाने में उसे कभी पाँच मिनट की भी देरी नहीं हुई। आफिस में एक हाजिरी का रजिस्टर है उसमें प्रत्येक व्यक्ति के आने और जाने का ठीक हिसाब रहता है। उस हिसाब से वेतन में कमी या वृद्धि होती है। आफिस के अन्य कर्मचारियों की अपेक्षा मधुसूदन के जुरमाने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की रकम बहुत कम है और इस विषय में अपने प्रति उसे पक्षपात नहीं है। वास्तव में वह स्वयं कर्मचारियों से दुगुना जुरमाना देता है। अब उसने अपने मन में प्रतिज्ञा की कि आफिस का समय समाप्त हो जाने पर अतिरिक्त समय में कार्य करके क्षतिपूर्ति करूँगा। समय जितना ही बीतता जा रहा है उसका मन काम में उतना ही नहीं लग रहा है। यहाँ तक कि आज समय से आध घण्टा पहले ही वह काम छोड़कर घर चला आया। उसकी केवल यही इच्छा थी कि असमय में ही घर में प्रवेश करना चाहिए। हो सकता है कि कोई दिखलाई दे जाय। दिन रहते हुए वह कभी शयन-गृह में नहीं आता। आज आफिस की पोशाक पहिने हुए ही वह अन्तःपुर में प्रविष्ट हुआ।

ठीक उसी समय मोती की माँ छत पर धूप में लगी आम की खटाई को टोकरी में रख रही थी। मधुसूदन को असमय शयन-गृह में घुसते हुए देखकर वह हाथ भर का घूँघट काढ़कर उसी की आड़ में बहुत हँसी। मँझली बहू के सम्मुख अपना अनियम पकड़ जाने से मधुसूदन लज्जित और विरक्त हुआ। उसने अपने मन में सोचा कि बहुत धीरे से कमरे में प्रवेश करूँगा—जिससे कि भीरु हरिणी डर कर भाग न जाय। परन्तु वैसा न हो सका। लोगों की कौतुकपूर्ण दृष्टि से बचने के लिए उसने स्वयं शीघ्रतापूर्वक घर में प्रवेश किया। उसने देखा कि आफिस से भाग आना एकदम व्यर्थ गया। घर में तो कोई भी नहीं है। दिन के समय कोई क्षणभर के लिए भी यहाँ पर था इसका कोई भी चिह्न नहीं मिल रहा है। उसका अधैर्य मानो क्षणभर में असह्य हो उठा। यद्यपि वह भसुर है, उसने मँझली बहू से कभी एक भी बात नहीं की, तब भी उसको बुलाकर कुमुद के सम्बन्ध में कुछ कहने के लिए उसका मन छटपटाने लगा। एक बार घर के बाहर भी आया किन्तु उस समय मोती की माँ नीचे चली गई थी।

वह नव वधू द्वारा परित्यक्त शयन-गृह में अकारण, असमय में अकेले आने के असम्मान से त्राण पाने के लिए तेजी से बाहर की ओर चला गया। अत्यन्त आवश्यक कार्य करने का भाव प्रदर्शित करते हुए वह डेस्क पर झुक पड़ा। सामने एक रजिस्टर था। जिसे वह साधारणतया कभी देखता न था; उसे कार्यालय के प्रधान क्लर्क देखते थे। आज लोगों की आँखों को ताड़ना देने के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिए वह उसको खोलकर बैठ गया। इस रजिस्टर में उसके घर के पत्र और तारों की रवानगी का पूरा विवरण रहता है। रजिस्टर खोलकर उसने पहले ही देखा कि आज के तारों में पहला तार विप्रदास के पते का है। प्रेषक हैं स्वयं मलकिनी जी।

'बुलाओ दरबान को।'

दरबान आया।

'यह तार किसने भेजने के लिए दिया था ?'

'मँझले बाबू ने।'

मँझले बाबू फीका-सा चेहरा लेकर सामने आए।

'मेरी आज्ञा लिए बिना तार भेजने को किसने कहा ?' जिसने कहा था उसका नाम मालिक के मुख पर कहना तो सरल कार्य नहीं है, क्या उत्तर दिया जाय, यह समझ में न आने के कारण नवीन व्याकुल हो उठा, शीतकाल में उसे पसीना हो आया।

नवीन को चुप देखकर मधुसूदन ने स्वयं पूछा—जान पड़ता है मँझली बहू ने, मुख नीचा करके निरुत्तर हो जाने से उसका तात्पर्य स्पष्ट हो गया। माथे पर खून चढ़ गया, मुख लाल हो उठा—इतना क्रोध आया कि मुख से बात ही न निकल सकी। तेजी से हाथ हिला कर नवीन को घर से बाहर चले जाने का संकेत करके कमरे के एक छोर से दूसरे छोर तक वह तेजी से टहलने लगा।

तीस

नवीन ने घर में जाकर मुख शुष्क-सा किए हुए मोती की माँ से कहा—मँझली बहू, बाँधो बोरिया बिस्तर।

'तुम्हें क्या हुआ है ?'

'इस बार सब चीजें बाँधकर साथ ले चलना होगा।'

'यदि मैं तुम्हारी बुद्धि से चलूँ तब तो शायद कल ही बाहर निकलना पड़े। क्यों ? जान पड़ता है तुम्हारे भैया का मिजाज ठीक नहीं है ?'

'मैं तो उन्हें पहिचानता हूँ। जान पड़ता है इस बार हमीं लोगों पर बीतेगी ?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'तो चले चलो न। इतनी चिंता में क्यों पड़े हो ? वहाँ जल में डूब तो न जायंगे ?'

मुझे चलने के लिए क्यों कहती हो ? इस बार आज्ञा मिलेगी मँझली बहू को देश भेज दो।

मैं जानती हूँ तुम उस आज्ञा का पालन नहीं कर सकते।

'तुमने कैसे समझा ?'

'क्या तुम समझते हो कि मैं इसे अकेली ही जानती हूँ, ऐसी बात नहीं है—घर के सभी लोग तुम्हें स्त्रैण कहते हैं। पुरुष किस तरह स्त्रैण हो सकता है यह बात तुम्हारे भैया इतने दिनों से समझ ही नहीं पा रहे थे। इस बार उनके समझने की बारी है।

'क्या सचमुच ?'

मैं तो देख रही हूँ कि तुम लोगों के वंश में उसका रोग है। इतने दिनों से तुम्हारे बड़े भाई का वीर्य पकड़ में नहीं आता था। बहुत दिनों से जमा हुआ था इसीलिए उसमें वेग बहुत अधिक होगा, इसे देख लेना, यह मैं कहे देती हूँ। जिस जोर के साथ वे सब कुछ भूलकर रुपए की थैली जकड़कर बैठे थे ठीक वही जोर अब पड़ेगा बहू के ऊपर।

'पड़ने भी दो। बड़े स्त्रैण तो अपना रंग जमावें परन्तु छोटे की रक्षा कैसे हो ?'

इसकी चिन्ता का भार मेरे ऊपर है। इस समय मैं तुमसे जो कुछ कहती हूँ वही करो। उनका दराज तुम्हें देखना होगा।

नवीन ने हाथ जोड़कर कहा—मँझली बहू तुम्हारी दुहाई है—यदि तुम साँप के बिल में हाथ लगाने को कहतीं तो मैं लगाता, किन्तु दराज में नहीं।

'यदि साँप के बिल में हाथ लगाना पड़ेगा तो मैं ही लगाऊँगी किन्तु दराज की खोज तुम्हें करनी होगी। तुम तो जानते हो इस घर की सभी चिट्ठियाँ उनके देखे बिना किसी को भी देने की आज्ञा नहीं। मेरा हृदय कहता है उनके हाथ में चिट्ठी आई है।'

'मेरा मन भी यही कहता है, किन्तु उसके साथ ही यह भी कहता है कि यदि मैं उस पत्र में हाथ लगाऊँगा तो भैया उसका उचित दंड देने के लिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ढूंढ़ने पर भी न पावेंगे। जान पड़ता है सात वर्ष की सश्रम फाँसी की आज्ञा होगी।'

'तुम्हें कुछ भी करना न होगा, चिट्ठी में हाथ भी न लगाना, केवल एक बार देख आओ कि बहिन के नाम का पत्र है या नहीं ?'

मँझली बहू में नवीन की भक्ति बड़ी गम्भीर है, यहाँ तक कि वह अपने को अपनी स्त्री के अयोग्य ही समझता है। इसीलिए उसके निमित्त कोई कठिन काम करने में उसे जितना भी भय होता उतनी ही प्रसन्नता होती थी।

उसी रात को मँझली बहू को नवीन से खबर मिली कि कुमुद के नाम एक पत्र और एक तार दराज में है।

जिस उत्तेजना के प्रथम धक्के से कुमुदिनी अपना शयनगृह छोड़कर दास्य-वृत्ति में प्रवृत्त हुई थी, उसका वेग घट गया है। अपमान की विरक्ति कम हो गई है, इस समय उसका मन विषाद की सलीनता से भरा है। वह समझ गई है कि व्यवस्था चिरकाल तक के लिए नहीं है। फिर भी उस प्रकार की कोई व्यवस्था हुए बिना कुमुद जी भी कैसे सकती है। संसार में मृत्युपर्यन्त दिन-रात जोरों से इस प्रकार काम में लगे रहना तो सम्भव नहीं है।

यह बात वह दरवाजा बन्द करके सोच रही थी। यह कमरा बरामदे के एक कोने में लकड़ी घेरकर बना हुआ है। प्रवेश-द्वार के अतिरिक्त कोठरी चारों ओर से एकदम बन्द है, दीवालें भी लकड़ी की ही बनी हैं। इसी में रोशनी जलाने का सारा सामान रहता है। तेल से भीगने के कारण कोठरी गन्दी हो गई है। दीवार में जिस ओर दरवाजा है उसी ओर किसी नौकर ने मोमबत्ती की तस्वीर चिपकाकर उसे सून्दर बनाने का प्रयत्न किया है। एक किनारे टीन के सन्दूक में खड़िया मिट्टी हैं। उसके ही निकट सूखी इमली तथा कुछ मैले झाड़न हैं और कतार-की-कतार मिट्टी के तेल के टीन हैं, जिनमें अधिकाँश खाली हैं केवल दो-तीन भरे हैं।

कुमुद आज सवेरे से ही काम में लगी है। यह कठोर काम ससाप्त करके मोती की माँ ने एक बार कुमुद की तपस्या का दुसाध्य संकट खड़ी होकर देखा। वह समझ गई कि दो-एक क्षणभंगुर वस्तुओं का विनाश अत्यन्त निकट है। अब इस घर में छोटी-से-छोटी चीज का भी सुधार हुए बिना न रहेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोती की माँ अधिक रुक न सकी, बोल उठी—मेरे हाथ में कोई काम न था, इसीलिए मैं यहाँ आई थी। मैंने सोचा था बहिन के काम में जरा मैं भी हाथ लगा दूँ, पुण्य होगा। यह कहकर शीशे का ग्लोब और चिमनी की टोकरी अपने पास खींचकर वह उन्हें साफ करने लगी।

कुमुद को इसमें आपत्ति करने की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि इसी बीच अपनी कमजोरी के सम्बन्ध में उसे पूरा ज्ञान हो गया है। मोती की माँ की सहायता मिलने से उसकी जान बची किन्तु मोती की माँ भी इस काम में चतुर नहीं है। लालटेन में हिसाब से बत्ती लगाना उसके लिए असम्भव है। यह कार्य उसकी देखरेख में होता है, तेल के नाप आदि का हिसाब उसी के हाथ में है, किन्तु उसने अपने हाथ से बत्ती कभी नहीं काटी है। इसीलिए विवश होकर उसने बंकू फर्राश को बुलाने की बात छेड़ी है।

उसे हार माननी पड़ी, बंकू फर्राश आया और शीघ्रतापूर्वक थोड़ी ही देर में उसने काम समाप्त कर दिया। संध्या के पूर्व ही दीपकों को प्रत्येक घर में रख आना होता है। इस काम के लिए उसे सदा के अनुसार आज भी आना पड़ेगा या नहीं, यह बात बंकू ने पूछी। वह सीधे स्वभाव का था परन्तु उसके प्रश्न में मानो कुछ व्यंग-सा था। इससे कुमुद के कान का अग्रभाग लाल हो उठा।

उसके उत्तर देने के पूर्व ही मोती की माँ ने कहा—आवेगा क्यों नहीं ? कुमुद को यह समझने में बाधा नहीं हुई कि काम करने जाकर वह केवल काम में बाधक ही हो रही है।

इकत्तीस

दोपहर को भोजनोपरान्त दरवाजा बन्द कर कुमुदिनी बैठी हुई अपने मन में प्रतिज्ञा करने लगी कि अब मैं अपने में क्रोधाग्नि उत्पन्न न होने दूँगी। कुमुद ने सोचा आज का दिन अपने चित्त को स्थिर करने में लगेगा, देवता का आशीर्वाद लेकर कल सवेरे से मैं गृहधर्म के सत्पथ में लग जाऊँगी। अब वह अपने साथ समझौता करने लगी। इस कार्य में उसके भैया की स्मृति सबसे अधिक सहायक थी। उसने अपने भैया कि धैर्य की आश्चर्यजनक गम्भीरता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखी है, उनके मुख पर का विषाद उनके हृदय के महत्त्व की छाया थी, उस समय के शिक्षित समाज में प्रचलित धर्म धर्म ही उनका था, देवता को बाहर से प्रणाम करने की उनकी आदत नहीं थी, परन्तु तो भी देवता स्वयं ही उनके जीवन को पूर्ण कर प्रगट होते थे।

जब तीसरे पहर बंकू फर्राश ने दरवाजा खटखटाया, तब कुमुदिनी दरवाजा खोलकर बाहर चली गई। उसने मोती की माँ से कहा—मैं आज रात में भोजन न करूंगी। मन को विशुद्ध करने के लिए ही मेरा यह उपवास है। मोती की माँ कुमुद का मुख देखकर आश्चर्य में पड़ गई। आज उसके मुख पर हृदय-ज्वाला की झलक नहीं थी। मस्तक एवं नेत्रों में प्रशान्त स्निग्ध तेज था। मानो वह इसी समय स्नान-ध्यान समाप्त करके आ रही है। मानो अन्तर्यामी देवता ने उसका सारा अभिमान हर लिया है, मानो वह अपने हृदय में निर्माल्यपुष्प रखकर लाई है; उसी की सुगन्धि उसे घेरे हुए है। इसीलिए जब कुमुद ने उपवास करना चाहा तब मोती की माँ ने समझा कि यह अभिमान का आत्मपीड़न नहीं है इसीलिए उसने तनिक भी आपत्ति नहीं की।

कुमुद अपने देवता की मूर्ति को हृदय में रखकर छत के एक कोने में जाकर बैठ गई। अब वह भली-भाँति समझ गई कि यदि कष्ट उसे इस प्रकार से धक्का न देता तो वह अपने देवता के इतना निकट कभी न आ पाती। अस्त होते हुए सूर्य की ओर देखकर कुमद ने हाथ जोड़कर कहा—हे प्रभो! अब कभी आपसे मेरा विच्छेद न हो; आप मुझे रुलाकर अपना बना लीजिएगा।

जाड़े का दिन देखते-देखते मलीन हो गया। धूल, कुहरा, और कारखानों के धुएं से मिले हुए एक धूमिल आवरण द्वारा संध्याकालीन अन्धकार की महिमा बढ़ गई। जिस प्रकार वह आकाश एक व्यापक मलीनता का बोझ पाकर मिट्टी की ओर झुक रहा है, उसी प्रकार मानो अपने भैया के लिए दुश्चिन्ता के असह्य बोझ ने कुमुदिनी के मन को भी नीचे उतारकर रख दिया।

इस प्रकार कुमुदिनी ने अभिमान के बन्धन से छुटकारा पाकर मुक्ति का आनन्द और भैया के लिए चिन्ता से संतप्त हृदय का भार लिए हुए पुनः उसी कमरे में प्रवेश किया। उसकी प्रबल इच्छा थी कि वह उपायविहीन इस चिन्ता के बोझ को भी दृढ़ विश्वास के साथ भगवान् को ही समर्पित कर दे। किन्तु

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बारंबार आत्म-भर्त्सना करने पर भी उसमें करने की शक्ति नहीं आई। तार तो दिया जा चुका, उसका उत्तर क्यों नहीं आया, यह प्रश्न लगातार मन में बना ही रहा।

मधुसूदन नारी-हृदय के आत्मसमर्पण की सूक्ष्म बाधा पर कहीं भी हाथ नहीं लगा पाता। जिस विवाहित स्त्री के शरीर और मन पर उसका पूर्ण अधिकार है वह भी उसके लिए अत्यधिक दुर्गम है। भाग्य के इस अचिन्तनीय षड़यन्त्र पर वह किस-किस ओर से कैसे आक्रमण करे यह उसकी समझ में नहीं आ रहा है। मधुसूदन अपने व्यवसाय में कभी किसी कारण से तनिक भी उत्साहहीन नहीं हुआ। इस समय वह बुरा लक्षण भी दिखाई पड़ा। यह बात सभी जानते हैं कि अपनी माँ की पीड़ा और मृत्यु से भी मधुसूदन के काम में तनिक भी बाधा नहीं हुई। उस समय उसकी अविचलित दृढ़-चित्तता को देख-कर बहुतेरे उसमें भक्ति करने लगे थे। मधुसूदन आज अकस्मात् अपने सम्बन्ध में नवीन अनुभव पाकर स्वयं आश्चर्यित हो गया है, जो शक्ति उसे बँधे हुए मार्ग के बाहर इस प्रकार खींच रही है वह उसे किस ओर ले जावेगी, यह उसकी समझ में नहीं आ रहा है।

रात्रि का भोजन समाप्त करके मधुसूदन घर में सोने के लिए आया। यद्यपि उसे विश्वास नहीं था, किन्तु आशा थी कि आज कुमुदिनी शयन-गृह में दिखाई पड़ेगी। इसीलिए मधुसूदन नियमित समय व्यतीत होने के बाद आया। अपने स्वस्थ शरीर एवं पुरानी आदत के अनुसार मधुसूदन को ठीक समय पर नींद आ जाती है किन्तु सो जाने पर कहीं कुमुद आकर वापस न चली जाय, इस डर से वह सोने के लिए बिछौने पर नहीं गया। कुछ देर सोफे पर बैठा रहा, कुछ देर तक छत पर टहलता रहा। मधुसूदन के सोने का समय ९ बजे है आज उसे एकाएक ज्ञात हुआ कि फाटक की घड़ी में ग्यारह बज गये। उसे लज्जा मालूम हुई। किन्तु बिछौने के सामने वह दो-तीन बार आकर खड़ा रहा, उसे सोने की इच्छा नहीं हुई। तब उसने सोचा कि बाहरी कमरे में चलकर आज रात में ही नवीन से कुछ बातें करनी चाहिएँ।

बाहरी कमरे के बरामदे में आकर उसने देखा कि अभी तक रोशनी जल रही है वह घर में जाना ही चाहता था कि उसने देखा नवीन हाथ में लाल-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

टेन लिए हुए बाहर आ रहा है। यदि दिन होता तो वह देख पाता कि क्षण-भर में नवीन का मुख फीका पड़ गया।

मधुसूदन ने पूछा—इतनी रात को तुम यहाँ कैसे ?

नवीन को बात सूझ गई, उसने कहा—सोने के पहले ही तो मैं घड़ी में चाभी दे देता हूँ और तारीख बदल देता हूँ।

'अच्छा, घर में आकर सुनो।'

नवीन घबड़ाकर कटघरे के अभियुक्त की भाँति चुपचाप खड़ा रहा।

मधुसूदन ने कहा—मैं इसे एकदम नहीं पसन्द करता कि कोई बड़ी बहू के कान में मंत्र फूकने वाला रहे। मेरी बहू मेरी इच्छानुसार चलेगी, अन्य किसी के परामर्श से न चलेगी—यही नियम होना चाहिए।

नवीन ने गम्भीरतापूर्वक कहा—यह तो ठीक ही है।

इसीलिए मैं कहता हूँ कि मँझली बहू को देश भेज देना होगा।

नवीन अत्यन्त निश्चिन्त रूप से बोला—अच्छा होगा भैया, मैं भी सोच रहा था, किन्तु पूछा नहीं कि शायद आपकी राय न हो।

मधुसूदन ने विस्मित होकर कहा—इसका मतलब ?

नवीन ने कहा—मँझली बहू कई दिनों से देश जाने के लिए शोर मचा रही है, सब तैयारी हो चुकी है, अच्छा दिन देखकर वे चली जाना चाहती हैं।

यह कहना व्यर्थ है कि यह बात एकदम बनावटी है। मधुसूदन अपने घर से जिसे चाहे विदा दे सकता है, इसलिए यह एकदम अनियमित है कि कोई भी अपनी इच्छा से चले जाने की इच्छा करे। उसने विरक्त होकर कहा—क्यों, जाने के लिए इतनी जल्दी क्यों है ?

नवीन ने कहा—घर की मलकिनि अब आ गई हैं, अब घर का सारा भार उन्हीं को ग्रहण करना चाहिए। मँझली बहू ने कहा—यदि मैं बीच में रहूँगी तो न जाने कब कौन-सी बात उठ खड़ी हो।

मधुसूदन ने कहा—क्या इन सब बातों के विचार का भार उन्हीं के ऊपर है ?

नवीन ने सज्जन की भाँति कहा—क्या करूँ, कहिए, औरतों का हठ ही तो है। सम्भवतः उनके मन में यह बात उठी है कि शायद आप किसी बात

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को लेकर उसे किसी दिन निकाल न दें, अपना यह अपमान उसे सहन न होगा। इसीलिए उसने एकदम प्रतिज्ञा कर ली है कि मैं जाऊँगी ही। अगली त्रयोदशी को जाना निश्चित हुआ है—इस बीच सब काम निपटाकर हिसाब समझाकर वह चली जाना चाहती है।

मधुसूदन ने कहा—देखो नवीन, मँझली बहू को सिर पर चढ़ाकर तुम्हीं ने बिगाड़ दिया है, उससे जरा कड़ाई के साथ कहो कि तुम्हें अभी न जाना होगा। तुम पुरुष हो, मैं यह नहीं देख सकता कि घर में तुम्हारा शासन न चले।

नवीन ने सिर खुजलाते हुए कहा—भैया चेष्टा करके देखूँगा, किन्तु—

अच्छा मेरा नाम लेकर कहना, इस समय उसे न जाना होगा। जब मैं समय समझूँगा तो उसके जाने का दिन ठीक कर दूँगा।

नवीन ने कहा—आपने ही तो मँझली बहू को देश भेजने के लिए कहा था, इसीलिए मैं सोच रहा था—

मधुसूदन ने उत्तेजित होकर कहा—क्या मैंने यह कहा था कि इसी समय भेजना होगा।

नवीन धीरे से चला गया। मधुसूदन एक गैस जलाकर आरामकुर्सी पर बैठ गया। घर का चौकीदार रात के समय घर के कमरों के सामने कभी-कभी टहल जाया करता है। मधुसूदन को कुछ नींद-सी आ रही थी, इसी समय उसने अकस्मात् चौंककर देखा कि चौकीदार कमरे में आकर लालटेन उठाकर उसके मुख की ओर देख रहा है। सम्भवतः उसने सोचा कि मालिक को मूर्छा आ गई है या वे मर गये हैं। मधुसूदन लज्जित होकर हड़बड़ाकर कुर्सी पर से उठ खड़े हुए। बाहर आफिस रूम में बैठकर तुरत विवाह किए हुए राजाबहादुर के लिए चौकीदार के सामने रात्रि का समय व्यतीत करना अत्यन्त असम्मान-जनक है, इस बात से उन्हें क्षणभर में भारी चोट पहुँची। उन्होंने उठकर कुछ क्रुध स्वर में चौकीदार से कहा—कमरा बन्द करो। मानो कमरा बन्द न रहने का अपराधी वही था। फाटक की घड़ी में दो बजा।

मधुसूदन ने कमरे से जाने के पहिले एक बार दराज खोला—ढूँढ़ते-ढूँढ़ते कुमुद के नाम का तार जेब में रखकर अन्तःपुर की ओर चले गए। तीसरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंजिल की सीढ़ी पर चढ़ने के पहिले कुछ देर खड़े रहे।

अर्द्धरात्रि में नींद टूटने पर मनुष्य अपने में पूरी शक्ति नहीं पाता। इसीलिए उनके दैनिक और रात्रिकालीन चरित्र में बहुत अन्तर है। दो बजे रात्रि के समय जबकि चारों ओर जन-दृष्टि नाम की कोई वस्तु न थी, जब कि वह संसार में केवल अपने को छोड़कर किसी के प्रति उत्तरदायी न था उस समय कुमुद के निकट मन-ही-मन उसका हार मान लेना असंभव नहीं हुआ।

बत्तीस

मधुसूदन सीढ़ी के नींचे से वापस आया, उसकी छाती का खून उफनने लगा। किसी कमरे के सामने किरोसिन लालटेन जल रही थी। उसे उठाकर वह चुपके से बत्तीघर के कमरे के सामने जाकर खड़ा हो गया। धीरे से दरवाजा ठेलने लगा तो पता चला कि दरवाजा अड़काया हुआ है, वह खुल गया। कुमुदिनी उसी चटाई पर एक चादर ओढ़े हुए गहरी नींद में सो रही है, बाँया हाथ छाती पर है। दीवाल के कोने में लालटेन रखकर मधुसूदन कुमुद की ओर मुख करके उसकी बाईं ओर बैठ गया। वह मुख जो इस प्रकार मन को प्रबल शक्ति से खींचता है उसका कारण मुख में एक अकथनीय पूर्णता ही है। कुमुद में अपने प्रति अपना विरोध कभी जान ही नहीं पड़ा। भैया की गृहस्थी में वह अभाव के दुःख से पीड़ित हुई है किन्तु वह बाहरी परिस्थिति के कारण था उसने उसकी प्रकृति को धक्का नहीं पहुँचाया। वह जिस संसार में थी वह संसार उसके स्वभाव के लिए सब प्रकार से अनुकूल था। इसीलिए उसके मुख पर एक स्वाभाविक सरलता है, उसके चलने-फिरने और व्यवहार में एक अक्षुण्ण मर्यादा है। जिस मधुसूदन को जीवन की साधना में केवल प्राणपण से युद्ध करना पड़ा है, प्रतिदिन उपस्थित संशय के कारण जिसे सर्वदा सतर्क रहना पड़ा है। उसके लिए कुमुद के संपूर्ण रूपान्तर का अपूर्व गंभीरता अत्यंत विस्मय की बात है। वह स्वयं तनिक भी सरल नहीं है, और कुमुद मानो एक दम देवी-सी सरल है। उसके साथ कुमुद की यह प्रतिकूलता उसे बहुत जोर से खींच रही है। विवाह के पश्चात् बहू के ससुराल में प्रथम आगमन के समय जो घटनाएँ हुईं, उनका सारा चित्र जब वह अपने मन में देखता है तब उसे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने प्रति व्यर्थ प्रभुत्व के कारण क्रोध और असमर्थता दिखाई पड़ती है और बहू के मन में उदासीन आत्ममर्यादा का स्वाभाविक प्रकाश दीख पड़ता है। साधारण स्त्रियों की तरह उसके व्यवहार में कहीं पर तनिक भी उद्दंडता नहीं दिखाई पड़ी। यदि यह बात न होती तो मधुसूदन में जो अपमान करने का स्वामित्व भाव है उसका उपयोग करने में वह तनिक भी संकोच न करता। किन्तु वह स्वयं यह न समझ सका कि क्या बात हुई है; किस विचित्र कारण से वह कुमुद को अपनी धर-पकड़ में नहीं पा सका।

मधुसूदन ने निश्चित किया कि कुमुद को जगाए बिना ही रात भर इसी तरह जागता हुआ बैठा रहूँगा। कुछ देर बैठे रहने के बाद वह किसी प्रकार भी रुक नहीं सका—उसने धीरे-धीरे कुमुद की छाती पर से उसका हाथ उठा कर अपने हाथ में ले लिया। कुमुद ने नींद की झोंक में अपना हाथ खींचकर मधुसूदन के उलटी ओर करवट बदल ली।

अब मधुसूदन रुका न रह सका, उसने कुमुद के कान में कहा—बड़ी बहू, तुम्हारे भैया का तार आया है।

तुरत निद्रा भंग हो गई, कुमुद उठकर बैठ गई। आश्चर्य से आँख खोल कर वह मधुसूदन की ओर अवाक् होकर देखने लगी, मधुसूदन ने तार सामने रखकर कहा—यह तुम्हारे भैया के यहाँ से आया है। वह उठकर घर के कोने में से लालटेन उठाकर ले आया।

कुमुद ने तार पढ़ा, उसमें अंग्रेजी में लिखा था—मेरे लिए घबड़ाना मत, क्रमशः अच्छा हो रहा हूँ, तुम्हें मेरा आशीर्वाद। कठिन व्याकुलता की अत्यधिक पीड़ा में यह सांत्वना की बात पढ़कर कुमुद की आँखें छलछला उठीं। उसने आँखें पोंछकर तार को यत्नपूर्वक आँचल में बाँध लिया। इससे मधुसूदन के हृदय में मानो मोच-सी आ गई। इसके बाद क्या कहना चाहिए यह वह सोच ही नहीं सका। कुमुद बोल उठी—क्या भैया का पत्र नहीं आया ?

इसके पश्चात् मधुसूदन किसी भी प्रकार यह न कह सका कि पत्र आया है। वह झट से बोल उठा—नहीं, पत्र तो नहीं आया है।

इस कमरे में रात्रि के समय दोनों के इस प्रकार बैठने में कुमुद को लज्जा लगी। वह उठने का प्रयत्न कर ही रही थी कि मधुसूदन बोल उठा—बड़ी बहू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे ऊपर क्रोध न करना ।

यह तो स्वामी का अपराध नहीं है, यह प्रेमी का विनय है, और उसमें मानो अपराधी की आत्मग्लानि है । कुमुद आश्चर्यित हो गई, उसने सोचा यह दैवी लीला है । क्योंकि दिन में जो उसने अपने प्रति बार-बार कहा था कि तू क्रोध न कर । वही बात आज आधी रात के समय किसने मधुसूदन से कहला दी ।

मधुसूदन ने उससे पुनः कहा—क्या तुम अब भी मेरे ऊपर क्रुद्ध हो ?

कुमुद ने कहा—नहीं, मैं क्रुद्ध नहीं हूँ, तनिक भी नहीं ।

मधुसूदन उसकी ओर देखकर आश्चर्यित हो उठा—वह मन-ही-मन बातें कर रही है, किसी अपरिचित से बातें हो रही हैं ।

मधुसूदन के कहा—तो इस कमरे में से अपने कमरे में चलो ।

कुमुद आज रात के लिए तैयार नहीं थी । नींद से उठते ही अकस्मात् मन को संयत करना कठिन है । उसने यह संकल्प किया था कि कल सवेरे स्नान करके देवता के निकट अपनी दैनिक प्रार्थना करके गृहस्थी के कार्यों में लगूँगी । उस समय उसके मन में यह बात उठी कि प्रभु ने मुझे समय नहीं दिया, आज इस अर्धरात्रि में ही बुलाया है उनसे किस प्रकार कहूँगी कि नहीं । मन के भीतर एक बड़ी अनिच्छा हो रही थी, उसे अपराध समझकर कुमुद भयभीत हुई । इस अनिच्छा की बाधा ही उसे रोक रही थी, इसीलिए कुमुद जोर से उठ खड़ी हुई, बोली—चलो !

ऊपर चढ़कर अपने शयनागार के सामने जरा देर रुककर उसने कहा—मैं अभी आती हूँ, देर न करूँगी । यह कहकर वह छत के कोने में जाकर बैठ गई । कृष्णपक्ष का अर्द्धचन्द्र इस समय मध्य आकाश में है ।

कुमुदिनी मन-ही-मन बारम्बार कहने लगी—प्रभो, आप मुझे पुकार रहे हैं, पुकार रहे हैं, मुझे आप भूले नहीं हैं, इसीलिए पुकार रहे हैं । मुझे कँटीले मार्ग से ही आप लिवा जायेंगे—वे आप ही हैं, आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है ।

कुमुदिनी अन्य सभी को लुप्त कर देना चाहती है । अन्य सभी माया हैं, अन्य सब यदि काँटे भी हों तो मार्ग के ही काँटे हैं ; आँखें उसी के मार्ग का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

काँटा हैं। साथ में उसके भैया का आशीर्वाद रास्ते का संबल है। उस आशीर्वाद को उसने आँचल में बाँध लिया है, उसने उसे बारम्बार सिर में लगाया। तत्पश्चात् जमीन पर माथा टेककर बड़ी देर तक प्रणाम किया। इसी समय वह अकस्मात् चौंक पड़ी, मधुसूदन पीछे से बोल उठा—बड़ी बहू ठण्ढक लगेगी, घर में चली आओ। कुमुद अपने हृदय में जो वाणी सुनना चाहती थी उसके साथ इस कण्ठ का स्वर नहीं मिलता। यही तो उसकी परीक्षा है। आज प्रभु उसे वंशी बजाकर भी न बुलावेंगे। वे आज छद्मवेश में रहेंगे।

तेंतीस

जहाँ पर कुमुद व्यक्तिगत मनुष्य है, वहाँ पर उनका मन जितना ही धिक्कार, घृणा और उदासीनता से भर रहा है, उसकी गृहस्थी कठोर अधिकार द्वारा उसे जितना ही अपमानित करती है, वह अपने चारों ओर उतना ही आवरण तैयार करती है। ऐसा आवरण जिसके द्वारा वह अच्छा और बुरा लगने की सत्यता को लुप्त कर सके, अर्थात् अपने लिए अपनी चेतनता को कम कर दे। यह है क्लोरोफार्म का विधान। किन्तु वह तो दो-तीन घण्टे में नहीं हो सकता। दिन-रात होने वाली वेदना-बोध और उदासीनता-बोध को दूर करना पड़ेगा। इस अवस्था में यदि नारियाँ किसी प्रकार एक गुरू को पा जायें तो उनकी आत्म-विस्मृति की चिकित्सा सरल हो जाय; यह तो संभव नहीं हुआ। इसीलिए उसने मन-ही-मन पूजा-मन्त्र की बारम्बार आवृत्ति करने का संकल्प कर लिया। उसके दिन-रात्रि का मन्त्र यह था—हे मेरे पूजनीय, तुम्हारे सामने मैं अपना सारा शरीर अर्पण करके यह प्रसाद पाना चाहती हूँ; जिस प्रकार पिता पुत्र को, मित्र मित्र को, प्रियतम अपनी प्रिया को क्षमा और प्यार कर सकता है उसी प्रकार आप भी मुझे क्षमा और प्यार कर सकें। आप अपने प्रेम से मुझे क्षमा कर सकते हैं इसका इससे बढ़कर कोई अन्य प्रमाण नहीं है कि तुम्हारे प्रेम के कारण मैं भी क्षमा कर सकती हूँ। कुमुद आँखें बन्द कर मन-ही-मन उन्हें पुकार कर कहती है, आप तो कहते हैं कि जो मनुष्य मुझे सब स्थानों पर देखता है, मुझमें सब को देखता है, वह भी मुझे त्याग नहीं करता, मैं भी उसे नहीं त्यागता। इस साधना में मैं जरा भी शिथिल न पड़ूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज सवेरे कुमुद ने स्नान करके अपने शरीर पर बड़ी देर तक चन्दन-मिश्रित जल छिड़का। शरीर को स्वच्छ और सुगन्धित करके उसने अपने को उत्सर्ग कर दिया—वह मन-ही-मन एकाग्रचित होकर यह ध्यान करने लगी कि प्रत्येक क्षण उनके हाथ में उसका है, उसके सारे शरीर में निरन्तर उनका स्पर्श हो रहा है। इस शरीर को सच्चे एवं सम्पूर्ण रूप में उन्होंने ही पाया है, जो शरीर उनकी प्राप्ति के बाहर है वह तो एकदम मिथ्या है, वह माया है, मिट्टी है, देखते-देखते मिट्टी में मिल जायगा। जितनी देर तक उनके स्पर्श का अनुभव करूँगी उतनी देर तक वह शरीर किसी भी प्रकार अपवित्र न हो सकेगा। यह बात विचारते-विचारते उसकी दोनों आँखें आँसुओं से भर गईं—मानो उसके शरीर ने माँस के सस स्थूल बन्धन से मुक्ति पा ली। पुण्य संमिलन का विस्तृत क्षेत्र समझकर मानो उसे अपने शरीर पर भक्ति हुई। यदि उसके निकट आज कुन्द पुष्प की माला होती तो वह उसे गले में पहनती, जूड़े में बाँध लेती। उसने स्नान करके चौड़ी लाल पाढ़ की सफेद साड़ी पहनी, जब वह छत पर बैठी तब ऐसा जान पड़ा मानो सूर्य के प्रकाश रूप से आकाश में व्याप्त एक अद्भुत स्पर्श उसके सम्पूर्ण शरीर को आह्लादित कर रहा है।

कुमुद ने मोती की माँ के पास आकर कहा—मुझे अपने काम में लगा दो।

मोती की माँ ने हँसकर कहा—तो आओ, तरकारी काटो।

परिवार की औरतें गप्प उड़ाती हुई बड़ी-बड़ी कठवतों; पीतल के परातों और टोकरियों में हँसुए से तरकारी काट रही हैं, कटी हुई तरकारियों का ढेर लग गया है। उन्हीं के बीच में एक जगह कुमुद भी बैठ गई। खिड़की के सामने निकट ही बस्ती में एक इमली का पुराना वृक्ष दिखलाई पड़ रहा है, जिसकी चंचल पत्तियों से सूर्य की किरणें इधर-उधर फैल रही हैं।

मोती की माँ बीच-बीच में कुमुद के मुख की ओर देखती है और सोचती है, क्या वह काम कर रही है, नहीं, उसकी अँगुली की गति का सहारा पाकर उसका मन किसी तीर्थ की ओर चला जा रहा है। उसे देखकर जान पड़ता है मानो पाल वाली नाव है, जिसमें हवा आकर लग रही है, नाव उसी स्पर्श में मग्न है, और उसके दोनों ओर जो जल आ-आकर लगता है उस ओर उसका ध्यान नहीं हैं। घर कीं जो अन्य स्त्रियाँ काम कर रही थीं वे कुमुद के साथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बातचीत करने का कोई रास्ता ही नहीं पा रही हैं। श्यामासुन्दरी ने एक बार कहा—बहू यदि तुम सबेरे ही नहाया करती हो तो गर्म जल करने के लिए क्यों नहीं कह देतीं। ठंड लग जायगी न ?

कुमुद ने कहा—मेरी आदत है।

बातचीत पुनः आगे नहीं बढ़ी। उस समय कुमुद के हृदय में नीरव जप की धारा चल रही थी।

तरकारी काटकर बर्तन में रखने का काम समाप्त हो गया, स्त्रियाँ स्नान के लिए भीतर आँगन में नल के नीचे जाकर शोर मचाने लगीं।

मोती की माँ को अकेली पाकर कुमुद ने कहा—भैया के यहाँ से तार का उत्तर मिला है।

मोती की माँ ने कुछ आश्चर्यित होकर कहा—कब मिला ?

कुमुद ने कहा—कल रात में।

रात्रि में !

हाँ, बहुत रात। उस समय उन्होंने स्वयं आकर मुझे दिया।

मोती की माँ ने कहा—तब तो पत्र भी निश्चय ही मिला होगा।

कौन पत्र ?

तुम्हारे भैया का पत्र।

कुमुद व्यस्त होकर बोल उठी—नहीं, वह तो नहीं मिला। भैया का पत्र आया है क्या ?

मोती की माँ चुप रह गईं।

कुमुद ने उसका हाथ पकड़कर उत्सुक होकर पूछा—भैया का पत्र कहाँ है, लाकर मुझे दो न।

मोती की माँ ने धीरे से कहा—वह पत्र मैं न ला सकूँगी, वह बाहर के बैठक की मेज के दराज में है।

मेरी चिट्ठी मुझे लाकर क्या न दे सकोगी ?

उनका दराज खोला गया है यह जानने पर वे बड़ी आफत करेंगे।

तो क्या मैं भैया का पत्र नहीं पढ़ पाऊँगी ?

जब बड़े मालिक आफिस चले जायँ तो वह पत्र पढ़कर पुनः दराज में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रख देना।

क्रोध तो दबाकर रखा नहीं जा सकता। उसका दिमाग गर्म हो उठा। बोली—क्या अपना पत्र भी चुराकर पढ़ना होगा ?

कौन अपना है, कौन पराया, इसका निर्णय इस घर के मालिक ही करते हैं।

कुमुद अपनी प्रतिज्ञा भूली जा रही थी, ऐसे ही समय में मन के भीतर से प्रेरणा हुई, क्रोध मत करो। कुमुद ने क्षण भर के लिए आँखें बन्द कर लीं। उसके दोनों ओठ काँप उठे।

कुमुद ने कहा—मेरा पत्र यदि कोई चुराता है तो चुराने दो। मैं उसे चुराकर उसका बदला नहीं लेना चाहती।

यह कहकर कुमुद ने उसी समय अपने मन में सोचा कि मैंने कठोर बात कह दी। वह समझ गई कि भीतर जो क्रोध है वह अनजान में अपने को प्रगट करता है। उसे उखाड़ फेंकना होगा। उससे लड़ने की इच्छा होने पर भी सब समय तो उसका पता नहीं लग सकता। वह गुफा में दुर्ग बनाकर रहता है, बाहर से वहाँ प्रवेश का मार्ग ही नहीं है। इसीलिए प्रेम की एक ऐसी बाढ़ बहा देनी चाहिए जो रुके हुए को मुक्त करे और बंधे हुए को बहा ले जाय। बहुत-सी बातों को भुला देने के लिए उसके हाथ में एक उपाय था, वह था संगीत। किन्तु इस घर में इसराज वजाने में वह लजाती थी। साथ में इसराज लाई भी न थी। कुमुद गाना गा सकती है किन्तु उसके गले में वह बल नहीं है। गान की धारा में उसने आकाश को बहा देने की इच्छा की। अभिमान का गान जिस गान में वह कह सकती है कि मैं तुम्हारी ही पुकार पर आई, हूँ, तब तुम छिप क्यों गये ? मैंने तो क्षणभर के लिए भी दुविधा नहीं की। तब मुझे आज क्यों ऐसे संशय में फेंका ? ये सब बातें वह अपने गान में खूब तान छेड़कर गाना चाहती है। वह सोचती है शायद उस तान के स्वर में ही इसका उत्तर मिल जाय।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चौंतीस

कुमुदिनी के बैठने की सिर्फ एक ही जगह है—मकान की छत। वह वहीं चली गई। दिन चढ़ आया है, समस्त छत धूप से भर गई है केवल जीने की दीवार के पास थोड़ी-सी जगह है, जहाँ धूप नहीं पहुँच पाई है। वह वहीं जाकर बैठ गई। उसे असावरी नामक रागिनी बार-बार याद आने लगी। जिसका प्रारम्भ है—'बाँसुरी हमारी रे! परन्तु उसका शेष भाग और लोगों को मुँह जबानी भी याद होगा। इसका अर्थ समझ में नहीं आता। कुमुदिनी उस थोड़े से अंश को अपनी स्वेच्छा से नई-नई तानों में उलट-पुलट कर गाने लगी। वह थोड़ी-सी बात अर्थों से परिपूर्ण हो उठी। वह वाक्य मानो कह रहा है—'अरी मेरी बाँसुरी तू लबालब तानों से भर क्यों नहीं जातीं ? जहाँ दरवाजा बन्द है और जहाँ अभी नींद नहीं टूटी, वहाँ तू अँधेरे को चीरकर पहुँच क्यों नहीं जाती ?

मोती की माँ ने जब आकर कहा—'चलो बहन खाने चलो।' उस समय वह रही-सही छाया भी समाप्त हो चुकी थी। किन्तु कुमुद का मन तान से भरा है। संसार में उसके ऊपर किसने अन्याय किया है इसे वह नितान्त तुच्छ समझती है। उसकी चिट्ठी के विषय में मधुसूदन ने जो नीचता की थी, उससे उसके मन में तीव्र अवज्ञा भर उठी थी। मानो वह इस धूप से परिपूर्ण आकाश के बीच न जाने कहाँ पतंग की भाँति विलीन हो गई। उसकी क्रोध-भरी प्रतिध्वनि असीम आकाश में लुप्त हो गई। किन्तु चिट्ठी के भीतर के स्नेह वाक्य को प्राप्त करने में तो उसके मन का आग्रह किसी भी भाँति शान्त नहीं होता।

उसके मन में यह उत्सुकता लगी ही रही। खाना खाने के बाद उससे रहा न गया। मोती की माँ ने उसने कहा—'मैं बाहर के कमरे में जाकर पत्र पढ़ आती हूँ।'

मोती की माँ ने कहा—'जरा थोड़ी देर और ठहर जाओ, नौकर-चाकर जब छुट्टी पाकर चले जायें तब पढ़ आना।'

कुमुद ने कहा—'नहीं, नहीं, वह तो बिलकुल चोर की भाँति जाना होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं तो खुलकर जाना चाहती हूँ, बाद में जिसके जी में चाहे जो आवे, वह समझा करे।'

मोती की माँ बोली—'चलो, मैं भी साथ चलती हूँ।'

कुमुद कहने लगी—'नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। तुम मुझे केवल इतना भर बता दो कि किधर जाना होगा ?'

अन्तःपुर के बरामदे में से मोती की माँ ने कुमुद को वह कमरा दिखा दिया। कुमुद बाहर की ओर चल पड़ी। सभी नौकर-चाकर चकित होकर उठ खड़े हुए और उसे प्रणाम करने लगे। कमरे में घुसकर जब कुमुद ने डेस्क की दराज खोली तो उसमें उसका पत्र मिला। उसे हाथ से उठाने लगी—लिफाफा खुला हुआ है। छाती के भीतर से असहनीय तूफान-सा उठने लगा। जिस घर में कुमुद का लालन-पालन हुआ है, वहाँ इस प्रकार के अपमान की कल्पना तक नहीं की जा सकती थी। उसके मनका तूफान रुकता ही नहीं, न जाने वह क्या-क्या सोचने और कहने लगी। बाहर जो अरदली खड़ा था ऑफिस-रूम में अकेली बहूरानी को मन-ही-मन मन्त्र-सा पढ़ते देख वह दंग रह गया। कुछ देर तक अध्ययन करते-करते कुमुद का मन शान्त हो गया, इसके पश्चात् वह पत्र को सामने रख कर हाथ जोड़ चुपचाप चौकी के ऊपर बैठी रही। वह पत्र को चुरा कर नहीं पढ़ेगी, उसने ऐसा प्रण कर लिया है।

इतने में मधुसूदन आ गया। वह चौंककर अचकचाते हुए खड़ा हो गया, कुमुद ने उसकी ओर देखा तक नहीं। जब वह पास आया तो उसने देखा कि डेस्क पर विप्रदास का पत्र पड़ा हुआ है। उसने पूछा—'तुम यहाँ कैसे ?' चुपचाप शान्त दृष्टि से कुमुद ने मधुसूदन के मुख की ओर देखा। उसकी दृष्टि से शिकायत का भाव उदित न होता था, मधुसूदन ने फिर कहा—'तुम इस कमरे में क्यों आईं ?'

निःप्रयोजनीय प्रश्न के विषय में कुमुद ने अधीर होकर कहा—'मेरे नाम से भैया की भेजी कोई चिट्ठी आई है या नहीं, इसे ही देखने आई थी।'

'मुझसे पूछा क्यों नहीं, इस प्रश्न के रास्ते को मैं कल रात में ही स्वयं बन्द कर चुका था।' फिर बोला—'इस चिट्ठी को मैं स्वयं ही तुम्हारे पास ले जा रहा था। तुम्हें यहाँ आने की कोई जरूरत नहीं थी।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुछ देर तक कुमुद शान्त बैठी रही। फिर मन को शान्त करके बोली—'तुम्हारी यह इच्छा नहीं है कि मैं इस चिट्ठी को पढ़ूँ, इसीसे मैं इसे न पढ़ूँगी। यह देखो मैंने फाड़ डाली किन्तु इस प्रकार का कष्ट अब मुझे कभी न देना। इससे बढ़कर मेरे लिए और दूसरा कष्ट क्या हो सकता है?

मुँह के ऊपर आँचल डालकर इस वाक्य को समाप्त कर तुरन्त वह भीतर चली गई।

इससे प्रथम आज दोपहर के भोजन के उपरान्त मधुसूदन के मन में उथल-पुथल मच रही थी। उस आन्दोलन को वह किसी भी भाँति रोक न सका। कुमुद के भोजन करने के पश्चात् मधुसूदन उसे बुलाना चाहता था। उसने आज सिर के बाल काढ़ने में विशेष ध्यान दिया है। आज प्रातःकाल ही उसने एक अंग्रेज नाई की दूकान से स्पिरिट मिला सुगन्धित तेल और कीमती एसेन्स मंगा लिया था। जीवन में ऐसी चीजों का व्यवहार आज उसने सर्व-प्रथम ही किया है। सुगन्धित परिपूर्ण हो वह सुसज्जित तैयार बैठा था। ऑफिस के समय को आज पैंतालीस मिनट चूक गया था।

मधुसूदन जीने के ऊपर पैरों की आहट पाकर चौंककर बैठ गया, हाथ के पास और कुछ न पाकर एक पुराना अखबार लेकर उसके विज्ञापनों को इस भाँति देखने लगा, मानो वह उसके दफ्तर के काम का ही अंग हो। यहाँ तक कि जेब के भीतर से एक मोटी नीली पेन्सिल निकालकर उसने उस पर दो-एक निशान लगा दिये।

श्यामासुन्दरी ने इतने ही में कमरे में प्रवेश किया। भौंहों को सिकोड़ते हुए मधुसूदन ने उसकी ओर देखा। श्यामा बोली—'तुम यहाँ बैठे हो, बहू तुम्हें ढूँढ़ती फिर रही है।'

'ढूँढ़ती फिर रही है! कहाँ?'

'अभी तो देखकर आ रही हूँ। बाहर तुम्हारे ऑफिस वाले कमरे में गई है सो इसमें ताज्जुब काहे का?—उसने शायद यह समझा है कि तुम वहीं···।'

मधुसूदन झटपट वहाँ से निकलकर चला गया। उसके बाद ही चिट्ठी वाली घटना हुई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पालदार नाव की, अचानक पाल के फट जाने से जो दशा होती है, वही दशा मधुसूदन की भी हुई। उस समय तनिक भी देर करने का अवसर न था, अतएव दफ्तर चल दिया। किन्तु सभी कामों में भीतर-ही-भीतर उसकी असम्पूर्ण टूटी-फूटी चिन्ता की तीव्र नोक बारम्बार मानो उचक-उचककर छेड़ने लगी। इस मानसिक भूकम्प के भीतर हृदय से जमकर काम करना उसके लिए असम्भव हो उठा। उसने ऑफिस में कह दिया कि मेरे सिर में बड़े जोर से दर्द हो रहा है और वह ऑफिस के काम खत्म होने के पूर्व ही घर लौट आया।

पैंतीस

नवीन और मोती की माँ ने समझ लिया कि अब सीमा टूट चुकी है, अब भाग करके जान बचाने का ठिकाना कहीं भी नहीं है। मोती की माँ ने कहा—'जिस प्रकार यहाँ मेहनत-मजदूरी करके मैं अपना पेट भरती हूँ, उसी तरह मुझे अन्यत्र भी संसार अपनी गुजर बसर करने योग्य जगह मिल जायँगी।दुःख मुझे केवल इतना ही है कि मेरे चले जाने पर इस घर में जीजी की देख-भाल करने वाला कोई भी न रह जायगा।'

नवीन बोल उठा—'तो सुनो मँझली बहू, मैं यहाँ बहुत सह चुका हूँ। इस घर के अन्न-जल से मुझे अरुचि-सी उत्पन्न हो गई है; किन्तु अब असह्य हो रहा है। भैया ने इस तरह की बहू पाकर भी कदर न जानी, रखना न जाना, समस्त बने बनाये खेल को चौपट कर दिया। अच्छी वस्तु के फूटे हुए टुकड़ों ही से दरिद्रता अपना घर बनाती है।'

मोती की माँ ने कहा—'इसके समझने में अब तुम्हारे भाई साहब को तनिक भी देर न लगेगी, किन्तु तब इस टूटे हुए को जोड़ना असम्भव हो जाएगा।'

नवीन ने कहा—'लक्ष्मण-देवर होने का सौभाग्य भी मुझे प्राप्त न हो सका, केवल मुझे इसी बात का दुःख है। यहाँ तो जब जिसका वक्त आ जाता है फिर उसे देर नहीं लगती। खैर, तुम्हें चीज-वस्तु तो बांध ही लेनी चाहिएँ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोती की माँ चली गई। नवीन से अब रहा न गया, वह शनैः-शनैः अपनी भाभी के कमरे तक पहुँचा। उसने पहुँचकर देखा तो कुमुद अपने कमरे में जमीन के ऊपर बिछौना बिछाकर पड़ी हुई है। जिस चिट्ठी को उसने फाड़कर फेंका है उसकी वेदना से वह अपने मन को किसी भी प्रकार धैर्य नहीं बँधा सकती।

नवीन को देखकर वह झटपट उठ बैठी। नवीन ने कहा—'भाभी! पैर छूने आया हूँ, जरा मुझे अपने पैरों की धूल दो।

भाभी के साथ नवीन की यह प्रथम ही बातचीत है।

कुमुद बोल उठी—'आओ, आओ, बैठो!'

नवीन जमीन पर बैठ गया और कहने लगा—'मैं तुम्हारी सेवा कर सकूँगा इस प्रसन्नता के कारण मेरी छाती फूल उठी थी; किन्तु नवीन के सौभाग्य में यह कहाँ बदा है? तुम्हें अल्पकाल ही के लिए पाया सो भी कुछ मुझसे हो न सका, इस बात का अफसोस मन में ही रह गया।'

कुमुद ने कहा—'तुम कहाँ जा रहे हो?'

नवीन ने कहा—'हम लोगों को भैया देश भेजेंगे, फिर बाद में शायद तुमसे मिलने का अवसर न मिले। इसी कारण प्रणाम करके बिदा लेने आया हूँ।'—कहकर प्रणाम किया। इतने ही में मोती की माँ दौड़ती हुई आई, बोली—'जल्दी आओ! 'बड़े' तुम्हें ढूँढ़ रहे हैं।'

नवीन तुरन्त ही उठकर खड़ा हो गया और चल पड़ा, मोती की माँ भी उसके साथ ही चल दी।

बाहर के कमरे में डेस्क के पास ही बड़े भाई साहब बैठे हैं, नवीन सामने आकर खड़ा हो गया और दिनों उसके मुख पर आशंका का भाव वर्तमान रहता था, आज वह आशंका उसमें लेश-मात्र भी न रह गई थी। मधुसूदन ने पूछा—'इस बात को बड़ी बहू से किसने कहा कि डेस्क में चिट्ठी है?'

नवीन ने कहा—'मैंने ही कहा था।'

'तुम्हारा साहस इस भाँति एकाएक कैसे बढ़ गया?'

'बड़ी बहूरानी ने मुझसे पूछा कि उसके भैया की चिट्ठी आई है या नहीं। घर की सम्पूर्ण चिट्ठियाँ प्रथम तो तुम्हारे ही पास आकर इसी में जमा होती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, इसी कारण मैं देखने आया था।'

'तुममें मुझसे पूछने का धैर्य अथवा सब्र न हुआ ?'

'वे घबरा रही थीं इसी से···।'

'इसी से मेरा हुक्म उड़ा दिया, क्यों ?'

वे भी तो इसी घर की मालिकन हैं, उनके हुक्म को टाल मैं यह कैसे समझता कि उनका हुक्म यहाँ न चलेगा ? वे जो कहें, मैं उसे न मानूं, इतना साहस मुझमें नहीं है। आपसे एक बात और कह देता हूँ, वे केवल मालिकन ही नहीं हैं प्रत्युत मेरी पूज्य भी हैं। उनके हुक्म को मैं केवल इसलिए नहीं मानता कि मैं उनका नमक खाता हूँ, बल्कि उन पर मेरी भक्ति है, इसलिए उनका हुक्म मेरे सिर-माथे पर है।'

'नवीन, मैं तो तुम्हें बचपन ही से देख रहा हूँ, यह बुद्धि तुम्हारी नहीं जान पड़ती। मुझे सब ज्ञात है कि तुम्हें बुद्धि कहाँ से मिलती है। खैर, कुछ भी हो, आज तो समय निकल गया। कल ही प्रातःकाल की गाड़ी से तुम लोग देश रवाना हो जाना।'

'जी हाँ'—बिना कुछ कहे सुने ही केवल इतना ही कहकर वह जल्दी से वहाँ से चला गया।

'जी हाँ' कहना मधुसूदन को बिलकुल ही अच्छा न लगा। नवीन को कुछ दुःख प्रकट करना चाहिए था, यद्यपि उससे मधुसूदन के विचार पर किसी प्रकार का कोई असर न पड़ता। फिर से नवीन को बुलाकर कहा—'तनख्वाह चुकता करके ले जाओ, साथ ही यह भी जान लो कि अब तुम लोगों को खर्च न दे सकेंगे।'

नवीन ने कहा—'यह मैं जानता हूँ, देश में जो मेरे हिस्से की जमीन है, उसमें खेती करके मैं अपना निर्वाह कर लूंगा।' यह कहकर तथा बिना किसी बात की प्रतीक्षा किये वह वहाँ से चला गया।

नाना प्रकार की धातुओं से मनुष्य की प्रकृति बनाई गई है, इस बात का एक प्रमाण यह है कि नवीन के प्रति मधुसूदन का अगाध प्रेम है। मधुसूदन के और दो भाई रजबपुर में गाँव के जमीन-जायदाद के काम से पड़े हुए हैं, मधुसूदन उनकी कभी कोई खोज-खबर भी नहीं लेता। उसने पिता की मृत्यु के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाद ही नवीन को कलकत्ते बुला लिया और पढ़ा-लिखाकर उसे अपने पास बराबर रखा। घर के सम्पूर्ण कामों में नवीन दक्ष है। उसका मूल कारण उसके सच्चे होने का ही है। साथ-ही-साथ बातचीत तथा व्यवहार आदि में भी वह सबका प्यारा है। यदि कभी घर में किसी से झगड़ा-लड़ाई हो जाती तो नवीन ही बड़ी आसानी के साथ निबटाता। नवीन सभी बातों में हँसना जानता है, वह अपने आदमियों के साथ केवल न्याय ही नहीं करता बल्कि इस प्रकार का व्यवहार करता है जिससे सभी यह समझा करते हैं कि नवीन का उसके प्रति विशेष प्रेम है।

मधुसूदन नवीन को हृदय से चाहता है, इसका प्रबल प्रमाण यही है कि मोती की माँ को मधुसूदन देख नहीं सकता। जिसके ऊपर उसका प्रेम है, उसके ऊपर उसका आधिपत्य होना ही चाहिए। मधुसूदन सिर्फ इसी कारण कल्पना किया करता है कि मोती की माँ नवीन के दिल को फाड़ा करती हैं। नवीन के ऊपर जो उसका पैतृक अधिकार है, उस पर एक पराए घर की लड़की आकर विघ्न डाला करती है। यदि मधुसूदन का नवीन के ऊपर घना प्रेम न होता तो मोती की माँ के लिए निर्वासन का दण्ड कभी का पक्का हो गया होता।

मधुसूदन ने सोच रखा था कि इतने काम को समाप्त कर चुकने के पश्चात् वह एक बार अवश्य ही आवेगा, किन्तु उसके मन में किसी भी भाँति इतनी ताकत नहीं आ सकी। कुमुद जो चिट्ठी फाड़कर चली गई थी, उसकी तसवीर उसके मन पर खिंच गई, वह एक आश्चर्यजनक दृश्य था जिसकी उसने स्वप्न में भी कल्पना न की थी। अपने सदैव के संदिग्ध स्वभाव के कारण उसने यह समझ लिया था, चिट्ठी कुमुद ने अवश्य ही पहले पढ़ ली होगी। परन्तु कुमुद के मुख पर सत्य की जो एक निर्मल आभा है उससे मधुसूदन उसके ऊपर अविश्वास न कर सका।

कुमुदिनी के ऊपर कड़ा शासन रखना मधुसूदन देखते-देखते गँवा चुका है। इस समय उसकी अपनी ओर की त्रुटियाँ ही उसे कष्ट पहुँचा रही हैं। वह आयु में ज्यादा है, इस बात को वह भुलाना चाहता है किन्तु उसे भूलती नहीं। यहाँ तक कि अब उसके बाल जो सफेद हो रहे हैं, उन्हें भी वह किसी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाँति छिपाना चाहता है। उसका रंग काला है, ईश्वर के इस प्रकार के अन्याय पर उसे दुःख होता है। मधुसूदन में रूप और यौवन का अभाव अवश्य ही है, इसी कारण वह निराश तथा दुर्बल है। इसमें सन्देह नहीं कि इसी से कुमुद का मन बार-बार उसकी मुट्ठी से बाहर हो जाता है। उसने चटर्जी खानदान की लड़की से शादी करने का विचार अवश्य किया किन्तु इस बात को वह स्वप्न में भी न सोच सका था, कि उसे वहाँ से ऐसी लड़की मिलेगी, जिसके सामने ईश्वर ने पहले ही से उसकी हार निश्चित कर दी है। साथ ही उसके दिल में यह भी नहीं कि वह कह देता कि उसके लिए एक साधारण कोटि की लड़की होती तो अच्छा था जिसके ऊपर कि उसका शासन चल सकता।

यदि मधुसूदन कुमुद की बात में टक्कर ले सकता था तो वह केवल धन से। आज जब कि प्रातःकाल ही जौहरी आया था उसने तीन अँगूठियाँ खरीद ली हैं, वह यह देखना चाहता है कि इनमें से कुमुद को कौन सी पसन्द है। अँगूठियों की डिबियों को जेब में डालकर वह ऊपर सोने के कमरे में जा पहुँचा। उनमें से एक हीरे की है, एक चुन्नी की तथा एक पन्ने की है। काल्पनिक संसार में पहुँचकर मधुसूदन एक दृश्य देखने लगा मानो उसने चुन्नी की अँगूठी वाली डिबिया को धीरे से खोला, कुमुद की लोभ भरी आँखें चमक उठीं। उसके बाद पन्ने की निकाली जिससे उसकी आँखें फट-सी गईं। सबसे पीछे उसने हीरे की अँगूठी खोली। उसकी बहुमूल्य उज्ज्वलता से कुमुदिनी के आश्चर्य की सीमा न रही। मधुसूदन ने गम्भीर होकर राजसी रौब से कहा—'तुम्हें जो पसन्द हो छाँट लो।' उनमें से हीरे की अँगूठी कुमुद को पसन्द आई। मधुसूदन उसके क्षुब्ध साहस को देखकर मुस्करा पड़ा। उसने तीनों अँगूठियाँ निकालकर कुमुद की तीन अँगुलियों में पहना दीं। इसके पश्चात् ही रात्रि को सोने वाले मंच का पर्दा उठा।

मधुसूदन का मतलब यह था कि यह बात आज रात्रि में खाने-पीने के पश्चात् की जायगी, किन्तु दोपहर वाली दुर्घटना के कारण मधुसूदन से फिर न रहा गया। रात की भूमिका को वह आज दोपहर ही में तय कर डालने के लिए भीतर गया।

भीतर पहुँचकर उसने देखा कि कुमुद एक टीन के ट्रंक में अपने कपड़े-लत्ते

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तथा सभी वस्तुओं को सँभाल-सँभाल कर रख रही है। आस-पास कपड़े-लत्ते सभी वस्तुएँ बिखर रही हैं।'

'ऐं! यह क्या? कहीं जा रही हो?'

'हाँ!'

'कहाँ?'

'रजबपुर।'

'इसका क्या मतलब?'

'तुमने अपने दराज खोलने के कसूर में देवर जी को सजा दी है, वास्तव में वह सजा मुझे मिलनी चाहिए।'

मधुसूदन के स्वभाव के प्रतिकूल यह बात थी कि वह उससे 'मत जाओ' कहकर अनुनय-विनय करता। उसका मन पहले ही बोल उठा—'जाने भी दो, देखूँ तो वह कितने दिन वहाँ रहता है।' क्षण भर भी देर न करके वह तेजी के साथ बाहर चला गया।

छत्तीस

बाहर कमरे में पहुँचकर मधुसूदन ने नवीन को बुलाया और कहने लगा—'बड़ी बहू को तुम लोगों ने भड़का दिया है।'

'भाई साहब, हम लोग तो अब कल जा ही रहे हैं, इस कारण अब डर से हिचकते हुए आपसे बातें न करूँगा। मैं साफ-साफ कह रहा हूँ, बड़ी बहू को भड़काने के लिए घर में किसी व्यक्ति को भड़काने की जरूरत न होगी—तुम अकेले ही काफी हो। हम लोगों के रहने पर शायद वह कुछ शान्त भी रहती किन्तु तुमसे यह न सहा जा सका।'

गरजते हुए मधुसूदन ने कहा—'रजबपुर जाने की बात उसे तुम्हीं लोगों ने सिखाई है।'

'इसे मैं सोच भी नहीं सकता, सिखाना तो बहुत दूर है।'

'देख, यदि इसी बात पर उसे नाच नचाया तो अच्छा न होगा, यह मैं साफ-साफ कहे देता हूँ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'भाई साहब, इन बातों को किससे कह रहे हो ? कहने से जहाँ इसका कुछ परिणाम निकले, वहीं आपको कहना चाहिये ।'

'तुम लोगों ने कुछ भी नहीं कहा ?'

'कसम खाकर कहता हूँ मैंने कल्पना भी नहीं की ।'

'यदि बड़ी बहू जिद्द कर बैठेगी तो तुम लोग क्या करोगे ?'

'तुम्हें बुलाऊंगा । तुम्हारे पास हरकारे वर्कन्दाज और पियादे हैं, तुम रोक सकते हो किन्तु फिर भी बाद में यदि तुम्हारे विपक्षी-शत्रु इस युद्ध की खबर अखबारों में छपवावें तो मंझली बहू पर सन्देह न कर बैठना ।'

धमकाते हुए मधुसूदन ने नवीन से फिर कहा—'चुप रह ! यदि बड़ी बहू रजबपुर जाना चाहती है तो मैं उसे रोकूंगा नहीं ।'

'हम लोग उन्हें कहाँ से खिलायेंगे ?'

'अपनी बहू के गहने बेचकर । जा, यहाँ से निकल जा ।'

नवीन निकल गया । माथे में ओ-डि-क्लोन की पट्टी बाँधकर मधुसूदन ने एक बार फिर ऑफिस जाने का दृढ़ संकल्प किया ।

मोती की माँ नवीन के मुख द्वारा सब बातें सुनकर कुमुद के कमरे में पहुँची । उसने देखा, वह अभी तक कपड़े सँभाल रही है । उसने कहा—'बहू रानी, क्या कर रही हो ?'

'तुम्हीं लोगों के साथ मैं भी चलूंगी ।'

'हम लोगों में यह सामर्थ्य नहीं कि जो हम लोग अपने साथ लिवा ले चलें ।'

'क्यो ?'

'जेठ जी फिर हम लोगों का मुँह भी तो न देखेंगे ।'

'तो फिर मेरा भी न देखेंगे ।'

'खैर, मैं इसे मानती हूँ, किन्तु हम लोग बड़े गरीब हैं ।'

'मैं भी कुछ कम गरीब नहीं, मेरी भी तुम्हारे साथ गुजर हो जायगी ।'

'जेठजी की बात में सभी लोग हंसी उड़ावेंगे ।'

'इससे क्या, मैं तो इसे सहन नहीं कर सकती कि तुम लोग सजा पाओ और वह भी मेरे कारण ।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'किन्तु जीजी, तुम्हारे कारण क्यों ? यह तो हम लोगों के अपने पापों का ही फल है।'

'तुम लोगों ने कौन-सा पाप किया है ?'

'हम ही लोगों ने तुम्हें खबर दी है।'

'मैं यदि अपनी खबर जानना चाहूँ, और तुम उस खबर को मुझ तक पहुँचाओ, तो क्या यह भी अपराध है ?'

'बिना मालिक से बताये खबर देना अपराध ही है।'

'अच्छा, यही सही। किन्तु अपराध तुम लोगों द्वारा भी हुआ है और मैंने भी किया है, इसीलिए हम लोग एक साथ ही फल भोगेंगे।'

'बहुत अच्छा, तो कहलवाये देती हूँ, तुम्हारे लिए पालकी आ जायगी और जेठ जी का भी तो हुक्म हो चुका है कि तुम्हें रोका नहीं जायगा। लाओ, मैं तुम्हारी सभी चीज-वस्तुओं को ठीक से लगा दूँ, तुम पसीने से भीगकर एकदम लथपथ हो गई हो।'

दोनों चीज-वस्तु सँभालने में लग गईं।

इतने ही में किसी के मच-मच करते हुए जूते की आवाज सुनाई पड़ी, मोती की माँ भागकर चली गई।

कमरे में घुसते ही मधुसूदन ने कहा—'बड़ी बहू, तुम वहाँ नहीं जा सकती हो।'

'क्यों नहीं जा सकती ?' 'इसलिए कि मेरी आज्ञा है !'

'अच्छा तो नहीं जाऊँगी, इसके पश्चात् कौन-सी आज्ञा है, बताओ ?'

'अपना सामान बाँधना बन्द करो।'

'यह लो, बन्द कर दिया।' कहते हुए कुमुद कमरे से बाहर चली गई। मधुसूदन ने कहा—'सुनो, सुनो !'

कुमुद ने तत्क्षण ही लौटकर कहा—'कहो, क्या कह रहे हो ?'

कहने को कुछ अधिक तो था नहीं। किन्तु कुछ सोचकर बोला—'तुम्हारे लिए अँगूठी लाया हूँ।'

'मैं जिस अँगूठी को पहनने की जरूरत समझती थी, उसे तो तुमने पहनने से मना कर दिया है। अब मैं अँगूठी पहनने की जरूरत नहीं समझती।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'एक बार आँखों से देख तो लो।'

मधुसूदन ने प्रत्येक डिब्बे को बारी-बारी से खोलकर दिखलाया, मगर कुमुद ने अपने मुँह से कुछ न कहा।

मधुसूदन ने कहा—'इसमें जो-जो पसन्द हो पहन सकती हो।'

'जिन-जिन चीजों के पहनने की आज्ञा दोगे, पहन लूंगी।'

'मेरे खयाल में तीनों चीजें तीन अँगुलियों में बहुत अच्छी लगेंगी।'

'यदि आज्ञा होगी तो, तीनों पहन लूंगी।'

'मैं पहनाये देता हूँ।'

'लो, पहना दो।'

मधुसूदन ने अंगूठी पहना दी। इसके बाद कुमुद ने कहा—'और कुछ आज्ञा है?'

'बड़ी बहू, तुम इतना गुस्सा क्यों होती हो?'

'मुझे जरा भी गुस्सा नहीं आ रहा है।' इतना कहकर कुमुद बाहर चली गई।

मधुसूदन चञ्चल गति से कहने लगा—'अरे तुम जाती कहाँ हो, जरा सुनो तो!'

कुमुद वापस आकर बोली—'कहो, क्या कह रहे हो?'

मधुसूदन की समझ में कुछ भी न आया कि वह क्या कहे। उसका मुंह लाल हो गया और अपने को धिक्कार कर कहने लगा—'अच्छा, जाओ।'

फिर क्रोध में भरकर बोला—'लाओ, अँगूठियाँ लौटा दो।'

तीनों अँगूठियाँ खोलकर कुमुद ने मेज पर रख दीं।

तड़पते हुए मधुसूदन ने कहा—'जाओ, चली जाओ।'

कुमुद उसी समय चली गई।

मधुसूदन इस बार यह दृढ़ निश्चय कर बैठा कि वह ऑफिस अवश्य ही जायगा। उस समय प्रायः कार्य का वक्त समाप्त हो चुका था। सभी अँग्रेज कर्मचारी टेनिस खेलने चले गये थे। बड़े बाबुओं का दल उठने की तैयारी में था कि मधुसूदन वहाँ इसी वक्त पहुँचा और जाते ही डटकर काम में लग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गया। छः बजे, सात बजे, जब आठ बजने को हुए तब उसने रजिस्टर बन्द कर दिया और उठ खड़ा हुआ।

सैंतीस

मधुसूदन के जीवन-काल में कभी भी कार्यक्रम अब तक टूट न सका था। हर रोज़ का हर एक क्षण निश्चित नियम के साथ बँधा था, अचानक आज किसी एक अनिश्चित आत्मा ने आकर उसके काम में बाधा उत्पन्न कर दी। ऑफिस से लौटकर घर जाने पर आज की रात को वह किस ढंग से बितावेगा, यह निश्चित था। डरते-डरते मधुसूदन घर पहुँचा। धीरे-धीरे भोजन किया। भोजनोपरान्त उसमें इतना साहस न था कि वह सोने के कमरे में पहुँच जाता। पहले तो वह बाहर वाले बरामदे में टहलता रहा, किन्तु जब नौ बज गये और सोने का समय हो गया तब वह भीतर पहुँचा। उसने आज दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली थी कि ठीक समय पर जाकर बिस्तर पर सोऊँगा, उसमें किसी भी प्रकार की बाधा न होगी।

कमरे में पहुँचकर मशहरी उठाई और बिस्तर पर जाकर पड़ रहा, किन्तु आँखों में नींद नहीं। रात ज्यों-ज्यों व्यतीत होने लगी, त्यों-त्यों अन्धकार में हृदय का उपवासी जीव बाहर निकलने लगा। उस समय सभी पहरेदार थके-माँदे पड़े थे, कोई भी उसका पीछा करने वाला नहीं था।

घड़ी ने टन से एक बजाया, किन्तु आँखों में नींद नहीं थी। उससे रहा न गया, कुमुद कहाँ है ? वह बिस्तर पर से उठ खड़ा हुआ। कड़ा आदेश होने के कारण बंकू फर्राश ने बत्तीघर में ताला लगा रखा था। वह घर की छत पर घूम आया, किन्तु वहाँ कोई न था। पैर के जूते निकालकर वह धीरे-धीरे नीचे के बरामदे में चलने लगा। मोती की माँ के घर के समीप पहुँचने पर उसने अपने कानों में कुछ भनक का-सा अनुभव किया। कल जाने वाले हैं, सम्भव है पति-पत्नी में सलाह हो रही हो। अतएव वह बाहर कान लगाये खड़ा रहा। दोनों गुनगुना कर बातचीत कर रहे हैं, कोई बात साफ़ सुनाई न देती थी किंतु इतना अवश्य ही जान पड़ता था कि दोनों की आवाज़ें हैं। उसने मन में कहा, रात्रि में कुमुद तथा मोती की माँ में मन की बातें हो रही हैं। क्रोध तथा क्षोभ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से उसकी प्रबल इच्छा हुई कि लात से ठोकर मारकर दरवाजे को खोलकर एक बवण्डर खड़ा कर दे किन्तु इस समय नवीन् कहाँ है। वह अवश्य ही कहीं बाहर होगा।

दोनों ओर झिलमिल से घिरे हुए अन्तःपुर से बाहर जाने वाले रास्ते में एक बत्ती जल रही है। वहाँ पहुचते ही मधुसूदन ने देखा कि श्यामसुन्दरी लाल दुशाला ओढ़े खड़ा है। लज्जा के कारण क्रोध में भरकर मधुसूदन बोल उठा—'इतनी रात में तुम यहाँ खड़ी होकर क्या कर रही हो ?'

श्यामा ने कहा—'मैं तो सो रही थी। बाहर पैरों की आहट के कारण मेरे मन में शंका उत्पन्न हो गई—शायद कोई···?'

क्रोध के वेग से तड़पते हुए मधुसूदन बोल उठा—'देखता हूँ, तुम इधर बहुत सिर चढ़ गई हो। मैं तुम्हें सावधान करके कहता हूँ, मेरे साथ चालाकी की चाल न चलो। जाओ, जाकर सो जाओ।'

इधर कई दिनों से श्यामसुन्दरी का साहस कुछ बढ़ता जा रहा था। किन्तु आज उसकी समझ में आ गया कि असमय में बुरी जगह पैर पड़ा है। मधुसूदन की ओर सकरुण मुंह बनाकर उसने एक बार देखा। इसके बाद मुँह फेरकर उसने आँचल से आँसू पोंछे। यद्यपि वह जाने को तैयार थी किन्तु पीछे मुड़कर खड़ी हो गई, और बोली—'देवर जी, चालाकी में न करूँगी किन्तु जो कुछ देख रही हूँ, उससे आंखों में नींद नहीं आ रही है। मैं आज की तो यहाँ आई नहीं हूँ, मेरा कितने दिनों का सम्बन्ध है अतएव हम लोगों से यह कैसे सहा जाय ?' श्यामा यह कहकर तीव्रगति से वहाँ से चली गई।

मधुसूदन कुछ देर तो वहाँ खड़ा रहा किन्तु कुछ देर बाद बाहर की ओर चल पड़ा। आगे आने पर चौकीदार से उसकी भेंट हो गई। वह उस वक्त गश्त लगा रहा था। कानूनी जाल उसने फैला रक्खा है कि चुपचाप वह स्वयं भी अपने घर घूम-फिर नहीं सकता। चारों ओर सतर्क दृष्टि का व्यूह है। वह नितान्त अभूतपूर्व की बात थी जोकि अर्धरात्रि में महाराज बिस्तर छोड़ भूत की तरह नंगे पैर दालान में चले आये। दूर से पहचान न होने के कारण पहले तो वह बोल उठा—'कौन है ?' किन्तु जब बाद में नजदीक पहुँचा तो राजा साहब को खड़े पाया। दांतों तले जीभ दबाकर लम्बा सलाम करते हुए बोला—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'क्या है हुजूर ?'

मधुसूदन ने कहा—'कुछ नहीं, यही देखने आया हूँ कि प्रबन्ध ठीक है न ?' मधुसूदन के लिए यह बात किसी भी भाँति असंगत नहीं थी। घूमते हुए मधुसूदन बैठकखाने में पहुँचा। वहाँ उसने वही बात देखी जो सोची थी—नवीन गद्दी के ऊपर एक लम्बे तकिये से लिपटकर सो रहा है।

मधुसूदन ने कमरे की गैस जला दी, किन्तु इससे उसकी नींद न खुली। बाद में हाथ से पकड़कर उसे हिलाया जिससे वह घबराकर उठ बैठा। बिना किसी भाँति की बातचीत किये ही मधुसूदन ने उससे कहा—'जा, अभी बड़ी बहू से जाकर कह मैं उसे ऊपर बुला रहा हूँ।' यह कहकर वह उसी समय भीतर चला गया।

कुछ देर बाद कुमुदिनी सोने के कमरे में आई। मधुसूदन ने उसके मुँह की ओर देखा। वह एक लाल किनारी की मामूली साड़ी पहने हुए थी। माथे पर जरा-सा साड़ी का पल्ला खिचा हुआ था। सूने तथा निर्जन घर के इस मन्द प्रकाश में सोफे के ऊपर कुमुद बैठ गई।

मधुसूदन तुरन्त ही उसके पैरों के पास आकर बैठ गया। कुमुदिनी संकोच से वहाँ से उठने को जैसे ही तैयार हुई, मधुसूदन ने हाथ पकड़कर उसे बिठा लिया और कहने लगा—'उठो नहीं, जरा मेरी बात तो सुनो। मैंने कसूर किया है। मुझे अब माफ करो।'

कुमुदिनी ने इसका कभी स्वप्न में भी विचार न किया था, मधुसूदन के ऐसे विनयपूर्ण भाव से वह दंग रह गई। मधुसूदन फिर कहने लगा—'मझली बहू तथा नवीन को रजबपुर जाने की मनाही कर दूँगा, वे लोग यहीं तुम्हारी सेवा में रहेंगे।'

कुमुद कुछ भी सोच न सकी कि वह क्या कहे। मधुसूदन सोचने लगा—मैं अपने मान को खो बड़ी बहू का मान भंग करूँगा! हाथ पकड़ विनम्र होकर बोला—'बताओ तुम चली तो न जाओगी, मैं अभी आता हूँ।'

कुमुद बोली—'नहीं जाऊँगी।'

मधुसूदन नीचे चला गया। वह जब नीच के समान बन जाता है और कठोर हो जाता है, तब उस समय भी कुमुद अपने लिए कठिन अवस्था नहीं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समझती। किन्तु आज उसकी यह नम्रता उसका इस भाँति अपने को छोटा बनाना—इन सब बातों में कुमुद को क्या करना चाहिए वह स्वयं ही इसे नहीं समझ पा रही है। हृदय के जिस दान को लेकर वह आई थी वह तो खाली होकर अब समाप्त हो गया, उसे धूल से उठाकर अब काम में तो लगाया नहीं जा सकता। इसके बाद वह अपने देवता को स्मरण करने लगी।

मधुसूदन कुछ देर के बाद ही मोती की माँ तथा नवीन को साथ में लिये हुए आया और दोनों को उसने कुमुद के सामने पेश किया, उन लोगों की ओर घूमकर कहने लगा—'मैंने तुम लोगों को कल रजबपुर जाने का आदेश दिया था, अब वहाँ जाने की कोई भी जरूरत नहीं। कल से तुम लोग बड़ी बहू की सेवा में नियुक्त किये गये हो।'

पहले तो उन लोगों को ऐसे हुक्म की कोई उम्मीद न थी, इन बातों को सुनकर वह दोनों दंग रह गये। साथ ही आश्चर्य की यह भी बात थी कि इस मामूली बात के लिए इतनी रात में उन लोगों को जाकर खुद लिवा लाया था।

अपने धैर्य को मधुसूदन स्वयं रोकने में असमर्थ था। वह आज ही रात्रि में कुमुद के मन को फेरने के लिए संकोच तथा कृपणता को छोड़ अनेकों यत्न करने लगा। जीवन में इस भाँति की सम्मान हानि उसने और कभी भी न की थी। जिस चीज को वह पाना चाहता था, उसके प्राप्त करने में वह अपनी समझ से सबसे बड़ा दुःसाध्य मूल्य दे चुका था। कुमुद को उसने अपनी भाषा में समझा दिया कि मैं तुम्हारे सामने बिना किसी संकोच के हार मानता हूँ।

संकोच वश कुमुद बार-बार यही सोचने लगी कि इस चीज को वह किस भाँति अपनावे। बदले में वह उसे क्या दे सकती है? जीवन में जिस समय बाहरी बाधा उपस्थित होती है, उस समय लड़ने को बल प्राप्त होता है और देवता भी आकर स्वयं सहायक बनते हैं। सहसा उस बाहरी विरोध के रुक जाने पर लड़ाई खत्म हो जाती है किन्तु सन्धि नहीं होती अचानक कुमुद ऐसा अनुभव करने लगी कि जब मधुसूदन उद्धत था उस समय यद्यपि उसका व्यवहार अप्रिय था किन्तु उसके साथ सहज अवश्य ही था। परन्तु जब मधुसूदन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विनम्र बनता है उस समय उसके साथ व्यवहार करना कुमुद के लिए बहुत ही कठिन हो जाता है, उस समय उसका क्षुब्ध अभिमान मिट जाता है। उसका वह फर्राशखाने का आश्चर्य समाप्त हो जाता है और फिर देवता के समक्ष हाथ जोड़ने से कुछ नहीं होता।

यदि किसी बहाने कुमुद मोती की माँ को रोक पाती तो वह बच जाती। किन्तु नवीन ने उठकर चले जाने के बाद ही उसके पीछे-पीछे चुपचाप मोती की माँ भी चल पड़ी। दरवाजे के पास पहुँचकर उद्विग्नता के साथ उसने मुँह फेरकर मधुसूदन की ओर देखा और फिर चली गई। स्वामी की खुशी के चंगुल से अब इस युवती को कौन बचावे ?'

मधुसूदन ने कहा—'बड़ी बहू, अब तो कपड़े बदलकर सोओगी न ?'

कुमुद धीरे से उठी, पास ही के एक नहाने के कमरे में घुसकर भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। जितनी हो सके मुक्ति की मियाद को आज बढ़ा लेना चाहिए। स्नान-गृह में दीवार के निकट ही एक चौकी पड़ी हुई थी, वह उसी पर बैठी रही। मानो उसका व्याकुल शरीर अपने ही भीतर अपने लिए ओट ढूंढ़ने लगा। बीच-बीच में दीवाल घड़ी की ओर नजर घुमाकर मधुसूदन हिसाब लगाता कि कपड़ों को बदलने में कितने समय की जरूरत है। इस बीच में आइना उठाकर अपना मुँह देखा और सिर के बीचोंबीच एक जगह जहाँ बाल बुरी तरह खड़े रहते हैं, बेमतलब ही उसने उस पर कई बार ब्रुश घुमाया आर कपड़ों के ऊपर उसने लवेण्डर की शीशी ही उँड़ेल ली।

पन्द्रह मिनट बीत गये। इतना समय कपड़े बदलने को काफी है। दरवाजे के पास जाकर मधुसूदन कान लगाकर खड़ा हो गया, किन्तु भीतर से किसी के हिलने-डुलने तक की आवाज न आई। मन में सोचने लगा—'सम्भव है बालों को सँवारने में लगी हो क्योंकि औरतों को श्रृंगार बड़ा ही प्रिय होता है। इस बात को मधुसूदन भली-भाँति समझता था। इसी से सन्तोष करना पड़ा। आधा घण्टा व्यतीत हो जाने पर मधुसूदन ने फिर दरवाजे से जाकर कान सटाया किन्तु फिर कोई शब्द नहीं। लौटकर बेंत की कुर्सी पर बैठ गया, पलंग के सामने ही विलायती चित्र लटक रहा था। बैठे हुए वह उसी ओर ताकता रहा। कुछ देर बाद एकाएक घबरा कर खड़ा हो गया और उस बन्द कोठरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के पास जाकर बोला—'बड़ी बहू, अभी निबट नहीं सकीं ?'

कुछ देर बाद धीरे से दरवाजा खुल गया। कुमुदिनी बाहर निकली जैसे उस पर स्वप्न सवार हो। जिन कपड़ों को पहने थी वे सभी बदले नहीं गये हैं और वे रात को सोने की पोशाक में शामिल भी नहीं किये जा सकते। उसके शरीर पर सर्ज की ख़ाकी पूरी बाँह की फतूही है, उसके ऊपर से लाल रंग की किनारी का दुशाला है जिसका पल्ला माथे पर खिंचा हुआ है। बाँये हाथ को दरवाजे के एक पल्ले पर टेककर न जाने किस दुविधा में वह इस भाँति खड़ी रह गई, मानो कोई विचित्र तस्वीर हो। गोल गोरे हाथों में पुराने ढंग के कड़े हैं। शायद वह किसी समय माँ के थे। उसके सुकुमार हाथों को इन मोटे-भारी कड़ों द्वारा जो सम्मान प्राप्त है, उसके लिए वह अलंकार उसने शरीर में तनिक भी आडम्बर प्रतीत नहीं होता। मधुसूदन ने मानो उसे फिर से नये रूप में देखा। उसकी महिमा से वह फिर विस्मित हो गया। मधुसूदन इस बात पर बिना अभिमान किये न रह सका कि उस पुराने युग की सिरजी हुई सम्पत्ति ने इतने दिनों बाद फिर शोभा प्राप्त कर ली है। मधुसूदन का विचित्र स्वभाव यह है जिन लोगों से उसका हमेशा का मेल-जोल है प्रायः उन लोगों में भी वह सबसे बढ़कर अपने धन तथा गौरव को समझता है। दरवाजे के पास गैस की रोशनी में चुपचाप खड़ी युवती को देखकर मधुसूदन को ऐसा जान पड़ने लगा मानो मेरे पास धन काफी नहीं है। उसे विदित होने लगा, यदि मैं चक्रवर्ती सम्राट होता, तभी कुमुद इस घर में शोभा प्राप्त करती। उसे मानो साफ-साफ जान पड़ने लगा कि जन्म से ही इसका स्वभाव किसी विशुद्ध वंश मर्यादा के भीतर पला-पनपा है। या तो मानो यह अपने जन्म के प्रथम अति दीर्घकाल पर अधिकार पाकर खड़ी है। वहाँ बाहर से कोई ऐरा-गैरा मनुष्य प्रवेश कर ही नहीं सकता। वहीं अपने स्वाभाविक सत्य के लिये विप्रदास विराजेंगे। उनको भी कुमुद ही की तरह एक आत्मविस्मित सहज गौरव सदैव घेरे हुए है।

यह बात मधुसूदन से कभी भी सही न जा सकती। विप्रदास में दूरत्व का विशेष अंश पाया जाता है, घनिष्ठ-से-घनिष्ठ आत्मीय या निकट सम्बन्धी का भी ऐसा साहस नहीं, कि वह आकर कहे, कहो जी, क्या कह रहे हो ?—

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहता हुआ उसकी पीठ ठोंक सके। उसे मन-ही-मन इसी बात के ऊपर चिढ़ है कि विप्रदास के सामने उसे दिल में छोटा बनना पड़ता है केवल उसी एक सूक्ष्म कारण से कुमुद के ऊपर उसका जोर पूर्णरूप से चल नहीं पाता। जहाँ उसे अपनी गृहस्थी में सबसे अधिक कार्य करने का अधिकार है वहीं उसे मानो सबसे ज्यादा हट-सा जाना पड़ा है किन्तु उसे यहाँ क्रोध नहीं आता, उसका आकर्षण कुमुद के प्रति तीव्र वेग से प्रबल हो उठता है। कुमुद को देखते ही आज मधुसूदन ने साफ-साफ समझ लिया कि वह तैयार नहीं होकर आई है। किसी अदृश्य आड़ के परे खड़ी है। मगर वह कितनी सुन्दर है! उसमें कितनी दीप्तिमान सफाई और शुभ्रता है! मानो निर्जन बर्फ की चोटी के ऊपर दिखाई दे रही हो!

और भी निकट आकर मधुसूदन ने मन्द स्वर में कहा—'बड़ी बहू, सोओगी नहीं?'

कुमुद आश्चर्य में पड़ गई। उसने पूर्णरूप से समझ रखा था कि मधुसूदन गुस्सा होगा और इसको अपमान की बात समझेगा। एकाएक उसे एक चिर-परिचित कण्ठस्वर की याद आ गई। उसके पिता-माँ को कितने प्रेम भाव से 'बड़ी बहू' पुकारते थे, इसके साथ-ही-साथ माँ की याद आ गई। माँ उसके पिता को निकट आने में बाधा डाल किस भाँति चली गई थी। उसकी आँखें क्षण-मात्र में डबडबा आईं। जमीन पर मधुसूदन के पैरों के समीप बैठकर बोली—'मुझे क्षमा करो।'

तीव्रता से मधुसूदन ने हाथ बढ़ाकर कुमुद को उठा चौकी पर बिठाते हुए कहा—'तुमने कौन-सा कुसूर किया है जो क्षमा करूँ?'

कुमुद ने कहा—'अभी मेरा मन तैयार नहीं, मुझे जरा समय देने की कृपा कीजिए।' मधुसूदन का दिल कठोर हो उठा, वह बोला—'समय किसलिए देना होगा, मुझे तनिक समझा तो दो?'

'अच्छी तरह कहते नहीं बनता। किसी को कैसे समझाऊँ!'

रस-विहीन कण्ठ-स्वर से मधुसुदन ने कहा—'कठिन कुछ भी नहीं है। तुम कहना चाहती हो कि मैं तुम्हें अच्छा नहीं लगता।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब कुमुद के लिए कठिनाई हुई। बात सत्य-असत्य दोनों है। दिल में नैवेद्य चढ़ाने भर को यह प्रण कर चुकी है किन्तु अभी तक नैवेद्य आ नहीं सका है। मन कहता है—'देर हो, सो भी नहीं। धैर्य धरने ही से, मार्ग में बाधा न देने ही से आ जायगा। किन्तु यह बात माननी ही होगी कि थाल अभी खाली है।'

कुमुद ने कहा—'मैं तुम्हें धोखे में नहीं डालना चाहती, उसी कारण कहती हूँ कि मुझे थोड़ा समय दो।'

धीरे-धीरे मधुसूदन कठोर बनने लगा, वह कड़ाई के साथ बोला—'वक्त देने से लाभ! अपने भाई से सलाह करके फिर पति के साथ रहने की ख्वाहिश है!'

मधुसूदन का यही विचार है, उसने सोच लिया कि विप्रदास की याद में ही कुमुदिनी का सब कुछ रुका है। जिस भाँति भैया चलावेंगे, उसी प्रकार बहन चलेगी। व्यंग्य में वह बोल उठा—'तुम्हारे भैया तुम्हारे गुरु हैं।'

तपाक् से उठकर कुमुद खड़ी हो गई, बोली—'हाँ, भैया मेरे गुरु हैं।'

'आज उनकी आज्ञा बिना कपड़े न बदलोगी, बिस्तर पर न सोओगी क्यों? मुझे क्या मालूम था! ऐसी बात?'

हाथ की मुट्ठी को दृढ़ करते हुए कुमुद वहाँ पत्थर की भाँति खड़ी रही।

'तो तार द्वारा आज्ञा मँगाऊँ क्या? रात अधिक बीत चुकी है।' कछ जवाब न देकर कुमुद छत पर जाने के लिए दरवाजे की ओर बढ़ी।

मधुसूदन ने कड़ककर धमकी के साथ कहा—'यह कहे दे रहा हूँ, जाना मत!'

कुमुद उसी वक्त घूमकर खड़ी हो गई और बोली—'कहो क्या कहते हो?'

'अभी बहुत ही जल्द कपड़े बदलकर आओ।' घड़ी निकालकर कहने लगा—'केवल पाँच मिनट समय दिया जाता है।'

कुमुद तत्क्षण ही समीप के स्नान-गृह में चली गई। कपड़ों को उतार साड़ी के ऊपर एक मोटी-सी चादर ओढ़ आई। अब वह दूसरे ऑर्डर के इन्त-जार में खड़ी हुई। उसे इस भाँति खड़े देख मधुसूदन को यह समझने में देर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न लगी कि यह भी युद्धावेश है। क्रोध भड़क उठा, किन्तु क्या करे, कोई बात दिमाग में नहीं आती, क्रोध के तेज होने पर भी मधुसूदन की व्यवस्था कार्य करती रहती है। इसी से वह बढ़ते-बढ़ते झट रुक गया और बोला—'अब तुम क्या करना चाहती हो, मुझे बताओ तो सही।'

'तुम्हारे हुक्म को मैं अवश्य मानूंगी।'

मधुसूदन हताश होकर चौकी पर चुपचाप बैठ गया। चादर से लिपटी हुई यह स्त्री विधवा-सी दीख पड़ने लगी। उसके और उसके स्वामी के बीच मानो मृत्यु का एक निस्तब्ध समुद्र आ पड़ा है।

इस समुद्र को डाँट-फटकार द्वारा पार करना असम्भव है। पाल में किस हवा के चलने से नाव चल सकती है?—क्या वह किसी दिन चलेगी?

घड़ी के टिक-टिक के अतिरिक्त घर में और कोई दूसरा शब्द सुनने में नहीं आता था। वह भी शान्त बैठा रहा। कुमुद घर से बाहर नहीं निकली। वह फिर लौट आई और चित्र की तरह खड़ी छत के अन्धकार की ओर टकटकी लगाये देखती रही। बाहर चौराहे पर किसी शराबी के गद्गद् कंठ की गाने की आवाज सुनाई पड़ रही है और समीप के पड़ौसी के अस्तबल में एक कुत्ते का पिल्ला बंधा रात की शान्ति में अपनी कर्कश आवाज द्वारा खलल डाल रहा है।

मधुसूदन की घर-गृहस्थी वाली मशीन के सभी पहिए मानो बन्द हैं। उसे ऑफिस में कल बहुत काम है। डायरेक्टरों की मीटिंग है। बहुत से कठिन प्रस्ताव, बहुतों का विरोध होते भी अपनी होशियारी से पास करा लेने हैं। वे समस्त आवश्यक कार्य उसकी दृष्टि में नितान्त छाया से प्रतीत हो रहे हैं। पहले तो एक दिन पूर्व ही रात को कल की कार्य प्रणाली को अपनी नोट बुक में अंकित कर लिया करता था। आज उसकी समस्त चिन्ताएँ विलीन हो गईं। संसार में उसके लिए जो कठिन सत्य दीखता है वह वही स्त्री है, जो कि चादर से ढकी हुई कमरे के रास्ते में शान्त-भाव से खड़ी है। थोड़ी देर के बाद मधुसूदन ने एक गहरी साँस ली। कमरा मानो अपनी ध्यानभंगिमा को त्याग रहा हो। तेजी से चौकी पर से उठा और कुमुद के पास पहुँचकर बोला—'बड़ी बहू, क्या तुम्हारा दिल पत्थर का बना हुआ है?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद के दिल में यह 'बड़ी बहू' शब्द मन्त्र की भाँति काम कर जाता है। अपने में अपनी माँ की जीवन अनुवृत्ति एकाएक उज्ज्वल हो उठती है। इस सम्बोधन के ऊपर उनकी माँ ने कितनी ही बार अनेकों दिन उसे उत्तर दिया था। उसी का अभ्यास मानो कुमुद के खून में उपस्थित है। इसी कारण वह तपाक् से मुँह फेरकर खड़ी हो गई। बड़े कष्ट के साथ मधुसूदन ने कहा—'मैं तुम्हारे अयोग्य हूँ, किन्तु क्या मुझ पर दया न करोगी ?'

कुमुद सिटपिटा-सी गई, बोली—'छिः ! छिः ! ऐसा न कहो।' जमीन पर पड़कर मधुसूदन के पैरों की मिट्टी सिर से लगाकर वह बोली—'मुझे आदेश दो, मैं तुम्हारी दासी हूँ !'

मधुसूदन ने उसका हाथ पकड़ कर उठा लिया और उसे छाती से लगाते हुए बोला—'नहीं, तुम्हें कैसे हुक्म दूं, तुम स्वेच्छा से मेरे पास आओ।' मधुसूदन के बाहु-बन्धन में कुमुद हाँफने लगी, किन्तु यह स्वयं अपने को छुड़ाने की छेष्टा न कर सकी। रुँधे हुए कण्ठ से मधुसूदन बोला—'नहीं, तुम्हें हुक्म न दूंगा, किन्तु फिर भी तुम मेरे पास आओ।' इतना कहते हुए उसने कुमुद को छोड़ दिया।

कुमुदिनी को गौरवपूर्ण मुँह सुर्ख हो गया। उसने नीची निगाह किये हुए कहा—'तुम आदेश दो तो मेरा कार्य सिद्ध हो जाय। मुझसे स्वयं कुछ करते नहीं बनता।'

'अच्छा, तुम यह अपनी चादर उतार दो, यह हमें अच्छी नहीं लग रही है।'

कुमुदिनी ने बड़े संकोच से चादर उतार डाली। बदन पर डोरिया की एक साड़ी रह गई जिसका किनारा पतला था, उसी पतली धारियों से कुमुद का शरीर ढका हुआ है। मानो रेखाओं के अनिश्चल झरने लगातार झर रहे हों। मानो कोई एक काली दृष्टि अपनी अश्रान्त गति को छोड़-छोड़कर उसके प्रत्येक अंग को घेर-घेर कर उसकी प्रदक्षिणा कर रही हो और किसी प्रकार पूरी नहीं कर पाती हों। मधुसूदन मुग्ध हो गया और उसका ध्यान क्षणमात्र उसी साड़ी पर चला गया। वह यहाँ की दी हुई नहीं थीं। कुमुद के बदन पर वह चाहे जितनी भी खिल रही हो किन्तु उसका मूल्य कुछ भी न था। वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थी भी तो उसके मायके की ही। नहाने के कपड़े बदलने के कमरे में दराजों वाली महोगिनी की बड़ी आलमारी जिसके पल्ले आइनेदार हैं, वह ब्याह के पहले ही अनेकों प्रकार के बहुमूल्य कपड़ों से भरी पड़ी है। इस स्त्री का इतना घमण्ड ! उन पर इतना भी लोभ नहीं। उसे उन तीन अँगूठियों की बात याद आई। उसका एक तुच्छ नीलम की अँगूठी के लिए कितना घोर आग्रह था।

मधुसूदन तथा विप्रदास के बीच कुमुद के प्रेम का कितना अन्तर है। इन सब बातों ने कुमुद के चादर उतारते ही आँधी की झपेट की भाँति गहरा धक्का दिया। किन्तु हाय ! कितनी सुन्दर है ! और उसकी यह दर्प भरी अवज्ञा, वह भी मानो उसका अलंकार है। यही युवती ऐश्वर्य की भी अवज्ञा कर सकती है। स्वाभाविक धन से महीप-सी होकर इसने जन्म लिया है। उसे रुपये पैसों के जोड़ने से कोई मतलब नहीं, हिसाब नहीं रखना पड़ता, फिर मधुसूदन उसे किस वस्तु का लालच दिखा सकता है।

मधुसूदन ने कहा—'चलो, तुम सोने चलो।'

कुमुदिनी स्वामी के मुखड़े की ओर निहारती रही। वहाँ पर वह नीरव प्रश्न था कि 'तुम पहले पलंग पर न जाओगे ?'

दृढ़ स्वर में मधुसूदन बोल उठा—'चलो, अब देर न करो।'

कुमुद के पलंग पर पहुँच जाने के बाद मधुसूदन सोफे पर बैठकर बोला—'मैं यहीं बैठा हूँ, तुम मुझे बुलाओगी तभी आऊँगा। मैं वर्षों इस प्रकार इन्तजारी में व्यतीत कर सकता हूँ।'

कुमुद का समस्त शरीर काँप उठा—आज उसकी यह कैसी परीक्षा है ! वह आज किसके दरवाजे पर जाकर सिर धुने ? आज तो देवता ने उसे उत्तर नहीं दिया। वह जिस मार्ग से यहाँ पहुँची है, यह तो नितान्त गलत है। वह बिछौने पर लेटी हुई मन-ही-मन कहने लगी—'भगवान् तुम मुझे कभी भी भूल नहीं सकते, मैं अब भी तुम पर विश्वास करूँगी। ध्रुव को तुम्हीं ने बन में अपने दर्शन देने के हेतु उसे बुलाया था।'

कमरे के अन्दर अब निस्तब्धता छाई हुई है। चौराहे पर उस शराबी की आवाज अब सुनाई नहीं दे रही है। केवल यही कैदी पिल्ला, यद्यपि अब वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

थक गया है किन्तु फिर भी बीच-बीच में आर्तनाद कर उठता है।

थोड़ा-सा भी समय बहुत बड़े समय के सदृश प्रतीत हुआ। सन्नाटे के भारग्रस्त प्रहर से मानो हिलना-डुलना तक असम्भव है। क्या यही उसके दाम्पत्य के अनन्तकाल का चित्र है? दो किनारों पर दोनों शान्त-भाव से बैठे हैं—रात्रि का अन्त नहीं, बीचोंबीच एक अलंघनीय सन्नाटा है आखिर न जाने कब कुमुद ने पलंग से उतर अपनी सम्पूर्ण शक्ति के साथ कहा—'मुझे अपराधी न बनाओ।'

गम्भीर मुद्रा में मधुसूदन ने कहा—'बताओ क्या चाहती हो, क्या करना होगा?' वह बिलकुल आखिरी शब्द तक उसके मुख द्वारा निचोड़कर कहलवा देना चाहता है।

कुमुद ने कहा—'चलो, सोओ।'

किन्तु क्या इसी को विजय कहते हैं?

अठत्तीस

सवेरे जब मोती की माँ कुमुद के लिए दूध लाई तो उसने देखा कि कुमुद की आँखें लाल हैं। चेहरे का रंग उड़ा है। उसने सोचा था कि प्रातःकाल छत के जिस कोने में आसन बिछाकर कुमुद पश्चिम की ओर मुंह करके तपस्या करने बैठती है, वहीं मिलेगी। किन्तु आज कुमुद वहाँ नहीं थी। जीने के बगल से ही जो मिली हुई छत है वह वहाँ पर दीवार के सहारे कुछ थकी हुई सी बैठी है। शायद आज देवता से रुष्ट हो गई है। जब निर्दयी बाप निर्दोष बालक को बिना किसी कारण के पीटता है तब जैसे उसकी समझ में कुछ नहीं आता, रूठकर मार खाता रहता है और अपनी सफाई देते भी हिचकिचाता है। देवता के प्रति कुमुद के आज ऐसे ही विचार हैं। इस आन्तरिक अस्तित्व में? भगवान क्या नारी की बलि चाहते हैं? क्या इसलिए उसे बहका लाए हैं? जिस शरीर में हृदय नहीं उसके माँस-पिण्ड को अपना नैवेद्य बनायेंगे? आज किसी प्रकार भी भक्ति नहीं जागी। इतने दिनों से कुमुद बार-बार कहती है कि मैं तुम्हें कैसे सहन कर सकती हूँ, किस मुंह से तुम्हारी पूजा करूँ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने भक्त को स्वयं स्वीकार न करके उसे किस दास की दुकान पर बेच दिया। जिस दुकान पर मांस और मछली के भाव लड़कियाँ बिकती हैं, जहाँ हार्दिक भावों की पूजा नहीं होती—फूलों का उपवन काटकर बकरियों को खिला दिया जाता है।

मोती की माँ ने जब दूध पीने के लिए आग्रह किया, तब कुमुद ने कहा—'रहने दो दीदी।'

मोती की माँ ने कहा—'क्यों, रहने क्यों दूँ? मेरे हाथ के कटोरे ने क्या बिगाड़ा है?'

कुमुद ने कहा—'अभी मैं नहाई नहीं, न पूजा की।'

'आओ तुम नहाने जाओ, मैं बैठी प्रतीक्षा करूँगी, अच्छा।'

कुमुद नहा आई। मोती की माँ ने सोचा, अब खुली छत पर कोने में जाकर बैठेगी। कुमुद ने छत पर जाने की आदत के कारण उस ओर कदम बढ़ाये, किन्तु गई नहीं। लौटकर फिर वहीं जमीन पर बैठ गई। उसका मन तैयार न था।

मोती की माँ ने कुमुद से पूछा—'भैया की चिट्ठी आई?'

चिट्ठी अवश्य आई होगी, यह समझकर ही मोती की माँ आज सुबह स्वयं दफ्तर के कमरे में गई थी किन्तु चिट्ठियों की दराज खींचने पर पता चला कि ताला लगा हुआ है।

मोती की माँ ने कहा—'ठीक कह नहीं सकती, तलाश करूँगी।'

इतने में अचानक श्यामा आ पहुँची। बोली—'बहू, आज तुम इतनी उदास क्यों हो? जी तो ठीक है?'

कुमुद ने कहा—'हाँ!'

'मायके के लिए जी चाहता होगा। आह! वह तो चाहेगा ही। हाँ, भैया तुम्हारे आ रहे हैं, मिल लेना।'

कुमुदिनी चौंक उठी। उसने श्यामा की ओर ललचाई हुई दृष्टि से देखा, मोती की माँ ने पूछा—'तुम्हें इसकी खबर कहाँ से लग गई?'

'यह तो सभी को मालूम है। अपने रसोईघर की पार्वती ने ही तो कहा था। राजाबहादुर के पास बहूरानी के मायके से गुमाश्ता आया है, बहूरानी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की खबर लेने। उसीसे उसने सुना है कि इलाज के लिए भया आज ही कल में कलकत्ते आने वाले हैं।'

कुमुदिनी ने उद्विग्न होकर पूछा—'उनकी बीमारी क्या बढ़ गई ?'

'यह तो नहीं कह सकती, पर हाँ, चिन्ता की कोई बात नहीं। अगर चिन्ता की बात होती तो जरूर सुन लेती।'

श्यामा ने समझा था कि उसके भैया का समाचार उसे मधुसूदन ने दिया न होगा। क्योंकि जिस बहू का अभी तक मिजाज नहीं बदला, कहीं ऐसा न हो कि इस बात को सुनकर वह मायके की धुन में और भी अनमनी न हो जाय। कुमुदिनी को उसकाकर बोली—'तुम्हारे भैया जैसा आदमी मिलना मुश्किल है, सभी कहते हैं। अच्छा चलो देर हो रही है। कोठार से सामान निकालना होगा। दफ्तर के लिए रसोई बनानी है। देर हो गई तो आफत आ जायगी !'

मोती की माँ ने दूध का कटोरा फिर एक बार कुमुदिनी के आगे बढ़ाकर कहा—'जीजी, दूध ठण्डा हो रहा है, पी डालो मेरी रानी !'

इस बार कुमुद ने दूध पीने में आपत्ति न की।

मोती की माँ ने कान में पूछा—'आज कोठार चलोगी ?'

कुमुद ने कहा—'आज रहने दो, गोपाल को एक बार मेरे पास भेज दो।'

राहू की भाँति एक काला कठोर भूखा बुढ़ापा बाहर से कुमुद को निगल रहा है। प्रौढ़ावस्था जो शान्त, स्निग्ध, शुभ्र, सुगम्भीर होती है यह वह तो है नहीं। जो लालायित है, जिसके संयत की शक्ति शिथिल है, जिसका प्रेम ही विषयाशक्ति की जाति का है उसी के स्पर्श से कुमुद को इतनी अरुचि है। पति की आयु अधिक है इसका कुमुदिनी को कोई दुःख नहीं किन्तु उसे इस बात का अवश्य दुःख है कि उस आयु ने अपनी मर्यादा क्यों भुला दी। उसका व्यवहार क्यों बदल गया। सम्पूर्ण आत्म-निवेदन एक फल के समान है जो प्रकाश और वायु में—स्वतन्त्र वातावरण में पकता है, कच्चे फल को चक्की में पीसने से ही तो वह पकता नहीं। समय न मिलने के कारण ही आज उनका सम्बन्ध कुमुद को सता रहा है, इतना अपमान कर रहा है। वह कहाँ जाय ? मोती की माँ से अभी कहा कि गोपाल को बुला दो। क्या

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भागने के लिए—नये वातावरण में जाने के लिए—गन्दी निःश्वास की भाप से निकलकर कुसुम कानून की स्वच्छ पवन में जाने के लिए। पतली छींट का एक रुईदार कोट पहिने मोती जीने के दरवाजे के पास ग्राकर डरता-डरता खड़ा हो गया। चमकती हुई काली-काली ग्राँखें हैं, जल से भरे बादल का सा साँवला रंग है, गाल उभरे हुए ग्रौर सिर के बाल बारीक कटे हुए हैं।

कुमुद जाकर मोती को पकड़ लाई ग्रौर उसे छाती से लगाकर बोली—'शरीफ लड़के, दो दिन से तुम ग्राये क्यों नहीं ?'

मोती ने कुमुद के गले में दोनों हाथ डालकर कानों में कहा—'ताईजी ! तुम्हारे लिए मैं क्या लाया हूँ, बताग्रो तो ?'

कुमुद ने उसके गाल का चुम्बन लेकर कहा—'माणिक लाये हो गोपाल ?'

'मेरी जेब में है।'

'ग्रच्छा निकालो तो !'

'तुम बता नहीं सकतीं।'

'मेरी बुद्धि नहीं है। जो ग्राँखों से देखती हूँ उसे भी नहीं समझ सकती। जो दिखाई नहीं देता उसे तो ग्रौर उलटा समझती हूँ।'

मोती ने बड़ी सावधानी से धीरे-धीरे जब से एक खाकी कागज निकाला ग्रौर उसे कुमुद की गोद में रखकर भाग जाने की चेष्टा करने लगा।

'नहीं, तुम भाग नहीं सकते।'

कागज को दोनों हाथों से दबाकर मोती ने जल्दी से कहा—'ग्रभी मत देखो।'

'नहीं, तुम डरो मत, तुम ज़ब चले जाग्रोगे तभी खोलूंगी।'

'ग्रच्छा ताईजी, तुमने जटाई बूढ़ी को देखा है ?'

'क्या पता, देखा होगा, खबर नहीं। पर पहिचानने में देर लगेगी।'

'नीचे ग्राँगन के पास जो कोयले की कोठरी है उसी में वह ग्राती है, शाम को चमगादड़ पर बैठकर न।'

'ग्रपने मन की इच्छा से वह खूब छोटी हो सकती है जिसमें कि किसी को मालूम ही न हो।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'तब तो उससे वह मन्त्र सीख लेना होगा।'

'क्यों ताईजी ?'

'मैं यदि भाग जाने के लिए कोयले की कोठरी में जाऊँ तो फिर भी मैं दिखाई दूँगी।'

मोती इस बात का मतलब समझ न सका। बोला—'कोयलों के भीतर उसी ने अँगूर की डिबिया दबा रखी है। वह अँगूर कहाँ से लाई है, जानती हो ?'

'शायद।'

'अच्छा, बताओ।'

'सवेरे के बादलों में से।'

मोती ठिठक गया। इस बात ने उसे चिन्ता में डाल दिया। विशेष सम्वाददाता ने उसे समुद्र पार की दैत्यपुरी की बात कही थी किन्तु ताई की बातों में उसे विश्वास का अनुभव हुआ। इस कारण विरोध में कोई तर्क न बन पड़ने पर बोला—'जो लड़की उस डिबिया को ढूँढ़कर अँगूर माथे से लगायेगी वह राजरानी हो जायगी।'

'प्रलय हो गया, किसी अभागिनी को खबर तो नहीं लग गई।'

छोटी बुआ की लली जानती है। टोकरी लेकर जब सवेरे कोयला लेने के लिए कमला जाती है तो वह नित्य उसके साथ जाती है। उसे तनिक भी डर नहीं लगता।'

'अभी छोटी है न, इसलिए वह राजरानी बनने से नहीं डरती।'

बाहर ठण्डी-ठण्डी उत्तरी हवा बह रही थी। कुमुदिनी तुरन्त मोती को लेकर कमरे में चली गई। वहाँ सोफे पर बैठकर उसे गोद में ले लिया। साथ की छोटी तिपाई पर चाँदी की थाली में शरद्‌ऋतु के फूल, गेंदा, गुलाब, कन्द, जावा आदि रक्खे थे और दिनों की भाँति ये फूल माली के चुने हुए हैं। थाली में पड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कब कुमुद उन्हें छत के कोने में बैठकर देवता के सिर पर चढ़ाये। आज उसने उन फूलों को थाला सहित मोती के सामने रख दिया। बोली—'फूल लोगे ?'

'हाँ, लूँगा।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'क्या करोगे, बताओ तो ?'

'पूजा-पूजा खेलेंगे।'

कुमुद की कमर में एक रेशमी रुमाल लटक रहा था। उसमें फूल बाँध कर बालक का चुम्बन लेकर कुमुद ने कहा—'यह लो' और मन में कहने लगी—'चलो मेरा भी पूजा-खेल हो गया।' बालक से बोली—'गोपाल, इनमें से कौन-सा फूल सबसे अधिक पसन्द है, बताओ तो ?'

मोती ने कहा—'गुलाब का फूल।'

'क्यों अच्छा लगता है, बताऊँ ?'

'अच्छा, बताओ।'

'वह सवेरे ही जटाई बूढ़ी की डिबिया से सुन्दरता उड़ा लाता है।'

मोती कुछ देर गम्भीर बना बैठा रहा। एकाएक बोला—'ताईजी, गुलाब के फूल का रंग ठीक तुम्हारे साड़ी के लाल फांट की तरह है।' बस इतने में ही वह अपने मन की सारी बात कह गया।

सहसा पीछे घूमकर देखा तो मधुसूदन। पाँव की आहट तक न सुनाई दी थी। उसका घर में आने का समय भी नहीं। इस समय दफ्तर में दुनिया भर के कारोबारी लोग इकट्ठे होते हैं, दलाल आते है, विभिन्न समाचार और कागज लेकर सेक्रेटरी आता है। असली काम की अपेक्षा इन सब ऊपरी कामों की भीड़ कम नहीं होती।

जिस भिखारी की झोली में केवल भूसी-ही-भूसी जम गई है, अन्न नाम को भी नहीं जुटा, उसका-सा मन लिए आज मधुसूदन काफी सवेरे अत्यन्त रूखे भाव से बाहर चला गया है। किन्तु अतृप्ति का आकर्षण बड़ा होता है। बाधा पर बाधा चली ही आती है।

मधुसूदन को देखते ही मोती के चेहरे का रंग उड़ गया। हृदय काँपने लगा, भागने को तैयार हो गया। कुमुद ने जोर से उसे दबा लिया। उठने न दिया।

मधुसूदन ताड़ गया। मोती को जोर से धमकाकर बोला—'यहाँ क्या कर रहे हो ? पढ़ने नहीं जाओगे ?'

पण्डितजी के आने का समय नहीं हुआ, यह बात कहने का मोती में साहस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न था। धमकी उसने चुपचाप सह ली और धीरे से उठकर चल दिया।

कुमुद उसे रोकने के लिए तैयार हुई; पर तुरन्त ही रुक गई। बोली—'अपने फूल तो तुम छोड़ ही चले। लोगे नहीं?' यह कहकर रुमाल में बाँधी हुई पोटली उसके सामने कर दी। मोती ने लिया नहीं। डरता हुआ अपने ताऊजी के मुँह की ओर देखता रहा। मधुसूदन ने तुरन्त कुमुद के हाथ से पोटली छीन ली। बोला—'यह रुमाल किसका है?'

क्षणभर में कुमुद का चेहरा लाल हो उठा, बोली—'मेरा।'

इसमें सन्देह नहीं कि रुमाल उसी का है अर्थात् उसके विवाह के पहले की की चीज है। उस पर रेशम की जो कामदार बेल है वह भी कुमुद ने स्वयं बनाई है।

मधुसूदन ने फूल निकालकर जमीन पर डाल दिए और रुमाल अपनी जेब में रख लिया, बोला—'मैं ही लिए लेता हूँ, यह बच्चा है, इसे लेकर क्या करेगा!' और मोती से बोला—'तू जा।

मधुसूदन की कठोरता से कुमुदिनी दंग रह गई। मोती अपना-सा मुँह लेकर चला गया। कुमुद ने कुछ भी न कहा।

मधुसूदन ने कहा—'दूसरों के लिए तो तुम दान करने बैठी हो और मेरे लिए ठेंगा? यह रुमाल अब मेरा ही हो गया। याद रहेगा कि कुछ मिला है तुमसे।'

मधुसूदन जो कुछ चाहता था उसे प्राप्त करने की उसमें क्षमता नहीं थी।

कुमुदिनी आँखें बन्द किए सोफे पर एक ओर चुपचाप बैठी रही। साढ़ी की लाल किनारी उसके माथे को घेरकर मुंह पर सरकती हुई उतर गई और उसके गीले बाल लटक आए हैं। गले की गोलाई को एक सोने का हार घेरे हुए है। यह हार उसकी माँ का है इसलिए सदैव पहने रहती है। अभी तक उसने वास्कट नहीं पहनी। अन्दर एक बनियाइन है। दोनों बाँह खुली, हाथ-पर-हाथ धरे बैठी है। अत्यन्त शुभ्र हाथ हैं। सारे शरीर की वाणी मानो वहीं आकर उद्वेलित हो रही है। मधुसूदन आँखें नीची करके अभिमानिनी की ओर दृष्टि गड़ा-गड़ाकर देखने लगा। सोने के मोटे कड़े पहिने हुए उन हाथों से उसकी निगाह हटना नहीं चाहती। सोफे पर चढ़कर उसने कुमुदिनी का हाथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पकड़कर खींचना चाहा। उसने ज्यों ही हाथ हटाया तो मधुसूदन ने देखा कि कुमुद के हाथ के नीचे एक कागज का हिस्सा है जिसे वह छिपाने का असफल प्रयास कर रही है।

'इस कागज में क्या है ?' मधुसूदन ने पूछा।

'पता नहीं।'

'पता नहीं, इसका मतलब ?'

'इसका मतलब मुझे पता नहीं।'

मधुसूदन ने इस बात पर विश्वास न हुआ। बोला—'मुझे बता मैं देखूंगा।'

कुमुद ने कहा—'यह मेरी गुप्त चीज है, दिखा नहीं सकती।'

मधुसूदन के शरीर में बिजली के समान एक गुस्से की लहर दौड़ गई; वह बोला—'क्या कहा ? इतनी गुस्ताखी ?' यह कहते हुए जबरदस्ती कुमुद से कागज की पुड़िया छीनकर उसे खोल डाला। देखा तो उसमें कुछ नहीं, थोड़े इलायची के दाने पड़े हैं। मोती के सस्ते प्रबन्ध में मोती के लिए जो कलेवर बंधा हुआ है उसमें शायद यही चीज मोती के लिए अधिक लोभ की है। इसी कारण वह उसे बड़ी सावधानी के साथ पुड़िया में बन्द करके लाया था।

मधुसूदन दंग रह गया। माजरा क्या है। सोचने लगा—मायके में इसके जलपान की आदत होगी इसीलिए छिपाकर मंगाए हैं। शर्म के मारे बताना नहीं चाहती। मन-ही-मन मुस्कराने लगा। सोचने लगा—लक्ष्मी का दान-ग्रहण करना आसान नहीं। इसके लिए समय लगता है। तुरन्त एक तरकीब समझ में आ गई। जल्दी से उठकर बाहर चला गया।

कुमुदिनी ने दराज खोलकर एक छोटा-सा नया सन्दल का बक्स निकाला और उसमें इलायची के दाने रख दिए और भैया को चिट्ठी लिखने चली गई। ज्यों ही चार पंक्तियाँ लिख पाई थी कि मधुसूदन आ पहुँचा। चिट्ठी नीचे दबाकर कुमुदिनी जम कर बैठ गई। मधुसूदन के हाथ में एक कीमती फलदानी थी। उस पर मीनाकारी का काम हो रहा था। एक फूलदार रेशमी रुमाल से ढकी हुई। हँसते हुए उसने वह कुमुद के सामने रख दी। बोला—'खोलकर देखो तो सही।'

कुमुदिनी ने रुमाल उठाकर देखा। फलदानी इलायचीदानों से अब तक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भरी थी। यदि अकेली होती तो मुस्कराती। चुप रही, गम्भीरता से चुपचाप बैठी रही।'

मधुसूदन ने कहा—'इलायचीदाने छिपकर खाने की क्या जरूरत थी। इसमें शर्माना काहे का, मैं रोज मँगा दिया करूँगा, कितने चाहिएँ ? मुझसे पहले कहा क्यों नहीं था ?'

कुमुद ने कहा—'तुम नहीं मँगवा सकते।'

'क्या इसका बहुत अधिक मूल्य है ?'

'हाँ, ये रुपए से नहीं मिलते।'

यह सुन मधुसूदन के मन में तुरन्त एक सन्देह उत्पन्न हो गया। बोला—'तुम्हारे भैया ने पार्सल भेजे होंगे। क्यों ?'

इसका उत्तर देने की इच्छा न हुई। फलदानी को सामने से हटाकर चले जाने के लिए उठ खड़ी हुई। मधुसूदन ने हाथ पकड़कर फिर उसे जबरदस्ती बिठा लिया।

मधुसूदन के कुछ कहने के पूर्व ही कुमुदिनी पूछ बैठी—'भैया के यहाँ से तुम्हारे पास कोई आदमी आया था ?—उनकी खबर लेकर ?' यह बात कुमुद को पहले से ही मालूम हुई जानकर उसका जी झुँझलाया। बोला—'यह खबर सुनाने के लिए तो आज सवेरे तुम्हारे पास आया हूँ। वह कहना व्यर्थ है कि यह बिलकुल झूठ थी।'

'भैया कब आयेंगे ?'

'एक हफ्ते के अन्दर।'

मधुसूदन निश्चित रूप से जानता था कि कल ही विप्रदास आ जायेंगे।' एक हफ्ते के अन्दर कहकर उसने खबर को आई-गई करके छोड़ दिया।

'भैया की तबीअत क्या और भी खराब हो गई ?'

'नहीं तो, ऐसी तो कोई खबर नहीं सुनी !'

इसमें जरा पीछा छुड़ाने का भाव था। विप्रदास इलाज के लिए ही कलकत्ते आ रहे हैं। इसके यही अर्थ होते हैं कि उनकी तबीयत ठीक नहीं है।'

'क्या भैया की चिट्ठी आई है ?'

'चिट्ठियों का बक्स अभी खोला नहीं। अगर होगी तो तुम्हारे पास भेज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दूंगा ।'

कुमुदिनी ने अभी तक मधुसूदन की बातों पर विश्वास करना शुरू नहीं किया । उसने कहा—'भैया की चिट्ठी आई है या नहीं, एक बार देख लेना ।'

'यदि आई होगी तो भोजन करने के बाद दोपहर को मैं स्वयं लेकर आऊँगा ।'

कुमुदिनी इस बात पर राजी हो गयी । एक बार मधुसूदन ने कुमुद का हाथ पकड़कर अपनी ओर खींचना चाहा । इतने में अचानक श्यामा कमरे में में चली आई और आते ही बोली—'अरे यहाँ तो लालाजी हैं !' और यह कह कर तुरन्त उलटे पाँव बाहर चली गई ।

मधुसूदन ने कहा—'क्यों ? क्या कुछ काम है ?'

'बहू को कोठार के लिए बुलाने आई हूँ । राजरानी होने पर भी घर की तो यही लक्ष्मी हैं—अच्छा, आज रहने दो ।'

मधुसूदन सोफे से उठकर और बिना कुछ कहे-सुने बाहर चला गया । खाने-पीने के बाद नियमानुसार ऊपर के कमरे में जाकर पलंग पर तकिए के सहारे लेटकर पान चबाते हुए मधुसूदन ने कुमुदिनी को बुला भेजा । कुमुदिनी शीघ्र ही चली आई । आज भैया की चिट्ठी मिलेगी । भीतर जाकर पलंग के पास खड़ी हो गई ।

मधुसूदन ने हुक्के की सटक रखकर पास ही बैठने का इशारा करके कहा—बैठ जाओ ।'

कुमुद बैठ गई । मधुसूदन ने उसे जो चिट्ठी दी उस में केवल इतना ही लिखा था—

प्राण प्रतिमासु,

शुभाशीर्वाद !

चिकित्सा के लिए मैं जल्दी ही कलकत्ते आ रहा हूँ । स्वास्थ्य ठीक होने पर तुमसे मिलने आऊँगा । घर के काम-काज से छुट्टी पाने पर कभी-कभी अपनी खैर-खबर का खत लिखती रहना जिससे कि मैं निश्चिन्त रह सकूं !'

इसे छोटे से पत्र को पाते ही कुमुद को पहले धक्का-सा लगा । मन में सोचा अब मैं गैर हो गई हूँ । अभिमान का भाव प्रबल होते-न-होते मन में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आया भैया की शायद स्वास्थ्य ठीक नहीं। मेरा मन भी कैसा ओछा है, अपनी ही बात सबसे पहले सोचने लगता है।

मधुसूदन समझ गया कि कुमुदिनी उठना ही चाहती है। बोला—'कहाँ जा रही हो, जरा बैठो तो।'

कुमुद को बैठने के लिए कह तो दिया किन्तु फिर सोचने लगा कि बात क्या करे। दिमाग में कुछ आता ही नहीं। यह भी चाहता था कि शीघ्र ही कोई बात कहे, अतएव सवेरे से जो बात उसके मन में खटक रही थी वही मुँह से निकल गई। बोला—'अच्छा, इस इलायचीदाने वाली बात पर तुमने इतना तर्क क्यों किया था? शर्माने का कौन कारण था?'

'वह मेरी गुप्त बात है।'

गुप्त बात मुझसे भी नहीं कही जा सकती?'

'नहीं।'

मधुसूदन का स्वर कड़ा हो गया—'यह तुम्हारी नूरनगरी की चाल है, अपने भैया के स्कूल से सीखी है?'

कुमुद ने कोई उत्तर न दिया। मधुसूदन तकिया पटक उठकर खड़ा हो गया—'तुम्हारी यह चाल अगर छुड़ा न दूं तो मेरा नाम मधुसूदन नहीं।'

'तुम्हारी क्या आज्ञा है, बताओ?'

'वह ठोंगा किसने दिया?'

'मोती ने।'

'मोती ने! उसके लिए इतना छिपाने की क्या जरूरत थी?'

'ठीक नहीं कह सकती।'

'क्या अन्य किसी ने उसके द्वारा भेजा था?

'नहीं।'

'तब।'

'बस इतना ही, और कोई रहस्य इसमें नहीं है।'

'तब इतना छिपा क्यों रही थी?'

'तुम समझ न सकोगे।'

मधु कुमुद का हाथ पकड़कर झटका देकर बोला—तुम्हारी ज्यादतियां तो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब असह्य हो रही हैं।

कुमुद का मुख लाल हो उठा, शान्त स्वर में बोली—तुम क्या चाहते हो, समझाकर कहो। मैं यह मानती हूँ कि तुम लोगों की चालों से मैं परिचित नहीं हूँ।

मधुसूदन के मस्तक की दोनों नसें फूल उठीं। उसे कुछ भी उत्तर नहीं सूझा, इच्छा हुई कि उसे मारें। इसी समय बाहर से खाँसने की आवाज सुनाई पड़ी, उसी के साथ आवाज आई, आफिस का साहब आकर बैठा है। उसे याद आया कि आज डाइरेक्टरों की मीटिंग है। वह लज्जित हुआ कि मैं इसके लिए तैयार नहीं हो सका—सवेरे का सारा समय व्यर्थ गया। इतनी बड़ी ढिलाई जो उसकी आदत और अभ्यास के विपरीत है—कैसे सम्भव हुई जानकर वह स्तम्भित हो गया।

उनतालीस

मधुसूदन के जाते ही कुमुद चारपाई पर से उतरकर फर्श पर बैठ गई। क्या जीवन भर ऐसे ही समुद्र में उसे तैरना पड़ेगा, जिसका कोई किनारा नहीं है। मधुसूदन ने ठीक ही कहा है, उसकी चाल से उसकी चाल में अन्तर है, अन्य सभी अन्तरों की अपेक्षा यह अन्तर असह्य है। इसका क्या उपाय है।

अकस्मात् न जाने क्या ध्यान में आया ; कुमुद मोती की माँ की ओर नीचे की तरफ चली। सीढ़ी से नीचे उतरते हुए उसने देखा कि श्यामसुन्दरी ऊपर की ओर आ रही है।

'क्यों बहू कहाँ जा रही हो ? मैं तो तुम्हारे ही यहाँ जा रही थी।'

'कोई काम है क्या ?

ऐसी कोई बात तो नहीं है। मैंने देवरजी का मिजाज कुछ गर्म देखा, इसलिए सोचा कि एक बार तुमसे पूछकर देखूँ कि नए प्रेम में बाधा कहाँ पर हुई। बहू ध्य,न रखना, उनके साथ किस प्रकार का व्यवहार करने से बात बन सकती है इसकी सलाह हम लोग ही दे सकती हैं। तुम कहीं जा रही हो, अच्छा जाकर अपना मन हल्का कर आओ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आज अकस्मात् कुमुद के मन में विचार उठा कि मधुसूदन और श्याम-सुन्दरी दोनों कुम्हार के एक ही चाक से एक ही मिट्टी द्वारा गढ़े गए हैं। यह बात दिमाग में क्यों आई यह कहना कठिन है। उसने चरित्र-विश्लेषण के द्वारा इसे नहीं समझा है, रूप-रंग में कोई साम्य हो सो बात भी नहीं है। दोनों के भाव और गति में साम्य-सा है, दोनों के संसार में एक ही हवा बहती है। जिस समय श्यामसुन्दरी बन्धुत्व दिखाने में आती है उस समय भी वह कुमुद को विपरीत दिशा में ठेल देती है, शरीर न जाने कैसा हो उठता है।

मोती की मां के शयन-गृह में प्रवेश करके कुमुद ने देखा कि वे दोनों आपस में किसी चीज के लिए छीना-झपटी कर रहे हैं। वह लौट जाना ही चाहती थी, इसी समय नवीन बोल उठा—बहू, जाइएगा नहीं। मैं तुम्हारे ही यहाँ शिकायत करने जा रहा था।

'कैसी शिकायत ?'

'जरा बैठो, अपने दुख की बात कहता हूँ।'

कुमुद चौकी पर बैठ गई। नवीन बोला—बड़ा अनर्थ है। यह सज्जन महिला मेरी पुस्तक छिपाकर रखे हुए हैं।'

'ऐसी जबरदस्ती क्यों करती हैं ?'

ईर्ष्या के कारण, क्योंकि वे स्वयं तो अंग्रेजी पढ़ नहीं पातीं। मैं स्त्री-शिक्षा के पक्ष में हूँ, किन्तु ये उसकी विरोधी हैं। मेरी बुद्धि की कितनी उन्नति होती है, उनकी डाह उतनी ही बढ़ती जा रही है। मैंने बहुत समझाया कि सीता जो इतनी बड़ी थीं वे भी रामचन्द्र के पीछे-ही-पीछे चलती थीं; विद्या-बुद्धि में मैं तुमसे आगे बढ़ गया हूँ। इसमें तुम बाधा मत डालो।

तुम्हारी विद्या की बात माँ सरस्वती जानती हैं, किन्तु मैं कहे देती हूँ बुद्धि की प्रशंसा करने के लिए मेरे पास न आना।

नवीन को महा-विपत्ति में पड़ने की आशंका देखकर कुमुद खिसखिला कर हंस पड़ी। इस घर में आने के बाद कुमुद आज पहली बार खुलकर हँसी है। यह हँसी नवीन को बड़ी मधुर जान पड़ी। वह मन-ही-मन बोला—अब मेरा काम हो गया, में बहूरानी को हँसाऊँगा।

कुमुद ने हँसते हुए पूछा—क्यों बहिन, देवरजी की पुस्तक क्यों छिपा दी है ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देखो तो बहिन, शयन-गृह में क्या उनके स्कूल के गुरुजी बैठे हैं ? दिन भर कमाने के बाद रात में घर पर आकर देखती हूँ कि एक दीपक जल रहा है, उसके साथ में एक मोमबत्ती और जल रही है, महापण्डित बैठे हुए पढ़ रहे हैं। खाना ठण्डा हो रहा है, तगादे पर तगादा हो रहा है किन्तु कुछ ध्यान ही नहीं देते ।

'क्या यह सच है देवरजी ?'

'भाभीजी मैं इतना बड़ा तपस्वी नहीं हूँ कि भोजन अच्छा न लगे ; किन्तु मुझे तो प्रिय लगता है उनका मधुर तगादा । इसीलिए जान-बूझकर खाने में देर हो जाती है ; यह पढ़ना तो एक बहान-मात्र है ।'

'बातचीत में मैं उनसे हार मानती हूँ ।'

'और मैं हार मानता हूँ उनसे, जब वे बोलना बन्द कर देती हैं ।'

'देवरजी, क्या कभी ऐसा हुआ भी है ?'

'तो, क्या मैं दो-एक ताजे दृष्टान्त दूँ । वे अश्रुजल के उज्जवल अक्षरों से मेरे मन में लिखे हुए हैं ।'

'अच्छा, अच्छा, तुम्हें अधिक दृष्टान्त देने की आवश्यकता नहीं है । इस समय मेरी चाभी कहाँ है, बताओ । देखो न बहिन, मेरी चाभी इन्होंने छिपाकर रख दी है !'

'घर के व्यक्ति पर तो पुलिस में रिपोर्ट नहीं की जा सकती । इसीलिए चोर को चोरी का दण्ड देना होगा । पहले मेरी पुस्तक तो दो ।'

'तुम्हें न दूँगी, बहिन को देती हूँ ।' घर के कोने में एक टोकरी में रेशमी, ऊनी कपड़ों के टुकड़े और फटे मौजे आदि रखे थे, उसी के नीचे से एक अंग्रेजी संक्षिप्त इन्साइक्लोपीडिया का दूसरा भाग निकालकर मोती की माँ ने कुमुद की गोद में रखते हुए कहा—'बहिन, इसे अपने घर ले जाओ, इन्हें न देना, देखूँ तुम्हारे साथ ये कैसे झगड़ा करते हैं ।'

नवीन ने मशहरी के ऊपर से चाभी निकालकर कुमुद के हाथ में देकर कहा—'बहू और किसी को आप न दीजियेगा, देखूँगा दूसरा कोई तुम्हाए साथ कैसा व्यवहार करता है ।'

कुमुद ने किताब का पन्ना उलटते हुए कहा—जान पड़ता है इस पुस्तक से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देवरजी को शौक है।

ऐसी कोई पुस्तक नहीं है जिससे इनका शौक न हो। उस दिन कहाँ से गोपाल नाम की पुस्तक लाकर पढ़ रहे हैं।

क्या अपनी शरीर-रक्षा के लिए उसे न पढ़ूँ, इसमें लज्जा की कौन-सी बात है?

'बहिन, क्या इस समय तुम्हें कोई बात कहनी है? यदि तुम्हारी इच्छा हो तो इस बकवादी को यहाँ से विदा कर दूँ।

'नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। मैंने सुना है मेरे भैया दो एक दिन में आवेंगे।

नवीन ने कहा—हाँ, वे कल ही आवेंगे।

कल! कुमुद विस्मित होकर कुछ देर चुपचाप बैठी रही। लम्बी साँस लेकर बोला—उनसे कैसे भेंट होगी?

मोती की माँ ने पूछा—तुमसे बड़े मालिक ने कुछ नहीं कहा?

कुमुद ने सिर हिलाकर कहा—नहीं।

नवीन ने कहा—एक बार कहकर देखोगी 'नहीं?'

कुमुद चुप हो रही है। मधुसूदन से भैया की बात करना बड़ा कठिन है। इस घर में तो भैया के लिए अपमान-ही-अपमान हैं, उसे तनिक भी उभाड़ने में असह्य संकोच होता है।

कुमुद के मन का भाव देखकर नवीन का चित्त व्यथित हो उठा। बोला—भाभी, चिन्ता न करो, मैं सब कर दूँगा, तुम्हें तो कुछ कहना-सुनना न होगा।

नवीन लड़कपन से ही भैया से डरता है। जान पड़ता है भाभी ने आकर उस भय को उसके मन से हटा दिया है।

कुमुद के चली जाने पर मोती की माँ ने नवीन से कहा—बतलाओ तो क्या करोगे? उस दिन रात को तुम्हारे भैया ने हम लोगों को बुलाकर बहू के सम्मुख अपने को छोटा बनाया था, तभी मैं समझ गई कि अच्छा नहीं हुआ। उसके बाद से वे जब कभी तुमको देखते हैं, मुख फेर लेते हैं।

भैया ने समझा कि धोखा हुआ, उस समय उत्साह में आकर उन्होंने सब कुछ कर दिया परन्तु इधर उनकी आवश्यकता की पूर्ति नहीं हुई। हम लोग उनके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पागलपन के साक्षी थे इसलिए वे हम लोगों को देख नहीं सकते ।

मोती की माँ ने कहा—जो कुछ हो किन्तु विप्रदास बाबू के ऊपर उनका जो क्रोध है उसने उन्हें पागल बना दिया है, वह दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है । देखो यह कैसी भलमनसाहत ।

नवीन बोला—उस मनुष्य की भक्ति का प्रकाश ही ऐसा है । इस श्रेणी के व्यक्ति जिसे भीतर से श्रेष्ठ समझते हैं उसे बाहर से मारते हैं । कुछ लोग कहते हैं कि रामचन्द्र के प्रति रावण की भक्ति असाधारण थी इसीलिए वह बीस हाथों से नैवेद्य चढ़ाता था । मैं तुझसे कहे देता हूँ कि भैया के साथ भाभी की भेंट सरलता से न होगी ।

'ऐसा कहने से काम न चलेगा । कुछ उपाय करना ही होगा ।'

'उपाय समझ में आ गया है ।'

'क्या, कहते हो ?'

'नहीं, कह न सकूंगा ।'

'क्यों, बतलाओ ।'

'लज्जा मालूम होती है ।

'मुझसे भी लज्जा ।'

'तुमसे भी लज्जा ।'

'कारण सुनूं ।'

'भैया को ठगने की बात सुनने की जरूरत नहीं है ।'

'जिससे मैं प्रेम करती हूँ उसे ठगने में मुझे संकोच नहीं होता ।'

'हाँ, यह विद्या तुमने मेरे ही ऊपर प्रयोग करके सीखी है न ?'

'उस विद्या का सरलता से प्रयोग कर सकने के लिए तुम्हारा-सा और कौन मिलेगा ?'

देवीजी, मैं तुम्हें अधिकार देता हूँ कि जब तुम्हारी इच्छा हो मुझे लेना ।'

'इतनी जल्दी क्यों है, सुनूं तो ?'

कहूँगा । विधान ने तुम्हारे हाथों में ठगने के जो उपाय दिये है, उनमें उसने मधु मिला दिया है । उसी मधुमय वस्तु का नाम है माया ।

उसे तो काटना ही ठीक है ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तब तो सर्वनाश है ! माया चली जाने से संसार में रहेगा क्या ? मूर्ति गल जाने पर शेष रह जाती है मिट्टी। देवी, अबोध को भुलावे में डाल दो, धोखा दो, आँखों में मस्ती भर दो, मन में नशा जगा दो जो इच्छा हो, करो।

इसके बाद जो बातें हुईं वे काम की नहीं हैं, इस कहानी के साथ उनका कोई सम्बन्ध नहीं है।

चालीस

इस बार मीटिंग में मधुसूदन की पहली बार हार हुई। आज तक उसका कोई प्रस्ताव, कोई व्यवस्था किसी ने रद्द नहीं की थी। उसे अपने ऊपर जैसा विश्वास है, उसके ऊपर उसके सहयोगियों का भी वैसा ही विश्वास है। इसी बल पर वह मीटिंग में कोई जरूरी प्रस्ताव पास करा लेने के पूर्व कार्य बहुत आगे तक कर रखता था। इस बार नील के पुराने व्यवसाय के लिए एक गाँव खरीद लेने की व्यवस्था की गई थी। इसके लिए कुछ व्यय भी हो गया है अतः सब ठीक हो चुका है, केवल स्टाम्प खरीदकर रजिस्ट्री करके मूल्य चुका देने की देर है, जिन व्यक्तियों की नियुक्ति की आवश्यकता है उन्हें आशा देकर रोक रखा गया है, ऐसे समय में यह बाधा हुई। उस समय खजांची का पद खाली हुआ, उसके दूर के सम्बन्धी एक दामाद उम्मीदवार हुए। अयोग्य व्यक्ति के उद्धार में उत्साह न होने के कारण मधुसूदन ने उधर ध्यान नहीं दिया। इस मामले से मिट्टी में दबे हुए बीज की तरह विरोध का बीज अंकुरित हो उठा। एक गड़बड़ी भी थी। गाँव का मालिक मधुसूदन के दूर की सम्बन्धी बुआ के ससुर का लड़का था। जब बुआ आकर हाथ-पैर पड़तीं, तब हिसाब जोड़ने पर वह अत्यन्त सस्ता पड़ता, उसमें लाभ भी है, इसके अतिरिक्त सम्बन्धियों के संरक्षक बनने का भी गौरव है। जिनका अयोग्य दामाद खजांची पद से वंचित हुआ उसने बहुत खोज करके यह प्रचार किया कि मैं मधुसूदन के सम्बन्धियों का प्रेमी हूँ। इसके अतिरिक्त कम्पनी की सब प्रकार की खरीद-बिक्री में मधुसूदन ने छिपाकर कमीशन लिया। यह झूठी बात कानों-कान प्रचारित करने का भार भी उसी ने लिया था। ये निन्दनीय बातें बहुत से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लोग नहीं कह रहे थे, क्योंकि उनके भीतर जो लोभ है वही भीतर का गवाह है। लोगों का चित्त विकृत होने का एक कारण स्वाभाविक था, वह भी मधुसूदन की असाधारण श्री-वृद्धि और उनके स्वच्छ चरित्र की सुप्रसिद्धि। मधुसूदन चुपचाप तमाशा देखता रहा, इस अपवाद ने उस लोलुप को ही यथेष्ट दण्ड मिला।

मधुसूदन ने मालिक को पक्की बात दी थी। हानि की आशंका से वह बात तोड़ने वाला व्यक्ति नहीं है। इसीलिए उसने स्वयं खरीदने का निश्चय किया, उसने प्रतिज्ञा की कि मैं कम्पनी को यह दिखा दूंगा कि न खरीदने के कारण उसकी हानि ही हुई।

मधुसूदन घर लौट आया। अपने भाग्य के प्रति उसमें अंधविश्वास हो गया था। आज उसे यह भय हुआ कि भाग्य उसकी जीवात्मा को एक ओर से हटाकर दूसरी ओर ले जा रहा है। पहले झटके में ही छाती धड़क उठी। मीटिंग से लौटकर आफिस में कुर्सी पर टेक लगाकर वह गुड़गुड़ी की धूम्र-कुंडली की समानता अपने काले रंग की चिंता से करने लगा।

नवीन ने आकर खबर दी कि विप्रदास के यहाँ से एक आदमी मिलने के लिए आया है। मधुसूदन ने झुंझलाकर कहा—घर चला जाय, मेरे पास इस समय-समय नहीं है।

नवीन ने मधुसूदन की भाव-भंगी देखकर समझा कि मीटिंग में कोई दुर्घटना घटी है। समझा कि भैया का मन इस समय दुर्बल है। दुर्बल स्वभावतः अनुदार होता है, दुर्बल की आत्मगरिमा कठोर निष्ठुरता का रूप धारण करती है। भैया का चोट खाया हुआ मन बहूरानी को कठोरता से घायल करेगा, इसमें नवीन को तनिक भी संदेह नहीं था। इस आघात को जैसे हो रोकना पड़ेगा। इसके पहले उसके मन का संदेह दूर हो गया। कुछ देर घूम फिरकर पुनः घर में आकर उसने देखा कि उसके भैया पता वाले रजिस्टर के पन्ने उलट रहे हैं। नवीन ज्योंही आकर खड़ा हुआ, उन्होंने पूछा—पुनः क्या जरूरत आ पड़ी ? जान पड़ता है विप्रदास बाबू की वकालत करने के लिए आए हो ?

नवीन ने कहा—नहीं, भैया, इसकी चिंता न करें। उनका आदमी यहाँ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से ऐसी फटकार सुनकर गया है कि यदि आप भी बुला भेजें तो भी वह यहाँ न आना चाहेगा।

मधुसूदन को यह बात भी बरदास्त नहीं हुई। बोल उठा—संकेत करते ही पैर पड़ना पड़ेगा। आदमी आया था क्या करने के लिए ?

आपको खबर देने के लिए आया था कि विप्रदास बाबू दो दिन बाद कलकत्ते आवेंगे। शरीर कुछ स्वस्थ हो जायगा तब मिलने आयेंगे।

अच्छा, अच्छा, इसके लिये मुझे जल्दी नहीं है।

नवीन ने कहा—भैया, कल सवेरे मुझे दो घंटे के लिए छुट्टी चाहिए।

'क्यों ?'

'सुनने पर आप बिगड़ेंगे।'

'न सुनने पर और भी बिगड़ूँगा।'

'कुन्तकोनम् से एक ज्योतिषी आये हैं, उनसे मैं एक बार अपनी भाग्य-परीक्षा कराना चाहता हूँ।'

मधुसूदन की छाती धड़क उठी, इच्छा हुई कि अभी उनके पास जाऊँ। किन्तु प्रकाश रूप से उसने रोकते हुए कहा—क्या तुम ऐसी बातों में विश्वास करते हो ?'

'साधारण अवस्था में नहीं करता, डर लगने पर करता हूँ।'

'भय किस बात का है। कहो भी सही ?'

नवीन कुछ भी उत्तर न देकर सिर खुजलाने लगा।

'भय किसका है, कहो न ?'

'इस संसार में आपके अतिरिक्त मैं किसी से नहीं डरता। कुछ दिनों से आपका व्यवहार देखकर मन विचलित हो गया है।'

संसार के लोग मधुसूदन से बाघ की भाँति डरते हैं, इससे उसे बहुत संतोष होता है। वह नवीन की ओर देखकर चुपचाप गम्भीरतापूर्वक गड़्गड़ा खींचते हुए अपने बड़प्पन का अनुभव करने लगा।

नवीन ने कहा—इसीलिए मैं एक बार स्पष्ट रूप से यह जानना चाहता हूँ कि ग्रहों का मेरे ऊपर कैसा प्रभाव है और वह कैसे दूर हो सकता है।

'तुम बड़े नास्तिक हो, तुम तो कुछ मानते नहीं, तब यह कैसे—'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'भैया, देवता पर विश्वास होता तो ग्रहों पर विश्वास न करता। जो डाक्टर को नहीं मानता वह नीम-हकीम पर विश्वास करता है।

अपने ग्रहों की परीक्षा करवाने की मधुसूदन में जितनी इच्छा हुई उसी परिणाम में वह झुँझलाकर बोला—तुम पढ़े-लिखे मूर्ख हो, तुम्हारा वही ज्ञान है ? जो जो कुछ कहता है उसे मान लेते हो।

उसके पास जो भृगुसंहिता है उसमें जहाँ पर कोई जिस ग्रह में भी पैदा हुआ है या पैदा होगा उन सबकी कुँडली एक जगह तैयार करके संस्कृत भाषा में लिखी है। इससे अधिक तो और कुछ नहीं कहा जा सकता। परीक्षा करके देख सकते हैं।

'जो लोग मूर्खों को ठगकर खाते हैं उनके लिए विधाता ने तुम्हारे ऐसे बहुत से मूर्ख भी उत्पन्न कर रखे हैं।

'और उन मूर्खों की रक्षा के लिए आपके सदृश बुद्धिमानों की भी सृष्टि की है। जो मारता है उस पर उनकी जैसी दया है वैसी ही दया उस पर भी है जो मार खाते हैं। भृगुसंहिता के ऊपर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि आजमा कर देखिए न।'

'बहुत अच्छा, कल सवेरे मुझे भी बुला लेना, देखूँगा तुम्हारे कुन्तकोनम् की होशियारी।'

'भैया, आपका जैसा अधिक अविश्वास है, उससे गणना में गोलमाल हो सकता है। संसार में देखा जाता है कि मनुष्य पर विश्वास करने से वह विश्वास बन जाता है। ग्रहों की भी ठीक यही दशा है, देखिए अंग्रेज लोग ग्रह नहीं मानते इसलिए ग्रहों के फल का असर उन पर नहीं पड़ता। उस दिन त्रयोदशी को घर से निकल कर आपके छोटे साहब ने घुड़दौड़ में बाजी जीत ली—मैं होता तो बाजी जीतने की कौन कहे घोड़ा उलट कर दुलत्ती झाड़ देता। भैया ग्रहन-क्षत्रों की गणना पर अपनी बुद्धि का बल न लगाइएगा, मन में कुछ विश्वास भी रखिए।'

मधुसूदन प्रसन्न होकर मुस्कराता हुआ गुड़गुड़ी पीने लगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल सात बजे के भीतर ही मधुसूदन नवीन के साथ में एक पतली गंदी गली के भीतर से होता हुआ वेंकट शास्त्री के घर पहुँचा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अँधेरी, एकतल्ला, सीड़दार कोठरी है; लोना लगी हुई दीवाल, मानो सांघा तक चर्मरोग का स्मरण दिला रही है, चौकी के ऊपर फटी-मैली दरी है, एक ओर कुछ कागज बिखरे पड़े हैं, दीवाल पर शिव-पार्वती का एक चित्र है। नवीन ने पुकारा—शास्त्री जी; काला, नाटा, दुबला-पतला, मैली छींट की चादर ओढ़े एक व्यक्ति कमरे में घुसा, उसके सिर के बाल घुटे हुए थे, बीच में बड़ी-सी चोटी थी, नवीन ने उसे झुककर प्रणाम किया। आकृति देखकर मधुसूदन को उसमें जरा भी श्रद्धा नहीं हुई—किन्तु दैव के साथ शायद दैवज्ञ (ज्योतिषी) की कोई घनिष्टता हो यह सोचकर भयपूर्वक शीघ्रता से जरा-सा सिर नवाकर उसने अर्द्ध नमस्कार करके बला टाली। नवीन ने मधुसूदन की जन्म-कुंडली ज्योतिषी के सामने रखी तो उसने उसकी आवश्यकता न बतलाते हुए मधुसुदन का हाथ देखने के लिए कहा। लकड़ी की संदूक में से कागज-कलम निकालकर उसने चक्र बनाया। मधुसूदन की ओर देखकर उसने कहा—पंचमवर्ग, मधुसूदन ने कुछ भी नहीं समझा। ज्योतिषी ने अँगुली के पोरों को गिनते हुए कहा कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग; तवर्ग, पवर्ग। इसपर भी मधुसूदन की समझ में कुछ भी नहीं आया। ज्योतिषी ने कहा—पंचमवर्ण। मधुसूदन धैर्य धरकर चुप रहा। ज्योतिषी ने कहा—प, फ, ब, भ, म। इससे मधुसूदन ने इतना समझा कि भृगुमुनि ने अपनी संहिता व्याकरण के प्रथम अध्याय से ही प्रारम्भ की है। इसी समय वेंकट शास्त्री बोल उठे—पंचाक्षरकं।

नवीन चकित होकर मधुसूदन के कान में धीरे से बोला—समझे भैया।

'क्या समझे ?'

पंचम वर्ग का पंचम-स्वर म है, उसके पश्चात् पाँच अक्षर है म-धु-सू-द-न। जन्मग्रह की अद्भुत कृपा है कि तीनों पाँच एक ही स्थान पर मिले हैं।

मधुसूदन स्तंभित हो गया। माता-पिता के नाम रखने के कई हजार वर्ष पूर्व भृगुमुनि ने अपनी पुस्तक में नामकरण कर दिया था। नक्षत्रों की यह कैसी लीला है! तत्पश्चात् वह हत्बुद्धि होकर अपने विगत जीवन का सस्कृत भाषा में लिखा हुआ संक्षिप्त इतिहास सुनता रहा। भाषा उसकी समझ में जितनी कम आती उसकी भक्ति उतनी ही बढ़ती जा रही थी। आदि से अंत तक जीवन ऋषिवाक्य से पूर्ण था। उसने अपनी छाती पर हाथ फेरकर देखा कि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उनका शरीर अनुस्वार-विसर्ग-तद्धित-प्रत्यय के मसालों से निर्मित किसी तपोवन में लिखी पोथी के सामने है। तत्पश्चात् ज्योतिषी की अन्तिम बात यह थी कि मधुसूदन के घर में एक बार लक्ष्मी का आविर्भाव होगा जिसकी शुभ्र सूचना उसे पहले से ही मिल चुकी है। वे नववधु के रूप में अभी कुछ दिनों पूर्व ही आई हैं। अभी से सावधान हो जाना चाहिए। क्योंकि यदि उनका मन दुखी हुआ तो भाग्य क्रुद्ध हो जायगा।

वेंकट शास्त्री ने कहा—क्रुद्ध होने का लक्षण दिखाई पड़ा है। यदि वह अब भी सतर्क न होगा तो विपत्ति बढ़ जायगी। मधुसूदन स्तंभित होकर बैठा रहा। उसे स्मरण आई विवाह के दिन वाली मुनाफे की खबर और उसके कुछ दिनों बाद की वह हार। लक्ष्मी स्वयं आईं यह सौभाग्य की बात है; किन्तु उसकी जिम्मेदारी कम भयंकर नहीं है।

लौटते समय मधुसूदन गाड़ी में स्तब्ध होकर बैठा रहा। नवीन एक बार बोल उठा—मुझे तो वेंकट शास्त्री की बातों पर तनिक भी विश्वास नहीं होता, निश्चय ही उसने किसी से तुम्हारी सब बातें सुनी हैं।

'तुम बड़े बुद्धिमान हो। जहाँ पर जितने व्यक्ति हैं उन सबकी खबरें लेकर रखना, क्या सरल कार्य है?'

'मनुष्य के उत्पन्न होने के पूर्व ही उनकी करोड़ों जन्म कुण्डलियाँ बनाने की अपेक्षा यह काम सरल है। भृगु मुनि को इतना कागज मिला कहाँ से; और वेंकट शास्त्री के घर में इतनी जगह कैसे हो सकती है।'

'वे एक ही पंक्ति में हजारों बातें लिखना जानते थे।'

'यह असंभव है।'

'जो तुम्हारी बुद्धि में न आ सके, वह असंभव है। तुम्हारा विज्ञान बहुत बड़ा है। अब तर्क रहने दो, उस दिन उसके यहाँ से जो नौकर आया था, उसे तुम स्वयं जाकर बुला लाओ। आज ही जाओ, देर न करो।'

भैया को ठगने से नवीन का मन अशान्ति का अनुभव करने लगा। यह जाल इतना सरल था और उसकी सफलता भैया के सम्मुख इतनी हास्यास्पद थी कि उसकी अमर्यादा नवीन को लज्जित करने तथा कष्ट देने लगी। आवश्यकतानुसार भैया को अनेक बार छोटे-छोटे घपले देने पड़े हैं, किन्तु उनका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

असर नवीन के मन पर कुछ भी नहीं हुआ था। परन्तु इस प्रकार इतना बड़ा जाल रचने की ग्लानि ने नवीन के हृदय को अशांत बना दिया।

इकतालीस

मधुसूदन के हृदय से बहुत बड़ा भार हट गया, वह आत्म-गौरव का बोझ— जो कठोर गौरव-बोध उसकी विकसित प्रेम-लिप्सा को पत्थर से दबा रहा था। जिस समय उसका मन कुमुद पर मुग्ध था उस समय भी उस व्याकुलता के विरुद्ध उसके हृदय में युद्ध चल रहा था। वह कुमुद की ओर जितना अधिक आकर्षित हुआ है, अपनी अज्ञानावस्था में कुमुद के प्रति उसका क्रोध उतना ही बढ़ता गया है। ऐसे समय में जब स्वयं नक्षत्रों के यहाँ से आदेश मिला कि उसके घर में लक्ष्मी आई है उन्हें प्रसन्न करना होगा; तब उसका सब द्वन्द्व नष्ट हो गया और शरीर तथा मन रोमांचित हो उठे, वह अपने मन में बारंबार कहने लगा— लक्ष्मी, मेरे घर में ही लक्ष्मी, मेरे भाग्य का सबसे बड़ा वरदान। उसे इच्छा हुई कि वह अभी सब संकोच छोड़कर कुमुद से प्रार्थना करे; कहे कि यदि कोई गलती हुई हो तो उस पर ध्यान मत देना। किंतु आज अब समय नही था, व्यवसाय का कार्य करने के लिए तुरन्त आफिस जाना होगा, घर में खाने के लिए जाने का भी समय नहीं मिला।

इधर कुमुद के मन में दिन भर उथल-पुथल मची रही। वह जानती है कि भैया कल आवेंगे, वे अस्वस्थ हैं। उनसे मिलना सरल होगा या नहीं, यह निश्चित रूप से जानने के लिए मन व्याकुल हो रहा है। नवीन कहीं काम से गया है, अभी तक आया नहीं। वह निश्चित रूप से यह जानती थी कि आज मधुसूदन स्वयं आकर बहूरानी को प्रसन्न करेगा, पहिले से उसका कोई आभास देकर रस-भंग नहीं करना चाहिए।

आज छत पर बैठने की सुविधा नहीं थी। कल संध्या से ही बादल घिरे हैं, आज दोपहर से ही टिप-टिप करके वर्षा प्रारम्भ हुई। शीतकाल के बादल हैं, अनिच्छित अतिथि के-से हैं। बादलों में रंग नहीं है, वर्षा में ध्वनि नहीं है, आज वायु मानो मरे हुए मन की सी है, सूर्य-प्रकाशविहीन आकाश की दीनता से ही पृथ्वी संकुचित है। सीढ़ी से चढ़कर शयनागार में जाने के रास्ते में जो

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छायादार छत है वहीं पर कुमुदिनी जमीन पर बैठी है। रह-रहकर शरीर पर वर्षा की छींटें पड़ रही हैं। आज छाया से मलीन, आर्द्र दिन में कुमुद के चित्त में आया कि मानो उसका अपना जीवन उसे ही अजगर की भाँति निगल रहा है, उसके भरे हुए पेट में आज तनिक भी स्थान नहीं है। जिस देवता ने उसे भुलावा देकर आज इस निरुपाय नैराश्य में ला फेंका है उसके ऊपर जो अभिमान उसके मन में धूमिल हो रहा था वह आज क्रोधाग्नि से जल उठा। वह एकाएक उठ पड़ी, डेस्क खोलकर उसने वह युगल रूप का चित्र निकाला। वह रंगीन रेशमी टुकड़े में लपेटा हुआ था। आज इस चित्र को वह नष्ट कर डालना चाहता है। मानो चिल्लाकर कहना चाहती है कि मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं करती। हाथ काँप रहा है, इसीलिए गाँठ नहीं खोल पा रही है; खींचतान से उसमें गाँठ पड़ गई, उसने अधीर होकर दाँत से उसे खोल डाला। चिरपरिचित मूर्ति को देखते ही वह अपने मन को रोक न सकी, उसे छाती से चिपकाकर रो पड़ी। लकड़ी का फ्रेम छाती में जितना कड़ा लगता था वह उसे उतना ही अधिक जोर से दबाती थी।

इसी समय सोने के घर में मुरली नौकर बिछौना बिछाने आया। जाड़े से उसके हाथ काँप रहे थे। उसके शरीर पर एक फटी मैली चादर है। सिर घुटा हुआ, नसें निकली हुई और गाल बैठे हुए हैं, कुछ समय से बिना बनी हुई दाढ़ी ऊबड़-खाबड़ हो गई है। वह कुछ ही समय मलेरिया रोग से पीड़ित था, उसके शरीर में रक्त नहीं-सा है, डाक्टर ने कहा था काम छोड़कर चले जाओ, किन्तु भाग्य कठोर था।

कुमुद ने कहा—जाड़ा लग रहा है मुरली।

'हाँ, माँ, बादल होने से ठण्ड लग रही है।'

'तुम्हारे पास गर्म कपड़े नहीं हैं?'

'जब महाराज को पदवी मिली थी तब उन्होंने दिया था, नाती की खाँसी की बीमारी हुई तब डाक्टर के कहने पर मैंने उसे दे दिया।'

कुमुद ने एक पुरानी अलवान बगल के घर की आलमारी से लाकर कहा—यह कपड़ा तुम्हें दे रही हूँ।

मुरली ने विनम्र होकर कहा—क्षमा करो माँ, महाराज बिगड़ेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुरली ने हाथ जोड़कर कहा—रानी, माँ, तुम लक्ष्मी हो, अप्रसन्न न हो। मुझे गर्म कपड़े की आवश्यकता नहीं पड़ती। मैं हुक्का-बरदार के घर में रहता हूँ, वहाँ बोरसी में हमेशा आग रहती है, बहुत गर्म रहता है।

कुमुद ने कहा—मुरली, यदि नवीन घर में आ गए हों तो उन्हें बुला लाओ।

नवीन के घर में आते ही कुमुद ने कहा—देवरजी, तुम्हें एक काम करना ही होगा। बोलो, करोगे ?

'यदि अपना अनिष्ट भी हो तो मैं अभी करूँगा किन्तु यदि तुम्हारा अनिष्ट हो तो कदापि न करूँगा।

'मेरा और कितना अनिष्ट होगा ? मैं डरती नहीं।' कहकर उसने अपने हाथ में से सोने की चूड़ी निकालकर कहा—मेरी यह चूड़ी बेचकर भैया के लिए मंगल-पाठ कराना होगा।'

'बहूरानी इसकी कुछ भी जरूरत नहीं है, तुम उनमें जो भक्ति रखती हो, उसी पुण्य से प्रतिक्षण उनके लिए मंगल-पाठ हो रहा है।'

'देवरजी, भैया के लिए मैं कुछ भी न कर सकूँगी। यदि मैं कर सकती हूँ तो केवल देवता के द्वार पर उनके लिए सेवा पहुँचा दूँगी।'

'बहूरानी, तुम्हें कुछ भी न करना होगा। हम सेवक लोग किसलिए हैं ?'

'तुम क्या कर सकते हो, कहो ?'

'हम लोग पापी हैं, पाप कर सकते हैं। इसे करके भी यदि तुम्हारे किसी काम में आ सका तो अपने को धन्य समझूँगा।'

'देवर जी ऐसी बात कहकर हँसी न उड़ाओ।'

'इसमें मजाक जरा भी नहीं है। पुण्य करने की अपेक्षा पाप करना बहुत कठिन काम है, यदि देवता इसे समझ पावेंगे तो पुरस्कार देंगे।'

नवीन की बातों के भाव से देवता के प्रति उपेक्षा की कल्पना करके कुमुद के मन पर स्वभावतः आघात लग सकता था किन्तु उसके भैया के मन में भी तो देवता के प्रति श्रद्धा नहीं थी, इस अभक्ति के प्रति वह क्रोध नहीं कर सकती थी। जिस प्रकार छोटे बालक के अपराध करने पर भी माता उस पर स्नेह करती है, इस प्रकार के अपराधों के प्रति उसका भी वैसा ही भाव है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद ने जरा मुस्कराकर कहा—'देवरजी, तुम लोग संसार में अपने बल पर काम करते हो, मुझमें अपनी शक्ति लगाने की क्षमता नहीं है। जिनसे प्रेम करती हूँ यदि वहाँ तक पहुँच नहीं है तो उनका कार्य कैसे कर सकती हूँ? दिल नहीं करता, ढूंढ़ने पर कहीं मार्ग नहीं मिलता; हम पर दया करने वाला क्या कहीं कोई भी नहीं है?'

नवीन की आँखें जल से भर उठीं।

'देवरजी, भैया के उद्देश्य से मुझे कुछ करना ही होगा, कुछ देना ही होगा। यह कड़ा मेरी माँ का है, मेरी माता का होने के कारण ही मैं इसे अपने देवता को दूंगी।'

'बहूरानी, देवता के हाथ में नहीं देना पड़ता, वे यों ही ले लेते हैं। दो दिन प्रतीक्षा करो यदि देखना कि वे प्रसन्न नहीं हुए तो जो कुछ कहोगी, वही करूँगा। जो देवता तुम्हारे ऊपर दया नहीं करते उन पर मैं भोग चढ़ाऊँगा।'

रात का अँधेरा हो चला—बाहर सीढ़ी पर वही परिचित जूते का शब्द सुनाई पड़ा। नवीन चौंक उठा, वह समझ गया कि भैया आ रहे हैं। वह भागा नहीं, साहस करके भैया के आने की प्रतीक्षा करता रहा। इधर कुमुद का मन क्षणभर के लिए अत्यन्त संकुचित हो उठा। इस अदृश्य विरोध के धक्के ने जब इस प्रकार प्रबल वेग से उसकी प्रत्येक नाड़ी को चौंका दिया, तब वह बहुत डरी। इस भाव ने क्यों उस पर इतना प्रबल आक्रमण किया है?

अकस्मात् कुमुद ने नवीन से पूछा—देवरजी, किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हो जो गुरु की भाँति मुझे उपदेश दे सकते हो?

'क्या होगा बहूरानी?'

'अपने मन को मैं समझा नहीं सक रही हूँ इसीलिए!'

'वह तुम्हारे मन का दोष नहीं है?'

'विपत्ति बाहरी है, किन्तु दोष मन का है, भैया से यह बात मैंने बार-बार सुनी है।'

'डरो मत, तुम्हारे भैया ही तुम्हें उपदेश देंगे।'

'अब मुझे वैसा दिन पुनः न प्राप्त होगा।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुसूदन की आर्थिक बुद्धि के साथ उसके स्नेह का सामंजस्य हो जाने पर वह स्नेह उसके सारे कार्यों के ऊपर मानो उफनकर बहने लगा। कुमुद के सुन्दर मुखड़े पर उसके भाग्य के वर का अभयदान है। आज ही उसे यह आभास मिला कि पराभव कट जायगा ? कल जिन लोगों ने विरोध में मत दिया था आज उन्हीं में से कुछ ने स्वर बदल कर उसके पास पत्र लिखा है। मधुसूदन ने ज्योंही उस तालुके को अपने नाम से खरीदने का प्रस्ताव किया त्योंही कुछ लोगों ने तो यह समझा कि ठगे गए। किसी-किसी ने ऐसा भाव भी व्यक्त किया कि इस सम्बन्ध में एक बार पुनः विचार करना उचित है ?

गैरहाजिरी के अपराध में आफ़िस के दरबान का आधे महीने का वेतन कट गया था, आज दोपहर की छुट्टी के समय दरबान ज्योंही मधुसूदन के पैरों पर आकर गिरा त्योंही मधुसूदन ने उसे क्षमा कर दिया। क्षमा करने का तात्पर्य है कि अपनी जेब से जुरमाने की रकम जमा कर दी, रजिस्टर में जुरमाने की रकम बनी ही रही। नियम के विपरीत कार्य करने की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

मधुसूदन के लिए आज का दिन बड़ा आश्चर्यजनक है। आकाश बादलों से घिरा है, पानी टिपटिप बरसने से उसके हृदय का आनन्द और भी बढ़ गया। आफिस से लौटने पर मधुसूदन भोजन करने के पूर्व का समय बाहरी कमरे में बिताते थे। विवाह के पश्चात् कई दिन असमय में नियम के विरुद्ध अन्तःपुर में जाते समय उसने लोगों की नजर बचाने की चेष्टा की है। आज सशब्द पदक्षेप करते हुए उसने घर के सभी लोगों को यह जना देना चाहा कि मेरा यह सौभाग्य है कि दुनिया के लोग मुझसे ईर्ष्या कर सकते हैं।

वर्षा कुछ देर के लिए रुक गई। अभी तक सभी कमरों में रोशनी नहीं जली है। आनन्दी बुढ़िया हाथ में धूप-पानी लिए हुए धूप देती हुई घूम रही है। एक चमगीदड़ आँगन के ऊपर से लालटेन जलते हुए अन्तःपुर के मार्ग तक चक्कर काट रहा है। दासियाँ बरामदे में पैर फैलाए हुए दीपक के लिए बत्ती बना रही थीं, वे झटपट उठकर घूंघट काढ़कर खड़ी हो गईं। पैरों की आवाज़ सुनकर श्यामसुन्दरी घर से बाहर निकल आई, उसके हाथ में पान का डिब्बा था। आफिस से लौटने पर मधुसूदन के लिए वह यह पान नियमानुसार बाहरी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कमरे में भेज देती थी। सभी जानते हैं कि मधुसूदन की रुचि के ठीक अनुकूल पान श्यामसुन्दरी ही लगा सकती है, इसे जानने में कुछ और भी जानने का संकेत था। उसी के बल पर श्यामसुन्दरी ने रास्ते में ही मधुसूदन के सामने पान का डिब्बा खोलकर कहा—देवरजी आपका पान लगा हुआ है, लेते जाओ। पहले इस सम्बन्ध में दो-एक बातें भी होती थीं और उन बातों में कुछ मधुर-रस की बातें भी रहती थीं। किन्तु आज न जाने क्या हुआ कि श्यामा की छाया छू जाने के डर से दूर से विना पान लिए ही वह चला गया। श्यामा की दोनों बड़ी-बड़ी आँखें अभिमान से जल उठीं; तत्पश्चात् वे आँसुओं से भर उठीं; अन्तर्यामी जानते हैं कि श्यामसुन्दरी मधुसूदन से प्रेम करती है।

मधुसूदन के घर में घुसते ही नवीन कुमुद की पद-धूलि लेकर उठ खड़ा हुआ, बोला—गुरु की बात का ध्यान है, ढूँढ़कर देखूँगा। भैया से बोला—बहूरानी, गुरु से शास्त्र का उपदेश सुनना चाहती हैं। मेरे गुरुदेव हैं किंतु—

मधुसूदन उत्तेजित होकर बोल उठा—शास्त्र का उपदेश। अच्छा, मैं उसे देखूँगा, तुम्हें अभी कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

नवीन चला गया।

मधुसूदन आज रास्ते भर यह सोचता हुआ आया है कि बड़ी बहू के आने से हमारे घर में प्रकाश हो गया है। ऐसा विचार प्रगट करने की आदत उसमें एकदम नहीं है। इसलिए उसने निश्चित किया था कि घर में घुसते ही पहले ही झोंक में इसे कहूँगा। किन्तु नवीन को देखकर बात रुक गई। उस पर भी शास्त्र-उपदेश का प्रसंग आया, उसने उसका मुख एकदम बंद कर दिया। हृदय में जो आयोजन चल रहा था इस जरा-सी बाधा से वह रुक गया। तत्पश्चात् कुमुद के मुख पर भय का भाव एवं शरीर और मन में संकोच दिखाई पड़ा। अन्य किसी दिन इस बात पर उसकी दृष्टि न जाती। आज उसके मन में एक प्रकाश जल उठा है, इससे देखने की शक्ति प्रबल हो उठी है। कुमुद के संबंध में उसके चित्त का स्पर्श-ज्ञान सूक्ष्म हो गया है। आज कुमुद के मन की यह विमुखता उसे निष्ठुर अविचार-सी जान पड़ने लगी। तो भी उसने मन-ही-मन प्रण किया कि मैं विचलित न हूँगा, किन्तु जो सरलता से हो सकता था वह सरल नहीं रहा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुसूदन ने कुछ देर चुप रहकर कहा—बड़ी बहू क्या चली जाने की इच्छा हो रही है ? कुछ देर रुकोगी नहीं ?

मधुसूदन की बात और उसके गले का स्वर सुनकर कुमुद विस्मित हुई। बोली—नहीं, जाऊँगी क्यों ?

तुम्हारे लिए एक चीज लाया हूँ, खोलकर देखो। यह कहकर उसके हाथ में एक सोने की छोटी-सी डिबिया रख दी।

डिबिया खोलकर कुमुद ने देखा—भैया की वही नीलम की अँगूठी है। छाती धड़क उठी, क्या करना चाहिए यह न समझ सकी।

'क्या यह अँगूठी तुम्हें पहिनने के लिए दूँ ?'

कुमुद ने हाथ बढ़ा दिया। मधुसूदन कुमुद का हाथ अपनी गोद में रखकर धीरे-धीरे अँगूठी पहिनाने लगा। उसने जान बूझकर कुछ अधिक समय लगाया। तत्पश्चात् हाथ उठाकर उसे चूमकर कहा—तुम्हारी अँगूठी निकालकर मैंने गलती की थी। तुम्हारे हाथ में कोई भी रत्न रहने में कोई दोष नहीं है।

यदि वह कुमुद को पीटता तो उसे इसकी अपेक्षा कम आश्चर्य होता। कुमुद में लड़कों का-सा आश्चर्य भाव देखकर मधुसूदन को अत्यन्त अच्छा ज्ञात हुआ। यह दान साधारण नहीं है यह बात कुमुद के मुख के भाव से स्पष्ट थी। किन्तु मधुसूदन ने कुछ और छिपा रखा था उसे उसने अब प्रगट किया। उसने कहा—तुम्हारे घर से कालू मुखर्जी आया है, उससे मिलना चाहती हो ?

कुमुद का चेहरा खिल उठा—बोली—कालू मुखर्जी !

उसे बुला दूँ। तुम लोग बातचीत करो, तब तक मैं भोजन कर आऊँ।

कुमुद की आँखें कृतज्ञता से भर आईं।

बयालीस

चटर्जी की जमींदारी से कालू की कई पीढ़ियों का संबंध है। सभी विश्वसनीय कार्य इन्हीं के द्वारा होते हैं। इसके कोई पुरखा चटर्जी लोगों के लिए जेल गए थे। आज कालू विप्रदास की ओर से सूद की एक किश्त चुकाकर रसीद लेने के लिए मधुसूदन के आफिस में आया था। नाटा, गौरवर्ण, भरा हुआ चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें और उनके ऊपर काले सफेद बालों वाली भृकुटी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुई-सी भौंहें तथा अधिक पकी हुई मूँछें थीं। किन्तु सिर के बाल प्रायः काले हैं, यत्न के साथ चुनी हुई शान्तिपुरी धोती पहने है और अपने स्वामी की मर्यादा-रक्षा के अनुकूल पुराना मूल्यवान अचकन पहने हुए है। अँगुली में एक अँगूठी है—उसका नग बहुत कम मूल्य का नहीं है।

कालू के आते ही कुमुद ने उसे प्रणाम किया। दोनों कारपेट पर बैठ गए। कालू ने कहा—छोटी बच्ची, तुम्हें आए अभी बहुत कम दिन हुए हैं किन्तु ऐसा जान पड़ता है कि कई वर्षों से तुम्हें नहीं देखा।

'पहले बतलाओ कि भैया कैसे हैं ?'

बड़े बाबू के लिए मैंने दिन बड़ी चिन्ता में बिताए हैं। जिस दिन तुम चली आई उसके दूसरे दिन रोग खूब बढ़ गया था। किन्तु उनके शरीर में बड़ा बल है। देखते-ही-देखते सँभल गए। डाक्टरों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

'क्या भैया कल कलकत्ते आ गए ?'

'बात तो ऐसी ही थी। किन्तु अभी दो दिन और लगेंगे। पूर्णिमा पड़ गई है, सभी ने उन्हें रोका है, शायद पुनः ज्वर न आ जाए। ये सब बातें तो हुईं, किन्तु यह तो बताओ कि तुम कैसी हो ?'

'मैं तो बहुत अच्छी तरह हूँ।'

कालू को कुछ कहने की इच्छा नहीं हुई, किन्तु उसके मुख का वह सौंदर्य कहाँ चला गया। आँखों के नीचे कालिमा क्यों है ? उसका ऐसा चमकता हुआ मुख पीला क्यों पड़ गया ? कुमुद के मन में एक प्रश्न उठा किन्तु वह उसे कह नहीं सक रही है—भैया ने क्या मेरे लिए कुछ कहला नहीं भेजा ? उसके इस अव्यक्त प्रश्न के अनुरूप ही कालू ने कहा—बड़े बाबू ने मेरे द्वारा तुम्हारे लिए एक चीज भेजी है।

'कुमुद ने व्यग्र होकर कहा—क्या भेजा है, कहाँ है वह ?'

'वह बाहर रखा हुआ है।'

'लाए क्यों नहीं ?'

'घबड़ाओ मत बहिन, महाराज ने कहा है, वे स्वयं ले आवेंगे।'

'कौन-सी चीज है, मुझे बतलाओ ?'

'उन्होंने मुझसे कहने के लिए मना किया है।' घर के चारों ओर देखकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालू ने कहा—बहुत आदर-सत्कार से तुम्हें रखा गया है, बड़े बाबू से जाकर कहूँगा, वे बहुत प्रसन्न होंगे। पहले दो दिन तुम्हारी खबर मिलने में विलम्ब होने से वे बहुत चिन्तित हुए थे। डाक में गोलमाल हो गया था, अन्त में तीन पत्र एक साथ मिले।

डाक के गोलमाल का क्या कारण हुआ इसे कुमुद समझ गई।

कुमुद कालू भैया से खाने के लिए कहना चाहती है, किन्तु उसे साहस नहीं हो रहा है। कुछ संकोच के साथ उसने कहा—कालू भैया अभी तो आपका भोजन नहीं हुआ है न ?

मैंने देखा है कि कलकत्ते में सन्ध्या के बाद खाना मेरे अनुकूल नहीं पड़ता बहिन, इसीलिए मैं रामदास कविराज के यहाँ से मकरध्वज लाकर खाता हूँ। किन्तु विशेष लाभ नहीं हुआ।

कालू ने समझा था, घर में अभी बहू नई है, प्रबन्ध का सारा कार्य उसके हाथ में अभी नहीं है, इसलिए स्पष्ट रूप से खाने के लिए न कह सकेगी। मन में सोचकर रह जायगी।

इसी समय दरवाजे की आड़ से मोती की माँ ने कुमुद को हाथ के इशारे से बुलाकर कहा—तुम्हारे घर से मुखर्जी महाशय आए हैं, उनके लिए भोजन तैयार है। उन्हें नीचे के घर में ले चलकर खिला दो।

कुमुद ने लौटकर कहा—कालू भैया, अपने कविराज की बात रहने दो तुम्हें खाकर ही जाना होगा।

'यह तो बड़ा कठिन है, यह तुम्हारी जबरदस्ती है! आज रहने दो फिर किसी दिन भोजन हो जायगा।'

'नहीं, यह न होगा, चलो।'

अन्त में यह आविष्कृत हुआ कि मकरध्वज का विशेष प्रभाव हुआ है, भूख जरा में भी कमी नहीं मालूम हुई ?

कालू भैया खा चुके तो कुमुद अपने शयन-गृह में चली गई। आज उसका मन पितृ-गृह की स्मृति से भरा हुआ था। अब तो नूरनगर में घर के पिछवाड़े वाले बाग के आमों में बौर लग गये होंगे। कुमुदिनी ने तालाब के किनारे फूले हुए जामुन वृक्ष के नीचे चबूतरे पर अपना हाथ सिरहाने रखकर लेटे हुए कितनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ही दुपहरियाँ काटी हैं, वे दुपहरियाँ मधुमक्खियों के गुन्जार से गुन्जारित और छाया एवं धूप से चित्रित होती थीं। उसका हृदय अकारण ही व्यथित होता था वह उसका अर्थ न समझ पाती थी। उस व्यथा ने संध्याकालीन व्रज-पथ की गोधूलि द्वारा उसके स्वप्न को रंगीन बना दिया है वह यह न समझ सकी कि उसके यौवन के अप्राप्त साथी ने जल और स्थल में माया मिश्रित कर दी है, उसके युगल रूप की उपासना में वह लुकाचोरी खेल रहा है, उसी को वह अपने हृदय रूपी अदृश्य नगर में इसराज के मुलतानी राग की ध्वनि में खींच लाई है। उसे अपने यौवन के प्रारम्भ में उस अप्राप्त मनवांछित व्यक्ति का बहुत आभास अपने घर के अनेक स्थलों पर मिलता था, वह भी विशेष रूप से ऊपर के कोठे में जहाँ से गाँव के टेढ़े-मेढ़े रास्ते के किनारे खेतों में लगे हुए सरसों के फूलों में आग-सी लगी दिखाई पड़ती थी, बाग की दीवाल के किनारे का वह चबूतरा जहाँ पर बैठकर दीवाल की हरी-काली रेखाओं में मानो किसी प्राचीन विस्मृत कहानी का अस्पष्ट चित्र दिखाई पड़ता था, दोतल्ले में उसके शयनगृह की खिड़की से प्रातःकाल उठते ही दूरवर्ती आकाश की ओर सफेद पाल दिखाई पड़ते थे ; वे ऐसे जान पड़ते थे मानो दिगन्त के शरीर में निरुद्देश्य मन की कामनाएँ चक्कर लगा रहीं हैं। प्रथम यौवन की वे किरणें कलकत्ते में उसकी पूजा और गानों के बीच में आई हैं। वही तो देववाणी का आभास दिखाकर उसे अन्धभाव से इस विवाह के बन्धन में खींचकर लाई हैं। किन्तु धूप तेज होने के कारण वह स्वयं उसमें मिल गई है।

इसी बीच मधुसूदन न जाने कब उसके पीछे से आकर दीवाल में लटकते हुए आइने में पड़ने वाले कुमुद के प्रतिबिम्ब को देखने लगा। वह समझ गया कि कुमुद का मन जहाँ पर खो गया है, उस अज्ञात अदृश्य के साथ प्रतियोगिता किसी भी प्रकार न चल सकेगी। यदि कोई दूसरा दिन होता तो कुमुद का यह अन्यमनस्क भाव देखकर मधुसूदन क्रुद्ध होता। आज शान्त होकर दुख के साथ वह कुमुद के बगल में आकर बैठ गया—'क्या सोच रही हो बड़ी बहू ?'

कुमुद चौंक उठी। मुख फीका पड़ गया। मधुसूदन ने उसका हाथ पकड़ कर हिलाकर कहा—क्या तुम किसी भी प्रकार मेरी पकड़ में न आओगी ?

इस बात का उत्तर कुमुद की समझ में नहीं आया। क्यों पकड़ में नहीं आ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रही है और यह प्रश्न वह स्वयं भी अपने से करती है। जब मधुसूदन ने कठोर व्यवहार किया था तब उत्तर देना सरल था, किन्तु जब उसने हीनता मान ली तब उसे अपनी भर्त्सना करने के अतिरिक्त कोई उत्तर ही नहीं मिला। स्वामी को मन-प्राण समर्पण न कर सकना महापाप है, इस विषय में कुमुद को तनिक भी सन्देह नहीं है; तो भी उसकी यह दशा क्यों हुई? स्त्रियों का एकमात्र लक्ष्य सती-सावित्री बनना होता है। इस लक्ष्य से गिरने की दुर्गति से वह अपने को बचाना चाहती है। इसीलिए आज कुमुद ने व्याकुल होकर मधुसूदन से कहा—तुम मेरे ऊपर दया करो।

'किसलिए दया करनी होगी?'

'मुझे अपना बना लो, आज्ञा दो, दण्ड दो। मुझे जान पड़ रहा है कि मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ।'

यह सुनकर अत्यन्त दुखी होते हुए भी मधुसूदन हँस पड़ा। कुमुद सती का कर्त्तव्य करना चाहती। यदि कुमुद साधारण गृहिणी होती तो उसके लिए इतना यथेष्ट होता, किन्तु कुमुद उसकी समझ से मन्त्री द्वारा विवाहिता स्त्री की अपेक्षा बहुत अधिक उच्च है, उस उच्च को पाने के लिए वह जितना प्रयत्न अब कर रहा है वह सब व्यर्थ हो रहा है। उसकी पकड़ में केवल उसका ओछापन आ रहा है। कुमुद के साथ में अपना दुर्लंघ्य असाम्य केवल उसकी व्याकुलता बढ़ा रहा है।

मधुसूदन ने लम्बी साँस खींचकर कहा—यदि मैं एक चीज दूं तो तुम क्या दोगी बतलाओ।

कुमुद ने समझा कि यह वस्तु भैया की दी हुई है, वह व्यग्रता के साथ मधुसूदन की ओर देखने लगी।

'किन्तु जैसी वस्तु है उसी के उपयुक्त मूल्य मैं लूंगा, यह कहकर उसने पलंग के नीचे से रेशम की खोल में लपेटा हुआ एक इसराज खोलकर निकाला। वह कुमुद का वही चिरपरिचित हाथी दाँत का इसराज था। घर से आने के समय इसे वह वहीं छोड़ आई थी।

प्रसन्न होकर मधुसूदन ने कहा—अब इसका मूल्य दो।

कुमुद यह समझ न सकी कि मधुसूदन क्या मूल्य चाहता है। मधुसूदन ने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कहा—मुझे बजाकर सुनाओ।

यह बहुत बड़ी बात तो नहीं थी किन्तु तो भी उसके लिए कठिन तो थी ही। कुमुद इतना अन्दाज लगा चुकी है कि मधुसूदन के मन में संगीत से प्रेम नहीं है। उनके सामने गाने का संकोच मिटा सकना कठिन है। कुमुद मुख नीचा करके इसराज की छड़ी लेकर उसे हिलाने-डुलाने लगी। मधुसूदन ने कहा—बजाओ न बड़ी बहू, मेरे सामने लज्जा न करो।

कुमुद ने कहा—स्वर बँधा हुआ नहीं है।

बात की सत्यता के सम्बन्ध में कुमुद के मन पर तुरन्त आघात पहुँचा, वह बोली—बाजे को ठीक करके रखूंगी, तुम्हें अन्य किसी दिन सुनाऊँगी।

'कब सुनाओगी, ठीक-ठीक बताओ। कल ?'

'अच्छा कल ही।'

'सन्ध्या समय आफिस से लौटने के बाद ?'

'हाँ उसी समय।'

'इसराज मिलने से खूब प्रसन्न हो न ?'

'हाँ; खूब प्रसन्न हूँ।'

मधुसूदन ने चादर के भीतर से एक चमड़े की पेटिका निकालकर कहा—मैं तुम्हारे लिए एक मोती की माला खरीद कर लाया हूँ, इसे पाकर और भी प्रसन्न होगी न ?

ऐसा कठिन प्रश्न क्यों पूछा गया ? कुमुद चुपचाप इसराज की छड़ी को हिलाने-डुलाने लगी।

'जान पड़ता है अनुरोध स्वीकार नहीं है।'

कुमुद बात ठीक से समझ नहीं पाई।

मधुसूदन ने कहा—मेरी इच्छा थी कि तुम्हारी छाती के पास अपने हृदय की यह प्रार्थना लटका दूंगा किन्तु वह उसके पहले ही व्यर्थ हो गया।

कुमुद के सामने फर्श पर गहना पड़ा रहा। दोनों में से किसी ने एक भी बात न कही। कुमुद कभी-कभी स्वप्नविष्ट-सी हो जाती थी इस समय भी वैसी ही हो गई। कुछ ठहर कर मानो होश में आकर उसने मोती की माला उठाकर गले में पहिनकर मधुसूदन को प्रणाम किया। बोली—तुम मेरा बजाना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनोगे ?

मधुसूदन ने कहा—हाँ, सुनूंगा ।

अभी सुनाती हूँ कहकर उसने इसराज का स्वर बाँधा । केदारा राग का आलाप प्रारम्भ हुआ; वह यह भूल गई कि घर में और भी कोई है, केदारा से वह छायानट पर पहुँच गई । जिस गान से वह प्रेम करती है उसी को उसने प्रारम्भ किया—ठाढ़ रहो मेरे आँखिन आगे—स्वर के आकाश में रंगीन छाया डालकर उस सुन्दर उद्‌भव पर पहुँची जिसे कुमुद ने गान में पाया है; प्राणों में पाया है, केवल आँखों में पानी की तृष्णा के लिए उसकी प्रार्थना बहुत दिनों से चली आती थी ।

मधुसूदन संगीत का रस नहीं समझता है, किन्तु विश्व-विस्मृता कुमुद के मुख से जो सुन्दर स्वर निकल रहा था, इसराज के प्रत्येक पर्दे पर कुमुद की अंगुलियों के स्पर्श से जो छन्द नाच रहा था, उसने उसके हृदय को हिला दिया, ऐसा जान पड़ने लगा कि किसी ने उसे वरदान दिया है । तल्लीन होकर बजाते हुए कुमुद ने एक बार अकस्मात् देखा कि मधुसूदन उसकी ओर टकटकी लगाकर देख रहा है, उसी समय उसका हाथ रुक गया, उसे लज्जा मालूम हुई, उसने बजाना बन्द कर दिया ।

मधुसूदन का मन प्रसन्नता से भर उठा, उसने कहा—बड़ी बहू, तुम क्या चाहती हो, कहो । कुमुद यदि कहती कि कुछ दिनों तक भैया की सेवा करना चाहती हूँ तो मधुसूदन इसे भी स्वीकार कर लेता, क्योंकि आज कुमुद के गीत-मुग्ध मुख की ओर देखकर वह मन-ही-मन कह रहा था—ऐसी गुणवती मेरे घर में आई है, यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है ।

कुमुद फर्श पर इसराज रखकर घड़ी फेंककर शान्त होकर बैठ गई ।

मधुसूदन ने पुनः एक बार अनुरोध करके कहा—बड़ी बहू, क्या तुम मुझसे कुछ चाहती हो । जो चाहोगी, वही मिलेगा ।

कुमुद ने कहा—मुरली बेयरा को जाड़े का एक कपड़ा देना चाहती हूँ ।

कुमुद यदि कहती कि कुछ नहीं चाहती तो भी यह अच्छा होता, किन्तु मुरली बेयरा के लिए केवल कम्बल ! जो सिर पर लगाने के लिए मुकुट दे सकता है, उससे केवल चाहना जूते का फीता !

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुसूदन अवाक् हो गया। उसे बेयरा पर क्रोध हुआ। बोला—जान पड़ता है अभागे मुरली ने तुम्हें तंग किया है ?

नहीं, मैं ही अपना एक अलवान उसे दे रही थी, उसने उसे नहीं लिया। यदि आप आज्ञा दें तो उसे लेने का साहस होगा।

मधुसूदन स्तब्ध हो गए। कुछ देर बाद बोले—भिक्षा देना चाहती हो ! अच्छा देखें, कहाँ है तुम्हारा अलवान ?

कुमुद अपना वही पुराना अलवान ले आई। मधुसूदन ने उसे अपने शरीर पर ओढ़ लिया। तिपाई पर रखी घण्टी को बजाते ही एक बुढ़िया दासी आई; उससे उन्होंने कहा—मुरली बेयरा को बुला ला।

मुरली आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया; शीत और डर से उसके दोनों हाथ काँप रहे थे।

'तुम्हारी मालिकिन ने तुम्हें इनाम दिया है; कहकर मधुसूदन ने अपने मनीवेग में से एक सौ रुपए का नोट निकालकर उसे कुमुद के हाथ में दिया। बिना कारण, बिना माँगे हुए इस प्रकार का दान मधुसूदन ने अपने जीवन में कभी नहीं दिया था। इस असंभव बात पर मुरली बेयरा का भय और भी बढ़ गया, वह काँपते हुए स्वर में बोला—हुजूर !

हुजूर क्या रे ! पागल, ले अपनी मालिकिन के हाथ से। इन रुपयों से जितना गर्म कपड़ा खरीदने की इच्छा हो, ले लेना।

बात यहीं समाप्त हो गई—इसके साथ ही उस दिन की मानो सभी बातें समाप्त हो गईं। जिस स्रोत में कुमुद का मन बह रहा था वह मानो अकस्मात् बन्द हो गया; मधुसूदन के मन में जो लहर हृदय की संकीर्णता के तट से टकरा रहा था वह साधारण बेयरा की तुच्छ प्रार्थना से टकराकर पुनः शाँत हो गया। इसके पश्चात् सरलता से बातचीत करना दोनों पक्षों के लिए असाध्य हो गया। आज संध्या समय उसी तालुके को खरीदने की बात करने के लिए एक आदमी बैठक में प्रतीक्षा कर रहा है, यह बात मधुसूदन को स्मरण ही नहीं रही। इतनी देर बाद स्मरण आने पर उसे अपने ऊपर ग्लानि हुई। उठकर खड़े होकर कहा—काम से जा रहा हूँ। कहकर तेजी से चला गया।

रास्ते में श्यामसुन्दरी के कमरे के सामने आकर ठिठक गया, रुककर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बोला—क्या तुम घर में हो ?

श्यामसुन्दरी ने आज खाया नहीं। किसी कारण से जमीन पर चटाई बिछा-कर उदास होकर लेटी हुई थी। मधुसूदन की आवाज सुनकर झट से दरवाजे के पास आकर बोली—क्या है देवरजी ?

'मुझे पान नहीं दिया ?'

तैंतालीस

बाहर अँधेरे में दरवाजे की आड़ में इतनी देर तक हाबलू खड़ा था, वह कम साहसी नहीं है। वह मधुसूदन से यम की तरह डरता है। तो भी वह काठ के खिलौने की भाँति स्तब्ध होकर खड़ा था। मधुसूदन से मार खाने के बाद वह बड़ी माँ के पास नहीं आ सका था, वह मन-ही-मन व्याकुल हो रहा था। आज भी इस समय यहाँ आना निरापद नहीं था। किंतु जब उसे बिछौने पर लेटाकर माँ घर का काम करने चली गई तब उसे इसराज का स्वर सुनाई पड़ा। वह यह नहीं जानता था कि क्या बज रहा है और कौन बजा रहा है। किन्तु यह निश्चित था कि वह आवाज बड़ी माँ के घर से आ रही थी, उसे विश्वास था कि ताऊजी कमरे में नहीं हैं, क्योंकि वह यह जानता था कि उनके सामने कोई भी बाजा बजाने की हिम्मत नहीं कर सकता। ऊपरी खंड में दरवाजे के पास पहुँचकर ताऊ के जूतों को देखते ही उसने वहाँ से भागना चाहा, किन्तु जब उसने बाहर से यह देखा कि उसकी बड़ी माँ ही बाजा बजा रही हैं तब भागने के लिए उसके पैर उठे ही नहीं। वह दरवाजे की आड़ में खड़ा होकर सुनने लगा। अपनी बड़ी माँ को इस रूप में देखकर उसे अत्यन्त आश्चर्य हुआ। मधूसूदन के चले जाने पर वह अपने मन के उमंग को न रोक सका—वह कमरे में जाकर बड़ी माँ की गोद में बैठ गया और उनका गला पकड़कर उनके कान में बोला—बड़ी माँ जी ?

कुमुद ने उसे छाती से लगाकर कहा—क्यों, तुम्हारे हाथ ठंड़े क्यों हैं ! जान पड़ता है कि बरसाती हवा लग गई है।

हावलू ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया, वह डर गया। उसने सोचा कि बड़ी माँ मुझे अभी बिछौने पर लेटने के लिए भेज देंगी। कुमुद ने उसे अपनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चादर ओढ़ाकर अपने शरीर की गर्मी से उसे गर्म करके कहा—गोपाल तुम अभी तक सोए नहीं, क्यों ?

आपका बाजा सुनने के लिए आया था। बड़ी माँ आप कैसे बाजा बजाती हैं।

जब तुम सीख लोगे तब तुम भी बजा सकोगे।

मुझे सिखा देंगी ?

इसी समय मोती की माँ झपटती हुई कमरे में आकर बोली—जान पड़ता है चोर यहीं पर है, यहीं छिपकर बैठा है। मैं इसे जगह-जगह खोजती हुई भटक रही हूँ। शाम होते ही घर से बाहर निकलने में तुझे डर मालूम होता है, बड़ी माँ के कमरे तक आने में तुझे डर नहीं लगता। चल, सोने के लिए चल !

हाबलू कुमुद को जोर से पकड़े रहा।

कुमुद ने कहा—जरा इसे थोड़ी देर रहने दो न !

इस तरह ढीठ हो जायगा तो इसकी हिम्मत बढ़ जायगी। इसे सुलाकर मैं अभी आती हूँ।

कुमुद को बड़ी इच्छा हुई कि हाबलू को खाने या खेलने की कोई चीज दे। किन्तु देने के लिए कुछ न था, इसीलिए उसे चूमकर बोली—आज सोने के लिए चले जाओ बेटा, कल दोपहर को तुम्हें बाजा सुनाऊँगी।

हाबलू उदास होकर माँ के साथ चला गया।

मोती की माँ कुछ ही देर में लौट आई। नवीन के षड्यन्त्र का क्या फल हुआ इसे जानने के लिए उसका मन व्यग्र था। कुमुद के निकट बैठते ही उसकी दृष्टि उस नीलम की अँगूठी पर पड़ी। वह समझ गई कि काम हो गया। बात प्रारंभ करने के लिए वह बोली—'बहिन, तुम्हें यह बाजा कैसे मिला ?

कुमुद बोली—भैया ने भेजा है।

जान पड़ता है कि बड़े मालिक ने तुम्हें लाकर दिया है ?

कुमुद ने संक्षेप में कहा—हाँ।

मोती की माँ ने कुमुद के मुख की ओर देखा, उसे उल्लास या आश्चर्य का कोई चिह्न नहीं दिखलाई पड़ा।

क्या उन्होंने तुम्हारे भैया की कोई बात कही है ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नहीं।

वे तो परसों आवेंगे, उनके पास तुम्हारे जाने की बात नहीं हुई ?

नहीं, भैया की कोई भी बात नहीं हुई।

तुमने स्वयं क्यों नहीं पूछा—बहिन ?

मैं उनके द्वारा और चाहे जो क्यों न चाहूँ, किन्तु इसे नहीं चाहती।

तुम्हें पूछना न पड़ेगा, तुम स्वयं उनसे मिलने चली जाना। बड़े मालिक कुछ बोलेंगे नहीं।

मोती की माँ अब भी यह बात भलीभाँति नहीं समझ पाई है कि मधुसूदन की अनुकूलता कुमुद के लिए संकट बन गई है, मधुसूदन इसके बदले में जो कुछ चाहता है उसकी इच्छा होने पर भी कुमुद उसे नहीं दे सकती। उसका हृदय दिवालिया बन गया है। इसीलिए मधुसूदन से दान लेकर वह अपना ऋण बढ़ाने में इतना संकोच करती है। कुमुद यह भी चाहती है कि यदि उसके भैया कुछ विलंब करके आवें तो अच्छा है।

मोती की माँ कुछ ठहरकर बोली—ऐसा जान पड़ता है कि आज बड़े मालिक बहुत प्रसन्न हैं।

संशय से व्याकुल नेत्रों द्वारा कुमुद ने मोती की माँ के मुँह की ओर देखते हुए कहा—मैं यह नहीं समझ सकी कि यह प्रसन्नता क्यों है, इसीलिए मैं डर रही हूँ, क्या करना होगा, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।

मोती की माँ ने कुमुद की ठुड्डी पकड़कर कहा—कुछ भी करना न होगा, तुम इतनी-सी बात नहीं समझ रही हो, इतने दिनों से वे केवल व्यापार करते आ रहे थे, तुम्हारे समान स्त्री को कभी उन्होंने देखा नहीं था। धीरे-धीरे वे तुम्हें जितना पहिचान रहे हैं उतना ही तुम्हारा सम्मान बढ़ रहा है।

अधिक देखने पर अधिक पहिचानेंगे, ऐसी तो कुछ भी विशेषता मुझमें नहीं है बहिन ! मैं स्वयं देख रही हूँ कि मेरा हृदय शून्य है। वह शून्यता धीरे-धीरे प्रगट हो जायगी। इसीलिए जब मैं अकस्मात् यह देखती हूँ कि वे प्रसन्न हो गए हैं, तो मेरी समझ में यह आता है कि वे ठगे गए हैं। जब उन्हें शून्यता का ज्ञान होगा तब वे और भी क्रोधित होंगे। वह क्रोध ही तो सच्ची वस्तु है, इसीलिए मैं उससे नहीं डरती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहिन, तुम जानती हो कि तुम्हारा मूल्य क्या है ? तुम जिस दिन इनके घर आई उसी दिन तुम्हारी ओर से जो कुछ इनको दिया गया, उसे ये सब मिलकर भी नहीं चुका सकते । मेरे स्वामी तो एकदम कृतज्ञता से भर गए हैं, वे तुम्हारे लिए सब कुछ करने को तैयार हैं । यदि मैं तुम्हें प्यार न करती तो इस सम्बन्ध में वे मुझसे झगड़ा कर बैठते ।

कुमुद हँसकर बोली—बड़े भाग्य से ऐसे देवर मिले हैं ।

और तुम्हारी यह जो देवरानी है वह तुम्हारे भाग्यस्थान में राहु या केतु जान पड़ती है ।

तुम लोगों में से एक का नाम लेने से दूसरे का नाम लेने की आवश्यकता नहीं होती ।

मोती की माँ कुमुद को गले लगाती हुई बोली—तुमसे मेरा एक अनुरोध है ।

क्या है, कहो ।

तुम मुझे अपनी अंतरंग बहिन समझा करो ।

बहुत अच्छा बहिन । मैं तो अपने मन में पहिले से ही तुम्हें अंतरंग मान चुकी हूँ ।

तो मुझसे तुम कुछ भी छिपाकर न रखा करो । आज तुम्हारा ऐसा उदास मुँह क्यों है, यह कुछ समझ में नहीं आ रहा है ।

कुछ देर मोती की माँ के मुख की ओर देखकर कुमुद ने कहा—सच्ची बात कहूँगी । मुझे अपने से ही भय लग रहा है ।

यह कैसी बात ? अपने से भय कैसा ?

मैं इतने दिनों से अपने को जो कुछ समझती थी, आज मैं अकस्मात् यह देख रही हूँ । कि मैं वह नहीं हूँ । मैं स्वयं ही सब कुछ निश्चय करके आई थी । भाई लोग उस समय दुविधा में पड़े थे, मैं जोर देकर नए मार्ग पर चली आई । किन्तु जिस आत्मा के बल पर मैं चली थी वह तो आज मुझे दिखाई नहीं देती ।

तुम प्रेम नहीं कर पा रही हो । अच्छा मुझसे कुछ छिपाना मत, सच-सच बतलाओ, क्या तुमने किसी और से प्रेम किया है ? प्रेम किसे कहते हैं, क्या तुम इसे जानती हो ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि मैं कहूँ कि जानती हूँ, तो तुम हँसोगी। जिस प्रकार सूर्योदय के पूर्व प्रकाश होता है, उसी प्रकार मेरे हृदयरूपी आकाश में प्रेम का प्रकाश हुआ था। मुझे जान पड़ रहा था कि अब सूर्योदय होना ही चाहता है। उसी सूर्योदय की कल्पना को मस्तिष्क में लेकर मैं तीर्थ-जल और फूलों की सजी हुई डलिया लिए हुए यहाँ आई हूँ। जिस देवता को मैं इतने दिनों से हृदय से मानती आ रही हूँ, ऐसा जान पड़ा कि उन्होंने ही मुझे उत्साहित किया है। जिस प्रकार अभिसार में आना होता है उसी प्रकार मैं भी आई थी। मैंने अँधेरी रात के अन्धकार को अन्धकार नहीं समझा। आज प्रकाश में आँख खुलने पर भीतर कुछ और तथा बाहर कुछ दूसरा ही देख रही हूँ। अब वर्ष के बाद वर्ष और क्षण के बाद क्षण कैसे बीतेंगे ?

क्या तुम यह समझ रही हो कि तुम बड़े मालिक से प्रेम न कर सकोगी ?

मैं प्यार कर सकती थी। मैंने अपने मन में कुछ ऐसा निश्चय कर लिया था कि सब कुछ पसन्द करना सरल हो जाता। किन्तु तुम्हारे बड़े मालिक ने उसे ही सबसे पहिले तोड़कर चूर कर दिया है। आज सभी वस्तुएँ कड़ी होकर मुझे कष्ट दे रही हैं। मानो किसी ने मेरे शरीर की ऊपरी कोमल त्वचा को रगड़ दिया, इसलिए मेरे चारों ओर के सभी लोग मुझे कष्टप्रद जान पड़ रहे हैं, मैं, जिसे छूती हूँ वही मुझे चौंका देती है, शायद समय बीतने पर त्वचा कड़ी होने पर मुझमें सहनशीलता आ जाय; किन्तु जीवन में मुझे आनन्द तो कभी मिलने वाला नहीं है।

ऐसा तो नहीं कहा जा सकता बहिन ?

भलीभाँति कहा जा सकता है। आज मेरे मन में जरा भी मोह नहीं है। मेरा जीवन एकदम निर्लज्ज की भाँति स्पष्ट हो गया है। अपने को तनिक भी बहलाने का स्थान मेरे लिए कहीं भी नहीं है। क्या स्त्रियों के लिए मृत्यु के अतिरिक्त और कहीं भी खिसककर बैठने के लिए तनिक भी स्थान नहीं है ? उनके संसार को विधाता ने इतना अधिक संकुचित क्यों बनाया है ?

मोती की माँ ने इतने दिनों तक कुमुद के मुख से ऐसी उत्तेजनापूर्ण बात नहीं सुनी थी। विशेषरूप से आज जब बड़े मालिक कुमुद पर इतने प्रसन्न हो गये हैं उस समय कुमुद का इतना अधिक धैर्य देखकर मोती की माँ भयभीत

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हो गई। उसे ऐसा जान पड़ा मानो लता की जड़ में ही एकाएक कुठाराघात हुआ हो, अतः अब माली ऊपर से केवल कृपारूपी जल से सींचकर उसे हरा-भरा नहीं बना सकता।

कुछ देर बाद कुमुद बोल उठी—मैं जानती हूँ कि स्वामी को श्रद्धापूर्वक आत्मसमर्पण न कर सकना मेरे लिए महापाप है। किन्तु इस पाप से भी मुझे इतना भय नहीं लग रहा है जितना कि श्रद्धाविहीन आत्मसमर्पण की ग्लानि के स्मरण मात्र से चित्त व्यथित होता है।

मोती की माँ कुछ भी उत्तर न सोच पाकर हतबुद्धि की भाँति बैठी रही! कुछ देर चुप रहने के बाद कुमुद बोली—बहिन, तुम्हारा कितना भाग्य है, तुमने कितना पुण्य किया था कि तुम देवरजी को सम्पूर्ण मन से प्यार कर सक रही हो। मैं पहले यह समझती थी कि प्रेम करना सरल है—सभी स्त्रियाँ अपने स्वामी से स्वयं ही प्रेम करती हैं। आज मैं यह देख रही हूँ कि प्रेम करना ही सबसे कठिन है, यह जन्मजन्मान्तर की साधना से होता है। अच्छा बहिन, सच सच बताओ, क्या सभी स्त्रियाँ अपने स्वामी से प्रेम करती हैं।

मोती की माँ ने कुछ हँसकर कहा—प्यार न करने पर भी अच्छी स्त्री बना जा सकता है, ऐसा न हो तो यह संसार चले कैसे ?

मुझे इसी का आश्वासन दो। जिससे मैं यदि अधिक नहीं तो अच्छी स्त्री तो बन सकूँ। इसी में अधिक पुण्य है, यही कठिन साधना है।

बाहर से इसमें भी बाधा पड़ती है।

भीतर से इस बाधा को काटा जा सकता है। मैं ऐसा कर सकूँगी, मैं हार न मानूँगी।

तुम न कर सकोगी तो दूसरा कौन कर सकेगा ?

वर्षा जोर से होने लगी। हवा से लैम्प का प्रकाश रह रहकर भभक उठता था। तेज हवा मानो एक भीगे हुए निशाचर पक्षी की भाँति घर में तेजी से घुसने लगी। कुमुद का शरीर और मन सिहर उठा। उसने कहा—मैं अपने देवता के नाम से शक्ति नहीं पा रही हूँ, मन्त्र जपती हूँ किन्तु मन के मुख मोड़ लेने के कारण वह बोल नहीं पाता, इसीलिए मैं अत्यन्त भयभीत हो रही हूँ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनावटी बातों द्वारा झूठा भरोसा देने के लिए मोती की माँ की इच्छा नहीं हुई। उसने कुछ भी उत्तर न देकर कुमुद को जोर से छाती से लगा लिया। इसी समय बाहर से आवाज आई—मँझली बहू।

कुमुद प्रसन्न होकर उठकर बोली—आओ, आओ, नवीन।

मुझे घर में संध्या समय प्रकाश करने वाली रोशनी नहीं दिखलाई पड़ी, इसीलिए मैं उसे ढूंढ़ रहा था।

मोती की माँ ने कहा—बलिहारी है बहिन, मणिविहीन मणि को देख लो।

कौन मणि है और कौन फणि, यह तो फुफकार देखे बिना नहीं जाना जा सकता।

मुझे गवाह न बनाओ नवीन।

मैं जानता हूँ कि ऐसा होने पर तो मैं ही ठगा जाऊंगा।

तो अपनी खोई हुई सम्पत्ति को तुम ले जाओ। मैं उसे पकड़कर न रखूंगी।

खोई हुई सम्पत्ति के लिए उनमें कोई बेचैनी नहीं है बहिन, वे तो इस बहाने से बहूरानी के चरणों का दर्शन करने के लिए आए हैं।

किसी बहाने की क्या आवश्यकता है ? चरणों के दर्शन तो स्वयं ही हो गए। जो अत्यन्त असाध्य है उसकी साधना कौन करेगा ? वह जब आता है तो सरलता से आ जाता है। संसार में हजारों व्यक्ति हमसे योग्य हैं, तो भी ऐसे सुन्दर चरणों के स्पर्श का सौभाग्य मुझे ही मिला, दूसरों को क्यों नहीं मिला। नवीन का जीवन मुफ्त में ही सार्थक हो गया।

नवीन, तुम कब क्या कह डालोगे, यह ठीक नहीं है। जान पड़ता है अपनी इन्साइक्लोपीडिया से......।

मैं ऐसी बात नहीं कह सकता भाभीजी ! चरण शब्द में क्या भाव है, इसे वे लोग किस प्रकार समझें ? उन लोगों ने बकरी के खुर से पतले एड़ीदार जूतों में देवियों के पैरों को कैद कर रखा है। इन्साइक्लोपीडिया की क्या सामर्थ्य है कि वह चरणों की महिमा समझ सके। लक्ष्मणजी ने चौदह वर्ष केवल सीताजी के चरणों को ही देखते हुए काट दिए, उसका अर्थ हमारे देश के देवर ही समझते हैं। यदि आपने उसे साड़ी से ढंक दिया तो ढंका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रहने दें। इसमें कोई डर की बात नहीं है। कमल संध्या समय मुंद जाने पर हमेशा मुंदा ही तो नहीं रहता—उसकी पंखड़ियाँ तो बाद में खुल ही जाती हैं।

यह तो तुम्हारे मन की बात है। जान पड़ता है इसी प्रकार प्रशंसा करके देवरजी ने तुम्हारे मन को मोहित कर रखा है।

बहिन, जरा-सा भी नहीं बहिन, वे मीठी बातों को व्यर्थ व्यय करने वाले व्यक्ति नहीं हैं।

जान पड़ता है कि प्रशंसा की आवश्यकता नहीं पड़ती।

भाभीजी, देवियों की प्रशंसा की भूख किसी भी उपाय से नहीं मिटती, आवश्यकता अत्यधिक है। किन्तु मैं तो शिवजी के समान पंचानन नहीं हूँ, केवल इस एक मुख की प्रशंसा पुरानी पड़ गई है। इसमें उन्हें अब आनन्द नहीं मिलता।

इसी समय मुरली बेयरा ने आकर नवीन को खबर दी—बड़े मालिक ने बाहर के आफिस में आपको बुलाया है।

यह सुनकर नवीन का मन विकृत हो गया। उसने सोचा था कि आज मधुसूदन आफिस से सीधे अपने शयनागार में जायेंगे। जान पड़ता है कि नाव पुनः चढ़ाई में रुक गई है।

नवीन के चले जाने पर मोती की माँ पुनः धीरे से बोली—किन्तु यह स्मरण रखो कि बड़े मालिक तुम्हें प्यार करते हैं।

कुमुद ने कहा—इसी से तो मुझे आश्चर्य हो रहा है।

क्या कहती हो, तुम्हें प्यार करना आश्चर्यजनक क्यों है? क्या वे पत्थर के हैं?

मैं उनके योग्य नहीं हूँ।

तुम किसके योग्य नहीं हो, ऐसा पुरुष कहाँ है?

उनकी कितनी बड़ी शक्ति है, कितना सम्मान है, कितनी परिपक्व बुद्धि है, वे कितने मस्त तुरुष हैं। मुझमें वे इनमें से पा 'ही कितना सकते हैं? मैं कितनी अधिक बच्ची हूँ यह बात यहाँ आने पर समझ पाई हूँ। इसीलिए जब वे प्यार करते हैं तब मुझे सबसे अधिक भय मालूम होता। मैं अपने में जो कुछ भी ढूंढ़ती हूँ वह मुझे नहीं मिलता। इतनी महान् कमी होने पर मैं उनकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सेवा कैसे कर सकती हूँ ? कल रात में बैठे-बैठे मुझे ऐसा जान पड़ा मानो मैं बैरंग लिफाफा हूँ, मुझे मूल्य देकर लिया गया है, उसके खुलने पर यह प्रगट हो जायगा कि उसके भीतर पत्र भी नहीं है।

बहिन तुम्हारी बातों पर हँसी आती है। बड़े मालिक का व्यवसाय अत्यन्त बड़ा है, व्यवसायी में उनके समान कोई नहीं है, यह सब मैं जानती हूँ। किन्तु क्या तुम उनके व्यवसाय की मैनेजरी करने के लिए आई हो कि योग्यता न होने से तुम्हें डर लगेगा ? बड़े मालिक यदि अपने मन की बात खोलकर कहें तो निश्चय ही वे भी कहेंगे कि वे तुम्हारे योग्य नहीं हैं।

यह बात उन्होंने मुझसे कहीं थी।

तो क्या तुम्हें विश्वास नहीं हुआ ?

नहीं. उलटा मुझे भय मालूम हुआ। ऐसा जान पड़ा कि मेरे सम्बन्ध में उन्होंने भूल की है, वह भूल पकड़ में आ जायगी।

तुम ऐसा क्यों समझीं, कहो सुनूँ तो ?

कहूँगी, सुनो—मेरा विवाह एकाएक हो गया, यह मेरे ही कारण हुआ। परन्तु इसमें कितना विचित्र मोह था, कैसा लड़कपन था ? जिस कारण उस समय मैं भुलावे में पड़ी थी उसमें धोखा-ही-धोखा था। उस समय मुझमें इतना दृढ़ विश्वास, ऐसी भयानक जिद्द थी कि मुझे कोई भी उससे विरत नहीं कर सकता था। भैया तो निश्चित रूप से इसे जानते थे इ [illegible] व्यथ बाधा नहीं उपस्थित की, किन्तु वे कितने भयभीत हुए थे, कितने उद्विग्न हुए थे, इसे क्या में समझ ही नहीं पाई ? समझ पाने पर भी मैंने अपने हठ को नहीं त्यागा, इतनी बड़ी असमझ मैं हूँ। अब मैं चिरकाल तक केवल कष्ट ही पाऊँगी और प्रतिदिन यह अनुभव करूँगी कि यह सब मैंने स्वयं ही किया है।

मोती की माँ यह न समझ सकी कि क्या कहना चाहिए। कुछ देर चुप रहने के पश्चात् उसने पूछा—अच्छा बहिन, तुमने अपने मन में क्या सोचकर अपना यह विवाह करना निश्चित किया था ?

उस समय मैं यह निश्चित रूप से जानती थी कि स्वामी भले-बुरे चाहे कुछ भी क्यों न हो, वे स्त्री के सतीत्व-गौरव के प्रमाण के केवल उपलक्ष्यमात्र हैं। मन में तनिक भी सन्देह नहीं था कि विधाता ने जिसे स्वामी निश्चित कर दि

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है उसे प्यार करना ही होगा। मैंने पुराण पढ़े हैं, बहुत सी कथाएँ सुनी हैं, उनसे मैंने समझा कि शास्त्र के साथ अपने को मिलाकर चलना अत्यन्त सरल है।

बहिन, उन्नीस वर्ष की कुमारी के लिए शास्त्र नहीं लिखे गए हैं।

मैंने आज समझा है कि संसार में प्रेम ऊपरी पावना है। उसे अलग रखकर ही धर्म को जकड़कर संसार-समुद्र में बहना होगा। यदि धर्म सरस बनकर फल-फूल न दे सके तो कम से कम शुष्क होकर उसे बहाता तो रहे।

मोती की माँ स्वयं कुछ न कहकर कुमुद के द्वारा ही बातें कहलाने लगी।

चवालीस

मधुसूदन ने आफिस में जाकर देखा कि खबर अच्छी नहीं है। मद्रास का एक बड़ा बैंक जिसके साथ उसका कारबार था—फेल हो गया है। तत्पश्चात् सुना कि किसी डाइरेक्टर की ओर से कुछ कर्मचारी मधुसूदन से छिपाकर बहीखाता उलट-पलट रहे हैं। इतने दिनों से किसी ने मधुसूदन पर सन्देह करने का साहस नहीं किया, जरा-सा एक संकेत कर देने पर मानो एक मन्त्र की शक्ति-सी छूट गई। बड़े कार्य की छोटी-सी त्रुटि पकड़ में आ जाना सरल है, जो लोग अच्छे सेनापति हैं वे छोटी-छोटी हारों के होते हुए भी बड़ी विजय के बल पर जीतते हैं। इसी प्रकार मधुसूदन सदा जीतते आए हैं—इसीलिए छोटी-छोटी हारों प र कभी किसी की दृष्टि नहीं पड़ी। किन्तु उन सबकी सूची तैयार होने पर उसे देखकर साधारण मनुष्य अपनी ही बुद्धि की प्रशंसा करते हैं। वे कहते हैं मैं होता तो ऐसी भूलें न होतीं। उन्हें यह कौन समझावे कि मधुसूदन टूटी हुई नाव के द्वारा ही पार हो रहा है, नहीं तो उसका पार लगाना ही असम्भव होता, वास्तविक बात यही है कि इसीलिए नाव पार लगी। आज जब नाव पानी के किनारे लग गई तब छिद्रों का विचार करने पर उन लोगों के रोएं खड़े हो जाते हैं जो लोग बिना विपत्ति में पड़े हुए घाट पर लग गए हैं। ऐसी आलोचनाएँ करना अनाड़ियों के लिए बहुत सरल है। इन छोटी आलोचनाओं से अनाड़ियों को भ्रम में डालना सहज है। साधारण अनाड़ियों को लाभ उठाना ही प्रिय है, वे विचार नहीं करना चाहते। किन्तु यदि वे विचार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करें तो मामला भयानक हो जाय। बेवकूफों के ऊपर मधुसूदन को बड़ा क्रोध आया। किन्तु वहाँ पर बेवकूफी का ही प्राधान्य है, वहाँ पर उनके साथ समझौता करने के अतिरिक्त दूसरा चारा नहीं है। पुरानी सीढ़ी चर्र-मर्र करती है, हिलती है, टूटने का डर दिखाती है, जो व्यक्ति उस पर चढ़ता है उसे पैर के नीचे अवलम्ब को सम्हालने की चिन्ता रखनी ही पड़ती है। यदि क्रोध करके उस पर प्रहार की इच्छा करे तो कठिनाई और बढ़ती ही है।

बच्चे पर विपत्ति की सम्भावना देखकर सिंहनी अपने आहार का लोभ भूल जाती है, व्यवसाय के सम्बन्ध में मधुसूदन की भी यही अवस्था है। इसे उसने स्वयं बनाया है, इसके प्रति उसकी जो वेदना है उसमें प्रधान कारण नहीं है। जिसमें निर्माण-शक्ति है, वह अपनी रचना में अपना ही घनिष्ट संबंध पाता है, जब उस पर विपत्ति आती है तब जीवन की सभी दुख-सुख की इच्छाएँ उसके लिए तुच्छ हो जाती हैं कुमुद ने मधुसूदन की कुछ दिनों से अत्यधिक आकर्षित कर लिया था, वह आज अकस्मात् टूट गया। मधुसूदन ने अपनी प्रौढ़ावस्था में प्रेम करने की आवश्यकता का अत्यधिक अनुभव किया था। जब वह समस्या असमय में उपस्थित हुई तब वह भयंकर हो उठा। मधुसूदन को कम धक्का नहीं लगा किन्तु आज उसकी वेदना न जाने कहाँ चली गई।

नवीन ज्योंही कमरे में पहुँचा त्योंही मधुसूदन ने पूछा—क्या मेरे व्यक्तिगत जमा-खर्च की बही किसी बाहरी व्यक्ति के हाथ में पड़ी थी, जानते हो?

नवीन चौंक उठा, बोला—यह कैसी बात?

तुम्हें पता लगाना होगा कि खजांची के पास कोई आता जाता है या नहीं?

रतिकान्त विश्वासी व्यक्ति है, वह क्या कभी—!

मेरी जानकारी के बिना कोई मुहर्रिरों से बातचीत कर रहा है ऐसा सन्देह करने का कारण उपस्थित हुआ है। अत्यन्त सावधानी से यह पता लगाना होगा कि इसमें कौन-कौन शामिल हैं।

नौकर ने आकर खबर दी कि भोजन ठण्डा हो रहा है। मधुसूदन ने इस पर ध्यान न देकर नवीन से कहा—शीघ्र गाड़ी तैयार करके लाने के लिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कह दो।

क्या भोजन करके बाहर न जाइएगा, रात अधिक हो रही है।

बाहर ही खा लूंगा, कार्य है।

नवीन सिर नीचा करके सोचता हुआ बाहर चला गया। उसे जान पड़ा कि मैंने जो होशियारी की थी वह पकड़ में आ गई।

अकस्मात् मधुसूदन ने नवीन को पुनः बुलाकर कहा—यह पत्र कुमुद को दे आओ।

नवीन ने देखा कि विप्रदास का पत्र है। वह समझ गया कि यह पत्र आज ही सवेरे आया है। मधुसूदन ने इसे संध्या समय कुमुद को देने के लिए रखा था। मधुसूदन इसी प्रकार प्रत्येक बार मिलन के समय कुछ भेंट में देने के लिए लाने की इच्छा रखता है। आज आफिस के कार्य में अकस्मात् ऐसा तूफान उठा कि यह आयोजन भंग हो गया।

मद्रास का जो बैंक फेल हुआ है उस पर जनता का विश्वास था। उसके साथ घोषाल कम्पनी का जो सम्बन्ध है उसके विषय में कम्पनी के अध्यक्ष या उसके हिस्सेदारों में से किसी को कुछ भी सन्देह नहीं था। जब वह कल बिगड़ गया तब बहुत से लोग कहने लगे कि हम पहले से ही ऐसा समझते थे।

सांघातिक आघात के समय जबकि एक मत होकर व्यवसाय की रक्षा करने की चेष्टा करनी चाहिए ; उसी समय हानि के लिए दोषारोपण की प्रवृत्ति प्रबल हो उठती है और जिनके प्रति किसी की ईर्ष्या होती है उसे अपदस्थ करने का प्रयत्न व्यवसाय को और भी नष्ट कर देता है। मधुसूदन समझ गया कि ऐसी ही कोशिशें होंगी। मद्रास बैंक के फेल होने से घोषाल कम्पनी की जितनी हानि होगी इसका अभी तक कुछ पता नहीं है, किन्तु मधुसूदन की प्रतिष्ठा मिटाने के लिए यह भी एक प्रधान मसाला होगा, इसमें तनिक भी सन्देह न था। जो कुछ भी हो, समय खराब है, इस समय अन्य सभी कुछ भूलकर मधुसूदन की इसी के लिए कमर कसनी पड़ेगी।

रात्रि में मधुसूदन से बातें करके लौटने के बाद नवीन ने देखा कि अभी कुमुद और मोती की माँ बातें कर रही हैं। नवीन ने कहा—भाभीजी आपके भाई साहब का पत्र आया है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद ने चौंककर पत्र ले लिया। उसे खोलते हुए उसका हाथ काँपने लगा। उसे भय हुआ कि शायद कोई अप्रिय संवाद है। शायद अभी तक वे आये ही नहीं। धीरे से लिफाफा खोलकर पढ़ा। कुछ देर चुप रही। उसका मुख देखने से ऐसा जान पड़ा मानो उसे कुछ दुख हुआ है। उसने नवीन से कहा—भैया आज दिन में तीन बजे कलकत्ते आ गये हैं।

आज ही आ गए! उनकी तो—

उन्होंने लिखा है कि दो एक दिन बाद आने की बात थी, किन्तु कुछ विशेष कारण से कुछ पहिले ही आ गए।

कुमुद ने और कुछ भी नहीं कहा। पत्र के अन्त में लिखा था कि कुछ और स्वस्थ होने पर वे कुमुद को देखने आवेंगे, उसके लिए कुमुद को घबड़ाना नहीं चाहिए। यही बात पहले के पत्र में भी लिखी थी। क्यों, क्या हो गया? कुमुद ने कौन-सा अपराध किया है? यह तो स्पष्ट रूप से यह लिखना हुआ कि तुम मेरे घर पर न आना। उसकी इच्छा हुई कि जमीन पर लोटकर कुछ देर रो लूं। रुलाई को दबाकर वह पत्थर-सी कठोर बनकर बैठी रही।

नवीन समझा कि पत्र में कोई कड़ी बात लिखी है। कुमुद का मुख देखकर उसका हृदय करुणा से भर उठा। बोला—भाभी, उनके पास तो तुम्हें कल ही जाना चाहिए।

नहीं, मैं न जाऊँगी। यह कहकर वह अपने को रोक न सकी; दोनों हाथों से अपना मुख ढककर रो पड़ी। मोती की माँ ने कोई प्रश्न न पूछकर कुमुद को छाती से लिपटा लिया, कुमुद रुंधे हुए गले से बोल उठी—भैया ने मुझे आने से मना किया है।

नवीन बोला—नहीं, नहीं, भाभीजी, तुमने निश्चय ही गलत समझा है।

कुमुद बहुत जोर से सिर हिलाकर बोल उठी—नहीं, मैंने तनिक भी भूल नहीं की है।

नवीन ने कहा—तुमने कहाँ पर भूल की है, मैं बतलाता हूँ। विप्रदास बाबू यह समझते है कि मेरे भैया तुम्हें वहाँ पर न जाने देना चाहेंगे। यदि तुम जाने की चेष्टा करोगी तो तुम्हें अपमानित होना पड़ेगा, इससे तुम्हें कष्ट

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होगा, उससे बचने के लिए उन्होंने स्वयं तुम्हारा मार्ग सीधा कर दिया है।

कुमुद को क्षणभर में ही सान्त्वना प्राप्त हो गई! उसकी आँसू से भरी हुई आँखें टकटकी लगाकर नवीन की ओर देखने लगीं। भैया के प्रेम को क्षण भर के लिए भी भूल जाने के लिए वह अपने को धिक्कारने लगी। उसके मन को बहुत बल मिला। अब वह भैया के पास जाने के लिए व्याकुल न होकर उनके आने तक की प्रतीक्षा कर सकेगी। यही अच्छा होगा।

मोती की माँ कुमुद की ठुड्डी पकड़कर उसका मुख ऊपर उठाकर बोली—वाह, भैया की जरा-सी चर्चा चलते ही अभिमान का समुद्र उमड़ पड़ा।

नवीन बोला—भाभी, तब कल मैं आपके जाने का आयोजन करूँ न!

नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं है।

अवश्यकता नहीं है तो क्या? आपको आवश्यकता नहीं है तो क्या मुझे तो आवश्यकता है न?

तुम्हें आवश्यकता किस बात की है?

वाह! मेरे भैया को तुम्हारे भैया चाहे जो कुछ समझें मैं उसे कैसे समझ लेने दूँगा। मैं अपने भैया का पक्ष लेकर लड़ूँगा। मैं तुमसे हार न मानूँगा। कल तुम्हें उनके यहाँ जाना ही होगा।

कुमुद हंसने लगी।

भाभीजी, यह मजाक की बात नहीं है। हमारे घर की बदनामी में तुम्हारा अपमान है। अब आँख और मुख धो लो, खाने के लिए जाना होगा। आज मैनेजर साहब के यहाँ भैया का निमंत्रण है। मेरा विश्वास है कि वे आज घर में सोने के लिए नहीं आयँगे, मैंने उनका बिस्तर बाहर के कमरे में लगा हुआ देखा है।

यह खबर पाकर कुमुद ने अपने मन में आराम का अनुभव किया, उसके बाद तुरंत ही उसे इतना आराम प्रतीत होने पर लज्जा हुई।

रात्रि में शयनगृह में मोती की माँ के साथ नवीन ने इस विषय में सलाह ली। मोती की माँ ने कहा—तुमने तो बहिन को आश्वासन दिया है। उसके बाद अब क्या होगा?

उसके बाद अब क्या? नवीन की बात और काम एक-से होते हैं। भाभी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जी को जाना ही होगा, उसके बाद जो होना होगा, होगा।

नए बने हुए राजाओं में अपने परिवार की मर्यादा का ज्ञान बहुत होता है। ये अपने मन में निश्चित रूप से यह समझते हैं कि उनके साथ विवाह होने से नववधु अपनी पूर्व मर्यादा से बहुत ऊपर उठ गई है। इसलिए उसे पितृ-गृह की बातें एकदम भूल जानी चाहिएँ। ऐसी अवस्था में यदि दोनों ओर की रक्षा करना असंभव हो जाय तो एक की रक्षा तो करनी ही चाहिए। यह एक और कौन-सा है इसे नवीन ने अपने मन में दृढ़ कर रखा है। जहाँ पर भैया का अधिकार अपनी चरम सीमा पर है वहाँ पर वह उनसे लड़ाई करने का साहस कभी नहीं कर सकता, यह बात आज से कुछ दिन पूर्व नवीन स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था।

पति-पत्नी ने सलाह करके निश्चय किया कि कल सवेरे कुमुदिनी अपने भैया को जाकर केवल एक बार देख आवेगी, यह बात मधुसूदन से पूछ लेनी होगी। यदि वे राजी हो जायँ तो फिर वहाँ पर दो चार दिनों तक ठहरने के लिए रास्ता निकाल लेना कठिन न होगा।

मधुसूदन बहुत रात बीतने पर घर लौटे, उनके साथ में कागज-पत्र का एक बड़ा पुलिंदा था। नवीन ने झाँककर देखा कि मधुसूदन सोने के लिए नहीं गए, वे चश्मा लगाकर हाथ में नीली पेंसिल लेकर कागजों में निशान लगा रहे हैं। नवीन ने हिम्मत करके घर में प्रवेश करके कहा—भैया, क्या मैं आपका कोई कार्य कर सकता हूँ। मधूसूदन ने संक्षेप में कहा—नहीं। मैं व्यवसाय की इस संकटपूर्ण स्थिति का अध्ययन स्वयं कर लेना चाहता हूँ; इस कार्य में दूसरे की सहायता लेना स्वयं अपने को निर्बल बनाना होगा।

नवीन कोई बात कहने का अवसर न पाकर वहाँ से चला गया। उसे यह ज्ञात हुआ कि शीघ्र कुछ कहने का सुअवसर न प्राप्त होगा। नवीन की यह प्रतिज्ञा है कि वह कल सवेरे ही भाभीजी को भेज देगा। आज रात में सम्मति ले लेनी चाहिए।

कुछ ही देर बाद नवीन ने एक लैम्प लाकर भैया की मेज पर रखा और कहा—आपकी रोशनी धीमी हो रही है।

मधुसूदन ने अनुभव किया कि इस दूसरे लैम्प से मेरे काम में सुविधा होगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किंतु इस पर भी नवीन को कुछ कहने का अवसर नहीं मिला, वह चुपचाप लौट आया।

कुछ देर बाद ही उसने चिलम में तम्बाकू सुलगाकर मधुसूदन की मेज के बाईं ओर रखकर उसकी नली मेज पर धीरे से रख दी। मधुसूदन ने इस बार भी अनुभव किया कि इसकी भी आवश्यकता थी। वह क्षणभर के लिए पेंसिल रखकर तम्बाकू पीने लगा।

इसी समय नवीन ने बात छेड़ी—भैया, सोने के लिए न जाइएगा ? रात बहुत हो गई है। भाभीजी आपके लिए अभी तक जाग रही होंगी।

'जाग रही होंगी' यह बात मधुसूदन के मन में जाकर लगी। मानो लहरों के ऊपर डगमगाकर चलते हुए जहाज के मस्तूल पर एक छोटी-सी चिड़िया आकर बैठ गई, क्षुब्ध समुद्र में क्षणभर के लिए श्याम रंग के द्वीप की वन-च्छाया का दृश्य उपस्थित हो गया, किन्तु उस ओर ध्यान देने के लिए समय नहीं है, जहाज को चलाना ही होगा।

मधुसूदन अपने मन में चंचलता आने से डरा। किन्तु तुरन्त उसे दबाकर वह बोल उठा—बड़ी बहू को सो जाने के लिए कहो, आज मैं बाहर ही सोऊँगा।

कहिए तो उनको यहीं बुला दें, कह कर नवीन गुड़गुड़ी की चिलम को फूंकने लगा।

मधुसूदन झुंझलाकर बोल उठा—नहीं, रहने दो।

नवीन इससे भी विचलित न होकर बोल उठा—वे आपसे बातचीत करने के लिए बैठी हैं।

मधुसूदन ने रुखाई के साथ कहा—मुझे इस समय बात करने का समय नहीं है।

भैया आपके पास समय नहीं है, किन्तु उनको भी तो समय कम है।

क्यों क्या हुआ है ?

आज खबर मिली है कि विप्रदास बाबू कलकत्ते में आए हैं, इसीलिए भाभीजी कल सवेरे.........।

सवेरे जाना चाहती हैं ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अधिक देर के लिए नहीं, केवल एक बार........।

मधुसूदन हाथ फटकारते हुए बोल उठा—तो जायँ न, चली जायँ। बस अब तुम चले जाओ।

आज्ञा पाते ही नवीन वहाँ से चल पड़ा। बाहर आते ही मधुसूदन की आवाज पुनः कान में पड़ी—नवीन !

उसे डर लगा कि भैया शायद कहीं अपनी आज्ञा वापस न ले लें। घर में आकर खड़ा होते ही मधुसूदन ने कहा—बड़ी बहू इस समय अपने भैया के यहाँ ही कुछ दिन रहेंगी, तुम उनका प्रबन्ध कर देना।

नवीन को डर लगा कि भैया के इस प्रस्ताव से कहीं उसका मुख प्रफुल्लित न हो उठे। इसलिए वह एक दुविधा का भाव प्रकट करते हुए सिर खुजलाते हुए बोल उठा—भाभीजी के जाने पर घर एकदम सूना-सा लगेगा।

मधुसूदन कुछ भी उत्तर न देकर गुड़गुड़ी की नली रखकर काम में लग गया। वह समझ गया कि प्रलोभन का मार्ग अभी खुला हुआ है, एकदम बन्द नहीं है।

नवीन आनन्दित होकर चला गया। मधुसूदन का कार्य चलने लगा। किन्तु इस कार्य की धारा कब उलटकर एक विपरीत धारा में बदल गई इसे वह स्वयं बहुत देर तक नहीं समझ सका। नीली पैंसिल का काम समाप्त हुए बिना ही उसे छुट्टी मिल गई, गुड़गुड़ी की नली उसने मुख में लगा ली। जिस समय दिन में मधुसूदन का मन कुमुद की ओर से एकदम छुटकारा पा गया था उस समय मधुसूदन पूर्व की भाँति अपने मन पर स्वयं अपना पूर्ण अधिकार पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ था। किन्तु रात जितनी ही बीत रही थी उसके मन में उतना ही सन्देह हो रहा था कि शत्रु अभी भागा नहीं है। वह सुरंग में छिपकर बैठा हुआ है।

वर्षा बन्द हो गई है। कृष्ण पक्ष के चन्द्रमा ने बाग के कोने के एक सीसम के ऊपर आकाश में उठकर आर्द्र पृथ्वी को विह्वल कर दिया है। हवा ठंडी है, मधुसूदन का शरीर बिछौने पर गर्म कोमल स्पर्श पाने की आवश्यकता का अनुभव कर रहा है। वह नीली पेंसिल लेकर कागज-पत्रों में लग गया। किन्तु मन के गम्भीर आकाश में एक क्षीण किन्तु स्पष्ट ध्वनि हो रही है, संभवतः

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहूरानी इतनी देर तक जगी हुई बैठी हैं।

मधुसूदन ने प्रतिज्ञा की थी कि यह विशेष कार्य आज रात में ही समाप्त कर दूंगा। उसे कल सवेरे पूरा करने में कोई विशेष असुविधा होगी, ऐसी बात नहीं थी। किन्तु प्रतिज्ञा की रक्षा करना उसके व्यवसाय की विशेष धर्मनीति है। यदि वह किसी कारण उसे पूरा न कर सके तो वह इसके लिए अपने को क्षमा नहीं कर सकता। उसने इतने दिनों तक इस धर्म की रक्षा भलीभाँति की है। उसका उसे यथेष्ट पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है। किन्तु आजकल दिन वाले मधुसूदन से रात वाले मधुसूदन के स्वर में कुछ अन्तर पड़ गया है, मानो एक ही वीणा के दो तार हों। वह जो प्रतिज्ञा करके मेज पर बैठा था—रात्रि जब अधिक हो गई तब उस प्रण के किसी छिद्र में से यह बात भ्रमर की भाँति भन-भन करने लगी—संभवतः बहूरानी जगी हुई बैठी हैं।

वह उठ खड़ा हुआ, बिना लैंप बुझाए कागज-पत्रों को जहाँ-का-तहाँ छोड़-कर शयनागर की ओर चला। अंतःपुर में आँगन को घेरे हुए जिस बरामदे में से होकर तिमंजिले पर जाने का रास्ता है उसी बरामदे की रेलिंग के किनारे श्यामसुन्दरी फर्श पर बैठी है। इस समय चन्द्रमा बीच आकाश में है, उसका प्रकाश आकर उसके ऊपर पड़ रहा है। वह ऐसी जान पड़ रही है मानो किसी गल्प की तस्वीर है, अर्थात् वह मानो सदा जैसी दीख पड़ती थी वैसी नहीं है, मानो अति परिचय के कठिन आवरण से निकलकर दूर आ पड़ी है। वह जानती है कि मधुसूदन इसी रास्ते से शयनागार में जाता है—उसके जाने का दृश्य उसके लिए अत्यन्त कष्टकर है, इसीलिए उसका आकर्षण इतना प्रबल है। किंतु केवल हृदय को व्यर्थ वेदना पहुँचाने वाला पागलपन ही इस प्रतीक्षा में नहीं है, उसमें एक आशा भी है—सम्भव है कि क्षणभर में कोई घटना घटित हो जाय, शायद असंभव संभव हो जाय, इसी आशा से वह रास्ते में जगी हुई बैठी है।

मधुसूदन रास्ते में एक बार उसकी ओर दृष्टि डालकर ऊपर चले गये। श्यामसुन्दरी अपने भाग्य पर अभिमान करती है, वह रेलिंग को जोर से पकड़कर उसके ऊपर अपना सिर धुनने लगी।

शयनगृह में जाकर मधुसूदन ने देखा कि कुमुद जाग नहीं रही है। घर में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंधेरा है, स्नान-गृह के खुले हुए दरवाजे से जरा-सी रोशनी आ रही है। मधुसूदन ने एक बार सोचा कि लौट चलें किन्तु लौट नहीं सका। उसने गैस की रोशनी जला दी। कुमुद बिछौने पर लेटी आराम से सो रही है—रोशनी जलने पर भी नींद खुली नहीं। इस तरह आराम से सोती हुई कुमुद पर उसे क्रोध हुआ। अधीर होकर मसहरी खोलकर वह धम्म से बिछौने पर बैठ गया। पलंग चर्रचर्र करके काँप उठा।

कुमुद चौंककर उठ बैठी। वह यही जानती थी कि मधुसूदन आज नहीं आवेगा। अकस्मात् उसे देखकर कुमुद में ऐसा भाव उत्पन्न हुआ कि उसे देखकर मधुसूदन की छाती में शूल-सा बिंध गया। सिर में रक्त चढ़ गया, वह बोल उठा—तुम मुझे किसी भी प्रकार सहन नहीं कर सकती न ?

ऐसे प्रश्न का क्या उत्तर देना चाहिए यह कुमुद की समझ में नहीं आया। सचमुच मधुसूदन को अकस्मात् देखकर उसकी छाती आतंक से काँप उठी थी। उस समय उसका मन संतर्क नहीं था। जिस भाव को वह अपने भीतर सदा दबा रखना चाहती है, जिसकी प्रबलता का पूरा ज्ञान स्वयं कुमुद को भी नहीं है वह अकस्मात् प्रकट हो गया था।

मधुसूदन दाँत पीसकर बोल उठा—क्यों, भैया के पास जाने के लिए तुम व्याकुल हो रही हो ?

कुमुद इसी क्षण उसके पैरों पर पड़ने जा रही थी, किन्तु उसके मुख से भैया का नाम सुनकर वह रुक गई। बोली—नहीं।

तुम नहीं जाना चाहतीं ?

नहीं, मैं नहीं जाना चाहती।

क्या तुमने नवीन को मेरे पास आज्ञा लेने के लिए नहीं भेजा ?

नहीं, मैंने नही भेजा।

क्या तुमने भैया के पास अपनी जाने की इच्छा उससे नहीं कही ?

मैंने उससे कहा था कि मैं भैया से मिलने के लिए नहीं जाऊँगी।

क्यों ?

यह मैं नहीं कह सकती।

नहीं कह सकती ? फिर तुम्हारी वही नूरनगरी चाल ?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं तो नूरनगर की ही लड़की हूँ।

जाओ, उन्हीं के पास जाओ। तुम यहाँ के योग्य नहीं हो। मैंने कृपा की थी, उसकी मर्यादा तुमने नहीं समझी। अब पश्चात्ताप करना होगा।

कुमुद काष्ठवत् बैठी रही, उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। मधुसूदन ने कुमुद का हाथ पकड़ एक असह्य झटका देकर कहा—माफी माँगना भी नहीं जानती ?

किसलिए ?

तुम जो मेरे इस बिस्तर पर सो सकी हो, इसीलिए।

कुमुद तुरंत बिछावन से उठकर बगल वाले कमरे में चली गई।

मधुसूदन ने बाहर के कमरे में जाने के मार्ग में देखा कि श्यामसुन्दरी उसी बरामदे में औंधी पड़ी हुई है। मधुसूदन ने निकट आकर झुककर उसका हाथ पकड़कर उसे उठाने की चेष्टा करते हुए कहा—क्या कर रही हो श्यामा ? श्यामा ने तुरत उठकर मधुसूदन के दोनों पैर पकड़ लिए, वह गद्‌गद् कण्ठ से बोली—मुझे मार डालो।

मधुसूदन ने उसे हाथ पकड़कर खड़ी करके कहा—ओह, तुम्हारा शरीर एकदम बर्फ-सा ठंढा है। चलो तुम्हें लेटा दूं। कहकर उसे अपनी शाल ओढ़ाकर उसे दाहिने हाथ से पकड़कर सोने के घर में पहुँचा दिया। श्यामा धीरे से बोली—जरा बैठिएगा नहीं ?

मधुसूदन ने कहा—मुझे काम है।

रात्रि के समय कहीं से भूत ने सवार होकर इतनी देर तक मधुसूदन के कार्य को बिगाड़ने का प्रयत्न किया—अब ऐसा न होगा। उसे कुमुद से जो उपेक्षा प्राप्त हुई है उसकी क्षतिपूर्ति का भण्डार अन्य कहीं पर भी जमा है, यह उसकी समझ में आ गया। प्रेम के बीच मनुष्य जो अपना परम मूल्य प्राप्त करता है, आज रात में इसका अनुभव करने की आवश्यकता मधुसूदन को थी। श्यामसुन्दरी तन-मन से उसकी प्रतीक्षा कर रही है यह आश्वासन पाकर मधुसूदन को आज रात में कार्य करने का बल मिल गया, जिस अपमान का काँटा उसके मन में बिंधा है उसकी वेदना इसने बहुत कुछ कम कर दी।

इधर रात में कुमुद को जो धक्का लगा उसमें उसकी एक सांत्वना थी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मधुसूदन ने जितनी बार उससे प्रेम दिखलाया है, उतनी बार उसके मन में खींचा-तानी हुई है, प्रेम के मूल्य द्वारा ही इसका बदला चुकाया जा सकता है, इस कर्त्तव्य-ज्ञान ने उसे अत्यन्त अस्थिर किया है। इस युद्ध में कुमुद के विजय की कोई आशा नहीं थी। किन्तु पराजय बहुत भद्दी है उसे दबाने की चेष्टा कुमुद ने इतने दिनों से की है। कल रात में वह दबाया हुआ पराभव क्षणभर में एकदम पकड़ में आ गया। कुमुद की असतर्क अवस्था में मधुसूदन ने स्पष्ट देखा कि कुमुद की सारी प्रकृति मधुसूदन की प्रकृति के विरुद्ध है, यह निश्चित रूप से ज्ञात हो गया, यह अच्छा हुआ, इसके बाद परस्पर क्या कर्त्तव्य है उसे अकपट भाव से करना संभव होगा। मधुसूदन उसे जहाँ चाहता है वहीं पर तो समस्या है, दुःख के साथ उसे जहाँ रोकना चाहता है, वहीं पर सचाई है। सचमुच मधुसूदन की शय्या-पर सोने का अधिकार उसे नहीं है। सोकर वह केवल धोखा ही देती है, इस घर में उसका पद केवल विडम्बना है।

आज रात में यह एक प्रश्न कुमुद के मन में बारम्बार उठ रहा है, मेरे कारण उन्हें इतनी अड़चन क्यों है ? यह तो बात-बात में नूर-नगरी चाल का प्रसंग उठाकर कुमुद को लांछित करता है, उसका तात्पर्य यह है कि हम दोनों में एकदम मौलिक भेद है, ऐसी अवस्था में मधुसूदन क्यों उससे प्रेम प्रदर्शित करे ? वह क्या कभी सच्चा प्रेम हो सकता है ? कुमुद का निश्चित विश्वास है कि मधुसूंदन अपने मन में चाहे जो कुछ सोचे, कुमुद के द्वारा उसका मन कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। मधुसूदन इसे जितना शीघ्र समझ जाय उतना ही दोनों पक्षों का कल्याण है।

नवीन कल रात में भैया से राय लेकर जितनी प्रसन्नतापूर्वक सोने के लिए गया, आज सवेरे उसमें से कुछ भी शेष नहीं रहा। कल रात में जब ढाई बजे थे तभी मधुसूदन ने काम समाप्त करके उसी समय नवीन को बुला भेजा। उसे यह आज्ञा दी कि कुमुद को विप्रदास के पास भेज दिया जाय और जब तक मधुसूदन पुनः स्वयं बुला न भेजे तब तक उसे वहाँ से लौटने की आवश्यकता नहीं है। नवीन ने समझ लिया कि यह निर्वासन का दण्ड है।

आँगन के बरामदे में जहाँ कल रात में मधुसूदन के साथ श्यामा की भेंट हुई थी उसके ठीक विरुद्ध वाली दिशा में नवीन का शयन-गृह है। उस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समय वे पति-पत्नी कुमुद के सम्बन्ध में बातें कर रहे थे। इसी समय आवाज सुनकर मोती की माँ ने ज्योंही दरवाजा खोला त्योंही चाँदनी के प्रकाश में मधुसूदन और श्यामा के मिलन का दृश्य दिखाई पड़ा। वे समझ गए कि आज कुमुद के भाग्य रूपी जाल में एक और कठोर गाँठ पड़ गई।

मोती की माँ ने नवीन से कहा—क्या इस विपत्ति के समय बहिन का चला जाना ठीक होगा ?

नवीन ने कहा—जब तक भाभी नहीं थीं, तब तक तो कोई ऐसी बात नहीं हुई। यह सब तो भाभी के रहने पर ही हो रहा है।

क्या कह रहे हो तुम !

भाभी ने भैया की जिस सोई हुई भूख को जगाया है उसके लिए वे भोजन नहीं जुटा सकतीं; इसीलिए यह अनर्थ होने जा रहा है। मैं तो कहता हूँ कि इस समय उनका दूर रहना ही ठीक है, उससे और चाहे कुछ न हो, कम-से-कम वे शान्ति से रह तो सकेंगे।

तो क्या यह इसी तरह चलेगा ?

जिस आग को बुझाने का कोई उपाय नहीं है, उसे जलकर राख बन जाने तक देखना ही होगा।

दूसरे दिन हाबलू दिन भर कुमुद के साथ-ही-साथ घूमता रहा। जब गुरुजी ने उसे पढ़ने के लिए बाहर बुलाया तब उसने कुमुद की ओर देखा, यदि कुमुद उसे जाने को कहती तो वह जाता; किन्तु कुमुद ने बेयरा से कह दिया कि आज हाबलू को छुट्टी दे दें।

कुमुद आज पितृ-गृह को जा रही है, उस धुन में उसे तैयारी में अधिक समय नहीं लगा। मानो यह घर आज उसे खो देने वाला है। जिस पक्षी को पिंजड़े में बन्द किया गया था वह आज मानो जरा-सा दरवाजा खुलते ही उड़ पड़ा, मानो अब वह पुनः उसमें न घुसेगा।

नवीन ने कहा—भाभीजी, लौटने में देरी न कीजिएगा, यह बात यदि मैं पूरे मन से कह पाता तो मुझे संतोष होता किन्तु उस रूप में मैं कहने योग्य नहीं हूँ। जहाँ पर तुम्हारा यथेष्ट सम्मान होता है, तुम वहीं पर रहना। यदि किसी समय तुम्हें नवीन की आवश्यकता हो तो बुला लेना।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोती की माँ ने अपने हाथ से तैयार किया हुआ अमावट, अचार इत्यादि हाँड़ी में सजाकर पालकी में रख दिया। विशेष कुछ भी नहीं कहा। किन्तु उसके मन में उसके प्रति विशेष शिकायत थी। जितने दिनों तक मधुसूदन कुमुद का अपमान करता रहा, उतने दिनों तक मोती की माँ कुमुद के पक्ष में थी, किन्तु जो बाधा सूक्ष्म है, जिसका संबन्ध हृदय से है, विश्लेषण द्वारा जिसका निर्णय करना कठिन है, उसी की शक्ति सबसे प्रबल है, मोती की माँ के लिए यह सरल समस्या नहीं है। जिस क्षण स्वामी प्रसन्न हो जायँ उसी क्षण अविलंब स्त्री को उसे अपना सौभाग्य समझना चाहिए। मोती की माँ इसी को स्वाभाविक मानती है। इसके विपरीत होने को वह ज्यादती समझती हैं। यहाँ तक कि अब भी बहूरानी के लिए नवीन में जो समवेदना है उससे वह नवीन पर क्रुद्ध है। कुमुद की स्वभावसिद्ध घृणा एकदम अकृत्रिम है, यह अहंकार नहीं है, यहाँ तक कि इसे लेकर कुमुद में स्वयं अपने ही प्रति जो दुर्जय विरोध है, साधारणतः स्त्रियों के लिए इसे स्वीकार कर लेना कठिन है, जिस चीन में स्त्रियाँ वहाँ के प्रथानुसार अपने पैरों को विकृत करने में आपत्ति नहीं करतीं, यदि वे यह सुन लें कि संसार में ऐसी भी स्त्रियाँ है जो अपने इस पद-संकोच की पीड़ा को स्वीकार करना अपमानजनक समझती हैं, तो निश्चय ही वे उस हिचक को मजाक में उड़ा देंगी, वे अवश्य ही यह कहेंगी कि यह केवल उनका नखरा है। जो गूढ़ रूप से स्वाभाविक है, उसे ही वह अस्वाभाविक मानती हैं। मोती की माँ एक समय कुमुद के दुःख से सबसे अधिक दुःखी हुई थी। जान पड़ता है इसीलिए आज उसका हृदय इतना कठोर हो रहा है। जिस समय विपरीत भाग्य बना देने आता है उस समय जो सिर नवाकर अविलंब उस वरदान को नहीं ग्रहण कर पाती, उस पर प्रेम करना मोती की माँ के लिए असंभव है—उसे वह क्षमा करना भी नहीं चाहती।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पैंतालीस

जैसे ही पालकी मकान के सामने पहुँची कुमुद ने पालकी के दरवाजे को धीरे से खिसकाकर ऊपर की ओर देखा। प्रतिदिन विप्रदास सड़क के किनारे वाले बरामदे में बैठकर अखबार पढ़ा करते थे, किन्तु आज उसे वहाँ कोई दिखाई न पड़ा। उसके आने का समाचार भी तो वहाँ न भेजा जा सकता था। महाराज साहब के चपरासी दरबान को पालकी के साथ देखकर वहाँ के दरबान घबरा से गये, चौकन्ने होकर समझ गये कि बहनजी आई हैं। सहन को पार करके पालकी अन्तःपुर की ओर बढ़ी। उसे बीच ही में रुकवाकर कुमुद तेजी से उतर बड़ी उतावली के साथ बाहर की सीढ़ियों पर से ऊपर चली गई। वह चाहती है कि बिना किसी के देखे ही पहले भइया से मेरी भेंट हो जाय। उसे पूर्ण विश्वास था कि भैया रोग-ग्रस्त होने के कारण बाहर के ही आराम-कमरे में होंगे। उसे कमरे के जंगले से बगीचे के गुञ्जा, कचनार और पीपल के वृक्षों का समूह दृष्टिगोचर होता है। प्रातःकाल की धूप पेड़-पत्तियों के बीच से होकर इसी कमरे में पहले दिखाई देती है अतएव विप्रदास को यही कमरा पसन्द है।

ज्योंही कुमुद जीने के पास पहुँची, टाम कुत्ता दौड़ा आया। उसके ऊपर अगले दो पैरों के रखने की कोशिश करता हुआ वह पूँछ हिलाता हुआ अपनी भाषा में न मालूम क्या-क्या कहने लगा। उसने कुमुद को परेशान कर दिया। टाम भी उछलता-कूदता तेजी से कुमुद के साथ चला। एक तह करके रखी जाने वाली कोच के ऊपर विप्रदास अर्द्ध-निद्रा में पड़े थे—घुटनों तक छींट की फर्द पड़ी है। दाहिने हाथ में एक किताब है वह हाथ बिस्तर के ऊपर शिथिल पड़ा हुआ है और थककर अभी ही मानो पढ़ना बन्द किया है। बगल में ही जमीन के ऊपर चाय का प्याला और प्लेट पड़ा है जिसमें थोड़ी-सी खाई हुई रोटी बच रही है। सिरहाने दीवाल में लगी आलमारी में बेसिलसिले किताबें उलटी-पुलटी पड़ी हैं। रात का जला हुआ लैम्प धुएँ से काला होकर अभी तक एक कोने के पड़ा है।

विप्रदास के चेहरे को देखकर कुमुद चौंक पड़ी। भैया की ऐसी रुग्णमूर्ति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तो मैंने आज तक देखी ही नहीं। उस युग के विप्रदास में मानो कई युगों का अन्तर है। कुमुद भइया के पैरों पर सिर रखकर रोने लगी।

'अरी कुमुद! तू आ गई? आ यहाँ तो आ!'—कहते हुए विप्रदास ने उसे निकट खींच लिया। यद्यपि पत्र लिखते वक्त उसमें उन्होंने कुमुद को आने की मनाही कर दी थी किन्तु उन्हें पूर्ण विश्वास था कि कुमुद आवेगी। उन्होंने जब देखा कि कुमुद आ गई है, तब वे समझ गये कि अब सभी विघ्न दूर चले जायेंगे—कुमुद के लिए उसकी घर-गृहस्थी अब सहज हो गई। उसे बुलाने के लिए इनकी ही ओर से प्रस्ताव, पालकी और आदमी भेजने की व्यवस्था होनी चाहिए थी—नियम तो ऐसा ही है, किन्तु ऐसा न होने पर भी कुमुद चली आई। इसमें विप्रदास ने उसकी स्वाधीनता की जितनी कल्पना अपने मन में करवा ली, उतनी आशा उन्होंने मधुसूदन के घर में उसके लिए कभी स्वप्न में भी न की थी।

विप्रदास के बिखरे हुए बालों को दोनों हाथों से सम्भालते हुए बोली—भैया, तुम्हारा चेहरा कैसा हो गया?

'इधर कोई घटना तो ऐसी हुई नहीं जिसके कारण मेरा चेहरा अच्छा हो, किन्तु मेरी यह दशा कैसे हुई? तू तो बिलकुल फक पड़ गई।'

खबर पाकर इतने ही में क्षेमा बुआ आ गई, उनके साथ ही दरवाजे पर नौकर-नौकरानियों की भीड़ जमा हो गई। क्षेमा बुआ को प्रणाम करते ही बुआ ने उसे चिपटाकर उसका माथा चूमा। नौकर-नौकरानियों ने आकर पैर छुए। सबके साथ कुशल समाचार पूछ चुकने पर कुमुद बोली—'बुआ, भैया का चेहरा खराब हो गया है।' बुआ ने कहा—'योंही थोड़ी खराब हो गया है! तुम्हारे हाथ से सेवा न मिलने के कारण इसकी दशा किसी तरह सुधरना ही नहीं चाहती! कितने दिनों का अभ्यास है, कोई ठीक है!'

विप्रदास ने कहा—'बुआ, कुमुद को खाने के लिए न कहोगी?'

'खायगी नहीं तो फिर क्या? क्या इसको भी कहना पड़ेगा? मैं दरबान तथा पालकी वालों को बाहर ही बिठा आई हूँ। जरा जाकर उन्हें खिला आऊँ मैं जानती हूँ, तब तक तुम दोनों बैठे बातें करो।'

क्षेमा बुआ को विप्रदास ने इशारे से बुलाकर उनके कान में कुछ कह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिया। कुमुद ने समझा ससुराल से आये हुए आदमियों को किस प्रकार बिदा किया जाय, इसी बात का परामर्श किया गया है। इस परामर्श में आज कुमुद विपक्षी हो गई है। इस समय उसकी कोई राय ही नहीं। उसे यह तनिक भला न लगा। वह भी इसका अवश्य बदला लेगी। इस घर के ऊपर उसका जो चिरकाल से अधिकार चला आया है, कुमुद ने उसी पर फिर दुबारा अधिकार जमाने का काम शुरू कर दिया।

कुमुद ने पहले तो भैया के खानसामा गोकुल को फुसफुस करके कुछ कह दिया। फिर बाद में अपनी इच्छा के अनुसार घर सजाने लगी।

प्लेट, प्याला, लैंप, सोडावाटर की खाली बोतलें, बेंत की फटी चौकी, मैले तौलिये और बनिआइनें सभी एक ओर से हटाकर बरामदे में रख दिये। आलमारी के ऊपर सिलसिलेवार किताबें सजा दीं। एक तिपाई सरकाकर भैया के हाथ के पास कर दी, और उसके ऊपर किताबें, कलमदान, ब्लाटिंग-पैड, पीने का पानी, काँच की सुराही और गिलास तथा छोटा-सा एक शीशा और कंघी, ब्रश आदि सब ठीक से सजाकर रख दिये।

कुछ देर के बाद पीतल के एक जग में गरम पानी, पीतल की एक चिल-मची तथा एक साफ तौलिये को लिए गोकुल वहाँ आया, उसने बेंत के मोढ़े पर सब चीजें रख दीं। बिना भैया के कहे हुए ही गरम पानी में कुमुद ने तौलिया भिगोकर उनका हाथ-मुंह पोंछकर बाल काढ़ दिये।

शिशु की भाँति विप्रदास यह सहन कर गये। पथ्य के सब नियम तथा कब कौन-सी दवा पिलानी होगी, इन सब बातों की जानकारी रखकर वह तत्परता के साथ बैठी, मानो उसके जीवन में और कोई दूसरी जिम्मेदारी ही नहीं है।

विप्रदास मन-ही-मन सोचने लगे—मैंने सोचा था, वह मिलने आई है, फिर चली जायगी, किन्तु इस प्रकार के लक्षण तो दृष्टिगोचर हो नहीं रहे हैं, इसका क्या मतलब है। विप्रदास उसके ससुराल के सम्बन्ध के विषय में यह जानना चाहते हैं कि इसके साथ कैसा प्रेम है ? किन्तु यह सब पूछने से उन्हें लज्जा-सी लग रही है। वे इसी आशा में रहे कि कुमुद स्वयं ही अपने मन से बतायेगी। केवल धीरे से एक बार वे बोले—'आज तुझे कब जाना होगा ?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद बोली—'मुझे आना-जाना नहीं होगा ।'

आश्चर्यचकित होकर विप्रदास ने फिर कहा—'इसमें तेरी ससुराल वालों को कोई आपत्ति तो नहीं है ?'

'नहीं, इसमें तो मेरे पति की सम्मति है ।'

विप्रदास चुप बैठे रहे । कुमुद घर के एक कोने में टेबिल के ऊपर चादर बिछाकर उस पर दवा की शीशी, बोतल इत्यादि ठीक ढंग से सजाकर रखने लगी । कुछ क्षण के बाद ही विप्रदास ने पूछा—'आखिर क्या तुझे कल जाना ही पड़ेगा ?'

'नहीं, मैं कुछ दिन तो आप ही के पास रहूँगी !'

कोच के नीचे वह टाम कुत्ता शान्त होकर निद्रा की गोद में पड़ा था, कुमुद ने उसके ऊपर प्यार से हाथ फेर उसे जगा दिया—कुत्ता उछला और उसने अपने दोनों पैर कुमुद की गोद के ऊपर उठाकर अपनी ही भाषा के राग में अलापना-शुरू किया । विप्रदास को यह समझते देर न लगी ।

कुत्ते के साथ खेलना बन्द करके कुछ देर बाद कुमुद बोली—'भैया, तुम्हारे बार्ली पीने का वक्त तो हो गया, क्या उसे ले आऊँ ?'

'नहीं, अभी वक्त नहीं हुआ ।' इतना कहकर खाट ही के पास पड़ी हुई चौकी के ऊपर उन्होंने उसे बिठा लिया । अपने हाथ के ऊपर उसका हाथ लेकर बोले—'कुमुद, तेरे यहाँ कैसे चल रहा है, मुझसे साफ-साफ कह दे ।'

कुमुद से तुरन्त ही इसका जवाब देते न बन पड़ा । नीचे सिर किये वह बैठी रही, देखते-देखते उसका चेहरा लाल पड़ गया, बचपन की तरह भैया के वक्षस्थल पर अपना मुख रखकर रो उठी । बोली—'भैया, मैंने सब गलत ही समझा, मुझे मालूम न था ।'

कुमुद ने कहा—'मैं आरम्भ ही से केवल तुम्हीं लोगों को जानती हूँ । मैं यहाँ से दूसरी जगह जाकर इतनी भिन्नता पाऊँगी, ऐसा मैंने स्वप्न में भी न सोचा था । मैंने बचपन में जितनी भी कल्पनाएँ की हैं वह सब तुम्हीं लोगों के मूर्त्तिरूप में । इसी कारण मैं मन में तनिक भी न डर सकी थी । मैं इसे जानती हूँ कि बाबूजी ने माँ को अनेकों बार कष्ट दिये हैं किन्तु वह कष्ट उनका उपद्रव मात्र था । उसकी चोट बाहर की थी भीतरी नहीं, किन्तु यहाँ तो पूर्ण-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूप से मानो मेरा भीतरी अपमान है।'

बिना कुछ कहे हुए ही विप्रदास लम्बी साँस लेकर चुपचाप बैठे सोचते रहे। विवाह होने के पूर्व ही विप्रदास को यह मालूम हो गया था कि मधुसूदन उन लोगों से अलग एक दूसरी दुनिया का आदमी है। उसी के विषम उद्वेग ही के कारण सम्भव है उनका शरीर स्वस्थ न हो पाता हो। इससे कुमुद के उद्धार करने का तो कोई अन्य उपाय है नहीं क्योंकि कुमुद के कारण ही पुरुष के हाथ में उनकी बहुत सी सम्पत्ति रेहन में पड़ी है। इस अपमान की मार सम्बन्ध होने पर कुमुद को सता रही है। इतने दिनों रोगशय्या पर पड़े-पड़े विप्रदास यही सोचा करते हैं कि इस ऋण से मुक्त होने का क्या उपाय किया जाय। कलकत्ते आने का उनका विचार बिलकुल न था। वह इसीलिए आये हैं कि कुमुद की ससुराल में उनका स्वाभाविक व्यवहार असम्भव न हो जाय। कुमुद के ऊपर उनका जो अगाध प्रेमरूपी अधिकार है उस पद से कहीं लांछित न हो जायें। अतएव इसी कारण निश्चय किया था कि नूरनगर में ही रहेंगे। वे कलकत्ता आने के लिए इस बात पर मजबूर हुए कि वह काम बड़ी मुश्किल का है किन्तु फिर भी इसकी दुश्चिन्ता का भारी बोझ उनकी छाती पर रखा हुआ है।

कुछ देर बाद कुमुद ने विप्रदास की ओर से गर्दन को जरा दूसरी ओर फर लिया और बोली—'अच्छा भैया, मैं पति पर किसी भी भाँति अपने मन को प्रसन्न नहीं कर पाती हूँ, क्या यह मेरा पाप है ?'

'कुमुद, तुझे तो यह मालूम ही है कि पुण्य तथा पाप के बारे में मेरा मत शास्त्रों से नहीं मिलता ?

कुमुद, अन्यमनस्क हो एक अंग्रेजी सचित्र मासिकपत्र के पन्ने उलटने लगी। विप्रदास बोले—'भिन्न-भिन्न आदमियों की जिन्दगी अपनी घटनाओं और अवस्थाओं में आपस में एक दूसरे से इतनी भिन्न होती है कि अच्छे बुरे के साधारण नियमों को खूब पक्का करके बाँध देने में भी अक्सर यह नियम हो जाते हैं, धर्म नहीं रह जाते।'

मासिकपत्र की ओर नीची ही निगाह किये हुए कुमुद बोली—'जैसे मीरा-बाई का जीवन।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने हृदय के भीतर कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का द्वन्द्व जब किसी भी वक्त कठोर हो उठता है तभी मीराबाई की बात कुमुद को याद आ जाती है। वह पूर्णरूप से यही चाहती है कि मीरा के आदर्श को कोई उसे भली भाँति समझा दे।

कुमुद कुछ विचार-मग्न हो संकोच को दूर करने लगी। यह सोचने लगी—'मीरा बाई ने अपने यथार्थ पति को अपने हृद्स्थल ही में प्राप्त कर लिया था, इसी कारण वे सामाजिक पति को इस प्रकार मन से छोड़ सकी थीं, किन्तु क्या घर-गृहस्थी के इतने बड़े भार को छोड़ने का हक मुझे है ?'

विप्रदास ने कहा—'कुमुद, तुमने तो अपने ईश्वर को पूर्णरूप से मन-ही-मन प्राप्त कर लिया है।'

'मैं किसी समय ऐसा ही समझती थी, किन्तु संकट के आ जाने पर मैंने देखा कि मेरे प्राण सूख गये हैं। मैंने सैंकड़ों प्रयत्न किये किन्तु किसी भाँति मैं उन्हें अपने आगे सत्यरूप में प्राप्त न कर सकी। सबसे बड़ा दुःख तो मैं इसी को समझ रही हूँ।'

'कुमुद, हृदय के भीतर ज्वार-भाटा की लहरें उठा करती हैं। इसमें तनिक भी शंका करने की बात नहीं। बीच-बीच में रात्रि का आना लगा रहता है किन्तु इससे दिन के नाश होने की शंका तो नहीं होती। जो कुछ तुझे मिला है वह तेरे प्राणों के साथ मिलकर एकाकार हो गया है।'

'भैया मुझे ऐसा आशीर्वाद दो जिससे उन्हें भूल न सकूँ। वे निर्दयी हैं, दुःख पहुँचाते है—वे अपने हैं इसलिए।'

'भैया, मैं तुम्हें अपना सोच दिला-दिलाकर थकाये दे रही हूँ।'

कुमू, जब तेरा बचपन था तभी से तो मैंने तेरे विषय में सोचने का अभ्यास-सा कर लिया है। यदि आज तेरी बात जानना बन्द हो जाय और तेरे लिए सोचना बन्द कर दूँ तो मेरे लिए सब सूना-सा मालूम पड़ने लगे।'

'मेरा मन उसी शून्यता को टटोलते-टटोलते थक-सा गया है।

कुमुद ने विप्रदास के पैरों पर हाथ फेरा और बोली—'भैया, तुम मेरे लिए सोच न करो। जो रक्षा करने वाले हैं वे मेरे भीतर ही मौजूद हैं, भला इस भाँति मेरे ऊपर विपत्ति क्यों आवेगी !'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'अच्छा ये सब बातें जाने दे। मैं जिस भाँति पहले तुझे गाना सिखाया करता था, मेरे जी में आता है उसी भाँति आज भी तुझे सिखाऊँ।'

'भैया, मेरे अहोभाग्य थे जो तुमने मुझे गाना सिखाया था, वही तो मुझे बचाता है, किन्तु आज नहीं। जरा पहले ठीक तो हो जाओ। मैं तुम्हें एक गाना सुनाती हूँ।'

कुमुद भैया के सिरहाने के पास बैठकर धीरे-धीरे कुछ गाने लगी। उसी गाने को विप्रदास आँखें मींचकर सुनने लगे। एक अपूर्व दर्शन के कारण कुमुद की आँखें गाते-गाते भर आईं। उनका अन्तस्तल खूब आलोकित हो उठा। घर में प्रियतम आये हैं, उनके चरणों का स्पर्श उसके हृदय से हो रहा है। उनका अन्तर्लोक अत्यन्त सत्य हो उठा और वही जैसा कि मिलन होता है। गाते-गाते वह उन चरणों पर पहुँच गई है जिनके ऊपर उसकी लगन लगी हुई है और वह जिन पर बलिहार हो रही है उसने अपने जीवन को उन चरण कमलों पर न्यौछावर कर दिया है। संसार में उसके लिए दुःख अपमान की जगह नहीं रही, यही क्या कम है? यदि यह गाना कभी खत्म न हो तब तो चिरकाल के लिए कुमुद बच गई।

तिपाई के ऊपर गोकुल रोटी, टोस्ट और एक प्याला बार्ली लाकर रख गया। गाने को रोककर कुमुद बोली—'भैया, कुछ दिन तो मैं पहले मन-ही-मन गुरु ढूंढ़ रही थी; किन्तु तुमने ही तो मुझे गान का मन्त्र दिया है, अब गुरु की कौन-सी आवश्यकता!'

'कुमू, तू मुझे शर्मिन्दगी में न डाल। मुझ जैसे गुरु तो हर गली में मिल सकते हैं। वे जो दूसरों को मन्त्र देते हैं उसका अर्थ वे स्वयं ही नहीं जानते, कुमू, ठीक से मुझे यह तो बता कि यहाँ कब तक रह सकती हो?'

कुमुद बोली—'जितने दिन बुलावा न आवे।'

'क्या तू यहाँ आना चाहती थी?'

'नहीं, मैं नहीं चाहती थी।'

'इसके क्या माने?'

'भैया, माने के अर्थ सोचने से कोई लाभ नहीं, तुम कोशिश करने पर भी सम्भव है न समझ सको। मैं तुम्हारे पास पहुँच सकी हूँ, यही बहुत है। मैं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज़ितने दिन रह सकूँ उतना ही बहुत अच्छा है। भैया, पहले खा तो लो, तुम खा तो रहे ही नहीं हो।'

नौकर ने आकर खबर दी—'मुकर्जी साहब आये हैं।'

जरा व्यस्त होकर विप्रदास बोले—'उन्हें यहाँ बुला लाओ।'

छियालीस

ज्योंही कालू ने घर के भीतर कदम रखा, त्योंही कुमुद ने उसे प्रणाम किया। कालू बोला—'छोटी लल्ली! तू आ गई? अब तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि भाई साहब को जल्द ही आराम हो जायगा।'

आँखों में भरी हुई आँसुओं की बूँदों को सँभालकर कुमुद बोली—'भैया, बार्ली में नींबू नहीं निचोड़ोगे?'

अनिच्छा दिखाते हुए-से विप्रदास ने हाथ हिला दिया और बोले—'कोई आवश्यकता नहीं।' कुमुद को यह मालूम है कि भैया को बार्ली अच्छी नहीं लगती, इसलिए वह जब कभी उन्हें बार्ली खिलाती थी उसमें नींबू का रस, थोड़ा-सा गुलाब जल और बर्फ डालकर उसे शरबत-सा बना देती थी। उस भाँति का आयोजन आज नहीं है, किन्तु फिर भी विप्रदास ने अपनी इच्छा किसी को नहीं बताई। सामने आ जाने वाली वस्तु को वे शान्त-भाव और अरुचि के साथ खा लेते।

कुमुद बार्ली को ठीक तरह से बना लाने के लिए बाहर गई। विप्रदास उद्विग्न होकर कालू से पूछने लगे—'कहो भैया, क्या समाचार है?'

'तुम्हारे अकेले के दस्तखत करने से कोई भी कर्ज देने पर राजी नहीं होता। सुबोध का भी दस्तखत होना जरूरी है। मारवाड़ी धनियों में से कोई-कोई दे सकता है। किन्तु वह सट्टे का खेल-सा समझो। उसमें ब्याज की अधिकता है अतएव अपने को वह पुसायेगा नहीं।'

'कालू भैया, अब देर करनी ठीक नहीं, सुबोध के आने के लिए उसे तार देना ही होगा।'

'मुझे भी अच्छे ढंग नहीं दीख पड़ते। उस बार तुम्हारी अँगूठी बेचकर असली कर्जे में से कुछ चुकता करने के लिए जो रुपया ले गया था, उसे लेने

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को मधुसूदन राजी ही नहीं हुआ। मुझे उसी समय मालूम हो गया कि मामला जरूर बेढंगा है। अपनी इच्छा के अनुसार कब किस दिन फाँस में डाल दे इसे कौन कह सकता है ?'

विप्रदास शान्त भाव से सोचने लगे।

कालू ने कहा—'भाई साहब, आज सवेरे ही जो छोटी लल्ली अचानक आ पहुँची, बिगड़कर और नाखुश करके तो नहीं आई ? मधुसूदन को नाराज करने योग्य अभी मेरी अवस्था नहीं है। हम लोगों को यह बात याद रखनी है।'

'नहीं, कुमुद तो कह रही है कि उसके यहाँ आने में उसके पति की सम्मति है।'

'उस सम्मति का रूप कैसा है ? उसे बिना देखे मन निश्चिन्त नहीं होता। कितनी सावधानी के साथ बर्ताव करता हूँ, भाई साहब, मैं उसे तुमसे किस भाँति बताऊँ ? क्रोध से जलती हुई देह को भी मैंने शान्तिपूर्वक ठण्डा किया है। गौरीशंकर पर्वत की भाँति भरी दुपहरी में भी बर्फ नहीं गलती। एक तो महाजन का होना, दूसरे बहनोई भी हैं, सो इस प्रकार उन्हें निभाना टेढ़ी खीर है।'

विप्रदास बिना कुछ जवाब दिये ही पड़े-पड़े चुपचाप कुछ सोचने लगे।

इतने ही में कुमुद बार्ली लेकर आ गई। विप्रदास के मुँह के पास प्याला ले जाकर बोली—'भैया, लो इसको पहले पी तो लो।'

विप्रदास चिन्तारूपी स्वप्न से जागकर सहसा चौंक पड़े। कुमुद को इसे समझने में तनिक भी देर न लगी कि भैया अवश्य ही किसी गहरे उद्वेग में डूबे हुए थे।

कालू के कमरे से बाहर निकलने पर कुमुद भी उसके साथ-ही-साथ गई और बरामदे में पहुँचकर बोली—'कालू भैया ! बात क्या है, मुझसे तुम्हें सब बातें कहनी ही पड़ेंगी।'

'क्या कहनी पड़ेंगी, बहन ?'

'लल्ली ! जमीन-जायदाद होने पर भी किसी को चिन्ता न हो, संसार में ऐसा भी होता है ? यह तो काँटेदार वृक्ष का फल है। भूख लगने पर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसे तोड़कर खाना ही पड़ता है और तोड़ते समय सम्पूर्ण शरीर छिल भी जाता है।'

'अच्छा, मुझे बताओ तो क्या हुआ है ? यह सब बातें अन्त में होंगी।

'लड़कियों को जमींदारी सम्बन्धी बातें बतलाना मना है।'

'अच्छा बताऊँ मुझे यह ठीक मालूम ही है कि तुम लोगों में किस विषय में बातचीत हो रही थी ?'

'अच्छा यही सही, बताओ ?'

'भैया के ऊपर मेरे पति का कर्ज है, इसी विषय में।'

कालू बिना कुछ जवाब दिये ही अपनी बड़ी-बड़ी आँखों को विस्मय की हँसी के साथ कौतुक के सहित फाड़-फाड़कर कुमुद के चेहरे की ओर देखता रहा।

'तुम्हें मुझसे सब बात बतानी ही पड़ेगी। मैंने ठीक कहा है या गलत ?'

'आखिर तू भैया की बहन ही ठहरी न। बात के बिना कहे ही तू पहले ही से सम्पूर्ण बात समझ जाती है।'

मधुसूदन ने विवाहोपरान्त जिस दिन से गर्वपूर्वक विप्रदास के महाजन होने की बात कही थी, उसी दिन से कुमुद अपने भैया के प्रति पति का अपमान समझने लग गई थी। अपने हृदय से वह यही चाहती थी कि वह मिट जाय। इसमें कुमुद को लेश-मात्र भी सन्देह करने की गुजाइंश न थी, कि भैया के मन में यह असम्मान काँटे की भाँति चुभ रहा है। उस दिन जबकि नवीन ने विप्रदास की चिट्ठी की व्याख्या की थी, उसी समय वह समझ गई थी कि इन सब का कारण लेन-देन ही है। इन सब बातों को कुमुद समझ गई कि भैया का शरीर इतना क्षीणकाय क्यों है और किस कार्य के लिए भैया कलकत्ता के लिए प्रस्थान कर आये हैं।

'कालू भैया, मुझसे तुम कदापि न छिपाओ। भैया सम्भवतः यहाँ किसी से कर्ज लेने ही आये हैं।'

'हाँ, रुपये आसमान से तो गिरते नहीं हैं। यहाँ से कर्ज लेकर ही तो वह कर्ज चुकाना पड़ेगा। नाते-रिश्तेदारों का कर्जदार बनना ठीक नहीं है।'

'हाँ, यह बात तो ठीक है, किन्तु रुपयों का इन्तजाम किये हो ?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'अब डरने की क्या बात, वह तो हो ही जायगा। मैं उसी की तो फिराक में घूम-फिर रहा हूँ।'

'नहीं, कोई ठीक इन्तजाम नहीं हुआ, इसे मैं जानती हूँ।'

'अच्छा छोटी लल्ली, यदि तुम सब जानती हो तो फिर मुझसे क्यों पूछ रही हो? लड़कपन में तुमने एक दिन मेरी मूंछें पकड़ीं और पूछा कि मूंछें क्यों होती हैं? मैंने कह दिया—'ठीक वक्त पर मूँछ के बीज बोने के कारण। बस वहीं से इस प्रश्न का अन्त हो गया था। यदि इस समय पूछती तो मुझे डॉक्टर बुलाने की आयश्यकता होती। संसार की समस्त वस्तुएँ तुम जान ही जाओ इसकी क्या आवश्यकता?'

'कालू भैया, मैं तुमसे साफ बताये देती हूँ कि भैया की समस्त बातों की मैं अवश्य जानकारी रखूँगी।'

'भैया की मूँछें किस प्रकार उगीं, यह भी?'

'देखो, इस भाँति बात को टालना ठीक नहीं। भैया के मुँह को देखते ही मैं समझ गई थी कि तुम रुपयों का प्रवन्ध नहीं कर सके।'

'मानो नहीं हुआ, उसको जानकर तुम्हें क्या लाभ होगा?'

'सो मैं नहीं जानती, किन्तु इस बात को मुझे जानना ही होगा, क्या दर-असल में तुम्हें रुपये उधार नहीं मिले?'

'नहीं, मुझे नहीं मिले।'

'आसानी से मिलना क्या सम्भव नहीं?'

'मिलेंगे जरूर, किन्तु कुछ दिक्कत उठानी पड़ेगी। बहन, यदि मैं तेरे झमेले में पड़ूँ और रुपयों की खोज में निकलूँ तो सम्भव है, काम ठीक हो जाय। अच्छा, अब मैं चला।'

कालू थोड़ी ही दूर जाकर लौट पड़ा और कुमुद से कहा—'लल्ली, तुम आज जो यहाँ आ गई हो, हमसे ठीक-ठीक कहना, इसमें कोई गड़बड़ी तो नहीं?'

'मैं इसे पूर्णरूप से नहीं जानती कि गड़बड़ी है या नहीं।'

'पति की राय मिल गई थी न?'

'बिना सम्मति माँगे ही उन्होंने दे दी थी।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'क्रोध में दी होगी ?'

'इसे तो मैं भली प्रकार कह नहीं सकती, किन्तु उन्होंने कहा था कि बिना बुलाये तुम्हारे यहाँ आने की आवश्यकता नहीं।'

'इसमें कोई बात नहीं, बुलाने के पहले चली जाना।'

'ऐसे जाने में आज्ञा-पालन का नियम भंग होता है।'

'खैर, इसे मैं देख लूंगा।'

आज भैया के ऊपर पड़ी हुई विपत्ति का सारा अपराध कुमुद ही को है— इस बात को याद किये बिना कुमुद न रह सकी। अपने को कठिन-से-कठिन विपत्ति में डालने की प्रबल इच्छा हो रही है। सुना है फल प्राप्ति के लिए बहुत से साधु-सन्त कंटक शय्या पर सोते हैं, कुमुद भी फल प्राप्ति की आशा से ऐसा करने पर राजी है। यदि कोई योगी या साधु-सन्त उसे फल-प्राप्ति का मार्ग दिखा दे तो वह उसके हाथ बिकने को तैयार है। ऐसा कोई होगा जरूर किन्तु उसका मिलना भी तो सम्भव नहीं। यदि वह स्त्री न होकर पुरुष होती तो कोई-न-कोई उपाय अवश्य ही करती। किन्तु मंझले भैया किस हृदय को लिये हुए समस्त भार बड़े भैया पर लादकर विलायत में जाकर बैठे हुए हैं ?'

कुमुद ने ज्योंही कमरे के भीतर प्रवेश किया उसकी नजर भैया पर पड़ी जो किसी चिन्ता में निमग्न छत की ओर देख रहे थे। ऐसा करने से भला शरीर किस भाँति सुधर सकता है ? भाग्य के विरुद्ध दरवाजे के ऊपर सिर धुन डालने की इच्छा होती है।

सिरहाने बैठकर भैया के माथे पर हाथ फेरते हुए कुमुद बोली—'मंझले भैया कब तक आयेंगे ?'

'कह नहीं सकता, कब तक आवेगा।'

'उन्हें आने के लिए खत क्यों नहीं लिखते ?'

'क्यों ?'

'कार्य का समस्त भार तुम्हारे ही उपर आ पड़ा है। इसे तुम किस प्रकार निभा पाओगे ?'

'दावादारी और जिम्मेदारी ही से संसार का कार्य चलता है। मैंने दावा-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दारी को छोड़ जिम्मेदारी ही ली है। मैं इसे दूसरे के लिये क्यों छोड़ूँ ?'

'यदि मैं पुरुष होती तो तुमसे जबर्दस्ती छीन लेती।'

'कुमुद, तब तो तू समझ सकती है, कि जिम्मेदारी को सिर के ऊपर लेना एक लालच है। उसे लेने में स्वयं तो असमर्थ है इसी से मँझले भैया पर लाद कर अपनी साध मिटाना चाहती है। भला यह तो बताओ कि मैंने ही कौन-सा ऐसा अपराध किया है ?'

'भैया, तुम यहाँ ऋण लेने आये हो ?'

'यह तूने कैसे समझा ?'

'मैं तुम्हारे चेहरे को ही देखकर समझ गई। अच्छा, क्या मैं कुछ भी नहीं कर सकती ?'

'किस भाँति ?'

'यों ही, मान लो किसी दस्तावेज पर दस्तखत करके। क्या मेरे दस्तखत का कुछ भी मूल्य नहीं है ?'

'बहुत अधिक, किन्तु वह मेरे लिए, किसी महाजन के लिए नहीं।'

'भैया, मैं तुम्हारे पैरों पर पड़ती हूँ, बताओ मैं क्या कर सकती हूँ ?'

'तू लक्ष्मी-सी लड़की बनकर शान्त बैठी रह और धीरज रखकर प्रतीक्षा करती रह। स्मरण रख, संसार का यह भी एक बड़ा भारी कार्य है। जिस प्रकार तूफान आने पर नाव सँभालना एक काम है उसी प्रकार मेरे इसराज को उठा ला और बजा तो !'

'भैया मेरी प्रबल इच्छा है कि मैं कुछ करूँ।'

'क्या इसराज बजाना कुछ काम नहीं है ?'

'इसराज का बजाना दस्तावेज पर दस्तखत करने की अपेक्षा अधिक कठिन काम है।'

'बाजे को उठा तो ला !'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सैंतालीस

एक दिन ऐसा था जबकि मधुसूदन से सभी डरते थे। श्यामा भी उसी भांति डरती थी। इस बात का अन्दाज श्यामा भले ही लगाया करती कि मानो मधुसूदन उसकी ओर कुछ झुके-से हैं, साथ ही उसे इस प्रकार से एक अन्दाज यह न मिलता था कि वह किस प्रकार से उसके समीप पहुँचे। वहाँ पहुँचने की उसने कोशिश भी की है किन्तु निष्फल ही रही है। मधुसूदन दत्त-चित्त होकर ही व्यवस्था को तैयार करने में लगा है। रुपये-पैसों के आगे उसने स्त्रियों को नितान्त ही तुच्छ समझा है, यही कारण है कि स्त्रियाँ उससे डरा करती हैं किन्तु इसमें भी एक आकर्षण है। श्यामसुन्दरी डर के कारण ही कलेजा काँपने और संकुचित व्यवहार के साथ तुच्छ आवरण की ओट से मुग्ध मन द्वारा मधुसूदन के निकट फिरती रही। वास्तव में उसे डर तभी लगा है जब मधुसूदन ने बीच-बीच में असावधानी से उसे थोड़ी शह दे दी है। इसके पश्चात् मधुसूदन ने कुछ दिनों तक इस बात की कोशिश कि वह स्त्रियों को अपने जीवन में हेय समझता रहे। यही कारण है कि श्यामा अब तक अपने को संयत रख सकी है।

मधुसूदन की शादी हो जाने के उपरान्त उससे अब रहा नहीं जाता था। अन्य स्त्रियों की भाँति यदि मधुसूदन कुमुद के साथ थोड़ी-बहुत अवज्ञा करता तो वह किसी भाँति सहने योग्य होती भी। किन्तु जब श्यामा ने देखा कि मधु-सूदन ऐसा व्यक्ति भी रास ढली करके किसी स्त्री के लिए अन्धवेग से उन्मत्त हो सकता है तब तो संयम की रक्षा उनके द्वारा हो सकनी कठिन है। वह इन दिनों पूर्ण हिम्मत के साथ आगे बढ़ रही थी और देख रही थी कि आगे बढा जा सकता है। बीच-बीच में कुछ विघ्न आ पड़ा है, किन्तु वह भी दूर हो जाता है। मधुसूदन के अन्दर की कमजोरी पकड़ी गई, इसी कारण अब श्यामा का भी जी धैर्य धारण करने में असमर्थ है। श्यामा को मधुसूदन ने अपनी ओर जितना आकर्षित किया था उतना और पहले, जब कि कुमुद पूर्व रात्रि में चली आई थी तब से इस समय तक देखा नहीं गया था। इसके बाद ही फिर श्यामा को डर-सा लगा, कहीं ऐसा न हो कि उसे जल्दी ठोकर लगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किन्तु वह समझ गई कि कायरता न दिखाई गई तो सम्भव है भय का कारण आप-ही-आप दूर हो जाय।

प्रातःकाल ही का निकला हुआ मधुसूदन दोपहर को एक बजे बाद घर लौटा है। इधर कुछ दिनों से उसके नहाने-खाने में इस भाँति का बेसिलसिला नहीं हुआ है। हारा-थका तथा अलसाया हुआ-सा वह घर लौटा है। आते ही उसे कुमुद की बात याद हो आई। कुमुद अपने भैया के घर प्रसन्न होकर चली गई है। मधुसूदन अभी तक अपने ही पैरों खड़ा था मालूम नहीं, उसने उसमें कब ढिलाई कर दी। कुमुद के चले जाने पर उसके हृदय में किसी रमणी से प्रेम करने की इच्छा जाग उठी, अतएव अनायास ही उसके चले जाने से उसे अपने ऊपर धिक्कार आया। भोजन के समय आज जान-बूझकर श्यामा उसके पास आकर न बैठी। सम्भव है केवल पकड़ाई में आ जाने के कारण क्रुद्ध हो गये हों। भोजन कर चुकने के पश्चात् मधुसूदन अपने ऊपर वाले सोने के कमरे में जाकर चुपचाप बैठा रहा, उसके बाद खुद ही उसने श्यामा को बुलवाया। श्यामा लाल रंग का एक विलायती दुशाला ओढ़े संकुचित भाव से कमरे में घुसी और नीची निगाह किये खड़ी हो गई। मधुसूदन ने उसे बुलाया—'आओ यहाँ आकर बैठो!'

सिरहाने के पास श्यामा ने बैठकर कहा—'तुम तो आज बड़े दुबले से दिखाई दे रहे हो।' और झुककर उसके माथे पर हाथ फेरने लगी।

मधुसूदन बोला—'ओहो, तुम्हारे हाथ तो बड़े ठण्डे हैं।'

रात को सोते वक्त, बिना बुलाए ही श्यामा आकर कहने लगी—'ओहो! क्या तुम अकेले ही हो?'

श्यामसुन्दरी ने कुछ प्रेम के साथ मानो सब पदार्थ खोलकर कह दिया जैसे सबको साक्षी रखकर वह निःसंकोच भाव से अपने अधिकार को पक्का कर लेना चाहती है। अब वक्त भी विशेष नहीं है न मालूम कुमुद कब आ जाय, अतएव इसके पहले ही दखल हो जाना चाहिए। खुले आम दखल करने में उसका जोर रहता है किन्तु संकेत में कब्जा का रह जाना ठीक नहीं। यह हालत देखते-देखते नौकरों-चाकरों में भी बात फैल गई। हार्दिक इच्छा को मधुसूदन ने इतने दिनों से जो दबा रखा था वह उतनी जोर से बेरोक-टोक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उभड़ पड़ी। घर में किसी की परवाह किये बिना ही उसने अपनी उन्मत्तता प्रकट कर दी।

नवीन और मोती की माँ दोनों समझ गए कि इस बात को अब रोकना कठिन है।

मोती की माँ ने कहा—'अब दीदी को न बुलाने में बुराई है।'

'अब उन्हें बुलाने में विलम्ब न करना चाहिए।'

'अच्छा, यही तो मैं भी सोचता था, किन्तु बिना भाई साहब के हुक्म के यह कैसे होगा, किन्तु कोशिश करके देखूँगा।'

भाई साहब से बात करने का विचार किए हुए जिस दिन नवीन अपने दक्ष दिमाग के साथ वहाँ पहुँचा तो देखा कि गाड़ी तैयार खड़ी है और भाई साहब कहीं जाने को तैयार हैं।

नवीन बोला—'भैया, कहीं जा रहे हो क्या ?'

संकोच को दूर करते हुए मधुसूदन बोला—'हाँ, उसी वेंकट स्वामी ज्योतिषी के पास।'

वह नवीन के सामने अपनी कमजोरी को दबाये रखना चाहता था। सहसा उसे याद आया कि इसे साथ ले चलने में कुछ सहूलियत ही मिलेगी अतः बोला—'मेरे साथ चलो।'

यह तो बुरी तरह आ फंसे ! नवीन ने सोचकर कहा—'पहले उसे घर पर जाकर देख आऊँ कि वह है या नहीं। उसके जाने की बात थी इससे मुझे तो जान पड़ता है कि वह देश चला गया।'

मधुसूदन बोला—'अच्छी बात है, चलो देख आवें।'

निरुपाय होकर नवीन साथ चल पड़ा, किन्तु उसके मन में प्रमाद ही भरा था।

गाड़ी ज्योंही जाकर ज्योतिषी के मकान के पास रुकी, त्योंही उतर कर जरा अचकचा कर नवीन ने कहा—'मालूम होता है कि कोई मकान में है नहीं।'

नवीन के इतना कहते ही वेंकट स्वामी स्वयं मुँह से दातौन चबाते आकर दरवाजे पर खड़े हो गए। नवीन ने तेजी से आगे बढ़कर उन्हें प्रणाम किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और बोला—'कृपया सावधानी से बात कहिएगा।'

उस पुराने अन्धकारमय कमरे में सभी बैठ गये, किन्तु नवीन तो मधुसूदन के पीछे ही बैठा। बिना मधुसूदन के बोले ही नवीन ने कहा—'आजकल महाराज साहब के दिन बड़ी बुरी तरह बीत रहे हैं। शास्त्रीजी बताइए, ग्रहदशा कब ठीक होगी?'

नवीन की जांघ को मधुसूदन ने अँगूठे से दबा दिया, क्योंकि उसे यह ढीला-ढाला प्रश्न अच्छा न लगा।

वेंकट स्वामी ने राशिचक्र देखकर बिलकुल स्पष्ट कर दिया कि मधुसूदन के धन-राशि पर शनि की दृष्टि लगी है।

ग्रह आदि का नाम जानकर उसे कोई लाभ नहीं, उससे समझौता होना कठिन है। जो-जो व्यक्ति उससे शत्रुता कर रहे हैं साफ तौर से उन्हीं का ही परिचय चाहिए। वर्णमाला के चाहे किसी भी वर्ग में क्यों न हो, किन्तु नाम निकालना ही होगा। मधुसूदन के ऑफिस का हाल नवीन बिलकुल न जानता था इसी में दिक्कत थी। संकेत द्वारा भी कुछ मदद नहीं कर सकता। मुग्धबोध के रटे हुए सूत्र को शास्त्रीजी दुहराते जाते और तिरछी निगाह से मधुसूदन के चेहरे की ओर देखते जाते थे। भृगुमुनि आज तो नाम बताने में बिलकुल ही चुपकी साधे हैं। सहसा शास्त्री जी कह बैठे—'एक स्त्री शत्रुता कर रही है।

नवीन की जान-में-जान आई। किसी भांति यदि कहला दिया जाय कि वह स्त्री श्यामसुन्दरी है तो फिर क्या सभी चिन्ता दूर हो जाय। मधुसूदन नाम चाहता है। अतएव शास्त्रीजी ने अब वर्णमाला के अक्षर गिनने प्रारम्भ किए। कवर्ग कहकर मानो वे भृगुमुनि की ओर कान लगाए रहे। तिरछी नजर से मधुसूदन की ओर देखते रहे। मधुसूदन के चेहरे पर कवर्ग सुनते ही क्षणमात्र के लिए एक चमक-सी दौड़ गई। नवीन उधर पीछे से नहीं का इशारा करने के लिए दाईं-बाईं ओर गर्दन हिलाने लगा। बेचारे नवीन को भला क्या मालूम कि मद्रास में इसी इशारे का प्रतिकूल अर्थ लगता है। वेंकट स्वामी को सन्देह न रहा, वे कण्ठ पर जरा जोर देकर बोले—'कवर्ग' मधुसूदन के मुँह का भाव देखकर समझ लिया कि 'कवर्ग' का पहला ही वर्ण है। इसी से उसकी थोड़ी-सी और व्याख्या कर दी—'क' में ही मधुसूदन का सारा 'कु' है—अर्थात्

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुराई या अशुभ ।

इसके बाद पूरा नाम न जानकर या बिना इस पर जोर दिए ही मधुसूदन ने उतावली में पूछा—'इसका प्रतिकार भी बताइए ।'

गम्भीरतापूर्वक वेंकट शास्त्री बोले—'कंटके' नैव कंटक अर्थात् इसका उद्धार भी किसी स्त्री ही द्वारा होगा ।

वेंकट शास्त्री ने मानव चरित्र का अध्ययन किया है, यह सोच मधुसूदन चकित हो उठा ।

चंचल हो नवीन ने पूछा—'स्वामी जी, क्या महाराज का घोड़ा घुड़दौड़ में जीत गया ?'

वेंकट स्वामी को यह विदित है कि अधिकांश घोड़े रेस में नहीं जीतते अतएव कुछ हिसाब लगाने का-सा बहाना बनाकर कह दिया—'हानि ही तो दिखाई देती है ।'

मधुसूदन के घोड़े ने कुछ हो दिन हुए अभी जबर्दस्त बाजी मारी है । मधुसूदन को बिना किसी बात के करने का अवसर दिये ही मुंह के ऊपर एक शोचनीय विचार-सा लाकर नवीन बोला—'स्वामी जी मेरी लड़की कैसे पार उतरेगी ?' इसे कहने की कोई आवश्यकता नहीं कि नवीन के कोई लड़की नहीं है ।

वेंकट स्वामी ने अन्दाज से समझ लिया कि वर की तलाश में हैं । साथ ही नवीन के चेहरे को ताड़ लिया कि लड़की अप्सरा होगी नहीं, अतएव कह दिया—'पात्र मिलने में विलम्ब लगेगा और बहुत से रुपये खर्च करने होंगे ।'

नवीन ने मधुसूदन को जरा भी बोलने का मौका नहीं दिया और इसी भाँति उलटे-पलटे दस-बारह प्रश्न किये और उन प्रश्नों का विचित्र उत्तर मिला । नवीन बोल उठा—'भाई साहब क्या सोचते हो, अब चलो न ।'

ज्योंही नवीन गाड़ी पर बैठा, मधुसूदन से कहने लगा—'ढोंगी कहीं का ! 'भाई साहब इसकी चालाकी देखी या नहीं ?'

'किन्तु उस दिन तो···।'

'उस दिन इसने पहले ही से पता लगा लिया था ।'

'वह कैसे जान गया कि मैं आऊँगा ?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'मेरी मूर्खता थी, मेरी गलती हुई जो मैं उसके पास तुम्हें ले आया।'

ज्योतिषी की यह समस्त बातें ढकोसले की ही न हों किन्तु मधुसूदन के मन में कवर्ग का 'क' चुभा ही रहा। सोचकर देखा कि नक्षत्रों का अनादर करके फुटकर प्रश्नों का अन्ट-सन्ट उत्तर देता है किन्तु असली प्रश्नों के उत्तर में त्रुटि होती ही नहीं। जिसे मधुसूदन ने स्वप्न में भी न विचारा था, वही दुःखमय उसके विवाह के साथ ही साथ आया। इससे बढ़कर और दूसरा स्पष्ट प्रमाण और क्या है।

नवीन ने धीरे-धीरे चर्चा की—'भाई साहब, बहूरानी को गये पन्द्रह दिन बीत गये। अब उन्हें बुलाना चाहिए।'

'जल्दी किस बात की है? नवीन देखो, मैं तुमसे साफ बताये देता हूँ। हमारे सामने अब कभी ऐसी बातें तुम छेड़ा न करना; जिस दिन मेरी खुशी होगी, उस दिन बुला लेंगे।'

भाई साहब को नवीन भलीभाँति पहचानता है। समझ गया कि सब बातें समाप्त हो गईं। फिर भी हिम्मत करके पूछ ही लिया—'यदि मँझली बहूरानी से मिलने के लिए जायँ तो इसमें कोई हर्ज है?'

अवज्ञा के साथ संक्षेप में मधुसूदन ने कहा—'हाँ, चली जायें।'

अड़तालीस

विप्रदास ने आरामकुर्सी की ओर संकेत करके कहा—'आइए नवीन बाबू, यहाँ बैठिये!'

नवीन ने कहा—'आप शायद मुझसे परिचित नहीं, मुझे राजघराने का आदमी समझते होंगे। यह गलत है। मैं आपकी छोटी बहिन का सेवक हूँ। आपको यह क्या हो गया। आपका इतना सुन्दर गठीला शरीर था, अब तो हड्डियाँ ही दिखाई पड़ती हैं।'

'शरीर को चैन कहाँ? ये तो हड्डियाँ ही हैं।'

इतने ही में कुमुदिनी आ गई। भीतर प्रवेश करते ही बोली—'देवर जी, चलो कुछ खा लो।'

'खाऊँगा, पर एक शर्त पर। जब तक वह पूरी न हो जायगी यह ब्राह्मण

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुम्हारे द्वार पर भूखा ही पड़ा रहेगा।'

'क्या शर्त है, सुनाओ तो ?'

'जब तक हमारे यहाँ थीं, अर्जी दे रक्खी। वहाँ बस नहीं चलता था। अपने भक्त को तुम्हें अपना एक चित्र देना होगा। उस दिन इनकार कर दिया था, आज इनकार नहीं हो सकता। वह चित्र तुम्हारे भैया के कमरे में सामने ही दीवाल पर टंगा है।'

अच्छे चित्र बिरले ही तैयार हो पाते हैं। चित्र पूरे कद का है। ऐसा लगता है कि अपना ही प्रतिबिम्ब देखकर ठिठक गई है। सुडौल दाहिना हाथ एक सादी कुर्सी के हत्थे पर पड़ा है और स्वयं दीवार पर जड़ी प्रतिमा की भांति खड़ी है।

कुमुदिनी की दृष्टि उस पर नहीं पड़ी। उसके भैया ने विवाह से कुछ दिन पहले कलकत्ते से एक चित्रकार बुलाकर यह चित्र तैयार करवाया था। उस दिन से यह चित्र उसके कमरे की शोभा बढ़ा रहा है। उसे देखकर कुमुद पानी-पानी हो गई। दूसरी कापी की आवश्यकता का अनुभव हुआ। भैया की ओर मुंह करके देखा। नवीन ने कहा—'समझ गये विप्रदास बाबू, बहूरानी की कृपा होने वाली है। देखो तो सही, इनकी आँखों की ओर तो देखो। मेरे अयोग्य होने पर भी ये मुझ पर विशेष कृपा करती हैं।'

विप्रदास ने कहा—कुमुद मेरे चमड़े के केस में कुछ और भी चित्र पड़े हैं। तू यदि देना चाहे तो कोई हर्ज नहीं।'

कुमुद जब नवीन को भोजन करने के लिए अन्दर ले गई तो उस समय कालू घर में आया और बोला—'मैंने छोटे बाबू को जल्दी घर आने के लिए तार दे दिया।'

'मेरे नाम से ?'

'हाँ, आपके नाम से ही भाई साहब ! मुझे पता है आप अन्तिम समय तक 'हाँ' न करेंगे। समय बड़ा खराब है। डॉक्टर से जो कुछ सुना उससे मालूम होता है कि तुम पर अब अधिक चिन्ता का भार डालना ठीक नहीं।'

डॉक्टर ने कहा कि हृदय और फेफड़े में खराबी के लक्षण आ गये हैं। आराम की बहुत आवश्यकता है किसी समय विप्रदास को पहलवानी का शौक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। यह उसी का फल है और फिर उसके साथ मिल गई हैं हजारों घरेलू चिन्ताएँ।

सुबोध को जबरदस्ती बुलाना ठीक होगा या नहीं, इसे वे चुपचाप सोचने लगे। कालू ने कहा—'बड़े बाबू, आप व्यर्थ चिन्तित हैं। जमींदारी ने बारे में कोई अस्थाई निर्णय इसी समय हो जाना चाहिए और इसका काम सुबोध के सामने होना आसान नहीं। बारह प्रतिशत ब्याज तो मारवाड़ी महाजन के मामने सिर नहीं उठाने देगा। दो लाख रुपया तो वह पहले ही ब्याज में जोड़ लेगा। इसके अतिरिक्त कमीशन भी देना होगा।'

विप्रदास ने कहा—'अच्छा, आने दो सुबोध को। क्या वह आ जायगा!'

'कितने ही बड़े साहब क्यों न हों, आपका तार मिलते ही वे ठहरेंगे नहीं, इसके लिए आप निश्चिन्त रहें। अब देर करना ठीक नहीं, लल्ली को ससुराल भेज दीजिए।'

विप्रदास पहले तो चुप रहे, फिर बोले—'मधुसूदन के बुलाये बिना भेजना ठीक नहीं।'

'क्यों, क्या लल्ली मधुसूदन की चेरी है? अपने घर जाएगी, इसमें हुक्म की क्या बात है?'

भोजन करने के बाद नवीन अकेला विप्रदास के कमरे में आया। विप्रदास ने कहा—'कुमुद तुमसे बड़ा प्रेम करती है।'

'हाँ, शायद मैं इस योग्य नहीं, इसीलिए इतना अधिक प्रेम करती है।'

'इसके बारे में तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ, तुम मुझसे कोई बात गुप्त न रखना।'

'मेरी यह आदत नहीं। आपसे स्पष्ट कह दूंगा।'

'कुमुद अपने मन से यहाँ आई है, मुझे लगता है कि इसमें कोई गड़बड़ी है।'

'आपने ठीक समझा। जिसके असम्मान का ख्याल तक नहीं हो सकता दुनिया में उसका भी अपमान हो जाता है।'

'क्या अपमान हुआ?'

'इसीलिए तो मैं आया हूँ, और तो कुछ नहीं कर सकता। मन-ही-मन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्षमा माँग लूंगा ।'

कुमुदिनी यदि आज ससुराल वापस चली जावे तो कोई हर्ज है ?'

'सच कहूँ ? वहाँ जाने की बात करने का तो मुझमें साहस भी नहीं है । असल मामला क्या है, इस विषय पर नवीन से विप्रदास ने कोई बात नहीं की, उन्होंने सोचा कि कुछ पूछना उचित न होगा, और कुमुदिनी से भी वे किसी की चर्चा करने से अपने को बचाते रहे । मन में व्याकुल हो गये । कालू को बुलाकर पूछा—'तुम तो उनके पास आते-जाते हो, मधुसूदन के विषय में शायद कुछ जानते हो ?'

विप्रदास का हृदय सन्देह से टुकड़े-टुकड़े हो गया । बदला लेने का उपाय उनके पास नहीं था । चिन्ताओं के कारण उनका हृदय रह-रहकर पीड़ा से व्याकुल होता गया ।

उनचासवाँ

कुमुदिनी काफी दिनों से जिस बात की इच्छा कर रही थी, वह पूर्ण हो गई । अपने भैया के घर में, जिससे उसे असीम प्रेम था, वापस आ गई । किन्तु यहाँ आकर उससे देखा कि उसे यहाँ स्वाभाविक शान्ति नहीं प्राप्त हो सकी, जिसकी उसे आशा थी । अभिमान के कारण बार-बार उसके मन में आता कि वह लौट जाय । क्योंकि उसे भलीभाँति पता चला था कि हर एक व्यक्ति के मन में सन्देह उत्पन्न हो रहा है । वह लौट क्यों नहीं जाती ? उसे क्या हुआ है ? भैया के स्नेह में तनिक भी अन्तर न हुआ, किन्तु इस विषय में उनसे खुलकर बात नहीं हुई । अपनी स्थिति की उलझन के कारण वह एक रहस्यमय बनी हुई है ।

सन्ध्या का आगमन है, धूप कम होती जा रही है । शयनागार में खिड़की के निकट कुमुद बैठी है कौवे कांव-कांव कर रहे हैं । सड़क पर गाड़ियों की भाग-दौड़ और लोगों का कोलाहल सुनाई देता है । बसन्त ऋतु का आगमन नगर के ईंट पत्थर में हरियाली नहीं पहुँचा सकता । क्या इसलिए सामने की दीवार को छिपाये एक बादाम का वृक्ष लहरा रहा है, तीव्र वायु की सरसराहट पत्तों को हिलाकर दिन की अन्तिम धूप को बिखराती जाती है । जिस दिन से

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वायु में वसन्त के आगमन का अनुभव हुआ उसी दिन से हरी-भरी पृथ्वी आकाश
के उस दीर्घ मार्ग की ओर आँख फाड़-फाड़ कर देख रही है जो चारों ओर
अपनी नीली चादर फैलाकर पृथ्वी को घेरे हुए है। संसार मनोहर दिखाई पड़
रहा है। हृदय में एक अज्ञान अनुभव उत्पन्न हो रहा है, जिका चित्र खींचने
में संसार के बड़े-से-बड़े चित्रकार असमर्थ हैं और काल्पनिक छाया आकाश
और पृथ्वी, समुद्र और पर्वत पर आँख के जरा से इशारे से यहाँ और वहाँ
जा रही हैं। हृदय छाया को खोल रहा है। कुमुद का हृदय काँप रहा है
और सब कुछ छोड़ कर भागने ही की इच्छा हो रही है। आज इस घर में भी
शान्ति नहीं। कल्पना की उड़ान ने मृत्यु को भी आकर्षक बना दिया है। मन-
ही-मन बोली—सवेरे जमुना किनारे खड़े वही साँवरे कन्हैया! जिनकी खोज
में चली हूँ दिन और कितनी लम्बी यात्रा! सहसा उसे याद आ गई भैया की
बीमारी, जो बढ़ रही है। उनकी सेवा करने आई थी। मैंने ही आकर रोग
बढ़ाया, अब जो कुछ करूँगी वह उलटा होगा। दोनों हाथों से मुँह ढाँक कर
कुमुदिनी रोने लगी। रोना कम होने पर उसने निश्चय किया कि वह घर
वापस लौट जायगी। जो कुछ भी होगा, देखा जायगा, सब कुछ सह लेगी।
आखिर कभी तो मुक्ति मिलेगी ही, शान्तिदायक, आनन्दप्रद और मधुर!
मत्यु का विचार जितना भी उसके हृदय में जमता जाता, उसे अपना जीवन-
भार हलका प्रतीत होता। वह मन-ही-मन गुनगुनाने लगी—

'पथ पर रैन अँधेरी, कब्ज पर दीप उजियारा।'

दोपहर को कुमुद भैया को सुलाकर चली आई थी। अब दवाई देने का
समय हो गया था। कमरे में जाकर देखा तो विप्रदास बैठे सुबोध को अंगरेजी
में पत्र लिख रहे हैं। कुमुद ने जल्दी से कहा—भैया, आज तुम अच्छी तरह
सोये भी नहीं।'

विप्रदास ने कहा—'तुमने समझ रखा है कि सोने से ही आराम मिलता
है। नहीं, मन यदि चिट्ठी लिखने की आवश्यकता का अनुभव करता है तो चिट्ठी
लिखने से ही शान्ति मिलती है।'

कुमुद ने सोचा—इनकी यह बहिन कितनी अभागिनी पैदा हुई। भया को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाय पिलाने के बाद धीरे से कहा—'काफी दिन हो गये भैया, अब घर जाना ठीक होगा।'

विप्रदास ने कुमुद के मुँह की ओर देखकर यह समझने की चेष्टा की कि इस बात की जरूरत क्यों पड़ी। लिखना बन्द कर दिया। कुमुद को बुलाकर उसके माथे पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगे। कुमुद ने उनके मनोभावों को समझ लिया। गृहस्थी के बन्धन कड़े हो गये हैं किन्तु प्रेम में अन्तर नहीं आया। आँखों से आँसू लुढ़कना चाहते थे उन्हें जबरदस्ती रोक लिया। कुमुद ने मन में विचार किया—'इस स्नेह पर भार नहीं डालूंगी।' इसके बाद फिर उसने विप्रदास से कहा—'भैया, मैंने जाने का निश्चय कर लिया है।'

विप्रदास क्या उत्तर दें, कुछ सोच न सके। सम्भव है कुमुद के जाने में भलाई हो। कम-से-कम कर्त्तव्य तो यही है, चुप बैठे रहें। कुत्ता इतने में जाग गया और कुमुद की गोद में दोनों पाँव रखकर विप्रदास की जूठन खाने के लिए आगे बढ़ने की अनुमति चाहने लगा।

नौकर रामस्वरूप ने आकर सूचना दी कि कालू भैया आये हैं। कुमुद असमंजस में पड़कर बोली—आज दिन को तुम सोये नहीं। कालू भैया से बहस करते-करते थक जाओगे। मैं चली जाती हूँ। कोई बात हुई तो सुन आऊँगी, फिर तुमसे वक्त पर कह दूंगी।'

'तू बड़ी डॉक्टर बन गई है न। एक आदमी की बात कोई दूसरा सुन आये, इससे रोगी के मन को सन्तोष प्राप्त होगा, यह खूब सोचा है!'

'अच्छा मैं सुनूंगी, लेकिन आज रहने दो।'

किसी अंग्रेज कवि ने कहा है—'सुना हुआ गीत स्वादिष्ट होता है किन्तु सुनाया हुआ इससे बढ़कर स्वादिष्ट होता है। सुनी हुई खबर थकावट पैदा कर सकती है किन्तु उसके गुप्त रखने से और भी कष्ट बढ़ता है इसलिए शीघ्र ही सुन लेना चाहिए।'

'मैं पन्द्रह मिनट बाद आऊँगी। यदि उस समय तक तुम्हारी बात न खतम हुई तो मैं इसराज बजाना शुरू कर दूंगी।'

'अच्छा मंजूर है।'

आधे घण्टे बाद हाथ में इसराज लिए कुमुदिनी ने प्रवेश किया। विप्रदास

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के भाव को देखकर उसी समय इसराज को दीवार के सहारे कोने में रखकर उनके पास आकर बैठ गई, और उनका हाथ पकड़कर पूछने लगी—'क्या हुआ भैया ?'

कुमुद विप्रदास में जो उत्साह देख रही है, उसमें एक प्रकार की गम्भीरता पाई जाती है। विप्रदास का जीवन कष्टों और विपत्तियों से भरा पड़ा है, किन्तु किसी भी संकट में उन्हें भयभीत होते नहीं देखा गया। पढ़ना-लिखना, गाना-बजाना, दूरबीन के सहारे देखना, घुड़दौड़, पौदे लगाना और उपवन को आकर्षक बनाना आदि विभिन्न कार्यों में व्यस्त रहने से उन्होंने कष्ट का अनुभव तक नहीं किया था। इस बार बीमारी के जोर ने उन्हें बहुत अधिक कमजोर कर दिया है। वे बाहरी मनोरंजन की इच्छा रखते हैं और पत्रों का उत्तर तुरन्त न मिलने से अत्यधिक दुःखी हो जाते हैं। चिन्ताओं के कारण घुन की भाँति पिसे जा रहे हैं। यही कारण है कि कुमुद का भैया से जो प्रेम है, उसने मातृत्व का स्थान प्राप्त कर लिया है। उसके आत्मसंयम ने भैया के स्वभाव में बचपन-सा पैदा कर दिया है। इतना निरादर, इतनी हठ तथा गर्व और इतनी गम्भीरता।

कुमुद ने आकर देखा कि भैया का क्रोध शान्त हो गया है किन्तु उनकी आँखों से निकलने वाली लटें भगवान शंकर के तीसरे नेत्र की भाँति धधक रही हैं—किसी व्यक्तिगत कमजोरी के कारण नहीं, आँखों के सामने वे संसार का कोई पाप देख रहे हैं और ये लपटें उन्हें जला कर राख करना चाहती हैं। कुमुद की बात का कोई उत्तर दिये बिना सामने की दीवार पर ध्यान जमाये विप्रदास चुप बैठे रहे।

कुमुद ने क्षण भर बाद पूछा—'क्या हुआ भैया, बताओ तो सही।'

विप्रदास ने मानो किसी दूसरी ओर ध्यान देते हुए कहा—'कष्ट से बचने का प्रयत्न विपत्ति का कारण होता है, इसलिए विद्वानों ने कहा है कि इसे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए।'

'तुम आदेश दो, मैं पालन करूंगी भैया।'

'मैं देखता हूँ स्त्रियों को किस प्रकार अपमानित किया जाता है। किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं सम्पूर्ण समाज के द्वारा।'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुमुद भैया की बात अच्छी तरह न समझ सकी ।

विप्रदास ने कहा—'जिस दर्द को अपना समझ रहा था, आज समझ में आया कि उसके साथ संघर्ष भी करना होगा ।'

विप्रदास के गोरे किन्तु आजकल के पीले चेहरे पर लाली की लहर दौड़ गई । उनकी गोद में रेशमी कपड़े का बेलदार तकिया था, उसे उन्होंने धक्का देकर दूर फेंक दिया । बिस्तर से उठकर पास की कुर्सी पर बैठना ही चाहते थे कि कुमुद ने उनका हाथ थामकर कहा—'धैर्य धरो भैया, उठो मत, जी और भी खराब हो जायगा ।' और उसने उन्हें ऊँचे तकिये के सहारे लिटा दिया ।

विप्रदास ने अपनी ओढ़ने वाली चादर को मुट्ठी में दबाकर कहा—'सहन करने के अतिरिक्त स्त्रियों के लिए और कोई मार्ग नहीं । इसलिए उन्हें बार-बार कष्ट सहना करना पड़ता है । अब यह कहने के दिन गए कि सहन नहीं करेंगी ।' कुमुद, तू यहाँ अब अपना घर समझ कर रह । अब तेरा ससुराल जाना न होगा । कालू से आज विप्रदास ने काफी बातें सुनी हैं ।

श्यामसुन्दरी के साथ मधुसूदन का जो सम्बन्ध है वह गुप्त तो था नहीं, सब पर प्रकट हो चुका था । दोनों काफी बेहया भी हो चुके थे । लोग उन्हें पापी समझते हैं, इसलिए वे दोनों भागे हुए थे । यही कारण था कि वे जनता की बातों पर भी ध्यान न देते थे । सुनने में आया है कि मधुसूदन ने श्यामा को मारा-पीटा है । श्यामा ने जब शोर मचाया और दोहाई दी तब मधुसूदन ने सबके सामने उससे कहा—'जा दूर हो यहाँ से कुलटा कहीं की !' निकल जा हमारे घर से !' किन्तु इससे भी कोई अन्तर न पड़ा । श्यामा के बारे में मधुसूदन ने अपना एक कर्त्तव्य समझ रखा है । श्यामा की इच्छा थी कि गृहस्थी के कार्य को मोती की माँ के स्थान पर वह स्वयं सँभाल ले, किन्तु इसमें भी बाधा उपस्थित हो गई । मधुसूदन को मोती की माँ पर पूर्ण विश्वास था और श्यामा पर विश्वास न था तथापि वह श्यामा के प्रेम में मस्त हो गया है । उसने समझ लिया कि श्यामा जाड़े में काम आने वाली रजाई है, उस पर बेल बूटे और फूल नहीं बने हैं और वह कोई ऐसी वस्तु नहीं जिसकी रक्षा बहुत आवश्यक हो । चारपाई के नीचे मिट्टी पर गिर जाने से भी उसमें कोई खराबी नहीं आती । वैसे ही आराम पहुँचाने वाली चीज बनी रहती है । श्यामा को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सँभालकर चलने की आवश्यकता नहीं। इसके अतिरिक्त श्यामा उसको हृदय से मानती है। उसके लिए वह सब कुछ सहन करने के लिए तैयार है। इस बात पर भरोसा होने के कारण मधुसूदन को पूरा विश्वास हो गया कि कुमुद की उपस्थिति में न जाने क्यों उसके आत्मविश्वास को पग-पग पर ठोकरें खानी पड़ती थीं।

मधुसूदन की मानसिक स्थिति का ज्ञान प्राप्त करने के लिए कालू को अधिक जाँच-पड़ताल नहीं करनी पड़ी। घर के नौकर-चाकरों में इस विषय पर काफी बातचीत होती रहती थी और मामले के बढ़ जाने के कारण अब काना-फूसी की आवश्यकता न थी।

ऐसा समाचार सुनते ही विप्रदास का कलेजा छलनी हो गया। मधुसूदन ने मामले को गुप्त रखने की कोशिश तक नहीं की। स्त्री का खुल्लमखुल्ला अपमान सरल है किन्तु स्त्री को इस प्रकार के पति के सुपुर्द कर देना समाज का सबसे बड़ा अत्याचार है और मजा यह कि निर्बल स्त्री को पति के अत्याचारों से बचाने के लिए कोई भी मार्ग नहीं है।

विप्रदास ने कहा—'कुमुद, अपमान सहन करना अनुचित नहीं, किन्तु अत्याचार सहना अनुचित है। अपनी जाति के प्रति अन्याय है। समस्त नारी जाति की ओर तुम्हें अपनी इज्जत बनाये रखने का दावा करना होगा। अगर इसी कारण समाज तुम्हें अधिक-से-अधिक दुःख देना चाहे तो कोई परवाह नहीं।

'भैया, तुम किस अपमान की बात कह रहे हो, मैं ठीक नहीं समझ सकी।'

'तो क्या सारी बातें नहीं सुनीं ?'

'नहीं तो।'

विप्रदास चुप रहे। एक क्षण बाद बोले—'नारी जाति के अपमान का दुःख मेरे सीने में खटक रहा है। क्या तुझे पता नहीं !'

कुमुद भैया के मुख की ओर देखती रही। थोड़ी देर बाद विप्रदास ने कहा—'स्त्रियाँ जीवन-पर्यन्त जो कष्ट झेलती हैं उसे मैं भूल नहीं सकता। मूर्ख समाज ही इसके लिए जिम्मेदार है।'

यहाँ पर भाई-बहन में मतभेद हो गया। कुमुद को अपने पति से काफी प्रेम था। वह जानती थी कि उनका हृदय कितना भावुक है। समस्त भूलों के

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होते हुए भी उसके बाबूजी बड़े आदमी थे। इस बात की याद से उसको चैन नहीं आता था। यहाँ तक की उसके पिता के जीवन में जो दुःखद घटना हुई थी उसमें भी वह अपनी माँ को अधिक जिम्मेदार समझती थी।

विप्रदास को अपने पिता के प्रति अत्यधिक श्रद्धा थी किन्तु नतिक पतन के कारण उसने माँ को इतना नीच भी नहीं समझा था। इसीलिए विप्रदास को इस बात का गर्व है कि उसका मन किसी प्रकार उन घटनाओं को नहीं भूल सकता।

विप्रदास ने कहा—'माँ का जो अपमान हुआ था वह नारी जाति का ही अपमान था। कुमुद, तू अपनी व्यक्तिगत बातों को भूलकर समस्त स्त्री-जाति का मस्तक ऊँचा करने के लिए तैयार हो जा। किसी प्रकार इस काम से मुख न मोड़ना।'

कुमुद ने सिर झुकाकर धीरे-से कहा—'बाबूजी को तो माँ से बड़ा प्रेम था, यह तो मुझे याद है भैया! और इससे तो काफ़ी भूलों का प्रायश्चित हो जाता है।'

विप्रदास ने कहा—'मैं जानता हूँ। यदि इतना प्रेम होने पर भी वे आसानी से माँ को अपमानित कर सकते थे तो यह समाज का अपराध है। मैं समाज को क्षमा नहीं कर सकता। समाज में प्रेम नहीं—बिलकुल प्रेम नहीं है।'

'भैया, तुमने क्या कोई बात सुनी है?'

'हाँ, सुनी है। सब कुछ मैं धीरे-धीरे बताऊंगा।'

'मुझे डर लगता है कि आज की बातचीत से कहीं तुम पर और भी बुरा प्रभाव न पड़े।'

'नहीं कुमुद! इसका प्रभाव उल्टा न होगा। इतने दिनों के कष्ट से शरीर शिथिल पड़ गया है। आज तो मन कह रहा है कि जीवन के अन्तिम क्षण तक संघर्ष करना पड़ेगा। इसीलिए मेरे शरीर में आप-ही-आप उत्साह पैदा हो रहा है।'

'किस बात का संघर्ष भैया?'

'जिस समाज ने नारी के अधिकारों का संरक्षण करते हुए धोखा दिया है

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उससे युद्ध करना होगा।'

'तुम समाज का क्या बिगाड़ सकते हो भैया ?'

'मैं उससे राजी नहीं और क्या कर सकता हूँ इस पर विचार करना होगा। आज से मैं अपना कार्यारम्भ करता हूँ। इस घर में तेरे लिए रहने को स्थान है और यह तेरा अपना घर है। किसी समझौते के आधार पर नहीं, यहाँ तुम अपनी इच्छा और अधिकार से रहो।'

'अच्छा भैया, यह सब कुछ हो जायगा, पर तुम अधिक बातें न करो।'

इतने में खबर आई कि मोती की माँ आई है।

पचास

मोती की माँ को लेकर कुमुदिनी सोने के कमरे में जा बैठी। बातें करते-करते अन्धकार छा गया। दिया जलाने का समय हो गया था, किन्तु कुमुदिनी ने नौकर को दिया जलाने से मना कर दिया।

कुमुद ने सारी बातें सुनीं और चुपचाप बैठी रही।

मोती की माँ ने कहा—'हमारे घर में भूत आ गया। बहूरानी, तुम्हारा वहाँ जाना आवश्यक है। क्या तुम वापस जाओगी ?'

'क्या मुझे बुलाया गया है ?'

'नहीं, शायद बुलाने की याद तक न रही। किन्तु तुम्हारे गये बिना काम नहीं बनेगा।'

'मैं क्या कर सकती हूँ ? तसल्ली दे न सकूँगी और सोचा जाय तो यह सब मेरे ही कारण है। मैं जो भेंट कर सकती थी, उसे वे स्वीकार नहीं कर सकते थे, आज मैं खाली हाथ जाकर क्या करूँगी !'

'क्या कहती हो बहूरानी ? घर तो तुम्हारा है। वह तुम्हारे आ जाने से चल ही नहीं सकता।'

'बहन, घर से क्या मतलब समझती हो तुम ? बराबर माल-असबाब, नौकर-चाकर ? मुझे यह कहते लज्जा आती है कि इसमें मेरा कोई अधिकार है। जब अपने घर पर ही कोई अधिकार नहीं रहा तो फिर अन्य बाहरी चीजों पर मेरा कैसा अधिकार ?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

'क्या कहती हो बहूरानी, क्या तुम अब घर जाओगी ही नहीं ?'

'सब बातें भली प्रकार समझ में नहीं आ रही हैं। यद्यपि कुछ दिन पहले ईश्वर से प्रार्थना करती थी, किन्तु अब मेरा सारा विश्वास जाता रहा है। प्रारम्भ में तो लक्षण अच्छे थे किन्तु अन्त ठीक न रहा। कितनी ही बार बैठे-बैठे सोचती रही कि देवता की जगह भैया पर विश्वास रखती तो इतनी विरक्ति न आती। किन्तु इसके बावजूद मन में देवता के प्रति संशय उत्पन्न हो गया है, मुझको चैन नहीं मिलता। लाख प्रयत्नों के बाद भी अब तक केन्द्र के निकट ही खड़ी हूँ।'

'तुम्हारी बातों से मुझे भय लगता है। क्या घर जाओगी ही नहीं ?'

'यह सोचना कठिन है कि कभी जाऊँगी ही नहीं परन्तु जाना भी सरल नहीं।'

'अच्छा, तुम्हारे भैया से एक बात पूछ लूँ। देखें वे क्या कहते हैं। उनके दर्शन भी हो जायेंगे।'

'चलो, अभी ले चलती हूँ।'

मोती की माँ विप्रदास के कमरे में प्रवेश करते ही उनकी सूरत देखकर स्तब्ध रह गई। मानो वह प्रलय देख रही है। ऐसा मन्दिर जिसके दिये बुझ गये हैं और टूटी-फूटी अवस्था में है। अन्धकार और सन्नाटा है। मोती की माँ चरण-रज छूकर जमीन पर बैठ गई।

विप्रदास ने जल्दी से कहा—'इस चौकी पर बैठो।'

मोती की माँ ने सिर हिलाकर कहा—'नहीं, यहीं ठीक है।'

मोती की माँ की आँखों में आँसू भर आये। वह समझ गई कि भैया की इस दशा ने ही कुमुद को दुःखी बना रक्खा है।

कुमुद ने वार्ता आरम्भ करने के लिए कहा—'भैया, ये पूछने आई हैं कि मेरे विषय में आपकी क्या राय है ?'

मोती की माँ ने कहा—'नहीं नहीं, राय तो बाद में ली जायगी, मैं तो दर्शनों के लिये आई हूँ।'

कुमुद ने कहा—'ये जानना चाहती हैं कि इनके घर मुझे जाना चाहिए या नहीं ?'

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विप्रदास उठकर बैठ गए और बोले—'वह तो पराया घर है, वहाँ कुमुद कैसे रहेगी ?'

मोती की माँ ने अस्पष्ट शब्दों में कुछ कहा, जिसका मतलब यह था कि कुमुद उसके पास बैठकर विप्रदास के विचारों से उसे परिचित कराए। कुमुद इस बात के लिए तैयार न थी। बोली—'तुम ही अच्छी तरह बातचीत करो।'

'यह ठीक नहीं। कुमुद तो केवल सहारा चाहती है। इसे अपने अधिकारों के लिए अड़ जाना नहीं आता। शायद इसके घर से अलग हो जाने पर लोग कानाफूसी करें, किन्तु इसके बावजूद इसके वहाँ जाने में कोई रुकावट नहीं है।'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद बोली—'अपने गृहस्थ-जीवन के बिना स्त्रियाँ जीवित नहीं रह सकतीं। पुरुषों का जीवन तूफान की भाँति होता है। किन्तु स्त्रियों को तो सहारा ही चाहिए।'

'सहारा कहाँ है अपमान में ? मैं तुम से कहे देता हूँ कि कुमुद को जिसने जन्म दिया है उसने इसे सभी गुणों से सम्पन्न बनाया है और इतनी योग्यता किसी में नहीं जो कुमुद में दोष निकाल दिखाए।

मोती की माँ ने कहा—'आखिर किसी-न-किसी दिन तो वहाँ जाना ही पड़ेगा। इसके सिवाय दूसरा रास्ता भी तो नहीं।'

'जाना ही तो पड़ेगा !' इस शब्द का प्रयोग तो खरीदे हुए गुलाम के अतिरिक्त और किसी पर नहीं किया जा सकता।'

'विवाह के द्वारा स्त्री को खरीद ही लिया जाता है। जिस समय विवाह की रस्म हुई उस दिन से ही वह शारीरिक और मानसिक रूप में बिक गई। स्वतन्त्रता के समस्त मार्ग बन्द हो गये। मृत्यु के अतिरिक्त कोई भी शक्ति इस मार्ग को पार करने में सहायता नहीं दे सकती ! जब जन्म स्त्री के रूप में हुआ तब फिर उसके भाग्य को बदलने की चिन्ता कैसी ?'

विप्रदास की चारपाई के पास ही कुमुद सिर झुकाये धरती पर बैठी थी, विप्रदास ने मोती की माँ से कुछ न कहा। कुमुद के माथे पर हाथ फेरकर बोले—'एक बात तुमसे कहता हूँ कुमुद ! समझने की कोशिश करना। योग्यता जिसके प्रकट करने के लिए कोई प्रमाण नहीं देना पड़ता अधिकार प्राप्त में काफी सहयोग देती है। यह बात मैंने तुमसे कई बार कही है। तू

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुनिया से अलग नहीं हो सकती। तू अच्छी तरह जानती है कि तुझे यहाँ कोई कष्ट नहीं। कई बार समझाने का प्रयत्न किया गया। बिना सोचे-समझे किसी की महानता स्वीकार कर लेने से कोई लाभ नहीं। इसीलिए समाज की महानता का पतन होता जा रहा है। अन्धश्रद्धा के द्वारा अपने ही मनुष्यत्व का अनादर किया जाता है। इस बात को कोई सोचता क्यों नहीं ? आज जितनी भी शास्त्र गढ़न्त निरंकुश शक्तियाँ हैं उन सबके विरुद्ध सारी दुनिया में लड़ाई की हवा बह रही है। दुनिया भर के मनगढ़न्त ग्रन्थों को बड़ा नाम देकर मनुष्य आज तक उसका पोषण करता आया है। आज इन्हें निर्मूल करने का दिन आ गया।'

कुमुद ने सिर नीचा किये हुए कहा—'भैया, आपके कहने का क्या यह अर्थ है कि स्वामी से भी बढ़ जाय ?'

'मैं अत्याचार को बुरा मानता हूँ किन्तु यह आवश्यक है कि पति पत्नी पर अत्याचार न करे—मेरे कहने का यही मतलब है।'

'यदि अत्याचार करें तो पत्नी को···।'

कुमुद की बात समाप्त होने से पहले ही विप्रदास कहने लगे—'स्त्री यदि अन्याय के सामने सिर झुका दे तो यह सम्पूर्ण स्त्री-जाति के प्रति अन्याय होगा। इस प्रकार हर एक स्त्री की मुसीबत बढ़ती जायगी और अत्याचार का रास्ता खुलता चला जायगा।'

मोती की माँ से सहन न हो सका। बोली—'हमारी बहूरानी सती लक्ष्मी है। इनका अपमान करने से इनका अपमान नहीं होता।'

विप्रदास उत्तेजित हो उठे। बोले—'तुम तो सती लक्ष्मी की बातें सोचती हो और खराब लोग इसी घटना को तर्क बनाकर कुमार्ग पर चलते हैं। तुम बुरे आदमियों के बुरे अन्त पर क्यों विचार नहीं करतीं ?'

कुमुद उसी समय उठकर खड़ी हो गई और विप्रदास के बालों में अंगुलियाँ फेरते हुए बोली—'तुम जिसको मुक्ति और उद्धार कहते हो उसके लिए हम स्वयं रुकावट हैं। हम पुरुष पर विश्वास करती हैं और किसी प्रकार भी इस समस्या को सुलझा नहीं सकतीं। चोट सहती है और आनन्द का अनुभव करती हैं। तुम जब समझा देते हो तब समझ जाती हैं किन्तु गलत समझ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लेना और गलती छोड़ देना एक नहीं। हमारी ममता लता के समान सबको जकड़ लेती है चाहे इसमें भलाई हो अथवा बुराई।'

विप्रदास ने कहा—'इसीलिए तो पुरुषों की पूजा करने वाली स्त्रियों की कमी नहीं ? वे जानने को तो अपवित्र को पवित्र जानती हैं किन्तु मानती इसके विपरीत हैं।'

कुमुद ने कहा—'क्या करें भैया, गृहस्थी को दोनों हाथों से चलाने के लिए ही हमारा जन्म हुआ है। इसीलिए हम अच्छे-बुरे विचारों को एक जैसा समझती हैं। जितनी देर हमें गुरु की बातों को मानने में लगती, उतनी ही देर ठगाई के सामने सिर झुकाने में। जाल तो हमारे हृदय में बिछा होता है, फिर स्वतन्त्र कौन कराये ? इसीलिए सोचती हूँ कि यदि कष्ट ही झेलना है तो उसको स्वीकार कर लेना चाहिए। यही कारण है कि स्त्रियाँ धर्म की शरण में आनन्द की लालसा करती हैं।'

विप्रदास मौन बैठे रहे।

उनका मौन कुमुद को कष्टप्रद प्रतीत हुआ। कुमुद जानती है कि रो लेने से अधिक चुप रहने में कष्ट होता है।

घर में चक्कर लगा आने के बाद मोती की माँ ने कुमुद से कहा—'बहू-रानी, क्या यह ठीक है ?'

कुमुद ने कहा—'मैं नहीं जा सकती जबकि उन्होंने मेरे आने के लिए कोई आज्ञा नहीं दी !'

मोती की माँ भीतर-ही-भीतर कुछ खिसिया गई। ससुराल के प्रति उसका अधिक प्रेम हो यह बात नहीं है, फिर भी ससुराल के बारे में बहुत दिनों का ममत्व बोझ उसके मन पर अधिकार किये हुए है। वहाँ की कोई भी बहू उसे किसी प्रकार भी छोड़ जाय यह बात उसे अच्छी नहीं लग सकती ! कुमुद को उसने जो कुछ कहा उसका भाव यह था कि पुरुषों की प्रकृति में सहानुभूति की मात्रा कम होती है और असंयम अधिक। यह तो बनी बनाई बात है। सृष्टि पर तो हमारा अधिकार नहीं। जो मिला है उसी के साथ निभाकर चलना होगा। यह सोचकर कि यह लोग ऐसे ही हैं मन को तैयार करके जैसे घर-गृहस्थी को चलाना ही चाहिए क्योंकि गृहस्थी ही स्त्रियों की अपनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चीज है। पति कैसा ही हो, घर-गृहस्थी को तो अपनाना ही होगा। यदि यह बात बिलकुल ही असम्भव हो तो मरने के सिवाय और कोई चारा नहीं।

कुमुद ने हँसकर कहा—'और नहीं तो फिर यही सही, इसमें मौत का क्या दोष ?'

मोती की माँ ने व्याकुल होकर कहा—'ऐसी बात न कहो।'

कुमुद नहीं जानती कि कुछ दिन हुए उसके मोहल्ले में ही एक सत्रह-अट्ठारह वर्ष की बहू ने आत्महत्या कर ली थी। उसका पति एम० ए० पास और सरकारी नौकर है। स्त्री से चाँदी की कंघी खो गई; सास ने बहू की शिकायत कर दी और पति ने उठाकर लात जमा दी। आज भी उसकी याद करते ही मोती की माँ के रोंगटे खड़े हो आते हैं।

इतने में नवीन आ गया। कुमुद प्रसन्न हो उठी। बोली—'मैं जानती थी कि लालाजी के आने में अधिक देर न लगेगी।'

नवीन मुस्कराकर बोला—'बहूरानी न्याय-शास्त्र में दखल रखती हैं। पहले श्रीमती धुँआ को देखा। उससे श्रीमान् अग्नि के आविर्भाव का अनुमान लगाने में कठिनाई नहीं मालूम हुई होगी।'

मोती की माँ ने कहा—'बहूरानी, तुम्हीं ने तो ढील देकर सिर पर चढ़ाया है। ये मन में समझते हैं कि तुम इनको देखकर प्रसन्न होती हो, इससे मिजाज कुछ···।'

'मुझे देखकर जो प्रसन्न हो सकती हैं इनमें क्या कम योग्यता है। जिन्होंने मुझे बनाया है उन्हें भी अपनी कलाकृति देखकर सन्तोष ही हुआ होगा और जिन्होंने मेरा पाणिग्रहण किया उनके मन का भाव तो देवो न जनन्ति कुतो मनुष्य।'

'लालाजी, तुम दोनों मिलकर शास्त्रार्थ करो। तीसरा व्यक्ति रहकर बाधा नहीं डालना चाहता। अब मैं जाती हूँ।'

मोती की माँ ने कहा—'यह क्या बात बहन! तीसरा व्यक्ति कौन है? क्या तुम समझती हो कि गाड़ी का किराया खर्च करके वे यहाँ मुझे देखने आये हैं?'

'नहीं, अब चलूं इनके लिए जलपान भेज दूं।' यह कहकर कुमुद चली गई।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इक्यावन

मोती की माँ बोली—जान पड़ता है कोई विशेष खबर है।

हाँ है। इसीलिए मैंने विलंब नहीं किया, तुमसे परामर्श लेने के लिए आ गया। तुम तो चली आईं तब अचानक भैया मेरे कमरे में आ पहुँचे। उनका मिजाज बहुत खराब था। साधारण मूल्य की एक कलई की हुई चुरुट की राखदानी मेज पर से गायब हो गई है। उसे जिसने लिया है अवश्य सोना समझकर ही लिया है नहीं तो फजीहत कराने के लिए कौन प्रस्तुत होता है। तुम तो जानती ही हो कि एक तुच्छ वस्तु गायब हो जाने पर मानो भैया की अतुल सम्पत्ति की नींव हिल उठती है, उसे वे बरदाश्त नहीं कर सकते। आज सवेरे वे आफिस जाने के समय मुझसे श्यामा को देश भेजने के लिए कह गए। मैं अत्यन्त उत्साहपूर्वक इस पवित्र कार्य में लगा था। मैंने निश्चय किया था कि उनके आफिस से लौटने के पहले ही काम पूरा कर दूंगा। इतने में ही भया डेढ़ बजे अकस्मात् मेरे कमरे में आ पहुँचे। बोले—अभी रहने दो। वे कमरे से निकल ही रहे थे कि मेरे डेक्स पर रखी हुई भाभी की तस्वीर पर उनकी दृष्टि पड़ गई। वे ठिठक गए। मैं ताड़ गया कि तिरछी नजरों को सीधी करके चित्र देखने में भैया संकोच का अनुभव कर रहे हैं। मैंने कहा—भाई साहब जरा बैठिए, ढाके का एक कपड़ा आपको दिखलाना चाहता हूँ। मोती की माँ की छोटी भावज का गर्भोत्सव है, उसी में देना होगा। किन्तु ऐसा जान पड़ता है कि गणेशराम मुझे इसमें ठग रहा है। एक बार मैं आपको उसे दिखा देना चाहता हूँ मेरे अंदाज के हिसाब से उसका मूल्य तेरह रुपया नहीं हो सकता। अधिक-से-अधिक नौ या साढ़े नौ रुपए के भीतर ही होगा।

मोती की माँ चौंककर बोली—यह बात तुम्हारे दिमाग में कैसे आई? मेरी छोटी भौजाई का गर्भोत्सव होना तो एकदम असंभव है। उसकी गोद के लड़के की उम्र अभी केवल डेढ़ महीना है। जान पड़ता है आजकल बात बनाने में तुम्हें जरा भी संकोच नहीं होता। यह तुमने नई कला कहाँ से सीखी?

जहाँ से कालिदास को कवित्व शक्ति मिली, उन्हीं वीणाधारिणी सरस्वती

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

माँ द्वारा।

वीणाधारिणी जब तक तुम्हें छोड़ न दें तब तक तुमसे गृहस्थी चलनी असंभव है।

मैंने प्रतिज्ञा की है कि स्वर्गारोहण के पहिले नर्क का दर्शन करके जाऊँगा; भाभीजी के चरणों में मेरा यही दान है।

किन्तु साढ़े नौ रुपए की ढाके की साड़ी तुम्हें तुरंत कहाँ से मिल गई?

कहीं से नहीं। बीस मिनट बाद मैंने पुनः जाकर कहा—गणेशराम वह साड़ी मुझसे कहे बिना वापस ले गया। मैंने भैया का मुख देखकर समझा कि इस बीच चित्र ने उनके मस्तिष्क में प्रवेशकर स्वप्न का रूप धारण कर लिया है। न जाने क्यों भैया इस घर में मेरा ही कुछ लिहाज करते हैं, यदि अन्य किसी के पास होता तो झट से उठा ले जाने में उन्हें कुछ भी संकोच न होता।

तुम भी तो कम लोभी नहीं हो, यदि तुम उसे भैया को दे ही देते तो क्या हर्ज था।

मैंने दे तो दिया। किन्तु अपने मन से नहीं दिया। मैंने कहा—भाई साहब, इस चित्र से एक तैल चित्र बनवाकर यदि आप अपने शयन-गृह में लगा लें तो कैसा होगा। भैया ने उदासीन भाव से कहा—अच्छा, देखा जायगा। यह कहकर वे चित्र लेकर ऊपर के कमरे में चले गए। उसके बाद क्या हुआ मैं ठीक नहीं जानता। जान पड़ता है वे आफिस नहीं गए और मुझे अब उसे चित्र के वापस मिलने की भी आशा नहीं है।

जब तुम अपनी भाभी के लिए स्वर्ग भी खोने के लिए तैयार हो तो एक चित्र ही खो दिया तो क्या हुआ।

स्वर्ग के सम्बन्ध में संदेह है, चित्र के सम्बन्ध में एकदम संदेह नहीं था। ऐसा चित्र संयोग से ही बनता है। जिस शुभ लग्न में उनके मुख में लक्ष्मी का प्रसाद पूर्ण रूप से उतरा था वह शुभ योग उस चित्र में पड़ गया है। मैंने प्रायः रात्रि में नींद से जगकर रोशनी जलाकर उस चित्र को देखा है। मानो दीपक के प्रकाश में उसके भीतर की छटा और भी अधिक दिखाई पड़ती है।

क्यों क्या मेरे निकट इतनी अतिशयोक्ति करने में तुम्हें जरा भी संकोच नहीं होता?

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि संकोच होता तो तुम्हारे लिए सोचने की भी बात होती। उन्हें देखकर मेरा आश्चर्य किसी भी प्रकार नहीं जाता। मैं सोचता हूँ हम लोगों के भाग्य में यह कैसे संभव हुआ ? मैं उनको बहूरानी कह सकता हूँ यह सोचने पर मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं, और वे जो मुझ जैसे साधारण मनुष्य को भी हँसती हुई निकट बैठाकर खिला सकती हैं, यह भी संसार में मेरे लिए कैसे सुलभ हुआ। हम लोगों के परिवार में सबसे अभागे हैं मेरे भैया। उन्होंने जिनको सरलता से पाया था उनको कड़ाई से बाँधने का प्रयत्न करने में उन्होंने खो दिया।

बस करो, जब तुम बहूरानी की प्रशंसा करने लगते हो तो रुकना ही नहीं चाहते।

और मैं देखता हूँ कि वह तुम्हें जरा खटकती है।

नहीं, कभी नहीं।

हाँ, जरा सा। किन्तु इस सम्बन्ध में एक बात स्मरण दिला देना अच्छा है। नूरनगर स्टेशन पर पहले बहूरानी के भाई को देखकर तुमने जो बातें कही थीं क्या उसको भी अतिशयोक्ति नहीं कहा जा सकता ?

अच्छा, अच्छा, इन तर्कों को रहने दो, इस समय क्या कहने जा रहे थे, कहो।

मेरा विश्वास है कि भैया आज या कल में ही बहूरानी को बुलवावेंगे। बहूरानी जी इतने आग्रह के साथ पिता के घर चली आई, और उसके बाद उन्होंने लौटने का नाम भी नहीं लिया, इससे भैया बहुत क्रुद्ध हो गए हैं। भैया की समझ में यह नहीं आ रहा है कि सोने के पिंजड़े से पक्षी को कोई भी लोभ नहीं होता। बेचारा निर्बोध और अकृतज्ञ पक्षी !

अच्छा तो है, बड़े मालिक बुलवा लें। यही तो होना चाहिए।

मैं चाहता हूँ कि यदि बहूरानी बुलाने के पहिले ही चली जायँ तो अच्छा हो बड़े भैया के अभिमान की ही विजय हो जाय। इसके अतिरिक्त विप्रदास बाबू भी तो [illegible] हैं कि बहूरानी आपके घर लौट जायं, मैंने भी मना कर दिया था।

मोती की माँ ने इसका कुछ भी आभास नहीं दिया कि विप्रदास से उसकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या बातें हुई थीं। उसने कहा—विप्रदास बाबू से जाकर कहो न।

मैं जा रहा हूँ, वे सुनकर प्रसन्न होंगे।

इसी समय कुमुद कमरे के दरवाजे पर से बोली—क्या मैं कमरे में आ सकती हूँ ?

मोती की माँ ने कहा—तुम्हारे देवरजी तुम्हारी परीक्षा कर रहे हैं।

मैं बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहा था, अब दर्शन मिला है।

वाह, देवरजी, आप ऐसी बात कैसे कहते हैं ? मैं स्वयं आश्चर्यकित हो जाती हूँ, समझ नहीं पाती। अच्छा चलो, इस समय खाने चलो।

भोजन के पहिले जरा तुम्हारे भैया से कुछ बातें कर लेना चाहता हूँ।

नहीं, यह न होगा।

क्यों ?

आज भैया बहुत सी बातें कर चुके हैं, आज अब बातें न होंगी ?

वे अच्छे तो हैं न ?

कल आओ तो अच्छा हो, आज कोई बात न होगी।

शायद कल छुट्टी न मिले, सम्भवतः बाधा हो। तुम्हारी दुहाई है, आज केवल पाँच मिनट के लिये सही। तुम्हारे भैया प्रसन्न होंगे, कुछ हानि न होगी।

अच्छा पहिले तुम खा लो, उसके बाद होगी।

भोजन के बाद कुमुद नवीन को भैया के कमरे से लिवा लाई। उसने देखा कि भैया को अभी तक नींद नहीं आई है। कमरे में अंधेरा-सा है, रोशनी मन्द है। खुली हुई खिड़की से तारे दिखाई दे रहे हैं। रह-रह कर दक्षिणी हवा तेजी से आ जाती है। घर का पर्दा, बिछौने की झालर, अरगनी पर टंगे हुए विप्रदास के कपड़े अनेक प्रकार की छाया बिखेरते हुए काँप रहे हैं। अखबार का एक पन्ना फर्श पर इधर-उधर उड़ रहा है। विप्रदास अर्द्धनिद्रित अवस्था में ओठँगकर बैठे हुए हैं। नवीन के पैर आगे नहीं उठ रहे हैं। संध्याकालीन छाया और रोग की दुर्बलता ने विप्रदास को घेर रखा है, जान पड़ता है वे संसार से बहुत दूर किसी दूसरी ही दुनिया में हैं। ऐसा प्रतीत हुआ मानों ऐसा अकेला व्यक्ति इस संसार में दूसरा नहीं है।

नवीन ने आकर विप्रदास की पद-धूलि लेकर कहा—मैं आपके विश्राम में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बाधा नहीं डालना चाहता। मैं आपसे केवल एक बात कहना चाहता हूँ। समय हो गया है, अब हम लोग बहूरानी के घर आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

विप्रदास ने कुछ भी उत्तर नहीं दिया, स्थिर होकर बैठे रहे।

कुछ देर में नवीन बोला—आपकी आज्ञा पाने पर मैं उनको लिवा जाने का प्रबन्ध करूँगा।

इसी बीच कुमुद भैया के पैरों के निकट आकर बैठ गई। विप्रदास ने उसकी ओर देखते हुए कहा—कुमुद यदि तू समझती है कि तेरा जाने का समय हो गया है तो तू जा।

कुमुद ने कहा—नहीं, भैया, मैं न जाऊँगी। कहकर विप्रदास के घुटनों पर लोट गयी।

कमरे में स्तब्धता है, केवल रह-रहकर तेज हवा के झोंके से एक खिड़की के ढीले दरवाजे खड़खड़ा उठते हैं और बाहर बाग के पत्ते मरमरा उठते हैं।

कुछ ही देर में बिछौने पर से उठकर नवीन से बोली—चलो अब देर न करो, भैया आप सो रहें।

मोती की माँ ने घर पर लौटकर कहा, 'किन्तु इतना बढ़ जाना तो अच्छा नहीं है।

'हाँ, आपस में चाहे कितना भी झगड़ा हो जाय, किन्तु, इसे मन में स्थान देना अच्छा नहीं है।'

'नहीं, उनका दिमाग ही ऐसा है। संसार में उनके योग्य दूसरा नहीं मिलता वे सबसे बड़े हैं।

'मँझली बहू इतना अभिमान सबको शोभा नहीं देता, किन्तु उनकी बात ही न्यारी है।'

'तो क्या इस कारण अपने आत्मीय को छोड़ देना होगा?'

'आत्मीय-स्वजन केवल कहने से तो नहीं हो जाते। वे लोग हमसे एकदम भिन्न श्रेणी के व्यक्ति हैं। सम्बन्ध के अनुसार उनसे व्यवहार करने में मुझे सकोच होता है।

कोई चाहे कितना ही बड़ा व्यक्ति क्यों न हो किन्तु उसे सम्बन्धियों का बल तो रहता ही है, इसे स्मरण रखो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवीन समझ गया कि इस आलोचना में कुमुद के ऊपर मोती की माँ की ईर्ष्या की भी कुछ गन्ध है। इसके अतिरिक्त यह भी सत्य है कि स्त्रियों के लिए परिवारिक बन्धन का मूल्य बहुत अधिक होता है। इसीलिए इस सम्बन्ध में नवीन ने व्यर्थ तर्क न करके कहा—और कुछ दिनों तक देखा जाय न। भाई साहब का आग्रह कुछ अधिक हो जाने दो, इसमें हानि न होगी।

बावन

श्यामासुन्दरी ऐसी आशा करने लगी थी कि मधुसूदन की गृहस्थी में उसका स्थान दृढ़ हो गया है, किन्तु वह इस बात का अनुभव नहीं करती थी। उसने पहिले समझा था कि घर के नौकर-चाकरों पर तेरी धाक जम गई है, किन्तु वय पग-पग पर ऐसा अनुभव कर रही है कि वे उसे मालकिन का स्थान नहीं देना चाहते। वे प्रगट रूप से उसके प्रति अनादर प्रदर्शित करने में ही सन्तोष का अनुभव करते हैं, इसीलिए श्यामा कभी-कभी उन्हें अनावश्यक डाँटती और उनमें अकारण दोष निकालती है। उन्हें फटकारती और बाप-माँ की गालियाँ देती है। कुछ दिनों पहिले इस घर में श्यामा की कोई गिनती न थी, उस स्मृति को गृहस्थी से मिटा देने के लिए उसने जी-जान से कोशिश की, किन्तु उसका परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। श्यामा की डाँट-फटकार न बर्दाश्त होने के कारण घर के एक पुराने नौकर ने इस्तीफा दे दिया। इसके लिए श्यामा को सिर नीचे झुकाना पड़ा। इसका कारण यह है कि अपनी आर्थिक उन्नति के सम्बन्ध में मधुसूदन कुछ अन्धे सस्कार हैं, जो नौकर उसकी आर्थिक उन्नति के समकालीन हैं उनके पदत्याग या मृत्यु को वह दुर्भाग्यसूचक मानता है। इसी कारण उस समय का एक स्याही के दागों वाला बहुत पुराना डेस्क आफिस-घर में कीमती फर्नीचरों के साथ निस्संकोच रूप से रखा हुआ है। उसके ऊपर उस समय का वह सस्ता कलमदान और एक मामूली होलडर है जिससे उसने अपने व्यापार के नवयुग में एक बड़े दस्तावेज पर हस्ताक्षर किया था। उस समय के उड़िया नौकर दधि ने इस्तीफा दिया तो मधुसूदन ने उसे केवल अस्वीकार ही नहीं किया वरन् इसके विपरीत उसे कुछ पारितोषिक मिल गया। श्यामा को कठिनाई यही है कि वह मधुसूदन से वास्तव में प्रेम करती है इसलिए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मुझे फिर कभी यहाँ पर न आने देंगे।

मैं अच्छी तरह समझता हूँ !

अच्छा, ऐसा ही होगा। किन्तु मेरा आप से एक आग्रह है कि किसी भी कारण से उनके घर न जाइएगा। भैया मैं यह समझती हूँ कि आपको देखने के लिए मेरा मन व्याकुल होगा, किन्तु मैं उनके घर पर आपको कभी देखना नहीं चाहती।

नहीं कुमुद, इसके लिए तुम्हें चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी।

वे लोग तुम्हें विपत्ति में डालने की कोशिश करेंगे।

वे जो कुछ कर सकते हैं उसकी समाप्ति होने पर हमारे ऊपर उनकी क्षमता भी समाप्त हो जायगी। तब मैं स्वतन्त्र हो जाऊँगा। उसे तू विपत्ति क्यों समझती है ?

तब आप मुझे भी स्वतन्त्र बना लीजिएगा। तबतक मैं उनके लड़के को उन्हें सौंप दूंगी। ऐसी भी कोई वस्तु है जो लड़के के लिए भी खोई नहीं जा सकती भैया !

अच्छा, पहिले लड़का होने दो उसके बाद देखा जायगा।

तुम विश्वास नहीं कर रहे हो, किन्तु माँ की बात आपको याद है न ? उनकी तो इच्छा मृत्यु हुई थी। उस समय संसार में उन्हें स्थान नहीं मिल रहा था, इसीलिए वे अपने लड़के-लड़की को अनायास ही छोड़कर चली गईं। जब मनुष्य मुक्ति चाहता है तो उसे कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती। मैं आपकी ही बहन हूँ। मैं मुक्ति चाहती हूँ। उस दिन जब बन्धन कटेगा तब माँ मुझे आशीर्वाद देंगी।

दोनों पुनः कुछ देर तक मौन रहे। अकस्मात् आँधी-सी उठी, मेज पर रखी हुई विप्रदास के पढ़ने की पुस्तकों के पन्ने फर-फर करके उलटने लगे। बाग के बेल-पुष्पों की सुगन्धि से कमरा भर गया।

कुमुद ने कहा—उन लोगों ने मुझे जान-बूझकर दुःख नहीं दिया है। मेरा निर्माण ही ऐसा हुआ है कि वे लोग मुझे सुखी नहीं बना सकते और मैं भी तो उन्हें सुखी नहीं बना सकती। जो लोग उन्हें सुखी बना सकते हैं उनका स्थान घेर लेने में कोई-न-कोई कठिनाई उपस्थित ही हो जायगी। तब यह सब विड-

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

म्बना क्यों है। समाज से प्राप्त अपराध का सारा लांछन केवल मैं ही स्वीकार कर लूंगी, उन लोगों पर कोई भी कलंक न लगेगा। किन्तु मैं किसी दिन उन्हें मुक्ति देकर स्वयं भी मुक्त होकर चली आऊँगी। मैं उनकी बड़ी बहू हूँ, यदि मैं कुमुद न रही तो इसका अर्थ ही क्या है। भैया, आप देवता पर विश्वास नहीं करते किन्तु मैं तो करती हूँ। मैं तीन मास पूर्व जितना विश्वास करती थी, आज मैं उससे अधिक ही करती हूँ। मैं आज दिन भर यही बात सोचती रही कि चारों ओर इतनी गड़बड़, इतना उलट-फेर है, तो भी इस चक्र ने संसार को एकदम ढँक क्यों नहीं लिया। इन सबको छोड़कर भी चन्द्र-सूर्य द्वारा संसार का काम चल रहा है, वही जिस स्थान को छोड़ गया है वहीं पर बैकुंठ, वहीं पर हैं मेरे देवता। आपसे यह सब कहते हुए लज्जा लगती है—किन्तु अब तो कभी कहने का अवसर न मिलेगा, इसीलिए आज मैं कह रही हूँ। नहीं तो मेरे लिए आप व्यर्थ ही चिन्तित होंगे। सब कुछ चला जाने पर भी कुछ शेष रह जाता है यह बात मैं समझ रही हूँ। वही मेरे अविनाशी हैं, वे ही मेरे देवता हैं। यदि मैं उसे न समझती तो यहीं तुम्हारे पैरों पर सिर रखकर मैं प्राण छोड़ देती, उस बन्दीखाने में घुसने के लिए तैयार न होती। भैया, आप इस संसार में मेरे निकट हैं, इसीलिए मैं इस मर्म को समझ सकी हूँ। यह कहकर कुमुद कुर्सी से उठकर भैया के पैरों पर सिर रखे पड़ी रही।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सत्तावन

दूसरे दिन प्रातःकाल विप्रदास ने कुमुद को बुलवाया। कुमुद ने आकर देखा कि विप्रदास बिस्तर पर बैठे हैं, एक इसराज उनकी गोद में है, और दूसरा बगल में है। उन्होंने कुमुद से कहा—'बाजा ले लो, हम दोनों मिलकर बजावें। इस समय भी कुछ अँधेरा है, रात भर में हवा जरा ठण्डी होकर पीपल के पत्तों में झर-झर कर रही है, कौवे बोलना प्रारम्भ कर रहे हैं। दोनों व्यक्तियों ने भैरवी राग प्रारम्भ किया, कैसा गम्भीर करुणामय स्वर है, वसा ही जैसा कि शिवजी के प्रातःकालीन ध्यान में सती का विरह निश्चल हो उठता था बजाते-बजाते फूली हुई गुञ्जा की डालियों के भीतर से अरुण आभा स्वेत हो उठी, सूर्य भगवान बाग की दीवार पर दिखाई पड़े। नौकर दरवाजे के निकट आकर लौट गए। घर की सफाई नहीं हुई। घर में धूप आ गई, दरवान धीरे से आकर समाचार-पत्र मेज पर रखकर चला गया।

अन्त में बाजा बन्द करते हुए विप्रदास ने कहा—'कुमुद क्या तू यह समझती है कि मेरा कोई धर्म ही नहीं। यदि मैं अपने धर्म को शब्दों में कहूँ तो वह खत्म हो जाता है। इसी कारण कहता नहीं, मैं गाने के रूप में उसका सुर देखता हूँ, जिससे गम्भीर दुःख तथा गहरे आनन्द दोनों एक-दूसरे में लीन हो गये हैं मैं उनका नाम देने में असमर्थ हूँ। कुमुद! आज तू चली जा रही है—सम्भवतः अब भेंट न हो सके। आज प्रातःकाल ही तुझे उन सब बेसुरों तथा अनमेलों के उस पार पहुँचाने के लिए मैं आ गया हूँ। तूने शकुन्तला पढ़ा है:—जब शकुन्तला दुष्यन्त के घर में जाने के लिए निकली थी तब कण्व ने उसे कुछदूर पहुँचाया था। जिस लोक में उसे पहुँचाने के लिए वे निकले थे उसमें था दुःख और अपमान। किन्तु शकुन्तला वहाँ पर नहीं रुकी उसे पार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करके वह निश्चल शान्ति में जा पहुँची थी। आज प्रातःकाल भैरवी राग के बीच में वही शान्ति का स्वर मेरे समस्त अन्तःकरण के आशीर्वाद रूप में तुझे उसी निर्मल परिपूर्णता की ओर अग्रसर करे, वह परिपूर्णता तेरे वाह्याभ्यंतर के सारे दुःखों और अपमानों को बहा ले जाय।

कुमुद कुछ भी बोली नहीं। उसने विप्रदास के चरणों पर सिर रखकर प्रणाम किया। कुछ देर खिड़की के बाहर देखती हुई खड़ी रही, तत्पश्चात् बोली—भैया, मैं आपके लिए चाय-बिस्कुट ले आऊँ।

मधुसूदन ने आज ज्योतिषी को बुलाकर शुभयात्रा की साइत निश्चित् कर ली थी। प्रातःकाल दस बजे के कुछ बाद ही साइत है। निश्चित समय पर जरी की काम की हुई लाल बनातवाली पालकी फाटक पर आ पहुँची, पालकी-वाहक आसा-सोंटा लिए हुए आए, वे कुमुद को धूमधाम से मिर्जापुर महल में ले गए। आज वहाँ पर नौबत बज रही है और ब्राह्मण-भोजन का आयोजन हो रहा है।

माणिक बार्ली का प्याला हाथ में लिए हुए विप्रदास के कमरे में आया। आज विप्रदास बिछौने पर नहीं हैं, खिड़की के सामने कुर्सी पर स्थिर होकर बैठे हैं। जब बार्ली आई तो उन्होंने उस ओर कुछ ध्यान ही नहीं दिया। नौकर लौट गया। तब क्षेमा बुआ पथ्य लेकर आईं, वे विप्रदास के कन्धे पर हाथ धरकर बोलीं—विप्रदास, समय हो गया है।

विप्रदास कुर्सी पर से धीरे-धीरे उठकर बिछौने, पर लेट गए। क्षेमा बुआ की यह इच्छा थी कि वह यह बतलावे कि किस धूमधाम से वे लोग आदर-पूर्वक कुमुद को ले गए। किन्तु विप्रदास की निस्तब्धता देखकर वह कुछ भी बोल नहीं सकी, ऐसा जान पड़ा मानो विप्रदास के नेत्रों के सामने एक गहरी शून्यता छाई हुई है।

जब विप्रदास बोले—बुआ, कालू को भेज दो, छाया के भीतर से ध्वनित हुई। बुआ के शरीर के रोंगटे खड़े हो गए।

कालू के आने पर विप्रदास ने उसके हाथ में एक पत्र दिया। पत्र विलायत सेसुबोध ने लिखा था। उसने लिखा है कि बार का अन्तिम डिनर समाप्त

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुए बिना यदि देश में आना पड़ेगा तो उसे पुनः ही लौट जाना पड़ेगा। इस लिए अच्छा यही होगा कि अन्तिम डिनर समाप्त करके माघ फागुन तक देश में वापस आऊँ, इससे व्यर्थ व्यय से बच जाऊँगा। उसका विश्वास है कि धन-सम्बन्धी आवश्यकता तब तक टल सकती है।

आज कालू की यह तनिक भी इच्छा नहीं थी कि सम्पत्ति-सम्बन्धी चर्चा करके विप्रदास को कष्ट दिया जाय। कालू ने कहा—भैया अभी तक तो रुपए चुकाने की कोई बात नहीं उठी है, यदि और कुछ दिनों तक सावधानी बरती जाय तथा छेड़छाड़ न की जाय तो शीघ्र कोई उत्पात न होगा। आप कुछ भी चिन्ता न करें।

विप्रदास ने कहा— मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं है कालू, जरा भी नहीं है

विप्रदास की चिन्ता कालू को अच्छी नहीं लगती—किन्तु अत्यन्त निश्चिन्तता भी उसे अच्छी नहीं लगती।

विप्रदास समाचार-पत्र उठाकर पढ़ने लगे, कालू ने समझ लिया कि इस सम्बन्ध में कोई भी आलोचना करने की विप्रदास की इच्छा तनिक भी नहीं है। अन्य दिन काम की बात करके कालू चला जाता था, आज वह चुप होकर बैठा रहा, वह कोई दूसरी बात करने की इच्छा करने लगा, या किसी सेवा के काम में ही लग जाय। उसने पूछा—'क्या बाहर की वह खिड़की बन्द कर दूं? धूप आ रही है।

विप्रदास ने हाथ हिलाकर बतलाया, आवश्यकता नहीं है।

कालू तब भी बैठा ही रहा। भैया के घर में आज कुमुद नहीं है, यह शून्यता उसके हृदय को व्यथित कर रही है। अकस्मात् बिछौने के नीचे टाम कुत्ते के फूट-फूटकर रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने कुमुद को जाते हुये देखा है, उसने न जाने क्या समझ रखा है, यह ठीक समझ में नहीं आ सकता।

———

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh